PAGES MISSING WITHIN THE BOOK ONLY

TEXT PROBLEM WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180813

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—4-4-69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 K453 Accession No. P. G. H1887

Author खत्री, देवकीनन्दन .

Title भूतनाथ भाग-7.

This book should be returned on or before the date last marked below.

सभी नष्ट हो गया। (अपने साथियों को हाथ का इशारा करके) आओ चले आओ, कोई हर्ज की बात नहीं है !

प्रभाकर०। (भूतनाथ से) ये तो तुम्हारे वे ही साथी हैं जो मेरे हाथ से जख्मी हुए थे ?

भूत०। जी हाँ।

यह कहता हुआ भूतनाथ अपने साथियों को बैठने का इशारा कर खुद भी जमीन पर बैठ गया और मेघराज की तरफ देख कर बोला, "हाँ, अब आप पूछिये क्या पूछते थे ?"

मेघराज०। उस समय तो मैं कुछ नहीं पूछता था परन्तु अब जरूर यह जानना चाहता हूँ कि अभी भी तुम्हारे दिल में भैयाराजा की स्त्री को छुड़ाने की इच्छा बनी हुई है ?

भूत०। हाँ हाँ, क्यों नहीं ! यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं भैयाराजा के काम से कदापि मुँह न मोड़ूँगा और उनके लिये सदैव तन मन से उद्यत रहूँगा।

मेघराज०। खैर शुक्र है कि अभी तक तुम इस राह पर हो ! अच्छा तो फिर उसका प्रबन्ध करो। दारोगा ने इनकी स्त्री को तुम्हारे हवाले कर देने का वादा तो किया ही है और वह दिन भी आज ही है ?

भूत०। बेशक ऐसा ही है, परन्तु सोचने की बात यह है कि केवल मेरा अकेला ही जाना उचित होगा या आप लोगों को साथ ले जाना ?

मेघराज०। अब इसको तो तुम ही जानो।

भूत०। (कुछ सोच कर) मेरी समझ में तो आप लोग भी यदि साथ रहते तो उत्तम होता, क्योंकि यदि दारोगा किसी वजह से इन्कार भी कर देता तो मैं उन तालियों की मदद से जिन्हें उसने जैपाल के धोखे में मुझे दे दिया है एक बार स्वयम् अजायबघर में जाने का उद्योग करता, मगर ऐसी अवस्था में ज्यादे आदमियों का साथ रहना आवश्यक है क्योंकि वहाँ पहरा जरूर होगा और अकेले काम न निकलेगा।

मेघ० । निःसन्देह तुम्हारा खयाल ठीक है । तो हम लोग साथ चलने को तैयार हैं, उठो, क्योंकि सन्ध्या होने में ज्यादा विलम्ब नहीं है ।

इतना कह कर मेघराज अपनी जगह से उठे और सबको साथ ले भूतनाथ के पीछे पीछे जमनिया की तरफ रवाना हुए । भैयाराजा इत्यादि घोड़ों पर सवार थे और भूतनाथ तथा उसके साथी पैदल ही घोड़ों के साथ साथ जा रहे थे । अभी ये लोग ज्यादा दूर न गये थे कि सामने दो सवार आते दिखाई पड़े जिन्हें देख कर सब रुक गये और उसी तरफ देखने लगे । पहिले तो गर्द के सबब कुछ जान न पड़ा परन्तु करीब आ जाने पर मालूम हुआ कि ये लोग भी अपने ही साथी अर्थात् इन्द्रदेवजी के भेजे हुए वे ही शागिर्द हैं जिनको उन्होंने मेघराज आदि की मदद को भेजा था । जब प्रभाकरसिंह ने पारस इत्यादि भूतनाथ के शागिर्दों को जैपाल की गठड़ी लिये जाते देखा था उस समय भी ये दोनों सवार उनके साथ ही थे । उनको अलग छोड़ कर प्रभाकरसिंह आगे बढ़ आये थे तथा भूतनाथ के शागिर्दों को बेकाम करने बाद जैपाल को अपने साथ ले जा कर इन्हीं दोनों सवारों के सुपुर्द कर स्वयम् भूतनाथ के पास लौट गये थे और वे दोनों उसे ठिकाने पहुँचा अब लौट रहे थे ।

दूसरा बयान

जमनिया की तरफ जाते जाते यकायक भूतनाथ सोचने लगा कि अजायबघर मे जाने अथवा भैयाराजा की स्त्री को छुड़ाने के पहिले अगर मै रामेश्वरचन्द से मिल लूँ तो बेहतर होगा क्योंकि इससे एक तो जो कुछ नई बात मेरी गैरहाजिरी में वहाँ हुई होगी सो मालूम हो जायगी दूसरे जैपाल के यकायक गायब हो जाने पर यदि दारोगा ने अपने कैदियों को भेद खुल जाने के डर से अजायबघर से निकाल कर कहीं और हटाया होगा तो यह बात भी रामेश्वरचन्द से कदापि छिपी न होगी क्योंकि एक

तो वह यों ही अपनी बुद्धिमानी से चारो तरफ की आहट रखता है दूसरे इस बार तो चलते समय मैं ताकीद भी कर आया था कि इन बातों की टोह में जरूर रहना, कहीं ऐसा न हो कि दारोगा उन कैदियों को मार डाले या किसी ऐसी जगह ले जा कर कैद कर दे जहां से पता लगाना कठिन हो जाय। इसके अतिरिक्त अब मुनासिब यही है कि मैं उस दूकान को भी हटा दूँ क्योंकि जब मैं दारोगा की मर्जी के विरुद्ध काम करने को तैयार हो गया हूँ अर्थात् उसके कैदियों को छुड़ाने की फिक्र में पड़ गया हूँ तो मेरी दारोगा से दुश्मनी हुए बिना कदापि न रहेगी। और यह असम्भव है कि ऐसा करके भी मैं उससे दोस्ती कायम रख सकूँ क्योंकि दुश्मनी साबित हो जाने के बाद हरनामसिंह की जुबानी सब हाल सुन कर दारोगा को अवश्य इस बात का विश्वास हो गया होगा कि जमनिया वाली ऐयारी की दूकान का कर्ता-धर्ता भूतनाथ ही है, और ऐसी अवस्था में वह मेरे साथियों की गिरफ्तारी तथा मेरी दूकान को मटियामेट करने की फिक्र में भी जरूर गया होगा अस्तु उस दूकान को उठा लेना ही मुनासिब है। अफसोस ! मैं कदापि दारोगा के कैदियों को न छुड़ाता और न ऐसे समय में जब कि बहुत कुछ फायदे की उम्मीद है उससे दुश्मनी ही पैदा करता परन्तु क्या करूँ बिना ऐसा किये न तो मैं भैयाराजा अथवा इन्द्रदेव को मुँह दिखाने योग्य रहूँगा और न दयाराम ही का पता लगा सकूंगा क्योंकि किसी और रीति से दयाराम का हाथ लगना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। सच तो यों है कि बिना उनको खोज निकाले मेरे सर से कलंक का टीका न छूटेगा और न मैं कभी स्वतंत्रता से इस दुनिया में काम ही कर सकूँगा। मुझे सदैव मुर्दों की तरह अपनी जिन्दगी के दिन व्यतीत करने पड़ेंगे क्योंकि अब मुझे अच्छी तरह से मालूम हो गया कि भैयाराजा अथवा प्रभाकरसिंह से विरोध रख कर मैं कदापि इस संसार में सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

इन्हीं सब बातों को सोचता विचारता भूतनाथ सिर झुकाए चला जा

मेघ० । निःसन्देह तुम्हारा खयाल ठीक है । तो हम लोग साथ चलने को तैयार हैं, उठो, क्योंकि सन्ध्या होने में ज्यादा विलम्ब नहीं है ।

इतना कह कर मेघराज अपनी जगह से उठे और सबको साथ ले भूतनाथ के पीछे पीछे जमनिया की तरफ रवाना हुए । भैयाराजा इत्यादि घोड़ों पर सवार थे और भूतनाथ तथा उसके साथी पैदल ही घोड़ों के साथ साथ जा रहे थे । अभी ये लोग ज्यादा दूर न गये थे कि सामने दो सवार आते दिखाई पड़े जिन्हें देख कर सब रुक गये और उसी तरफ देखने लगे । पहिले तो गर्द के सबब कुछ जान न पड़ा परन्तु करीब आ जाने पर मालूम हुआ कि ये लोग भी अपने ही साथी अर्थात् इन्द्रदेवजी के भेजे हुए वे ही शागिर्द हैं जिनको उन्होंने मेघराज आदि की मदद को भेजा था । जब प्रभाकरसिंह ने पारस इत्यादि भूतनाथ के शागिर्दों को जैपाल की गठड़ी लिये जाते देखा था उस समय भी ये दोनों सवार उनके साथ ही थे । उनको अलग छोड़ कर प्रभाकरसिंह आगे बढ़ आये थे तथा भूतनाथ के शागिर्दों को बेकाम करने बाद जैपाल को अपने साथ ले जा कर इन्हीं दोनों सवारों के सुपुर्द कर स्वयम् भूतनाथ के पास लौट गये थे और वे दोनों उसे ठिकाने पहुँचा अब लौट रहे थे ।

दूसरा बयान

जमनिया की तरफ जाते जाते यकायक भूतनाथ सोचने लगा कि अजायबघर में जाने अथवा भैयाराजा की स्त्री को छुड़ाने के पहिले अगर मैं रामेश्वरचन्द से मिल लूँ तो बेहतर होगा क्योंकि इससे एक तो जो कुछ नई बात मेरी गैरहाजिरी में वहाँ हुई होगी सो मालूम हो जायगी दूसरे जैपाल के यकायक गायब हो जाने पर यदि दारोगा ने अपने कैदियों को भेद खुल जाने के डर से अजायबघर से निकाल कर कहीं और हटाया होगा तो यह बात भी रामेश्वरचन्द से कदापि छिपी न होगी क्योंकि एक

तो वह यों ही अपनी बुद्धिमानी से चारो तरफ की आहट रखता है दूसरे इस बार तो चलते समय मैं ताकीद भी कर आया था कि इन बातों की टोह में जरूर रहना, कहीं ऐसा न हो कि दारोगा उन कैदियों को मार डाले या किसी ऐसी जगह ले जा कर कैद कर दे जहां से पता लगाना कठिन हो जाय। इसके अतिरिक्त अब मुनासिब यही है कि मैं उस दूकान को भी हटा दूँ क्योंकि जब मैं दारोगा की मर्जी के विरुद्ध काम करने को तैयार हो गया हूँ अर्थात् उसके कैदियों को छुड़ाने की फिक्र में पड़ गया हूँ तो मेरी दारोगा से दुश्मनी हुए बिना कदापि न रहेगी। और यह असम्भव है कि ऐसा करके भी मैं उससे दोस्ती कायम रख सकूँ क्योंकि दुश्मनी साबित हो जाने के बाद हरनामसिंह की जुबानी सब हाल सुन कर दारोगा को अवश्य इस बात का विश्वास हो गया होगा कि जमनिया वाली ऐयारी की दूकान का कर्ता-धर्ता भूतनाथ ही है, और ऐसी अवस्था में वह मेरे साथियों की गिरफ्तारी तथा मेरी दूकान को मटियामेट करने की फिक्र में भी जरूर गया होगा अस्तु उस दूकान को उठा लेना ही मुनासिब है। अफसोस ! मैं कदापि दारोगा के कैदियों को न छुड़ाता और न ऐसे समय में जब कि बहुत कुछ फायदे की उम्मीद है उससे दुश्मनी ही पैदा करता परन्तु क्या करूँ बिना ऐसा किये न तो मैं भैयाराजा अथवा इन्द्रदेव को मुँह दिखाने योग्य रहूँगा और न दयाराम ही का पता लगा सकूंगा क्योंकि किसी और रीति से दयाराम का हाथ लगना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। सच तो यों है कि बिना उनको खोज निकाले मेरे सर से कलंक का टीका न छूटेगा और न मैं कभी स्वतंत्रता से इस दुनिया में काम ही कर सकूँगा। मुझे सदैव मुर्दों की तरह अपनी जिन्दगी के दिन व्यतीत करने पड़ेंगे क्योंकि अब मुझे अच्छी तरह से मालूम हो गया कि भैयाराजा अथवा प्रभाकरसिंह से विरोध रख कर मैं कदापि इस संसार में सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

इन्हीं सब बातों को सोचता विचारता भूतनाथ सिर झुकाए चला जा

रहा था। जब सब लोग अजायबघर के पास पहुच गए तब मेघराज ने उसे पुकार कर कहा, "कहो भूतनाथ! किस खयाल में निमग्न हो जो तुम्हें इधर उधर का कुछ ध्यान ही नहीं है? लो अजायबघर के पास तो आ गये।"

भूत०: (चौंक कर) निःसन्देह मै इस समय कुछ ऐसा बेसुध हो रहा था कि मुझे इस बात की कुछ खबर ही न थी कि कहाँ आ पहुँचा, मगर हम लोग इधर मैदान में आ गए हैं, कदाचित् दारोगा का कोई आदमी घूमता फिरता निकल आया तो मुश्किल होगी। (झाड़ियों की तरफ इशारा करके) आइये इस तरफ आड़ में हो रहें।

मेघराज०। (घोड़े की बाग मोड़ कर) अच्छा चलो उधर ही चलें मगर यह तो बतलाओ कि तुम रास्ते भर सोच क्या रहे थे?

भूत०। चलिये आड़ में पहुँच कर बतला दूँगा।

सब लोग झाड़ी के पास पहुँच घोड़ों से उतर पड़े और उनको पेड़ों से बाँधा, इसके बाद भूतनाथ ने कुछ घटा बढ़ा कर जो कुछ उसने सोचा था इन लोगों से कह सुनाया और उसके विचारों को भैयाराजा इत्यादि ने भी पसन्द किया।

कुछ देर सुस्ताने बाद इन लोगों को वहीं छोड़ भूतनाथ रामेश्वरचन्द की दूकान की तरफ चला। वहाँ पहुँच कर वह अपना परिचय देने तथा उसका लेने के बाद एकान्त वाले बैठने के कमरे में चला गया और हाल-चाल पूछने लगा।

भूत०। कहो कोई नई बात तो नहीं है?

रामेश्वर०। है क्यों नहीं! दारोगा ने कैदियों को अपने मकान से निकाल कर अजायबघर में भेजवा दिया है।

भूत०। यह तो मुझे मालूम है, और कुछ?

रामेश्वर०। हाँ, इसके अतिरिक्त एक बात और भी है जिसको मैं आपके कान ही में कहूँगा।

भूत० । (मुस्कुरा कर) मालूम होता है कि वह कोई बड़ी ही गुप्त बात है जिसको तुम इस तरह छिपा कर कहोगे !!

रामेश्वर० । जी हाँ, वह बात ऐसी ही गुप्त है !!

भूत० । (अपने कान को रामेश्वरचन्द के मुँह के पास ले जाकर) लो कहो परन्तु जल्दी करो क्योंकि समय बहुत कम है और काम बहुत करना है । भैयाराजा इत्यादि बड़ी उतावली से मेरी राह देख रहे होंगे ।

रामेश्वरचन्द देर तक भूतनाथ के कान में मुँह लगाये धीरे धीरे कुछ कहता रहा और इस बीच में भूतनाथ ने भी कई बार बहुत ही धीरे धीरे उससे कुछ पूछा या कहा । रामेश्वरचन्द ने भूतनाथ से क्या कहा यह तो मालूम नहीं हुआ परन्तु भूतनाथ के चेहरे पर गौर करने से यह अवश्य जान पड़ता था कि इस समय वह आश्चर्य और विचार के समुद्र में गोते खा रहा है ।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा और दोनों में कोई बातचीत न हुई, इसके बाद भूतनाथ ने ऊँची साँस लेकर रामेश्वरचन्द से कहा :—

भूत० । तुम्हारी बातों को सुन कर तो मेरा जी यही चाहता है कि इसी समय शिवदत्तगढ़ जाऊँ और जो कुछ मेरे किये हो सके करूँ परन्तु लाचार हूँ कि भैयाराजा इत्यादि के साथ रह कर आज जो काम मैं किया चाहता हूँ उसमें भी ज्यादा विलम्ब करना बहूरानी की जान के साथ दुश्मनी करना होगा । यद्यपि मुझे अभी तक इस बात का विश्वास नहीं होता कि जो कुछ तुमने सुना अथवा अभी अभी मुझसे कहा है वह सही है तथापि उन मूजियों के हाथ से ऐसा होना असम्भव नहीं है और इसीलिये इस खबर को सच मान कुछ न कुछ उद्योग करना भी आवश्यक है ।

रामेश्वर० । जरूर, जरूर, मगर एक ही साथ दोनों काम कैसे हो सकता है ।

भूत० । हाँ, यही तो कठिनता है ।

रामेश्वर० । आवश्यक दोनों ही काम जान पड़ते हैं ।

भूत० । निःसन्देह ऐसा ही है । लेकिन तब यह एक बात और भी है कि इस काम को जिसके लिये तुमने अभी अभी मेरे कान में कहा है मैं स्वयं किया चाहता हूँ और यह नहीं चाहता कि किसी दूसरे की मदद से इसको करूँ या किसी गैर को इस बात की खबर तक भी होने दूँ ।

रामेश्वर० । ऐसा क्यों ?

भूत० । इसलिये कि इस काम को पूरा कर देने से एक बड़े भारी अहसान का बोझ मेरे सर से उतर जायेगा ।

रामेश्वर० । बिल्कुल सही है, मगर भैयाराजा वाला काम भी तो बहुत जरूरी है और उनका भी अहसान आप पर कम नहीं है ! खैर जैसा उचित जान पड़े कीजिये, क्योंकि इस समय दोनों ही आपके अख्तियार में है चाहे भैयाराजा का अहसान उतारिये चाहे प्रभाकरसिंह का काम कीजिये ।

भूत० । ठीक है, परन्तु मैं यह भी चाहता हूँ कि दोनों बातों में नाम भी मेरा ही हो । (कुछ सोच कर) अफसोस यह कि तुम खाली नहीं हो ।

रामेश्वर० । क्यों ! मुझे करना ही क्या है ?

भूत० । सो भी जल्द मालूम हो जायगा ।

रामेश्वर० । यदि आपने कोई काम मेरे लिये सोच रक्खा है तो उस पर इस दूकान के किसी दूसरे आदमी को मुकर्रर कर दीजिये और मुझसे जो काम लेना चाहें लीजिये, मैं हर तरह से तैयार हूँ ।

भूत० । परन्तु वह काम कोई दूसरा नहीं कर सकता क्योंकि सच बात तो यह है कि मुझे तुम्हारी दूकान के नौकरों पर भरोसा नहीं है ।

इतना कह भूतनाथ चुप हो गया और कुछ सोचने लगा ।

इसी समय भैयाराजा के दोस्त नन्दरामजी एक देहाती की सूरत में वहाँ आ पहुँचे और रामेश्वरचन्द को इशारे से अपना परिचय देने बाद एक कुर्सी पर बैठ गये । भूतनाथ उनको देख कर रामेश्वरचन्द का मुँह ताकने लगा और कुछ पूछने ही को था कि रामेश्वरचन्द ने कहा :—

रामेश्वर० । आपको ताज्जुब हुआ होगा कि यह कौन आदमी हैं जो बिना हमारी आज्ञा के इस जगह इस तरह बेधड़क चले आये ।

भूत० । निःसन्देह ऐसा ही है क्योंकि मैं इनको बिल्कुल नहीं पहिचानता ।

रामेश्वर० । नहीं नहीं, आप इनको खूब जानते हैं, ये भैयाराजा के दिली दोस्त नन्दरामजी हैं ।

भूत० । (खुश होकर नन्दराम से) वाह वाह ! आप खूब मौके पर आये !! मगर पहिले यह कहिये कि यहा क्यों आए और अपनी सूरत क्यो बदले हैं ?

नन्दराम० । इसको तुम्हारे शागिर्द रामेश्वरचन्द अच्छी तरह जानते हैं ।

इतना सुन भूतनाथ ने अपने शागिर्द की तरफ देखा जिसने उनका सब हाल अर्थात् भैयाराजा से बिदा हो यहाँ उनका आना और सूरत बदल कर दारोगा के आदमियों को फाँसने की फिक्र में घूमना इत्यादि कह सुनाया, जिसे सुन भूतनाथ नन्दराम से बोला—

भूत० । तो यह कहिये कि आप भैयाराजा की मदद पर घूम रहे हैं ?

नन्दराम० । जी हाँ ।

भूत० । तो क्या आपको यह भी मालूम है कि मैं इन दिनो भैयाराजा अथवा मेघराज इत्यादि का साथ दे रहा हूँ ?

नन्दराम० । अवश्य मालूम है, यदि ऐसा न होता तो मै तुम्हारे शागिर्द से अथवा तुमसे मिलता ही क्यों ?

भूत० । तो क्या आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं या मै जो सलाह दूँ उसके मुताबिक एक ऐसा काम कर सकते हैं जिसमें भैयाराजा और प्रभाकरसिंह दोनों ही का भारी लाभ हो ।

नन्दराम० । बेशक ! अवश्य !!

भूतनाथ० । तो आपको इस समय मेरी इच्छानुसार एक काम करना पड़ेगा ।

नन्दराम० । यदि उस काम से भैयाराजा अथवा प्रभाकरसिंह इत्यादि का कोई हित होता हो तो जरूर करूँगा ।

भूत० । राम राम, भला आप क्या सोचते हैं कि मैं कोई ऐसा काम करने को आपसे कहूँगा जिसमें आपके मित्रों की हानि होती हो ! नहीं, कदापि नहीं, यह तो वह काम है जिसके लिये वे लोग बहुत ही व्याकुल हो रहे हैं ।

नन्दराम० । यदि ऐसा हो तो जरूर कहिये, मै हर तरह से तैयार हूँ ।

इसके जवाब में कई बहुत ही जरूरी और आवश्यक बातों को बताने के बाद भूतनाथ ने कहा, "इन्हीं सब कामों के लिए इस समय मै भैयाराजा मेघराज और प्रभाकरसिंह को अजायबघर के पास की झाड़ियों में छोड़ यहाँ आया था और मेरा यही इरादा था कि रामेश्वरचन्द से सब जानकारी हासिल करके वापस जाऊँगा और तब सबको साथ लिये अजायबघर में जाकर कैदियों के छुड़ाने का उद्योग करूँगा । मगर यहाँ एक नया काम ऐसा निकल आया जो बिना मेरे किसी दूसरे से हो नहीं सकता और उधर किसी दूसरे से उस काम के लिए भी नहीं कहा सकता हूँ, इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अजायबघर की ताली मुझसे लेकर और मेरी सूरत बन कर भैयाराजा इत्यादि के पास लौट जाइए और जब तक मै वापस न आऊँ मेरी ही सूरत में उनके साथ रह कर काम कीजिए । ईश्वर ने चाहा तो कल किसी समय मैं आपसे मिलूँगा । इसके अतिरिक्त जो कुछ वहाँ आपको करना है वह भी मैं बतला देता हूँ, मगर कृपा करके इतना जरूर कीजिएगा कि उनको किसी तरह आपका सच्चा हाल मालूम न होने पावे और वे लोग आपको भूतनाथ ही समझते रहें । मेरा यह मतलब कदापि नहीं है कि हम लोग इस भेद को सदैव के लिए छिपाए रखेंगे बल्कि दस ही पाँच दिन में मेरा वह काम हो जायगा जिसके लिए मैं

इस समय यहाँ से जा रहा हूँ तो स्वयम् इस बात को मैयाराजा इत्यादि पर जाहिर करूँगा और यह भी कह दूँगा कि मैंने नन्दरामजी से पहिले ही वादा करा लिया था जिससे वह अपने को आप लोगों पर प्रगट न कर सके।"

और भी बहुत सी बातें नन्दराम को बताने और समझाने के बाद भूतनाथ रामेश्वरचन्द की तरफ मुखातिब हुआ और जो कुछ अन्य घटनाएँ इधर आज कल में हुई थीं उन्हें बयान करके बोला, "इस समय मेरे यहाँ आने का कारण केवल यही था कि इस दूकान का नाम निशान मिटा सारा असबाब तुम्हारे हवाले कर कहीं भेजवा दूँ और तब निश्चिन्त होकर जो कुछ करना है करूँ अस्तु तुम्हें चाहिए कि जहाँ तक जल्द मुमकिन हो इस काम से छुट्टी पा जाओ।"

भूतनाथ ने गुप्त रीति से रामेश्वरचन्द्र को बहुत सी बातें और भी समझाईं और तब नन्दराम को साथ ले दूकान के बाहर निकला और तेजी के साथ अजायबघर की तरफ रवाना हुआ। उस समय रात लगभग एक पहर के जा चुकी थी और सड़कों पर सन्नाटा छा चुका था। लगभग दो सौ कदम जाने बाद ये लोग एक गली में से होकर चलने लगे। जब उस जगह पहुँचे जहाँ गली खतम होकर एक दूसरी सड़क से मिली थी तो इनको "मैयाराजा" शब्द सुनाई पड़ा जिसे सुन ये दोनों ठिठक गए और आड़ दे सड़क की तरफ देखने लगे। दो आदमी गली के मोड़ पर खड़े बातें कर रहे थे जिनको यद्यपि भूतनाथ और नन्दराम पहिचान तो न सके मगर जो कुछ बात चीत हुई उसे जरूर सुनते रहे। थोड़ी ही देर बाद किसी को अपनी तरफ आते देख वे दोनों आदमी अलग हो गए मगर देर हो जाने के खयाल से भूतनाथ और नन्दराम ने उनका पीछा न किया और अजायबघर की तरफ तेजी से रवाना हुए।

इस वक्त भी नन्दराम और भूतनाथ चुप न थे बल्कि समयानुकूल बहुत सी बातें रास्ते भर होती गईं। जब दोनों उस जगह के पास पहुँचे

जहाँ भैयाराजा मेघराज और प्रभाकरसिंह इत्यादि बैठे भूतनाथ का इन्तजार कर रहे थे तो भूतनाथ रुक गया और जल्दी जल्दी अपनी पोशाक नन्दराम को देने और उनका कपड़ा लेकर आप पहिनने लगा। थोड़ी ही देर में कपड़ों का अदलबदल समाप्त हो गया। इसके बाद भूतनाथ ने अपने हाथ से उनकी सूरत अपनी सी बनाई और तब इशारे से उस झाड़ी की तरफ बतला जिसमें भैयाराजा वगैरह छिपे बैठे थे दूसरी तरफ का रास्ता लिया।

पाठकों को मालूम है कि भूतनाथ ने नन्दराम से वादा करा लिया है कि अपने को प्रगट न करके भूतनाथ की ही सूरत में भैयाराजा इत्यादि के साथ रह कर काम करेंगे, इसलिए हम भी नन्दरामजी को नकली भूतनाथ कह कर सम्बोधन करेंगे, हाँ आगे चलकर जब असली भूतनाथ आ जायगा तो दोनों ही अपने अपने असल नाम से पुकारे जायँगे।

तीसरा बयान

नागर के मकान से निकलकर अर्थात् दारोगा से बिदा होकर जब भूतनाथ पुनः रामेश्वरचन्द की दूकान की तरफ चला गया तो दारोगा के दिल में तरह तरह के खयालात पैदा होने और मिटने लगे। वह घबरा कर नागर से अलग एक दूसरे कमरे में जाकर बैठ रहा और झुकी हुई गर्दन को हाथ का सहारा देकर तरह तरह की बातें सोचने लगा, साथ ही अपनी अवस्था पर ध्यान देकर वह एक बार काँप उठा, उसका सर घूमने लगा और वह पागलों की तरह इधर उधर देखता हुआ आप ही आप यों बुदबुदाने लगा—'अफसोस, मैं बेढब फँस गया! एक तो सभी प्रकार से स्वतंत्र होने पर भी यहां से दिन के समय बाहर जाने से रहा, दूसरे वह बेईमान साधू और भी उल्लू बना गया! न मालूम वह जयपाल बना हुआ आदमी कौन था और उन तालियों की मदद से जिनमें अजायब-

घर की भी कुंजी है न जाने क्या कार्रवाई करेगा और मेरे कितने गुप्त भेदों को जान कर मेरी बनी बनाई बात मटियामेट कर देगा। मुझे सबसे ज्यादा चिन्ता तो भैयाराजा की स्त्री और प्रभाकरसिंह के माता पिता की है जिनका छुटकारा केवल मेरी बदनामी ही का कारण नहीं बल्कि मेरी जान का भी घातक होगा। हाय! मैं किसी तरफ का न रहा। भला महाराज क्या कहते होंगे और मेरे लिये कितने दुःखी हो रहे होंगे? मुझे भूतनाथ पर भरोसा करना चाहिये या नहीं? क्या वह मुझे धोखा देगा और दुश्मन से मिलकर कोई नया गुल खिलावेगा? (कुछ रुक कर) नहीं नहीं, वह ऐसा न करेगा, क्योंकि वह बड़ा ही लालची है और मैंने उसे बहुत कुछ देने का वादा किया है।"

इसी तरह की बातें सोचते और चिन्ता करते करते सन्ध्या हो गई। सूर्य्य भगवान इस दुनिया को छोड़ किसी दूसरी ही दुनिया को अपनी चमक दमक से शोभायमान करने के लिये चले गये। ऐसे समय किसी के पैर की आहट पा दारोगा चौंक पड़ा और जब उसने सिर उठा कर देखा तो नागर पर नजर पड़ी जो उसे चैतन्य करने के लिये आ रही थी।

दारोगा के दिल की इस समय क्या अवस्था थी इसका कहना बड़ा ही कठिन है! यद्यपि अब सन्ध्या हो जाने के कारण इस समय बाहर निकल जाना उसके लिये कोई कठिन बात न थी परन्तु दिल की परेशानी और घबड़ाहट ने मानो उसकी सभी ताकत छीन ली थी और उसके लिए पैर उठाना तक मुश्किल हो रहा था तथापि उसने किसी तरह अपने को सम्हाला और नागर से बिना कुछ कहे सुने या बातचीत तक किये उसके मकान के पिछवाड़े की तरफ वाले चोर दर्वाजे की राह बाहर निकल गया।

भूतनाथ को तो दारोगा ने अपनी समझ में ठीक कर लिया था बल्कि यों कहना चाहिए कि अपना दोस्त बना लिया था मगर उससे बिदा होकर भूतनाथ ने क्या किया और अब क्या करेगा इसकी भला दारोगा को क्या

खबर है ? वह तो इस समय केवल इस सोच में निमग्न है कि राजा साहब के पूछने पर अपनी अनुपस्थिति का कारण क्या कहेगा और अजायब घर में रक्खे हुए कैदियों का, जिनका निकल जाना उसके लिये बड़ा ही दुःखदाई होगा, क्या प्रबन्ध करेगा ?

इन्हीं बातों पर विचार करता हुआ दारोगा चुपचाप सिर झुकाये चला जा रहा था कि यकायक कोई उचित उपाय सूझ जाने पर वह उछल पड़ा और थोड़ी देर के लिये पिछली बातों को बिल्कुल भूल गया। एक गली में जिधर रोशनी न थी जाकर उसने कमर से खञ्जर निकाल कई जख्म अपने बदन पर बनाये और निकले हुए लहू से अपने कपड़ों को तर कर वह तेजी के साथ खास बाग की तरफ रवाना हुआ।

कुछ देर बाद जब वह खास बाग में पहुँचा तो सीधा महाराज के पास गया। महाराज उस समय अपने मुसाहिबों से उसी के विषय में कुछ बातचीत कर रहे थे कि दारोगा उनके सामने जा पहुँचा और पैरों पर गिर कर रोने लगा। राजा साहब उसकी यह दशा देख कर आश्चर्य से बोले, "तुम आज दिन भर कहाँ थे और यह तुम्हारी क्या अवस्था हो रही है ?"

दारोगा०। (रूमाल से आँसू पोछ कर) मेरी इस दुर्दशा के कारण आपके प्यारे भाई साहब भैयाराजा ही हैं जिन्होंने एक बार पहिले जूतों का हार गले में डाल कर और कान काट कर मेरी दुर्गति की थी और आज फिर मेरी यह गति बनाई है। न मालूम उन्हें मुझे दुःख देने में क्या मिलता है ? क्या उनके तकलीफ देने से मैं अपने धर्म्म से डिग जाऊँगा ? नहीं, कदापि नहीं ! यदि वह जमानिया का राज्य लिया चाहते हैं और आपको अथवा कुँअर साहब को मार कर अपना कलेजा ठण्ढा किया चाहते हैं तो क्यों नहीं आपके सन्मुख आकर फैसला कर लेते ? चाहे मेरी जान ही क्यों न जाती रहे परन्तु मुझसे यह कब हो सकता है कि जिसके नमक से अपना रोम रोम भरा हुआ है उसके गले पर अपने हाथ से

छुरी फेरूँ ! (रो कर) अफसोस, मेरी यह सब दुर्दशा आप ही की बदौलत है, न मैं आपका पक्षपाती होता और न यों अपनी दुर्गति कराता। इस जिन्दगी से तो मौत ही अच्छी है ! मगर भैयाराजा ऐसा करते क्यों हैं ? यदि मैं ही उनके रास्ते का काँटा हूँ और उनके काम में बाधक हूँ तो क्यों नहीं पहिले मुझी को मार कर तब आप पर हाथ साफ करते ! हाय ! मैं क्या करूँ, अपनी आदत से मजबूर हूँ, नहीं तो भैयाराजा का साथ देने में मुझे इस समय से ज्यादा आराम और इज्जत मिलना सम्भव है। अफसोस ! कोई ऐसा भी नहीं है जो उनको यह समझा देता कि बिना दारोगा को जान से मारे तुम्हारा काम सिद्ध न होगा और उसके जीते जो तुम्हें जमानिया का राज्य न मिल सकेगा, जिसमें वे मुझे मार डालें और मैं धर्म सहित इस जञ्जाल से छूट कर अपने शुभ कर्मों का फल स्वर्ग में चल कर भोगता हुआ.....

राजा० । (दारोगा की बेतुकी बातें सुन बात काटते हुए) खैर साफ साफ कुछ कहो तो सही कि क्या मामला है ? भैयाराजा तुम्हें कहाँ मिले और तुम्हारी यह दशा उन्होंने क्यों बनाई ? यदि उन्हें राज्य ही की अभिलाषा है तो वे मेरे सामने क्यों नहीं आते ? मैंने तो पहिले ही कह दिया था कि तुम राजपाट ले लो और मुझे छोड़ दो, मैं दारोगा को अपने साथ ले किसी जङ्गल में जाकर भगवत भजन करूँगा मगर न मालूम किस कारण उन्होंने उस समय स्वीकार न किया और अब इस प्रकार तुम्हें दुःख दे दे कर मेरे दिल को कुढ़ाते हैं !!

दारोगा० । मैं कल शाम को उस नई ऐयारी की दूकान पर जिसका कई बार आपसे जिक्र कर चुका हूँ बैठा हुआ था और जैपालसिंह भी मेरे साथ थे रामेश्वरचन्द से बातें करते करते बहुत देर हो गई। जब मैं वहाँ से उठा तो ग्यारह बज गए थे। आगे आगे मैं जा रहा था और जैपाल मेरे पीछे, जब मैं सुन्दरसिंह के दूकान वाली मोड़ पर पहुँचा जहाँ से नदी की तरफ एक गली घूमी है तो जैपाल के धक्के से मैं गिरने गिरने को हो

गया। पीछे मुड़ कर देखा तो जैपाल सड़क से उठ कर अपने बदन की धूल साफ कर रहा था। मैंने उससे पूछा, "तुम कैसे गिर पड़े ? तुम्हारे ही धक्के से मैं भी गिरने से बच गया ! कुछ नशा तो नहीं किया है ?" उसने कहा, "क्या आप हँसी करते हैं ! मैं ऐसा पीने वाला नहीं हूँ जो रास्ते में गेंद की तरह लुढकता फिरूँ ! मैं बेफिक्री से चला आ रहा था कि किसी ने पीछे से धक्का दिया जिससे मैं जमीन पर गिर पड़ा। वह देखिए मोड़ पर कोई खड़ा है, शायद उसी की यह कार्रवाई है।" इतना सुन मैंने गली की तरफ देखा। एक आदमी सर से पैर तक अपने को स्याह लबादे में छिपाए खड़ा था जिसके मुँह पर नकाब पड़ा हुआ था मैंने उसे ललकारा और खञ्जर निकाल उसकी तरफ लपका मगर मुझे बढ़ता देख वह फुर्ती से नदी की तरफ भागा। हम दोनों ने भी उसका पीछा किया मगर अभी दस ही बीस कदम आगे बढे थे कि किसी ने कमन्द के झटके से मुझे जमीन पर गिरा दिया और मेरे गिरते ही जबर्दस्ती कुछ सुँघा कर बेहोश कर दिया। नहीं जानता कि मेरे बेहोश होने बाद जैपाल पर क्या गुजरी या उसके साथ क्या हुआ। सूर्य्य उदय होने के समय जब मुझे होश आया तो मैंने अपने को एक अन्धेरी कोठरी में पाया जिसके दर्वाजे के छेदों की राह रोशनी छन छन कर अन्दर आ रही थी और सुबह होने की खबर दे रही थी। उन छेदों से झाँक कर जब मैंने बाहर की तरफ देखा तो मैदान और जगल के सिवाय और कुछ न दिखलाई पड़ा। जब बहुत ध्यान दिया तो मालूम हुआ कि यह जगह रूरा के जंगल के पास है। दो पहर तक मैं उसी कोठड़ी में पड़ा रहा, कोई आदमी वहाँ नजर न आया और न किसी के आने की आहट मिली, दोपहर ढलने बाद किसी ने दर्वाजे का कुण्डा खोला। मैंने देखा तो भैयाराजा पर नजर पड़ी। मैंने पूछा, "कहिए मुझे यहाँ किस लिए लाए हैं और जैपाल कहाँ हैं ?" वे कहने लगे, "इसके पहिले कि मैं तुम्हारी बातों का जवाब दूं तुम्हारे खून की धारा बहाऊँगा, नहीं तो तुम यह प्रतिज्ञा करो कि राजा साहब और

कुँवरजी को मार कर मुझे जमानिया का राजा बनाओगे। इसके अतिरिक्त तुम्हें यह भी बताना पड़ेगा कि बहुरानी कहाँ है और तुमने उसे कहाँ रखा है!" इसके जवाब में मैंने कहा, "राजा साहब की नेकियों से मैं इस कदर दबा हुआ हूँ कि मुझसे यह काम कदापि नहीं हो सकता और न मुझे बहुरानी की ही खबर है। आप मुझे नाहक ही बदनाम करते हैं और मुझ बेकसूर को बार बार दुःख देकर अपने सर पर पाप चढ़ाते हैं। कृपा करके मुझे छोड़ दीजिए नहीं तो राज के काम काज का बड़ा हर्ज होगा।" यह सुन वह और भी क्रोधित हुए और मुझे भला-बुरा कहते हुए तलवार निकाल मारने को दौड़े। मैं भी अपनी जान बचाने के लिए भुलावा देकर कोठरी के बाहर निकल आया और भागना चाहा मगर उन्होंने ऐसा न करने दिया अस्तु मुझे भी लड़ना पड़ा। भैयाराजा ने मेरे मारने में कुछ न उठा रक्खा मगर मैं बराबर उनके वारों ही को बचाता रहा और एक दफे भी अपनी तरफ से वार न किया नहीं तो भैयाराजा की क्या ताकत थी जो अकेले मेरे सामने ठहरते। मैं एक ही हाथ में उनका काम तमाम कर दिए होता। खैर यों ही पैंतरा बदलते और उनके वार को बचाते करीब आध घण्टे के गुजर गया और मुझे कई जख्म भी लगे जिससे मेरी हालत खराब होने लगी। यदि ज्यादा देर तक लड़ाई होती तो मैं जरूर मारा जाता मगर उसी समय अकस्मात् कई सवार पश्चिम की तरफ से आ गए और ललकार कर भैयाराजा पर टूट पड़े। मैं इस मौके को गनीमत जान भाग निकला और आप के सामने आने के पहिले एक मिनट के लिए भी कहीं न रुका।

इस बिल्कुल झूठ मगर चालाकी से भरी हुई बात ने राजा साहब के दिल पर बड़ा असर डाला। वह उसकी बातें सुन और भैयाराजा की बदनीयती पर ध्यान दे क्रोध से काँपने लगे, मगर कर ही क्या सकते थे? आखिर दारोगा को समझा बुझा और दिलासा दे बिदा किया और स्वयं महल में चले गये।

अपने चाचा भैयाराजा के बारे में यह खबर सुन कि कई सवार उन

पर टूट पड़े कुँवर गोपालसिंह को बड़ा दुःख हुआ। उन्हें इस बात के जानने की बहुत अभिलाषा हुई कि उन सवारों और भैयाराजा में कैसी निपटी मगर दारोगा के चले जाने के कारण कुछ जान न सके पर साथ ही अपने चिन्ता के भाव को भी उन्होंने मुश्किल से छिपाया। दूसरे उन्हे यह भी सन्देह हुआ कि शायद ये बातें दारोगा बिल्कुल झूठ कह रहा हो मगर जो कुछ भी हो, इन्द्रदेव की बातें उन्हे भूली न थीं और साथ ही अपने पिता की मर्जी के विरुद्ध भी दारोगा को बुरा भला कहना उचित न समझते थे इसलिये चुपचाप मन मार कर रह गये।

जब दारोगा अपनी बीती बयान कर चुका और राजा साहब उसको बिदा कर महल में चले गये तो कुँवर साहब अपने कमरे में आये और पलङ्ग पर लेट कर करवटें बदलने तथा तरह तरह के विचारो में गोता खाने लगे, यहाँ तक कि रात आधी से ज्यादा बीत गई मगर भैयाराजा के ध्यान में उन्हे बिल्कुल नींद न आई। जब किसी तरह उलझन कम न हुई तो वे घबरा कर पलँग से उठ बैठे और कपड़े पहिनने तथा बदन पर हर्बे लगाने बाद दबे पाँव कमरे से बाहर हो बाग में आये और चोर दर्वाजे की राह बाहर निकल पैदल ही एक तरफ को रवाना हुए।

चौथा बयान

अपनी सूरत बदल कर जब नन्दराम उस झाड़ी के पास गये जहाँ भैयाराज मेघराज प्रभाकरसिंह उनके दोनो साथी तथा भूतनाथ के तीनो शागिर्द इत्यादि थे उस समय रात के दस बज चुके थे और सभी भूतनाथ के इन्तजार में घबरा रहे थे। पैरों की आहट पाते ही भैयाराजा ने मेघराज से कहा, "देखो किसी के पैर की आहट मालूम होती है, शायद भूतनाथ आ रहा है।"

मेघराज०। (खड़े हो और किसी को अपनी ओर आते देख) कौन है? भूतनाथ?

नकली भूतनाथ० जी हाँ, मैं ही हूँ।

मेघराज० । आओ आओ, हम लोग देर हो जाने के कारण घबरा रहे थे। कहो क्या खबर लाये ? कोई नई बात तो नहीं है ?

नकली भूत० । (पास आ कर) जी कुछ भी नहीं।

भैयाराजा० । उस बेईमान दारोगा से भी मिले थे ?

नकली भूत० । जी नहीं, इरादा तो था मगर देर हो जाने के कारण उधर न गया, दूसरे मुझे विश्वास था कि वह अपनी खुशी से बहुरानी को कदापि मेरे हवाले न करेगा बल्कि कोई न कोई बहाना निकाल कर टाल देगा। इसके अतिरिक्त यदि उसके पास जाता तो यह जरूर था कि यहाँ आने के लिये मुझे जल्दी करनी पड़ती ऐसी अवस्था में सम्भव था कि उसे मेरी तरफ से कुछ खुटका हो जाता और वह किसी को टोह लेने के लिये मेरे पीछे रवाना करता। हाँ बाजार में दो आदमी जो शायद दारोगा ही के नौकर थे एक तरफ एकान्त में खड़े कुछ बातें कर रहे थे, उनकी बातचीत मैंने जरूर सुनी। जान पड़ा कि दारोगा ने नागर के मकान से लौट आकर राजा साहब के सामने फिर वही स्वांग रचा है अर्थात् अपने गायब होने की वजह आपको बतलाया है और यह कहा है कि भैयाराजा ने मुझे गिरफ्तार कर लिया था और जमानिया का राज लेने के लिये मुझे डरा धमका कर अपना पक्षपाती बनाया चाहते थे तथा मेरे इन्कार करने पर मुझे मार डालना चाहा बल्कि कुछ जख्मी भी किया मगर मैं अपनी चालाकी से किसी तरह बच आया।

भैयाराजा० । (क्रोध में आकर) हाँ, वह कम्बख्त मुझे यों बदनाम करता है !! खैर कुछ परवाह नहीं। अच्छा, भाई साहब ने इस पर क्या कहा ? उनको तो जरूर उसकी बातों पर विश्वास हो गया होगा बल्कि उन्होंने मुझको बुरा भला भी कहा होगा !!

नकली भूत० । यह तो नहीं मालूम क्योंकि उन दोनों में केवल इतनी ही बात होने पाई थी कि किसी को आते देख वे दोनों अलग हो

गये और देर हो जाने के कारण मैं भी उनका पीछा करना उचित न जान कर इधर चला आया, परन्तु यह तो निश्चय ही है कि राजा साहब ने उसी का पक्ष लिया होगा क्योंकि उसने पूरी तौर से उनको मुट्ठी में कर लिया है और जिधर चाहता है कान पकड़ कर घुमाता फिराता है।

भैया०। निःसन्देह यही बात है! उस दफे भी ऐसा ही हुआ था, मेरी सच्ची बातों को महाराज ने बिल्कुल गप्प और बनावटी समझा और उसकी सरासर झूठ बातें ब्रह्मवाक्य मान ली थीं। अफसोस!!

नकली भूत०। खैर इस समय इन विचारों को छोड़ हम लोगों को पहिले उस काम में लगना चाहिए जिसके लिए यहाँ तक आये हैं।

भैया०। अच्छी बात है, चलो मैं तैयार हूँ।

नकली भूत०। (प्रभाकरसिंह से) यदि आप लोगों में से कोई आदमी दारोगा की सूरत में हो जाय तो अच्छा है। ऐसा करने से हमारा बहुत काम निकलेगा।

प्रभाकर०। हाँ, यह बात तो तुम ठीक कहते हो, अच्छा मैं ही दारोगा बनूँगा।

भैया०। (दिल्लगी के ढंग से) पहिले नाक कान तो कटवा लो!

प्रभाकर०। (मुस्कुरा कर) नहीं इसकी कोई जरूरत नहीं पड़ेगी, देखिये कुछ ही देर में आप भी कह न सकेंगे कि मैं दारोगा नहीं हूँ।

भैया०। अच्छा अपना काम करो, ज्यादा बिलम्ब करना उचित नहीं।

सूरत बदलने तथा हर तरह की बातें तै करने बाद ये लोग चारो तरफ की आहट लेते धीरे धीरे अजायबघर की तरफ रवाना हुए।

अब ये लोग जो कुछ करेंगे सो तो पीछे मालूम होगा, इस वक्त हम दारोगा का थोड़ा सा हाल उस समय का लिखना उचित समझते हैं कि जब वह रात को भैयाराजा की झूठी शिकायत करने बाद राजा साहब से बिदा हो अपने स्थान पर चला आया था।

राजा साहब से बिदा होकर दारोगा सीधा अपने रहने की जगह पर

पहुँचा। उसके आने की खबर उसके आदमियों को पहिले ही हो चुकी थी, इसलिये सभी अपने अपने कामों पर मुस्तैद थे और उसके आने का इन्तजार कर रहे थे। जब वह मकान पर आ गया और नौकरों ने उसको इस दशा में देखा तो उन्हें बहुत ही आश्चय हुआ और वे हाल जानने के लिए व्याकुल होने लगे, मगर किसी की हिम्मत न पड़ी जो उससे कुछ बात करता या उसकी दुर्दशा का कारण पूछता। वह भी किसी से कुछ बातचीत न कह सीधा अपने कमरे में पहुँचा और चुपचाप बैठ रहा।

साधू की धोखेबाजी और अपने कब्जे से तालियों के निकल जाने तथा तरह तरह की मुसीबतों का सामना होने का ध्यान इस समय दारोगा के दिमाग में चक्कर खा रहा था। उसको और कोई बात नहीं सुहाती थी। यहाँ तक कि खाने पीने तथा अन्य जरूरी कामों की भी सुध न थी। रह रह कर उसे जैपाल का ख्याल आता था और वह यही सोचता था कि यदि जैपाल पर सख्ती होगी तो वह जरूर मेरा भेद खोल देगा, क्योंकि वह बहुत ही डरपोक है। अस्तु और बातों के सिवाय मुझे कैदियों से भी बेफिक्र न रहना चाहिये बल्कि उनको अजायबघर से निकालकर कहीं दूसरी जगह कैद करना अथवा जान से मार कर सदैव के लिये झगड़ा मिटा डालना चाहिये।

इस तरह की बहुत सी बातें सोचता हुआ दारोगा बिना किसी से कुछ बोले चाले अपने पलंग पर जाकर लेट रहा, तरह तरह के सोच विचार ने उसका कलेजा हिला दिया, क्षण मात्र के लिए भी निद्रादेवी ने उसे दर्शन नहीं दिया और उसकी वह रात बड़ी ही बेचैनी से कटी। सुबह हो जाने के बाद भी वह बहुत देर तक पलंग ही पर बैठा रह गया जब कि उसके आदमियों ने उसे किसी के आने की खबर दी और उसे उठ कर बाहर आना पड़ा। महाराज का भेजा हुआ चोबदार दालान में खड़ा था जिसने बड़े अदब के साथ महाराज की तरफ से उसका कुशल मंगल पूछा और जवाब लेकर वापस हुआ।

चोबदार के चले जाने बाद दारोगा ने एक नौकर से हरनामसिंह और बिहारीसिंह को बुलाने को कहा और उनके आने के पहिले ही अपने मन में यह निश्चय कर लिया कि आज महाराज से आजायबघर की दूसरी ताली लेकर रात को कुछ आदमियों के साथ अजायबघर जायेगा और कैदियों को वहाँ से निकाल कर अपने मकान में ही ले आएगा। हरनामसिंह और बिहारीसिंह के आने पर दारोगा ने कुछ घटा बढ़ा कर पिछला सब हाल सुनाने के बाद कहा, "नागर के मकान पर नकली साधू के धोखे में पड़ कर मेरी जो कुछ दुर्गति हुई सो तो हुई ही, साथ में अजायबघर की ताली के निकल जाने से मुझे कैदियों की तरफ से बहुत बड़ा खटका पैदा हो गया है, अस्तु मैं राजा साहब के पास जाता हूँ और उनसे दूसरी ताली लेता हूँ। आज रात के समय जैसे भी हो कैदियों को वहां से हटा लेना ही चाहिये। तुम लोग जो कुछ जरूरी इन्तजाम हो ठीक कर डालो।"

पांचवाँ बयान

सूर्य्य भगवान अस्त हुआ ही चाहते हैं और सन्ध्या होने में ज्यादे देर नहीं है। ऐसे समय हम अपने पाठकों को दारोगा की तरफ ले चलते हैं जो अपने खासबाग वाले मकान में एक एकांत कमरे में अभी पहुँचा तथा बिहारीसिंह और हरनामसिंह से बातें करने लगा है जो पहिले ही से वहां बैठे हुए थे।

दारोगा०। कहो बिहारीसिंह! कौन कौन सा इन्तजाम कर चुके और अब क्या बाकी है?

बिहारी०। बाकी तो कुछ भी नहीं, आपकी इच्छानुसार सभी इन्तजाम कर चुका हूँ, केवल ताली मिलने की देर है।

दारोगा० । (ताली जेब से निकाल कर) यह देखो ताली भी मिल गई !

बिहारी० । (खुश होकर और ताली दारोगा से लेकर) क्या महाराज के पास इस प्रकार की कई तालियाँ हैं ?

दारोगा० । नहीं नहीं, कुल दो ही तालियाँ थीं जिनमें से एक तो यही है और दूसरी वह थी जिसको मैंने धोखे में पड़ कर अन्य तालियों के साथ जैपाल रूपी किसी ऐयार को दे दिया ।

बिहारी० । वह भी बेशक बहुत बड़ा धोखा हो गया ! न मालूम वह कम्बख्त कौन था !!

हरनाम० । (ताली बिहारी के हाथ से लेकर और गौर से देख कर) यदि इस किस्म की दो तालियाँ थीं जिनमें से एक जाती रही तब तो कम से कम इस ताली को तो बहुत ही हिफाजत से रखना चाहिये । क्या महाराज ने इसके देने में कुछ हीला हवाला नहीं किया ?

दारोगा० । हीला हवाला तो क्या करते मगर मुझसे यह सुन कर कि पहिली ताली मेरी जेब से कहीं गिर पड़ी कुछ सोच में जरूर पड़ गये और देर तक सिर झुकाये रहे । उनके चेहरे से मालूम होता था कि उन को ताली खो जाने का बड़ा ही रञ्ज है मगर मेरे खयाल से वे कुछ कह न सके और दूसरी ताली देने से भी इन्कार न किया ।

बिहारी० । शायद महाराज को यह खयाल हुआ हो कि कहीं आप इस ताली को भी न गँवा दें, जिससे अजायबघर का खोलना अथवा बंद करना ही असम्भव हो जाय ।

दारोगा० । निःसन्देह यही बात है क्योंकि मुझे खूब मालूम है कि यह तिलिस्मी ताली है और इस प्रकार की कोई दूसरी ताली नहीं बन सकती ।

बिहारी० । ठीक है, अच्छा आपने ताली माँगने का कारण भी उन्हें कुछ बतलाया ?

दारोगा० । केवल यही कहा कि मैं राजविरोधी दो तीन कैदियों को जिन्हें जन्मकैद का हुक्म हुआ है वहां रखूँगा ।

बिहारी० । ठीक है ।

हरनाम० । (दारोगा से) हाँ, यह तो कहिये आपको कुछ मालूम हुआ कि कुँवर साहब कल रात को कहां गये थे ? मुझे तो इसमें कुछ भैयाराजा का हाथ दिखाई देता है ।

दारोगा० । सो क्या ?

हर० । मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि भैयाराजा उन्हें साथ लेकर कहीं गये थे, क्योंकि कुँअर साहब ऐसे नहीं हैं कि बिना महाराज की आज्ञा के घर से बाहर कदम निकालें । हाँ, भैयाराजा की आज्ञा का भी उल्लंघन नहीं कर सकते क्योंकि बनिस्बत महाराज के वह भैयाराजा को ज्यादा मानते हैं और उनकी इनसे मुहब्बत भी बहुत ज्यादा है ।

दारोगा० । सम्भव है, भैयाराजा बड़े धूर्त हैं ! मुमकिन है किसी नये फेर में पड़े हों । मुझ को तो बार बार यही आश्चर्य होता है कि इतना सब कुछ होने पर भी वह मुझसे किसी तरह का बदला क्यों नहीं ले रहे हैं अथवा यहाँ आकर अपना रंग क्यों नहीं जमा रहे हैं । न मालूम उन्होंने मेरे लिये कौन सी ऐसी सजा सोच ली है जो चुपचाप बैठे हुए हैं । कल जब अपना और भैयाराजा का हाल कहते कहते मैंने पाँच चार सवारों के आकर उन पर टूट पड़ने और अपने भाग आने का हाल महाराज को सुनाया तो उनके चेहरे पर कोई खास चिन्ह तरद्दुद या घबराहट का न पाया, बल्कि वे उसी तरह क्रोध में भरे हुए भैयाराजा को बुरा भला कहते रहे, परन्तु जब मैंने कुँवर साहब की तरफ ध्यान दिया तो उनके चेहरे पर तरद्दुद की झलक साफ दिखाई पड़ी । वे बड़ी कठिनता से अपने चित्त के भाव को छिपा रहे थे । जहाँ तक मेरा खयाल है यदि उन्हें महाराज का खयाल न होता तो निःसन्देह मेरे साथ बुरी तरह पेश आते !

(बिहारी से) हां तुम तो मौजूद ही थे, तुमने भी अवश्य ही इस बात पर ध्यान दिया होगा ?

बिहारी० । केवल ध्यान ही नहीं बल्कि मैं तो बराबर कुँवर साहब ही की तरफ देख और इस बात के जानने की कोशिश कर रहा था कि उन पर इस घटना के सुनने का क्या असर पड़ता है ! मैंने देखा कि पल पल में उनके चेहरे की रंगत बदल रही है और वे कभी क्रोध और कभी आश्चर्य के शिकार हो रहे हैं । मैं कल ही आपसे कहने वाला था मगर आपकी मरहम पट्टी में बिल्कुल.....

बिहारीसिंह इतना ही कहने पाया था कि किसी के पैर की आहट मालूम हुई और वह दर्वाजे की तरफ देखने लगा । उसी समय एक चोबदार कमरे में आया और बिहारीसिंह की तरफ देख कर बोला, "नामदार सिंह दर्वाजे पर खड़े हैं, पूछते हैं कि हम लोगों के लिये क्या आज्ञा होती है ?"

यह सुन बिहारीसिंह ने दारोगा की तरफ देखा और कुछ इशारा पा हरनामसिंह को साथ ले कमरे के बाहर हो गया, मगर चोबदार को वहीं छोड़ता गया ।

दारोगा ने चोबदार को कुछ समझा बुझा कर बिदा किया और स्वयं वहाँ से उठ एक दूसरे कमरे में पहुँचा । जल्दी २ कपड़े पहिने और तंबू हर्बे लगा चोर दर्वाजे से बाहर निकल कर पैदल ही एक तरफ को तेजी से रवाना हो गया ।

उस समय रात लगभग डेढ़ पहर के जा चुकी थी और अन्धकार ने पूरी तरह से अपना दखल जमा लिया था दरोगा थोड़ी दूर गया होगा कि एक बहुत बड़े बरगद के पेड़ के नीचे कुछ आदमियों की आहट सुनाई पड़ी । नजदीक पहुँच कर वह खड़ा हो गया और एक आदमी को अपनी तरफ आता हुआ देख धीरे से बोला, "कौन, बिहारीसिंह ?"

जवाब में "हाँ" सुन वह बोला, "तुम लोगों के साथ रोशनी का भी कुछ इन्तजाम है ?"

बिहारी० । जी हाँ, हर एक के पास एक एक मशल है मगर यदि ईश्वर ने चाहा तो मशाल की जरूरत ही न पड़ेगी ।

दारोगा० । हाँ ठीक है, आशा तो ऐसी ही है, परन्तु हमलोगों को अपने इंतजाम से बेफिक्र न रहना चाहिये ।

बिहारी० । बेशक ।

दारोगा० । अच्छा यह बताओ कुल कितने आदमी तुम्हारे साथ हैं ? मैं समझता हूँ पचास से कम न होंगे ।

बिहारी० । जी हाँ ऐसा ही है, हम लोगों को मिला कर कुल तिरपन हैं ।

दारोगा० । बहुत काफी हैं, अच्छा आओ चलें, सिपाहियों से कह दो कि बहुत संभाल कर पैर रक्खें जिसमें आवाज न हो ।

इतना कह दारोगा अजायबघर की तरफ रवाना हुआ और उसके साथी और सिपाही भी पीछे पीछे जाने लगे ।

छठवाँ बयान

भूतनाथ के छठे भाग के पन्द्रहवें बयान में हम लिख आये हैं कि भीम दारोगा और भूतनाथ को साथ ले दत्त उधर रवाना हुआ जहां जमना और सरस्वती को छोड़ गया था मगर ठिकाने पहुँच कर जब जमना और सरस्वती को नहीं पाया तब उसको बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह खंजर की अद्भुत रोशनी में घूम घूमकर जमना और सरस्वती को ढूँढ़ने लगा । उसी समय बहुत से आदमी हाथ में नंगी तलवारें लिये वहाँ पहुँच गए और उस जगह को घेर लिया जहाँ दत्त भीम दारोगा भूतनाथ और उसके साथी लोग थे तथा एक जगह मौका देख कर जमना और सरस्वती भी छिपी हुई थीं ।

ये घेर लेनेवाले बहुत से आदमी दारोगा साहब के वे ही सिपाही थे जिनका हाल ऊपर के बयान में लिखा जा चुका है और जिन्हें साथ ले अपने कैदियों को निकाल ले जाने की नीयत से दारोगा साहब अजायबघर की तरफ रवाना हुये थे।

दत्त और भीम की लड़ाई खतम होने के कुछ देर पहिले ही दारोगा उस जगह पहुँच चुका था और अपने साथियों को कुछ समझा बुझा कर झाड़ियों में थोड़ी थोड़ी दूर पर छिपने की आज्ञा दे आप बिहारी और हरनामसिंह को साथ ले एक मोटे पेड़ की आड़ में खड़ा हो कर सब हाल देख रहा था। सबसे पहिले जिस पर उसकी निगाह पड़ी वह भूतनाथ रूपी नन्दराम थे जिनको देखते ही दारोगा काँप उठा और बड़ी कठिनता से अपने को सम्हाल कर बिहारीसिंह से बोला, "अफ़सोस! भूतनाथ ने सख्त धोखा दिया!! यह सब कार्रवाई उसी की है और जरूर वे जमीन पर पड़े हुए बेहोश आदमी भी वे ही कैदी होंगे जिनको मैंने अजायबघर में रक्खा था अथवा जिन्हें लेने के लिए हम लोग इस समय यहाँ आये हैं। तुम भी देखो, मै पहिचानने में धोखा तो नहीं खाता!!"

बिहारी०। (गौर से देख कर) नहीं कदापि नहीं, निःसन्देह भूतनाथ ही है! देखिए किस तरह सिर हिला हिला कर बातें कर रहा है!

दारोगा०। इसने बहुत बुरा धोखा दिया!

बिहारी०। पहले दर्जे का धूर्त और कमीना है, इसकी बातों पर तो वही विश्वास करे जो निरा पागल हो। मैंने तो पहिले ही कह दिया था कि यह जरूर धोखा देगा, अब वैसा ही हुआ भी। मुझे अफसोस तो यह है कि आप ऐसे होशियार होकर भी इसकी बातों में इतनी जल्दी आ जाते हैं।

दारोगा०। निःसन्देह मुझसे बड़ी भूल हुई और मैंने व्यर्थ ही अपने बहुत से भेद इस पर प्रगट कर दिये।

बिहारी० । खैर अब पछताने से कुछ होगा नहीं बल्कि व्यर्थ समय नष्ट होगा । इस समय ऐसा करना चाहिए जिसमें ये सब के सब यहीं गिरफ्तार हो जायं और वे कैदी भी अपने कब्जे में आ जायँ ।

दारोगा० । अवश्य ऐसा ही होना चाहिए नहीं तो बड़ा अनर्थ होगा।

हर० । मगर यह तो बतलाइए कि आप लोग केवल भूतनाथ ही को देख कर रह गये या कुछ और भी देखा ! जरा फिर तो देखिये उनके पीछे कौन खड़ा है और वे दोनों लड़ने-वाले कौन हैं !

बिहारी० । (गौर से देख कर) हैं ! वह पीछे खड़े रहने वाले तो दारोगा साहब मालूम होते हैं ।

दारोगा० । (घबरा कर) ठीक तो कहते हो ! वह तो मेरी ही सूरत का कोई ऐयार मालूम होता है ! तो कहीं उसने मेरी सूरत बन भूतनाथ को धोखा तो नहीं दिया और वह उस ऐयार को असली दारोगा तो नहीं समझ बैठा है ? यह भी सम्भव है कि इसी ऐयार ने धोखा देकर मुझसे अजायबघर की ताली भी ली हो और भूतनाथ पर शक करना हमारी गलती हो !

बिहारी० । सम्भव है, मगर मुझे ऐसा विश्वास नहीं होता । भूतनाथ इतनी जल्दी धोखे में आने वाला नहीं है । इसमें तो कोई शक नहीं कि वह आपकी सूरत बना हुआ आदमी कोई ऐयार है मगर साथ ही यह भी जरूर है कि वह ऐयार भूतनाथ का कोई शागिर्द अथवा दोस्त है । देखिये उन दोनों में कैसी आवभाव की बातें हो रही हैं । जहाँ तक मेरा खयाल है इस समय कोई भी ऐसा ऐयार इस जमीन पर नहीं है जो भूतनाथ के साथ भेष बदल कर रहे और ज्यादा देर तक अपने को छिपा सके । वह जिस तरह जमीन खोदता हुआ कैदियों का पता लगाता है उसी तरह नकली और असली सूरत को भी दो बातों में जान लेना उसके बायें हाथ का खेल है क्योंकि वह हर वक्त अपने साथियों पर चाहे वह कोई भी हो

जाँच की नजर डालता रहता है यों तो आदमी ही है सम्भव है धोखा खा गया हो।

दारोगा०। यदि तुम्हारा कहना सही है और वह असली भूतनाथ ही है तो उसको इतने सहायक कहाँ से मिल गये! मैंने तुम्हारी ही जुबानी सुना था कि उसके सभी शागिर्द जो तिलिस्मी खोह में उसके साथ रहते थे उसके दुश्मन बन गये हैं।

बिहारी०। आपका कहना ठीक है और मैंने जो कुछ कहा था वह भी गलत नहीं था, लेकिन भूतनाथ के जगह जगह पर कितने ही अड्डे हैं जहाँ दस दस पाँच पाँच आदमी हमेशः रहा करते हैं और समय समय पर उसकी मदद किया करते हैं। अगर एक जगह के दस बीस आदमी बिगड़ ही गये तो क्या, अभी उसके पास जरूर पचीसों शागिर्द होंगे।

दारोगा०। जो कुछ भी हो, मगर इसमें शक नहीं कि मैंने बहुत बड़ा धोखा खाया (चौंक कर) देखो देखो, अब लड़ाई बन्द हो गई है और वे दोनों एक दूसरे का मुँह देख रहे हैं। मालूम होता है कि लड़ते लड़ते थक गये हैं! (रुक कर) यह लो, अब तो दोनों गले गले मिल कर मित्र भाव प्रगट कर रहे हैं। आखिर यह मामला क्या है!!

बिहारी०। मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि दोनों ही लड़ने वाले दोस्त हैं और एक दूसरे को न पहिचानने के कारण लड़ रहे थे मगर अब कोई परिचय पा एक दूसरे को पहिचान गये हैं।

दारोगा०। हो सकता है, शायद तुम्हारा ही कहना ठीक हो। (चौंक कर) मगर वह तो देखो कौन दो आदमी हैं जो धीरे धीरे इसी तरफ चले आ रहे हैं।

सातवां बयान

जमना और सरस्वती को भीम और दत्त की कार्रवाई देख कर उन पर शक हो गया और उन दोनों ने आपुस में बातें करके यह निश्चय कर लिया कि उनको इस जगह से (जहाँ वे छिपी हुई थीं) हट कर दूसरी जगह चले जाना चाहिये जिसमें दत्त उनको खोजने पर भी यकायक पा न सके। इस विचार से जब वे दबे पाँव दूसरी तरफ चलीं तो ठीक उस पेड़ के पास से होकर निकलीं जहाँ दारोगा हरनाम और बिहारीसिंह को लिये छिपा खड़ा था। इन दोनों को अपनी तरफ आते देख पहिले तो दारोगा डरा मगर जब वे दोनों उसके पास से निकल कर आगे की तरफ बढ़ चलीं तो उसको निश्चय हो गया कि इनको मेरी मौजूदगी की कुछ भी खबर नहीं लगी और उसने बिहारी और हरनामसिंह से कुछ इशारा किया जिसके साथ ही उन दोनों ने उनका पीछा किया और कुछ दूर पीछे पीछे जा कमंद फेंक दोनों को जमीन पर गिरा दिया और तब जबर्दस्ती बेहोशी की दवा सुँघा कर बेहोश कर दिया। इन लोगों ने उन दोनों को पहिचानने की भी कोशिश की मगर जब पहिचान न सके तो अपने सिपाहियों के सुपुर्द कर दारोगा के पास लौट आये और बोले :—

बिहारी०। लीजिये शकुन तो अच्छा हुआ।

दारोगा०। (खुश होकर) वह दोनों हाथ आ गए? कौन थे?

बिहारी०। पहिचान तो नहीं सका पर दोनों ही औरतें हैं।

दारोगा०। (आश्चर्य से) औरतें! तुमने उन्हें पहिचानने की कोशिश नहीं की?

बिहारी०। जरूर की, पर अन्धकार के कारण उन्हें पहिचान न सका! बिना रोशनी के इस बात का पता लगाना मुश्किल था और

रोशनी करने का मौका न था इसलिये मैंने उन्हें अपने सिपाहियों के सपुर्द कर दिया।

दारोगा० खैर घर चलने पर उनको पहिचानने की कोशिश की जायगी।

बिहारी०। (चौंक कर) कहीं वे दोनों जमना और सरस्वती न हों !!

दारोगा०। (खुश हो कर) यदि ऐसा हो तब बड़ी ही खुशी की बात है। उन कम्बख्तों ने भी मुझे बहुत ही तंग कर रक्खा है। परन्तु ये लड़ने वाले तथा कैदियों के पास खड़े रहने वाले कौन हैं यह अब तक मालूम न हुआ। भला तुमने इस पर भी कुछ विचार किया?

बिहारी०। निश्चय तो नहीं होता मगर कम से कम मुझे तो इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ये लोग भूतनाथ के साथी या.....

दारोगा०। (बिहारी का हाथ दबा कर) जरा ठहरो, देखो वे लोग हमारी ही तरफ आ रहे हैं। सिपाहियों को होशियार कर दो कि मौका पाते ही सब के सब एकबारगी उन पर टूट पड़ें।

आठवां बयान

हाथों में नंगी तलवारें लिये दारोगा के आदमियों ने भीमदत्त और भूतनाथ इत्यादि को चारो तरफ से घेर लिया परन्तु दत्त के खञ्जर से निकलती हुई उस अद्भुत रोशनी के कारण उनकी आँखें बिल्कुल बेकार हो गईं। ज्यादा दूर रहने पर तो ये लोग कुछ कुछ देख भी रहे थे मगर जब नजदीक पहुँचे तो खञ्जर की अद्भुत चमक में उनकी आंखें एक दम चौंधिया गईं और ऐसी अवस्था में आंखें बन्द कर लेने अथवा पीछे हट जाने के सिवाय उनके किये हो ही क्या सकता था? अस्तु वे क्रम से पीछे हटते हुये दूर जाकर खड़े हो गये और हसरत और डर की निगाहों से खञ्जर में से निकलती हुई अपूर्व रोशनी की करामात को देखने लगे।

दारोगा जो अभी तक उसी जगह खड़ा यह सब कार्रवाई देख रहा

था घबरा उठा और असली भेद को न जानने के कारण अपने सिपाहियों को बुजादल समझने लगा। मगर बिहारी और हरनामसिंह जो दारोगा से अलग हो कहीं दूसरी ही जगह से अपनी घात में लगे थे यह दशा देख आश्चर्य में डूब गये बल्कि उनके दिलों में एक प्रकार का डर पैदा हो गया और तरह तरह के खयालात उनके दिमाग में तेजी के साथ चक्कर खाने लगे, यहां तक कि वे घबरा कर कुछ सलाह करने के लिये पुनः दारोगा की तरफ बढ़े और उससे बातें करने लगे।

इन लोगों में क्या बातें हुईं इसके लिखने की यहां आवश्यकता नहीं और इस समय हम इनका साथ छोड़ दत्त भीम और नकली भूतनाथ की तरफ चलते हैं और देखते हैं कि उन लोगों का क्या हाल है। दारोगा के आदमियों से घिर जाने पर दत्त भीम तथा उनके साथी हताश न हुए बल्कि आश्चर्य की निगाहें डालते हुए सोचने लगे कि यह सब सिपाही किसके हैं और यहां क्योंकर आ गए। साथ ही वे लोग म्यान से तलवारें निकाल मुकाबिले के लिये भी तैयार हो गए मगर जब इन्होंने देखा कि दुश्मन सब आप से आप ही पीछे हटते हुए दूर चले गये तो दत्त ने कुछ सोच कर खंजर का कब्जा ढीला किया और अंधकार में सबको साथ लिये पीछे लौट कर उस जगह आया जहाँ कैदियों को छोड़ गया था। अब उन लोगों में इस तरह बातचीत होने लगी : —

दत्त०। (भीम से) कुछ मालूम नहीं होता कि ये सब आदमी किसके हैं ?

भीम०। निश्चय तो नहीं कह सकता परन्तु यदि दारोगा का शक किया जाय तो अनुचित भी न होगा।

भूत०। नहीं नहीं, आपका विचार किसी तरह भी अनुचित नहीं कहा जा सकता। मेरा भी यही खयाल है कि यह सब आदमी अवश्य उसी के होंगे। रहा उनका ऐसे समय में यकायक यहाँ आ जाना, सो यह भी कोई ऐसी बात नहीं है जो शीघ्र समझ में न आ जाय। जैपाल की गिर-

फ्तारी तथा तालियों का दारोगा के कब्जे से चले जाना ही इस बात को साबित करता है कि दारोगा अपने कैदियों को यहाँ से निकालने के उद्योग में अवश्य लगा होगा और उसको इधर से एक क्षण के लिये भी निश्चिन्ती न हुई होगी। कल रात को तो उसे नागर के मकान ही से छुट्टी नहीं मिली होगी और इस कारण वह न आ सका होगा मगर आज वह अपने कैदियों की टोह में अवश्य आया होगा। यद्यपि अभी तक वह कहीं दिखाई नहीं पड़ा है तथापि जरूर यहीं छिपा होगा और बिहारीसिंह तथा हरनाम-सिंह भी उसके साथ निश्चय होंगे।

दत्त०। निःसन्देह तुम्हारा ख्याल सही है। पहिले जब मैंने तुम लोगों को कैदियों के साथ अजायबघर से निकलते देखा था तो मुझे भी यही ख्याल हुआ था कि तुम लोग दारोगा के साथी ही हो बल्कि जमना ने मुझसे पूछा भी था कि आश्चर्य नहीं कि ये सब उन्हीं लोगों को निकाल कर लिए जाते हों जिनको छुड़ाने के लिये हम लोग यहाँ आये हैं।

भीम०। मुझे भी यही निश्चय होता है कि ये सब दारोगा के आदमी हैं मगर जमना और सरस्वती कहाँ चली गईं? कहीं वे दारोगा के कब्जे में पुनः न पड़ जायँ! यदि ऐसा हुआ तो बहुत बुरा होगा। इस मरतबा वह उन बेचारियों को जीता कदापि न छोड़ेगा।

इतना कहते कहते उसका गला भर आया और वह चुप हो गया।

दत्त०। हाँ, बात तो ऐसी ही है, मगर तुम जरा भी चिन्ता न करो। ईश्वर ने चाहा तो मैं सबेरा होते होते जमना और सरस्वती को जरूर खोज निकालूँगा।

भीम का साथी दारोगा०। इस समय देर तक यहाँ बैठ कर सलाह करना उचित नहीं है। इस अनमोल समय को व्यर्थ न खोना चाहिए बल्कि चलने की तैयारी करनी चाहिए। चारो तरफ छिपे हुए दुश्मन न जाने कब हमला कर बैठें।

दत्त० । निःसन्देह तुम ठीक कहते हो । अब हमको यहाँ से चल ही देना चाहिए ।

उन लोगों ने जल्दी जल्दी आपुस में कुछ सलाह की जिसके बाद दत्त ने अपना तिलिस्मी खंजर और उसके जोड़ की अँगूठी भैयाराजा के हवाले कर दी और वे भूतनाथ को साथ ले एक तरफ को रवाना हो गए। दत्त अपने साथियों को लिए खुद उसी जगह ज्यों का त्यों खड़ा रहा ।

भूतनाथ को लिये हुए भैयाराजा लगभग सौ कदम की दूरी पर निकल गए और इस बीच में किसी दुश्मन से उनका सामना न हुआ । इस समय जहाँ वे रुके थे वह एक गुंजान झाड़ी थी जहाँ पहुँच कर भैयाराजा ने दत्त के दिए हुए खंजर का कब्जा दबाया जिससे पहले की तरह अद्भुत रोशनी प्रगट हुई और भूतनाथ रूपी नन्दराम की आँखें बन्द हो गईं । यद्यपि चन्द्रदेव अभी तक अस्त नहीं हुए थे और भैयाराजा को रास्ते का पूरा अन्दाजा भी मिलता जाता था तथापि कब्जा दबा कर रोशनी पैदा करने से भैयाराजा का क्या तात्पर्य था यह नकली भूतनाथ समझ न सका और उसने तुरंत ही कहा, "भला आप यह क्या करते हैं ! दुश्मन इस रोशनी को देख कर इधर ही चले आवेंगे और हम लोगों का पीछा करेंगे !

भैयाराजा० । दुश्मन मेरे पीछे पीछे चले आवें यही तो मै चाहता हूँ और रोशनी करने से भी मेरा यही मतलब है । (खंजर का कब्जा छोड़ कर) लो तुम आँखें तो खोलो !

भूत० । अच्छा अब मैं समझा ! आपका मतलब यह है कि दुश्मनों को इधर बुला कर उधर का मैदान खाली करा दें ताकी कैदियों के ले जाने में कोई बाधा न रहे ।

भैयाराजा० । निःसन्देह मेरा यही मतलब है ।

भूत० । यदि यही बात है तो फुर्ती से आगे बढ़िये और यहां ज्यादा न ठहरिये ।

भैयाराजा की इस कार्रवाई से दुश्मनों ने बेशक धोखा खाया और वे लोग बिना कुछ सोचे विचारे भैयाराजा और भूतनाथ के पीछे चल पड़े। अभी ये पहिली जगह पर अर्थात् उस झाड़ी के पास जहाँ भैयाराजा ने रोशनी की थी पहुँचे भी न थे कि पुनः कुछ दूरी पर वैसी ही रोशनी मालूम हुई जिसे देख ये लोग बिना कुछ सोचे विचारे पहिले रास्ते को छोड़ दाहिनी तरफ मुड़े जिधर अब रोशनी दिखाई पड़ रही थी।

इसी तरह सबेरा होने के पहिले तक इनको कई बार वह अद्भुत रोशनी दिखाई पड़ी और ये लोग भी बराबर पीछा करते ही चले गए यहां तक कि अजायबघर से बहुत दूर निकल गए मगर बहुत तलाश करने पर भी भैयाराजा भूतनाथ अथवा उनके किसी साथी का उन लोगों को कुछ पता न लगा। पहर दिन चढ़े तक सभों की तलाश होती रही पर कुछ पता न चला और आखिर निराश हो दारोगा सिपाहियों और उन दोनों औरतों (जमना सरस्वती) को साथ ले जमानियां की तरफ लौटा, मगर बिहारीसिंह और हरनामसिंह उसके हाथ न हुए। उन्होंने दारोगा से कुछ कह सुन कर किसी दूसरी ही तरफ का रास्ता लिया।

नौवां बयान

दुश्मनों को भैयाराजा के पीछे जाते देख दत्त बहुत खुश हुआ और मुस्कुरा कर अपने साथी दारोगा अर्थात् प्रभाकरसिंह से बोला : —

दत्त० । देखो उन लोगों ने कैसा धोखा खाया !

प्रभा० । निःसन्देह आपने दोहरी चालाकी की।

दत्त० । सो क्या ?

प्रभाकर० । एक तो दुश्मनों से मैदान खाली हो गया, दूसरे भैयाराजा और भूतनाथ उधर ही से जमानिया जाकर जमना और सरस्वती की टोह भी लगा सकेंगे।

भीम० । (जो कि वास्तव में मेघराज थे, दत्त से) तो क्या आपका यह मतलब था कि भैयाराजा उधर ही से जमानिया चले जायँ और...

दत्त० । हां, मेरा यही मतलब था और मैंने यही उनसे कहा भी है। लेकिन इस पर शायद तुम यह कहोगे कि यदि ऐसा ही था तो आपने मुझे भैयाराजा के साथ क्यों नहीं भेजा ?

मेघ० । जी हाँ, क्योंकि भूतनाथ उन दोनों का दिली दुश्मन है और उसकी वर्तमान दोस्ती कब तक कायम रहेगी इसका भी कोई निश्चय नहीं है।

दत्त० । मैंने भी पहिले यही सोचा था परन्तु फिर मुझे यह विचार आया कि भूतनाथ जमानिया के सब स्थानों और दारोगा के भूलभुलैया वाले मकान से भी वाकिफ है और उसके जाने से ज्यादा लाभ की आशा है। फिर मुझे यह भी विश्वास है कि भैयाराजा के रहते वह कोई बेजा कार्रवाई न कर सकेगा, यदि जरूरत आ पड़ने पर तुम दोनों को अलग अलग काम करना होता तो ऐसी अवस्था में तुम क्या करते या भैयाराजा ही तुम्हें कहाँ कहाँ लिये फिरते। तुम सुन ही चुके हो कि भैयाराजा स्वयम् दारोगा के मकान में जाकर बेबस हो गये थे और बहुत उद्योग करने पर भी बाहर न निकल सके थे।

इत्यादि बहुत सी बातें कह कर दत्त ने मेघराज को शान्त किया और उन्हें यह भी विश्वास करा दिया कि भूतनाथ का जाना उनसे ज्यादा फलदायक होगा। मेघराज चुप हो गये मगर मन ही मन तरह तरह की बातें सोचने लगे, और सच तो यह है कि जमना और सरस्वती के यकायक इस तरह गायब हो जाने से उन्हें बड़ा ही रंज हुआ और दुनिया उनके लिये अन्धेरी हो गई।

इस वक्त सुबह की सुफेदी चारो तरफ फैल चुकी थी और पुरवाई हवा के हलके थपेड़ों ने दरख्तों तथा पौधों से हाथापाई करना शुरू कर दिया था। चिड़ियाएँ अपनी मीठी सुरीली आवाज में चहक रही थीं।

जिधर देखिये उधर ही एक अपूर्व छटा आंखों के सामने नजर आती थी। यह विचित्र समा उदासीनता को पास नहीं आने देता था मगर बेचारे मेघराज अर्थात् दयाराम पर इस वक्त के जादू का कुछ भी असर नहीं हो रहा था. उनका दिल बैठता ही जाता था और चेहरे की रङ्गत क्षण क्षण में बदलती ही जा रही थी जिसको दत्त ने बड़े गौर से देखा और मेघराज की अवस्था पर अफसोस करते हुए कहा :—

दत्त०। (मेघराज का हाथ पकड़ कर) मेरे प्यारे दयाराम! तुम अपने दिल को सम्हालो और हताश न हो। तुम्हारे ऐसे बुद्धिमान के लिए यह उचित नहीं है। भैयाराजा भूतनाथ को लेकर उन दोनो की खोज में गए हैं, मुझे पूरी आशा है कि वे अवश्य कृतकार्य होंगे और आज किसी न किसी समय जमना सरस्वती को लेकर जरूर आवेंगे। फिर भी मुझे तुम्हारी अवस्था देख कर रंज होता है और दिल यही चाहता है कि जिस तरह हो अभी उनकी तलाश में जाऊँ और जहां कहीं वे मिलें उनको खोज निकालने का उद्योग करूँ मगर क्या करूँ इन कैदियों को भी तो यहाँ से ले चलना जरूरी है। अफसोस! मैं तो यह समझे हुए था कि आज हम लोग इस काम से छुट्टी पा हर तरह से निश्चिन्त हो जायंगे और केवल सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने के सिवाय पुनः इस संसार में हमें कुछ करना बाकी न रह जावेगा परन्तु नहीं, अब मालूम हुआ कि हम लोगों को अभी कुछ और भुगतना है और हमारी बदकिस्मती ने अभी हमारा पीछा नहीं छोड़ा।

इसी प्रकार की बहुत सी बातें करते करते दत्त का गला भर आया और वह चुप हो गया मगर कुछ देर बाद जब पुनः उसने मेघराज की तरफ ध्यान दिया तो देखा कि उनकी आँखों से आँसू की धारा बह रही है।

दत्त जो वास्तव में इन्द्रदेव था और जो बड़े से बड़े संकट के समय भी बहुत कुछ करने का साहस रखता था इस समय मेघराज की यह अवस्था देख न जाने क्यों इतना घबड़ा गया कि कोई अच्छी बात नहीं सोच

सका। वह यह भी नहीं कह सकता था कि इस समय जमना और सरस्वती के लिए क्या प्रबन्ध करना उचित होगा। आज पहिला दिन है कि हम इन्द्रदेव को ऐसी अवस्था में देखते हैं। वह कठिन से कठिन समय में भी हताश न होकर गम्भीरता और बुद्धिमानी से काम करता था। कदाचित् इस समय उसकी घबराहट का कारण यह हो कि वह मेघराज को बहुत प्यार करता है और उनके दुःखी होने से उसके दिल पर गहरी चोट पड़ती है।

जो हो मगर इन्द्रदेव की यह अवस्था देर तक न रही। उन्होंने बहुत जल्द अपने दिल को सम्हाल कर उदास और चिन्ता-निमग्न मेघराज को ढाढ़स दिया और कहा, "तुम मेरी बातों पर विश्वास करके जिस तरह हो सके अपने दिल को ढाढ़स दो। (कैदियों को दिखला कर) इन लोगों को उचित स्थान पर रख कर मैं शीघ्र जमना और सरस्वती की तलाश में जाऊँगा और यदि ईश्वर ने चाहा तो सूर्य अस्त होने के पहिले उनको साथ लिए तुम्हारे पास आ जाऊँगा।"

मेघराज इन्द्रदेव की प्रकृति को खूब जानते थे इस कारण उन्हें निश्चय हो गया कि यदि इन्द्रदेव स्वयम् जमना इत्यादि की खोज में जायंगे तो निःसन्देह कुछ न कुछ पता लगा ही लेंगे क्योंकि ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ वे सहज में न जा सकते हों। वह थोड़े ही परिश्रम में बड़े बड़े ऐसे काम कर सकने हैं जिनको दूसरा बहुत उद्योग करने पर भी शीघ्र नहीं कर सकता अस्तु उनके लिये जमना सरस्वती का छुड़ाना कोई कठिन काम नहीं है।

इस विचार के आते ही मेघराज के चेहरे का रंग बदल गया और उनका कुम्हलाया हुआ उदास चेहरा आशारूपी वर्षा से हरित हो गया। इन्द्रदेव के तीन घोड़े जो पास ही किसी पेड़ से बँधे हुए थे मँगवाये गये जिनमें से दो पर इन्द्रदेव और मेघराज बैठ गये और तीसरे पर प्रभाकरसिंह अपने बेहोश पिता को लेकर सवार हुए। बचे हुए आदमियों ने दूसरे

दो कैदियों को उठा लिया और सब कोई धीरे धीरे आगे बढ़े। लगभग दो घण्टा सफर करने बाद ये लोग एक पहाड़ी के पास जा पहुँचे जहाँ इन्द्रदेव के कहने से सब लोग रुक गये और घोड़ों से उतर पड़े।

यह स्थान, जहां ये लोग इस समय पहुँचे थे एक रमणीक पहाड़ी के समीप था। यद्यपि यहाँ कोई ऐसी इमारत नहीं थी जहाँ दस बीस आदमी सुख पूर्वक दो एक दिन रह सकें तथापि नजदीक की पहाड़ियों में सुन्दर और सुहावनी कन्दराओं तथा गुफाओं की कमी भी नहीं थी। उन्हीं में से एक साफ और सुथरी गुफा देख कर सभों ने डेरा डाल दिया और घोड़ों को लम्बी बागडोरों के सहारे बाँधने बाद कैदियों को आराम सहित रखने तथा उनको होश में लाने की फिक्र करने लगे।

दसवाँ बयान

अभी सन्ध्या होने में बहुत देर है। दिन लगभग तीन पहर के ढल चुका है तो भी धूप की गर्मी से दरोदीवार तप रहे हैं और गर्म हवा चल रही है।

दारोगा अपने मकान के पीछे वाले नजरबाग में टहलता हुआ कुछ सोच रहा है। उसका उदास चेहरा कहे देता है कि इस समय वह किसी बहुत ही दुःखदाई चिन्ता में निमग्न हो रहा है। साथ ही इसके उसके बार बार ठण्डी साँस लेने तथा इधर उधर घबराहट के साथ देखने से यह भी विश्वास होता है कि वह किसी बात को सोच सोच कर भय-भीत हो रहा है। केवल इतना ही नहीं, वह कभी कभी कलेजा थाम कर जमीन पर बैठ जाता है और फिर सर पकड़ कर कुछ सोचता हुआ अपने को सम्भालने का उद्योग करने लगता है।

इसी प्रकार कभी टहलते कभी बैठते और कभी सोचते हुए दारोगा को काफी समय बीत गया जब अचानक उसकी नजर बिहारी और हर-नामसिंह पर पड़ी जो तेजी के साथ उसी की तरफ चले आ रहे थे। जब

वे नजदीक पहुँच गए तो दारोगा ने पूछा, "कहो कुछ पता लगा ? तुम्हारे इन्तजार ने तो मुझे परेशान कर दिया।"

बिहारी०। (अफसोस के साथ) नहीं बिल्कुल नहीं, न मालूम जमीन उनको खा गई या वे आसमान में उड़ गये।

दारोगा०। अफसोस ! मुझे मालूम होता है कि मेरे बुरे कर्म उदय हो गये और मुझे बड़ी ही दुर्दशा से प्राण देना होगा !!

बिहारी०। नहीं नहीं, आपको ऐसा निराश न होना.....

दारोगा०। (बात काट कर) सच तो यह है कि यदि मैं शिवदत्त के साथ दोस्ती न पैदा करता और उसके कैदियों को न रखता तो आज यह दिन मुझे कदापि न देखना पड़ता। अफसोस ! भैयाराजा के साथ ही साथ अब प्रभाकरसिंह भी मेरे खून का प्यासा हो जायगा। क्या कहूँ मैंने व्यर्थ केवल एक चीठी लिखवाने की लालच में उसके माता पिता को अब तक जिन्दा रक्खा और जहाँ तक मेरा खयाल है अब कामेश्वर अथवा भुवनमोहिनी वाला भेद भी छिपा न रहेगा। यदि मैं पहिले ही उनको मार कर निश्चिन्त हो जाता तो आज.....

बिहारी०। ठीक है, परन्तु होनहार प्रबल है, उसके आगे किसी का कोई चारा नहीं चलता और इस विषय में अब ज्यादा ध्यान देकर अपने चित्त को डावाँडोल करना केवल व्यर्थ ही नहीं बल्कि अपने अनमोल समय को नष्ट करना है।

दारोगा०। अच्छा तो फिर क्या करना उचित है सो भी तो कुछ बताओ ? तुम्हारी क्या सलाह है ?

बिहारी०। मैं क्या बताऊँ और क्या सलाह दूँ ? भला इन मामलों में आप से ज्यादा मैं कब सोच सकता हूँ ? मेरे कहने का तो केवल यही तात्पर्य है कि आप शीघ्र ही कुछ करने का निश्चय करें। बीती हुई घटनाओं को सोचते रहना या उनमें उलझ कर समय नष्ट करना कुछ भी फलदायक न होगा।

दारोगा० । मेरे प्यारे बिहारीसिंह ! इस समय मेरी अवस्था ऐसी नहीं है जो मैं कुछ सोच सकूँ या अपनी राय कायम कर सकूँ, यदि तुम दोनों से कुछ बन सके तो करो नहीं तो मुझे अपनी उस मौत की अगवानी करने के लिए छोड़ दो जिसका पेशखेमा जल्द ही आकर गड़ने वाला है । अफसोस ! इन कैदियों को जीता छोड़ कर मैंने अपने हाथों अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी !! हाय ! यह भेद किसी तरह छिपा नहीं रह सकता । तुम स्वयम् विचार सकते हो कि दिवाकरसिंह प्रगट होकर क्या क्या उत्पात नहीं करेगा और महाराज के सामने मेरी कैसी कैसी दुर्गति नहीं करावेगा । महाराज के साथ उसका कैसा गहरा सम्बन्ध है इसको तुम जानते ही हो । मुमकिन है कि शंकरसिंह या कुंअर साहब उसको न पहिचानें पर महाराज उसके पहिचानने में किसी तरह का धोखा नहीं खा सकते । अफसोस जयपाल न हुआ नहीं तो मेरी यह दशा न होती, ऐसे कठिन समय में भी वह बहुत कुछ कर गुजरता ।

उसी समय चोबदार ने आकर खबर दी कि, "जयपालसिंह जी बाहर खड़े हैं, मिलना चाहते हैं ।"

यह सुनते ही दारोगा चौंक पड़ा, उसे यह आशा न थी कि जयपाल इस जिन्दगी में फिर उससे मिलेगा । वह चमककर बोला, "कौन ! जयपालसिंह !"

चोबदार० । जी हाँ !

"मैं बैठक में चलता हूँ, उन्हें वहीं जल्द लाओ ।" कह कर दारोगा उठ खड़ा हुआ और अपने मकान की तरफ बढ़ा, तब तक जैपाल भी सामने आ गया और उसके पैरों पर गिर पड़ा । दारोगा जैपाल से मिल कर बहुत खुश हुआ । उसको अपने साथ लेता हुआ कमरे में आकर गद्दी पर बैठ रहा और उसे सामने बैठने का इशारा किया । बिहारी और हरनाम से गले मिलने बाद जैपाल दारोगा की आज्ञानुसार उसके पास ही गद्दी पर बैठ गया ।

दारोगा० । वाह जयपालसिंह ! तुम खूब आये । मैं तुम्हारे न रहने से बड़ा ही दुःखी था और तुमसे मिलने से भी निराश हो चुका था ! हाय ! तुम्हें क्या खबर होगी कि मुझ पर क्या बीत रही है और मैं किन घटनाओं का शिकार हो रहा हूँ ।

जैपाल० । सो क्या ? इधर कोई नई बात हुई ?

दारोगा० । नहीं नहीं, पहिले मैं तुम ही से सुनना चाहता हूँ कि तुम किसके चंगुल में फँस गये थे और अब किस तरह छूटे ।

जैपाल० । मैं किस तरह फँसा यह तो आपको मालूम ही है परन्तु किसने मुझे फांसा, मै कहां कैद रहा, वह स्थान जहां मैं कैद था किस जगह है और मैं यहां क्योंकर आया यह सब मुझे अब तक कुछ मालूम न हुआ ।

दारोगा० । (आश्चर्य से) वाह ! यह भी तुमने खूब कहा !!

जैपाल० । जी हां, जो कुछ मैंने कहा वह बिल्कुल सही है और इसमें एक शब्द भी झूठ नहीं है ।

दारोगा० । अच्छा अपना पूरा पूरा हाल जो कुछ तुम्हें मालूम हो कह जाओ ।

"सुनिये मैं कहता हूँ" कह कर जैपाल ने यों कहना शुरू किया:—

"नागर के मकान पर जब मैं बेहोश हो गया तो पहर दिन चढ़े तक मेरी आंख न खुली, इसके बाद मैं होश में आया तो अपने को एक ऐसे कैदखाने मे पाया जिसके तीन तरफ तो संगीन दीवारें और सामने की तरफ एक मेहराबदार बड़ा दर्वाजा था जिसमें लोहे के छड़ लगे हुए थे । मेरे दाने पानी का वहीं पर प्रबन्ध था और मुझे अपने ये दिन उसी जगह गुजारने पड़े । जब तक मैं उस कैदखाने में रहा दो औरतें नित्य मेरे पास आतीं और घण्टों तरह तरह की बातें करतीं पर मैं उन दोनों को पहिचान न सका क्योंकि उसके पहिले मैंने कभी उनको न देखा था । हां, इधर दो दिन से उन औरतों को मैंने नहीं देखा, न मालूम वे

मेरे पास क्यों नहीं आईं। खैर, आज सबेरे जब मैं जंगल के पास बैठा हुआ कुछ सोच रहा था उसी समय एक तीसरी औरत वहाँ आई और जंगला खोल मेरी कोठड़ी के अन्दर आ सामने खड़ी हो गई। उस औरत के कपड़ों में से एक विचित्र प्रकार की सुगन्ध उड़ रही थी जो बात की बात में तमाम कमरे में फैल गई। पर जरूर उस खुशबू में तेज बेहोशी का असर था, क्योंकि उसे सूँघते ही मैं जमीन पर लेट गया और फिर मुझे तनोबदन की सुध न रही। कई पहर बाद जब पुनः आँख खुली तो अपने को एक पेड़ के नीचे पड़ा पाया। उस समय सूर्य अस्त हो चुका था मगर अन्धकार ने अपना दखल न जमाया था। मैं यकायक अपने को स्वतन्त्र देख चौंक पड़ा और आश्चर्य की निगाह से चारो तरफ देखने लगा। पहिले तो मुझे यह गुमान हुआ कि मैं स्वप्न देख रहा हूँ परन्तु जब निश्चय हो गया कि मैं जाग रहा हूँ और जो कुछ देख रहा हूँ वह स्वप्न नहीं है तो उठ खड़ा हुआ, गौर से चारो तरफ देखने से मालूम हुआ कि मैं जमानिया के पास ही हूँ अस्तु वहाँ से सीधा आपके पास चला आ रहा हूँ।"

दारोग०। निःसन्देह तुम्हारी कहानी विचित्र है परन्तु सच तो यह है कि मुझे खास कर ऐसी अवस्था में जब कि मैं सख्त परेशानी में हूँ तुम्हें देख कर बड़ी खुशी हुई। लो मैं अपनी रामकहानी भी संक्षेप में सुना देता हूँ जिसमें तुम मेरी परेशानी का सबब समझ सको।

इतना कह दारोगा ने अपना कुल हाल उस दिन से जब से जैपाल अलग हुआ था आज तक का संक्षेप में बयान किया और तब कहा कि उन लोगों में से दो औरतें गिरफ्तार हुई हैं जिनकी निस्बत बिहारी और हरनामसिंह का विचार है कि शायद वे जमना और सरस्वती हों।

जैपाल०। (चौंक कर) हैं! जमना और सरस्वती! मगर ऐसा हो नहीं सकता। मैंने सुना है कि वे दोनों प्रभाकरसिंह के साथ किसी गुप्त स्थान में रहती हैं और बाहर बिल्कुल नहीं निकलतीं।

दारोगा० । जो हो, मैंने तो अभी उन्हें देखा भी नहीं अस्तु कुछ भी नहीं कह सकता कि वे जमना और सरस्वती हैं या कोई दूसरी ।

जैपाल० । (बिहारीसिंह की तरफ देख कर) मगर तुम लोगों ने तो उन्हें बखूबी देखा होगा, फिर शक करने की क्या वजह है ? क्या उनकी सूरतें.....

बिहारी० । सूरतें दोनों की जमना सरस्वती से बिल्कुल नहीं मिलतीं, इसके अतिरिक्त उनकी पौशाकें भी जनानी नहीं थीं ।

जैपाल० । तो क्या वे मर्दानी पौशाक में थीं ?

बिहारी० । जी हाँ ।

जैपाल० । तब तुम लोगों ने कैसे जाना कि वे जमना और सरस्वती हैं ?

बिहारी० । वे जमना और सरस्वती जरूर हैं ऐसा तो मैं नहीं कहता, मगर यह कहने से भी बाज नहीं आ सकता कि कदाचित् मेरा शक पन्द्रह आना सही है ।

जैपाल० । पन्द्रह आना क्यों ईश्वर करे तुम्हारा कहना सोलह आना सही हो, मुझे भी उन्हीं दोनों की खोज है ।

बिहारी० । उन दोनों की जांच करने का हमें अब तक मौका न मिला, (दारोगा की तरफ देख कर) शायद आपने उसकी जांच की हो ?

दारोगा० । नहीं नहीं, मुझे तो खुद अपनी ही खबर न रही ।

जैपाल० । इस कैद में मुझे एक नई बात मालूम हुई है जिससे मुझे एक विचित्र प्रकार का सन्देह हो रहा है और यदि ये दोनों जमना और सरस्वती ही होंगी तो मैं सन्देह को सहज ही में दूर कर सकूँगा ।

दारोगा० । वह सन्देह कैसा है ? क्या कुछ जमना आदि के ही सम्बन्ध में है ?

जैपाल० । जी हाँ, परन्तु उसका ज्यादा सम्बन्ध भूतनाथ से है । यदि

उस बात का ठीक ठीक पता लग गया तो फिर आप भूतनाथ को सहज ही अपने बस में कर सकेंगे।

दारोगा०। यदि ऐसा हो तो फिर क्या बात है। भूतनाथ अगर सच्चे दिल से हम लोगों का साथ देने लग जाय तो हमको किसी बात की कमी न रहेगी।

जैपाल०। निःसन्देह, अवश्य मेरा सन्देह दूर होने पर मैं वह हाल आपसे कहूँगा।

बिहारी०। थोड़ी देर बाद जब हम लोग खुद चल कर देखेंगे तो मालूम ही हो जायगा।

जैपाल०। बेशक, और इसी लिये मेरी राय है कि पहिले उन्हीं की जांच होनी चाहिए।

इतना कह जैपाल ने दारोगा की तरफ देखा और कहा, "क्यों न पहिले उन्हीं सभों से मिल लिया जाय? सम्भव है कि हमारा सन्देह सही हो और वे जमना सरस्वती ही हों, यदि ऐसा हुआ तो हमको दुश्मनों की खोज में बहुत मदद मिलेगी!"

"क्या हर्ज है चलो।" कहता हुआ दारोगा उठ खड़ा हुआ और सबको साथ ले अपने उस भूल-भुलैया वाले मकान की तरफ रवाना हुआ।

ग्यारहवाँ बयान

दारोगा की सूरत बने हुए प्रभाकरसिंह को बाहर छोड़ भैयाराजा मेघराज और भूतनाथ जिस समय अजायबघर में गए थे उस समय इन सभों ही की सूरत बदली हुई थी इस कारण प्रभाकरसिंह के पिता माता तथा बहुरानी को यह नहीं मालूम हो सका कि ये लोग कौन हैं। इसके अतिरिक्त भूतनाथ (नन्दराम ने सुभीते के लिए सभों को हथकड़ी बेड़ी तोड़ने के पहिले ही बेहोश कर दिया था जिससे उन्हें यह भी न मालूम

हुआ कि आने वालों ने हमारे साथ क्या बर्ताव किया परन्तु इस समय होश में आने पर अपने को किसी दूसरी जगह और हथकड़ी बेड़ी से खाली देख कर उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा क्योंकि उन सभों के होश में आने का इन्तजार करने बाद मेघराज प्रभाकरसिंह वगैरह अपनी अपनी नकली सूरतें साफ करने के लिए बाहर चले गए थे।

कुछ देर तक बहुत कुछ सोचने विचारने पर भी जब उन लोगों को अपनी स्वतंत्रता का कोई कारण समझ में न आया तो बहुरानी ने नन्दरानी से पूछा, "भाभी, मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि हम लोग यहाँ क्योंकर आ गए अथवा हमारे हाथ पैर क्यों खुले हुए हैं। यदि तुमको कुछ मालूम हो तो कहो।"

नन्द०। नहीं, मुझे कुछ भी नहीं मालूम है बल्कि यही बात तो मैं तुमसे पूछने वाली थी (दिवाकरसिंह की तरफ देख कर) शायद आपको कुछ मालूम हो।

दिवाकर०। हम लोग तो सब साथ ही हैं, भला तुमसे ज्यादा मुझे कैसे मालूम हो सकता है! उस कैदखाने में जिस समय चार पाँच आदमी हमारे पास आये थे उसी समय मैं बेहोश हो गया था और अब जो आँख खुली तो अपने को यहाँ पाता हूँ बस इसके सिवाय मैं कुछ नहीं जानता।

नन्द०। ठीक है, परन्तु जहाँ तक मैं समझती हूँ इसमें कुछ भेद अवश्य है, और कुछ नहीं तो इतना तो जरूर ही है कि अब हम लोग निर्दई दारोगा के हाथ से निकल आये नहीं तो वह हमें यों हथकड़ी बेड़ी से खाली कदापि न रखता।

अभी नन्दरानी अपनी बात पूरी भी नहीं करने पाई थी कि प्रभाकरसिंह दयाराम को साथ लिए खोह में आ पहुँचे। नजर मिलते ही खून ने जोश मारा और प्रभाकरसिंह झपट कर अपने पिता के पैरों पर गिर पड़े और न रुकने वाली आंसुओं की धारा से उनके चरण धोने लगे।

दिवाकरसिंह और नन्दरानी को यद्यपि कैदखाने के कष्टों ने इस योग्य न छोड़ा था कि ये एक कदम भी उठ कर चल सकते परन्तु चिरकाल के बिछुड़े हुए अपने प्यारे पुत्र को देख कर उनके टूटे हुए शरीर में भी बल आ गया और उन्होंने प्रभाकरसिंह के सर को उठा कर हृदय से लगा लिया, केवल इतना ही नहीं बल्कि नन्दरानी ने भी कई बार कलेजे से लगा कर उन्हें प्यार किया।

इसके बाद सब लोग एक उचित स्थान पर बैठ गए और बड़ी उत्कंठा के साथ हाल सुनने के लिये एक दूसरे का मुँह ताकने लगे, मगर देर तक खुशी और प्रेम ने उनका गला ऐसा दबाये रक्खा कि और किसी तरह की बात-चीत होने न पाई।

हम नहीं कह सकते कि इस समय प्रभाकरसिंह और उनके माता पिता की क्या दशा थी और उनके कोमल चित्त पर क्या असर हो रहा था फिर भी यह कहे बिना जी नहीं मानता कि इस समय उनकी खुशी का अन्दाजा करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। यद्यपि इस समय बिलकुल सन्नाटा है और किसी के मुँह से एक शब्द भी निकलता सुनाई नहीं देता, तथापि आँखों का काम बन्द नहीं है जो इशारे ही में परस्पर बातें कर रही हैं और अपनी बीती दुःख दर्द की कहानी एक दूसरे पर प्रगट कर रही हैं। प्रभाकरसिंह के माता पिता की आंखों से आँसुओं की धार अब तक जारी है जिसको प्रभाकरसिंह बड़े प्यार के साथ अपने रूमाल से पोंछ रहे हैं। लगभग एक घड़ी के यों ही व्यतीत हो गया परन्तु किसी के मुँह से एक शब्द भी न निकला। आखिर प्रभाकरसिंह बोले

प्रभाकर०। पिताजी! आज परमात्मा ही की दया से यह समय प्राप्त हुआ है कि हम लोग अपनी सभी पिछली आपदाओं को स्वप्नवत् जान कर भूल जायँ और.....

दयाराम०। (बात काट कर) बेशक बेशक, एक वह दिन था कि हम लोग आप लोगों को मृतक समझते थे और स्वप्न में भी यह आशा

नहीं कर सकते थे कि फिर अपनी आंखों से आप लोगों का दर्शन करेंगे (आकाश की तरफ देख कर) परमेश्वर तू धन्य है ! तू ने वह दिन दिखलाया जिसके देखने की कभी आशा न थी !!

दिवाकर० । (प्रभाकर से) इन्दु कहाँ और कैसी है ?

प्रभाकर० । वह कुशलपूर्वक इन्द्रदेवजी के उस स्थान में है जो उन्होंने हम लोगों को रहने के लिये दे रक्खा है ।

दिवा० । क्या तुम लोग आजकल इन्द्रदेव के पास रहते हो ?

प्रभा० । जी हाँ ।

दिवा० । शिवदत्त के यहां से क्यों चले आये ?

प्रभा० । पिता जी ! वह बड़ा ही कमीना आदमी है और सज्जनों तथा वीर पुरुषों का आदर करना नहीं जानता, इसलिए उसकी मातहती में रहने का मेरा जी नहीं चाहा ।

दिवा० । चलो अच्छा हुआ कि तुम्हारा चित्त आप से आप हट गया, मै भी यही चाहता था ।

नौकरी छोड़ कर शिवदत्त के पास से चले आने का असली हाल प्रभाकरसिंह अभी अपने पिता से ठीक ठीक नहीं बताया चाहते थे इस लिए बातें बना कर टाल तो दिया परन्तु अपने पिता का उत्तर सुन उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और सोचने लगे कि पिताजी तो सदा शिवदत्त की प्रशंसा किया करते थे, परन्तु आज कैदखाने से छूट कर उसके विरुद्ध बात क्यों कहते हैं ? अवश्य इसमें कोई भेद है जो कदाचित् पिताजी का किस्सा सुनने से खुले । यह सोच इन्होंने अपने पिता से कहा कि 'यदि आपको कष्ट न हो तो अपना हाल हम लोगों को सुनाइये जिसके सुनने के लिए मेरी तबियत घबड़ा रही है ।' परन्तु दयाराम ने इस समय उनके किस्से को सुनना पसन्द न किया और कहा कि 'जब तक इन्द्रदेव भैयाराजा अथवा भूतनाथ इत्यादि इकट्ठा न हो लें इनका किस्सा सुनना उचित नहीं है ।'

बारहवाँ बयान

खञ्जर की रोशनी करते और उसकी मदद से दारोगा के आदमियों को भुलावा देकर अपने पीछे ले जाते हुए जब भैयाराजा और भूतनाथ बहुत दूर निकल गए और उनके तथा दारोगा के आदमियों के बीच में लगभग आध कोस का अन्तर पड़ गया तो भैयाराजा भूतनाथ को लिए हुए जमानिया की तरफ रवाना हुए और दोनों में यों बातें होने लगीं :—

भैयाराजा० । दो कामों में से एक काम तो हो गया कि दुश्मनों को घुमाते फिराते और धोखा देते अजायबघर से बहुत दूर ले आये, अब रहा दूसरा, वह जरा कठिन काम है, उसमें तुमको ज्यादा परिश्रम करना पड़ेगा ।

भूत० । मैं तो हर तरह से मुस्तैद ही हूँ ।

भैया० । हां, सो तो ठीक ही है । खैर तो अब यह बताओ कि हम क्या करें और किस तरह जमना और सरस्वती को दारोगा की कैद से छुड़ावें ।

भूत० । मैं तो यही मुनासिब समझता हूँ कि आप कहीं रुककर स्नान सन्ध्या और भोजन इत्यादि से छुट्टी पावें और मैं इस बीच में जाकर जमना और सरस्वती का पता लगाने और बन पड़े तो उनको छुड़ाने की फिक्र में लगता हूँ, क्योंकि जहाँ तक मैं समझता हूँ मैं इस काम को अकेला ही पूरा कर सकूँगा ।

भैया० । भूतनाथ ! मैं तुम्हारे साहस और जीवट को खूब जानता हूँ और निःसन्देह तुम अकेले ही बहुत कुछ कर सकते हो परन्तु मैं ऐसा चाहता हूँ कि इस काम में खुद भी तुम्हारा साथ दूँ । हाँ, इतना जरूर है कि मैं दिन में कोई काम नहीं करना चाहता क्योंकि यद्यपि तुम लोगों ने मेरी सूरत बदल दी है तथापि ऐयारी न जानने के कारण मुमकिन है कि

मैं अपने को भली भाँति छिपा न सकूँ और कहीं धोखा खाकर अपने को प्रगट कर दूँ।

भूत०। ठीक है, तो जैसी आप आज्ञा दें मैं भी वैसा ही करूँ।

भैया०। इस समय तो मैं भरतसिंह के मकान पर चलता हूँ और दिन भर वहीं रहूँगा। तुम दारोगा की तरफ जाकर जमना और सरस्वती की टोह लगाओ, वे दोनों अगर दारोगा के ही कब्जे में पड़ गई हैं तो बहुत मुमकिन है कि उसी मकान में हों जिसमें एक बार पहिले इन्दुमति के साथ कैद की जा चुकी हैं।

"आपका खयाल ठीक हो सकता है, खैर मैं जाता और टोह लगाता हूँ।" कह कर नकली भूतनाथ भैयाराजा से अलग हो तेजी के साथ दारोगा के मकान की तरफ रवाना हुआ, परन्तु थोड़ी ही दूर जाकर जब उसने देखा कि भैयाराजा उसकी नजरों से बाहर हो गए तो वह आड़ देख कर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और इस तरह की बातें सोचने लगा।

जमना और सरस्वती इस समय कहाँ होंगी? अगर दारोगा ही ने उन्हें पकड़ लिया है तो कहाँ रक्खा होगा? अगर अपने मकान ही में, तो उसका मकान अन्दर से कैसा है? जमना और सरस्वती किस कमरे में होंगी? मैं अन्दर क्योंकर जाऊँगा? क्या वहाँ पहरा न होगा? क्या मुझे देख कर कोई रोकेगा नहीं? इत्यादि तरह तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ रूपी नन्दराम बहुत देर तक उस चट्टान पर बैठा रह गया परन्तु कोई बात उसकी समझ में न आई कि वह क्या करे और किस तरह जमना और सरस्वती को कैद से छुड़ाये। वह सिर झुकाए बहुत ही व्याकुलता के साथ इसी तरह की बातें सोच ही रहा था कि इतने में ही पीछे की तरफ से किसी के आने की आहट मिली, नन्दराम ने मुड़ कर देखा तो भूतनाथ को असली सूरत में अपनी तरफ आते पाया। वह खुश हो कर उठ खड़ा हुआ और खुशी भरे गले से बोला, "बड़े मौके पर आए।"

भूतनाथ के पूछने पर नन्दराम ने कल से आज तक का सब हाल संक्षेप में कह सुनाया और यह भी कहा कि इस समय मैं भैयाराजा की आज्ञानुसार जमना और सरस्वती की खोज में अलग हुआ हूँ और यहाँ बैठ कर यही सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिए कि इतने में तुम पर निगाह पड़ी। चलो अच्छा हुआ, नहीं तो अब मैं अपने को और अधिक छिपा न सकता और मुझे भैयाराजा पर अपने को प्रगट कर देना पड़ता।

भूत०। (मुस्कुरा कर) खैर अब मैं आ पहुँचा, सब कुछ देख लूँगा, परन्तु आप यह बता दें कि भैयाराजा से कहाँ मिलने की बात हुई है?

नन्दराम०। उन्होंने कहा था कि रात के वक्त दारोगा के मकान के आस-पास कहीं रहेंगे।

भूत०। अच्छा अब आप क्या करेंगे? मेरे साथ चलेंगे या.....

नन्द०। (बात काट कर) इस समय मैं दामोदरसिंह के पास जाऊँगा और उनसे मिलने बाद मकान जाने का इरादा है।

भूत०। मुझसे पुनः कब मिल सकेंगे?

नन्द०। यदि आवश्यकता हो तो तीन चार दिन के बाद मैं पुनः तुमसे मिल सकता हूँ।

भूत०। ठीक है, तो आप जायें परन्तु इतना करें कि भैयाराजा से अपनी असली सूरत में न मिलें और अभी इस बात को भी छिपाये रखें कि आपने मेरी सूरत बन कर उन्हें सहायता दी है, बल्कि जब तक मैं न कहूँ इस बात को उन पर प्रगट न करें।

नन्दराम ने यह बात मंजूर की। भूतनाथ ने उनके कपड़े उनके हवाले कर दिये तथा अपने कपड़ों को लेकर पहिनने बाद उनसे बिदा हो दारोगा के मकान की तरफ रवाना हुआ।

तेरहवां बयान

दारोगा का भूलभुलैया वाला मकान कैसा है इसका बहुत कुछ हाल हमारे पाठकों को मालूम हो चुका है। जमना सरस्वती और इन्दुमति तीनों इस मकान में कैद रह चुकी हैं, और भैयाराज को भी वह इस मकान की सैर करा चुका है अस्तु इस समय इस मकान का और ज्यादा हाल न लिख हम अपने पाठकों को साथ ले इसके एक बड़े कमरे में चलते हैं और छिप कर देखते हैं कि वहां क्या हो रहा है ?

रात आधी से ज्यादा बीत चुकी है। मकान भर में चारो तरफ यद्यपि सन्नाटा छाया हुआ है मगर इस कमरे में हम दो कैदियों को हथकड़ी और बेड़ी से मजबूर बैठे आपुस में धीरे धीरे बातें करते देख रहे हैं। एक तरफ आले पर चिराग जल रहा है मगर उसकी मद्धिम रोशनी इस बड़े कमरे के लिये काफी नहीं है और इस कारण इन दोनों की सूरत शक्ल साफ साफ मालूम नहीं पड़ती है। आइये, नजदीक आ कर इनकी बातें सुनें, शायद तब कुछ पता लग जाय कि ये कौन हैं।

एक०। देखो बहिन ! हठ भी कैसी बुरी चीज है। जो लोग बड़ों की बात को नहीं मानते अवश्य धोखा खाते हैं। (रो कर) ओफ ! चाचाजी ने हम लोगों को इतना मना किया परन्तु हमने एक न माना। अफसोस ! अब कौन सा मुँह ले कर हम लोग उनके सामने जायंगे ! हाय, उन्हें क्या मालूम कि बेचारी जमना और सरस्वती हथकड़ी बेड़ी से मजबूर किस कैद खाने में पड़ी अपने किये पर पछता रही हैं।

सरस्वती०। तुम्हारा कहना ठीक है मगर क्या वे हमारा पता लगाने का कोई बन्दोबस्त नहीं करेंगे ? उन्हें इस बात का तो पता अवश्य ही लग गया होगा कि हम दोनों दुश्मन के कब्जे में फँस गई हैं।

जमना०। मगर इस बात का पता उन्हें क्योंकर लग सकता है कि हम लोग फिर उसी दुष्ट दारोगा के कब्जे में पड़ गई हैं।

सरस्वती० । मगर तुम ही यह कैसे कह सकती हो कि हम लोग दारोगा के कब्जे में फँस गई हैं ! अभी तक कोई हमें देखने तो नहीं आया है ।

जमना० । मुझे कुछ कुछ शक होता है कि यह वही जगह है जिसमें उसने पहिली दफे बहिन इंदुमति के साथ हम लोगों को बन्द किया था । (कमरे के एक तरफ की तीन बन्द खिड़कियों की तरफ इशारा करके) इन्हीं खिड़कियों की राह उस कम्बख्त ने हम लोगों को नीचे बगीचे में देखने के लिये कहा था जब अपने किसी साथी को जीजाजी की सूरत बना.....

जमना अपनी बात पूरी नहीं कर पाई थी कि बाहर की तरफ से कुछ खटके की आवाज आई जिसे सुन वह रुक गई और उस तरफ गौर कर सरस्वती से बोली : —

जमना० । यह कैसी आवाज है ! क्या कोई दरवाजा खोल रहा है !!

सरस्वती० । निःसन्देह ऐसा ही है । कहीं हम लोगों का कोई साथी तो नहीं हैं ।

जम० । कदाचित् हो, मगर मुझे तो दारोगा के होने का ही गुमान होता है ।

सरस्वती० । खैर, कोई तो अवश्य होगा । देखें हमारी किस्मत अब क्या रंग लाती है ।

इतना कह दोनों औरतें उछलते हुए कलेजे से आने वाले की राह देखने लगी । थोड़ी ही देर में दो आदमी चेहरों पर नकाब डाले बलती हुई मोमबत्ती हाथ में लिए दर्वाजा खोल कर कमरे के अन्दर आते हुए दिखाई पड़े । एक दफे तो इन नकाबपोशों को देख कर ये दोनों कांप उठीं मगर जब एक नकाबपोश ने अपने चेहरे से नकाब उठा जमना और सरस्वती की तरफ देखा और कहा, "क्या तुम लोग हमें पहिचानती हो ?" तो दोनों मारे खुशी के फड़क उठीं पर हाथ पैर बँधा रहने के कारण सर झुका

ने के सिवाय किसी दूसरे प्रकार से अदब न कर सकीं, हाँ उनके चेहरे के उतार चढ़ाव ने नकाबपोश पर जाहिर कर दिया कि इनके दिलों में उनकी कहाँ तक इज्जत है। यह दशा देख वह नकाबपोश भी जो वास्तव में भैयाराजा थे बेचैन हो गए और उन्होंने कमर से एक औजार निकाल कर जल्दी जल्दी उनकी हथकड़ी बेड़ी खोल दी। हथकड़ी बेड़ी से छुटकारा पाते ही दोनों औरतें भैयाराजा के पैरों पर गिर पड़ीं, जिन्होंने बड़े प्यार से उनका सर उठा कर ढाढ़स दिया और कहा "अब घबराने की कोई बात नहीं है, हम लोग इसी समय तुम्हें यहां से निकाल कर अपने साथ ले चलेंगे। हमारे साथ में यह दूसरा नकाबपोश भूतनाथ है?

जमना०। क्या ये भी हमें छुड़ाने के लिए ही आये हैं?

भैया०। (मुस्कुराकर) डरो मत, ये भी अब हम लोगों के ही साथी हैं और तुम्हें छुड़ाने के लिये ही आए हैं।

जमना यह सुन चुप हो रही और सर नीचा कर कुछ सोचने लगी। भैयाराजा ने यह देख कर कहा, "अच्छा तो अब देर मत करो उठो।"

भैयाराजा और भूतनाथ पीछे को मुड़े और जमना तथा सरस्वती उनके साथ चलने को तैयार हो गईं।

चौदहवां बयान

अब हम फिर दारोगा की तरफ लौटते और देखते हैं कि वह कहां है या क्या कर रहा है?

जयपाल बिहारी और हरनामसिंह को साथ लिये दारोगा अपने खास मकान में ठीक उस समय पहुँचा जिस समय भूतनाथ और भैयाराजा अपनी कारीगरी से उस मकान के अन्दर पहुँच गए थे बल्कि जमना और सरस्वती से बातें कर रहे थे। पहरेदार सिपाहियों को तो इस बात की कुछ खबर ही न थी कि दुश्मन मकान के अन्दर घुस गया है, वे मामूली

रीति से दर्वाजे पर पहरा दे रहे थे। दारोगा उनसे बातें करने बाद एक कमरे से दूसरे में और दूसरे से तीसरे में होता हुआ जब उस कमरे के बगल वाली कोठड़ी में पहुँचा जिसमें जमना और सरस्वती कैद थीं तो वहां रोशनी देख यकायक घबरा उठा और बिहारीसिंह की तरफ देख कर बोला, "यह क्या मामला है! यहां रोशनी कैसी है! इनका कोई मददगार आ पहुँचा क्या?

बिहारी०। बेशक कुछ गड़बड़ी है, चलिये नजदीक से देखें!

जैपा०। ठहरो मैं आगे बढ़ कर देखता हूँ।

इतना कह जयपाल आगे बढ़ा और दर्वाजे से झाँक कर अन्दर की तरफ देखने लगा।

एक ही नजर में जयपाल सभों को पहिचान गया और कुछ सोच कर पीछे मुड़ने ही को था कि दारोगा स्वयं उसके पास आ गया और अन्दर की अवस्था देख जयपाल से बोला, "क्या हम भैयाराजा को कैदियों के साथ देख रहे हैं?"

जैपाल०। निःसन्देह ऐसा ही है, मगर भैयाराजा यहाँ कैसे आ गए?

दारोगा०। (काँप कर) नहीं कह सकते! शायद बहुरानी की तलाश में इधर आ निकलें हों। मगर इससे यह सन्देह हो सकता है कि बहुरानी इनके हाथ न लगी बल्कि कोई और ही ले गया। जो हो इससे बढ़ कर मौका फिर न मिलेगा। देखो मैं इस वक्त इनको कैसा छकाता हूँ।

इतना कह दारोगा ने एक बाँस का तमञ्चा (जो खास बाग से अपने साथ लाया था) निकाला और उसमें एक गोली डाल कर हाथ में ले लिया तब दूसरे जेब से कई गोलियाँ निकाल कर एक एक अपने साथियों को देने बाद एक गोली अपने मुँह में रख ली और तब उस कमरे में जहाँ भैयाराजा इत्यादि बैठे थे, गोली चलाई।

तमंचे से निकली हुई गोली भैयाराजा के पास गिर कर बिना किसी तरह की आवाज किये फूट गई और उसमें से निकला हुआ जहरीला

धूँआँ कमरे में चारो तरफ फैल गया जिसके असर से शीघ्र ही भैयाराजा और जमना इत्यादि बेहोश हो कर जमीन पर लेट गये कुछ देर बाद जब कमरे का फैला हुआ धूँआँ बाहर निकल गया तो जयपाल बिहारी और हरनामसिंह को साथ लिए हुए दारोगा कमरे में दाखिल हुआ और खुशी भरी निगाह कैदियों पर डालता हुआ जयपाल से बोला, "अब मेरा कलेजा ठण्डा हुआ, आज मै इन चारो को मार कर सदैव के लिए झगड़ा तय करूँगा।"

जैपा०। बेशक यह आप इस खयाल से कहते होंगे कि जिसमें इनके छूट जाने या फिर संसार में प्रगट होने का भय जाता रहे।

दारोगा०। और क्या? यदि मैं शुरू में ही ऐसा कर दिये होता तो आज इस दुनिया में मेरा कोई शत्रु नजर न आता।

जय०। ठीक है, परन्तु मेरी राय में पहिले इन सभों का चेहरा धो कर देखना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि पुनः धोखा हो जाय और ये कोई और ही.....

दारोगा०। (बात काट कर) बेशक यह राय तुम्हारी बहुत ठीक है, मैं भी इसे पसन्द करता हूँ।

इतना कह दारोगा ने बिहारीसिंह की तरफ देख कर कुछ इशारा किया जो तुरत ही एक तरफ जाकर एक मिट्टी का घड़ा जल से भरा हुआ ले आया और पास बैठ कर सभों का मुंह धोने लगा।

सबसे पहिले उसने जमना सरस्वती का मुँह धोया और इसके बाद भैयाराजा तथा भूतनाथ की तरफ झुका। जब इस काम से भी छुट्टी पा चुका तो दारोगा से बोला, "ओफ ये तो कोई और ही औरतें हैं अर्थात् जमना और सरस्वती नहीं हैं* हाँ भैयाराजा और भूतनाथ के असली होने में कोई सन्देह नहीं है।"

---

*पाठकों को याद होगा कि इस समय भी जमना सरस्वती के चेहरे

दारोगा० । निःसन्देह ऐसा ही है ! (जैपाल की तरफ देख कर) मगर तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ा जाता है और तुम घबड़ाये हुए क्यों जान पड़ते हो ?

जैपाल० । मेरी अक्ल हैरान है और कुछ समझ में नहीं आता कि क्या मामला है । ये दोनों तो वे ही औरतें हैं जिनके यहाँ मैं कैद था या जो प्रतिदिन मेरे पास आकर मुझे तरह तरह की यातना दिया करती थीं । आह ! बड़ी जालिम औरतें हैं । इनको देख कर तो मेरा कलेजा हिल जाता है !!

दारोगा० । परन्तु आश्चर्य है कि आज के पहिले मैंने इनको कभी नहीं देखा !

जैपाल० । न मालूम ये कम्बख्त हमें दुःख देने के लिए कहाँ से पैदा हो गईं ! खैर वहाँ तो मै इनकी कैद में था इस कारण कुछ जान न सका पर अब वह मौका आ गया है कि मैं इनका हाल दरियाफ्त कर सकूँ । यदि आज्ञा हो तो इनको होश में लाकर इनका भेद जानने का उद्योग करूँ ?

दारोगा० । हाँ हाँ, जरूर, मेरा दिल भी इनका हाल जानने के लिए व्याकुल हो रहा है, परन्तु जहाँ तक मेरा खयाल है ये अपना ठीक परिचय कदापि न देंगी ।

जैपा० । हो सकता है परन्तु मैं किसी न किसी तर्कीब से अवश्य ही मालूम कर लूँगा ।

दारोगा० । अच्छी बात है मगर इस काम को जल्द करना चाहिये क्योंकि मैं कल रात भर का जागा हुआ हूँ और इस समय नींद के मारे मेरी आँखें बन्द हुई जाती हैं ।

पर इन्द्रदेव की दी हुई तिलिस्मी झिल्ली चढ़ी हुई थी परन्तु भैयाराजा अपनी असली सूरत में थे ।

जैपा० । लेकिन यह काम तो जल्दी का नहीं है, जल्दीबाजी करने से सब बात बिगड़ जायगी. हाँ यदि आप चाहें तो जाकर आराम करें और हरनाम और बिहारी को यहीं छोड़ते जायं, सुबह होते होते तक मैं कुछ न कुछ पता लगा ही लूँगा ।

दारोगा० । अच्छी बात है, मैं जाता हूँ, कुछ देर आराम कर सुबह फिर आऊँगा, तब तक यदि तुम इन दोनों औरतों का कुछ पता लगा सको तो लगाने की कोशिश करना और नहीं तो कल एक साथ ही इन चारों को खतम कर बखेड़ा तय किया जायगा ।

इतना कह दारोगा हरनाम और बिहारी को वहीं छोड़ कमरे के बाहर की तरफ चला मगर फिर रुक कर बोला, "यदि कहो तो कुछ रोशनी का इन्तजाम करता जाउँ। यहाँ केवल इस मोमबत्ती की ही रोशनी है जिसे शायद भैयाराजा या भूतनाथ लाये होंगे ।"

जैपा० । नहीं और किसी रोशनी की जरूरत नहीं, इसी मोमबत्ती से काम चल जायगा । यदि रोशनी की जरूरत पड़ेगी भी तो मैं स्वयम् नीचे जाकर नौकरों से माँग लूँगा, यहाँ किसी नौकर का आना और भैयाराजा को इस हालत में देखना ठीक नहीं है ।

दारोगा० । हाँ, तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, मेरे नौकरों को भैयाराजा को इस हालत में यहाँ न देखना चाहिये । मैं भी इस बात की ताकीद कर जाऊँगा कि कोई नौकर ऊपर न आवे ।

इतना कह कर दारोगा वहाँ से चला गया । जयपाल उसके जाने के बाद कुछ देर तक तो चुपचाप कुछ सोचता रहा इसके बाद भूतनाथ के पास गया और उसके बटुए में कोई चीज खोजने लगा ।

हरनामसिंह ने यह देख पूछा, "क्यों उसके बटुए में क्या खोज रहे हो ?"

जैपाल० । देखता हूँ, शायद मेरे मतलब की कोई चीज निकल आवे ।

भूतनाथ के बटुए की छानबीन करने में जैपाल ने बहुत अधिक समय

लगा दिया और इस बीच में वह मोमबत्ती जो वहां जल रही थी लगभग समाप्ति पर आ गई। यह देख जैपाल ने भूतनाथ के बटुए में से एक दूसरी मोमबत्ती निकाली और उसे जला कर पहली मोमबत्ती के पास जमीन पर खड़ा कर दिया, तब हरनामसिंह से कहा, "इसके बटुए में से तो कोई काम की चीज नहीं निकलती दिखाई पड़ती, सिर्फ कुछ दवाएँ वगैरह हैं जो हम लोगों के किसी मसरफ की नहीं। तुम्हारे पास अगर लखलखा हो तो मुझे दो मै इन औरतों को होश में लाऊँ।"

हरनामसिंह ने यह सुन अपने बटुये में से लखलखे की डिबिया निकाली और कहा, "लो यह लखलखे की डिबिया, मगर यह तो बताओ कि तुमने यह दूसरी मोमबत्ती भूतनाथ के बटुए में से निकाल कर क्यों बाल ली?"

"पहिली मोमबत्ती समाप्त हो चुकी थी, इसलिए मैने दूसरी और बाल ली है।" कह कर जयपाल ने लखलखे की डिबिया हरनामसिंह से ले ली और जमना सरस्वती के पास जा उन्हें होश में लाने की कोशिश करने लगा।

जैपाल की जलाई हुई इस मोमबत्ती की रोशनी पहिली से कुछ तेज थी और इसमें से एक प्रकार की विचित्र सुगन्ध निकल कर कमरे को सुगन्धित कर रही थी, यह सुगन्ध व्यर्थ न थी बल्कि तेज बेहोशी का असर रखती थी। जयपाल कुछ देर तक तो जमना और सरस्वती के पास बैठा उनको होश में लाने की कोशिश करता रहा, मगर जब उसको यह विश्वास हो गया कि अब मोमबत्ती से निकली हुई गन्ध बिहारी और हरनाम के दिमाग में पूरी तरह असर कर गई होगी तो वह वहाँ से हटा और भैयाराज के पास से तिलिस्मी खञ्जर और उसके जोड़ की अँगूठी लेता हुआ बिहारीसिंह की तरफ देख कर कहने लगा, "देखो दारोगा साहब भी कैसे आदमी हैं जो अपने मालिक भैयाराजा पर भी इतनी सख्ती करते हैं। मुझसे तो यह काम कदापि न हो सकेगा और मैं चाहता हूँ कि

भैयाराजा को होश में लाकर छोड़ दूँ, कहो तुम्हारी क्या राय है ?"

यह सुनते ही बिहारी और हरनाम जयपाल का मुँह ताकने लगे। उनको सन्देह हो गया कि हो न हो यह कोई ऐयार हैं और इस मोमबत्ती से जो गन्ध निकल रही है शायद उसमें भी बेहोशी का असर है जिससे हम लोग जल्द ही बेकाम हो जायंगे। मगर उनको कुछ ज्यादा सोचने विचारने या सवाल करने का मौका न मिला, मोमबत्ती की खुशबू ने पूरी तरह असर कर लिया था इस कारण वे दोनों देखते देखते बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े जयपाल यह देखते ही उठा और उन दोनों के हाथ पांव अच्छी तरह बांध देने के बाद भैयाराजा, भूतनाथ तथा जमना और सरस्वती को लखलखा सुँघना शुरू किया जिससे बात की बात में उन सभों की बेहोशी दूर हो गई और वे आश्चर्य तथा घबराहट की निगाह से चारो तरफ देखने लगे। जैपाल को सामने खड़ा देख भैयाराजा इत्यादि को बड़ा आश्चर्य हुआ और सभी यह सोचने लगे कि यह क्योंकर कैद से छूट कर इस जगह आ पहुँचा।

तरह तरह की बातें सोचते विचारते सभी अपने अपने खयालों में ऐसे निमग्न हुए कि थोड़ी देर के लिए किसी को अपने तनोबदन की सुध न रही। उनकी यह दशा देख जैपाल मुस्कुरा पड़ा जिससे भैयाराजा को क्रोध चढ़ आया और वे लाल आंखें कर जैपाल से बोले, "क्या यह सब कार्रवाई तेरा ही थी और तूने ही हम लोगों को बेहोश कर रक्खा था ?"

जैपाल०। बेहोश तो किसी और ने किया था, मैं उस बेहोशी को दूर करने वाला हूँ।

भैया०। तूने ऐसा क्यों किया ?

जैपाल०। केवल इसी लिए कि यहां से आप लोगों को निकाल कर जहां कहें पहुँचा दूँ।

भैया०। झूठ ! बिलकुल झूठ !! तेरा ऐसा खयाल कदापि नहीं हो सकता !

जैपाल० । जी, निःसन्देह ऐसा ही है, मुझे आप लोगों की अवस्था पर दया आती है और मैं आप लोगों की मदद करना चाहता हूँ ।

भैया० । चुप कम्बख्त ! तू क्या मेरी मदद करेगा ? पहिले अपने बचाव की फिक्र तो कर ले ।

जैपाल० । अब तो आप ऐंठने लगे ! सच है दुनिया ऐसी जगह नहीं है जहाँ किसी के साथ कुछ अहसान किया जाय ।

भैया० । (आपे से बाहर होकर) बस बस, खबरदार जो एक अक्षर भी जुबान से निकला ! मालूम होता है कि तेरी मौत करीब है, ठहर मैं तेरी गुस्ताखी का मजा तुझे चखाता हूँ !!

इतना कह भैयाराजा ने म्यान से तलवार निकाल ली और जैपाल पर वार करने के लिए आगे बढ़े ।

भैयाराजा को आगे बढ़ता देख जैपाल ने फुर्ती के साथ अपने जेब से एक रूमाल जो किसी किस्म के अर्क से तर था निकाला और उससे अपना मुँह पोंछ डाला । भैयाराजा ने आगे बढ़ कर तलवार का वार किया जिसको वह बड़ी खूबी और होशियारी से बचा गया, दूसरा वार किया ही चाहते थे कि उनकी नजर जैपाल के चेहरे पर जा पड़ी । न मालूम उसके चेहरे में क्या फर्क आ गया था कि सूरत देखते ही भैयाराजा का हाथ रुक गया और वे यकायक चौंक कर रुक गये । उसी समय जमना और सरस्वती भी दौड़ कर जैपाल के पैरों पर गिर पड़ीं और भूतनाथ भी चमक कर बोला, 'वाह इन्द्रदेवजी ! आपने तो खूब धोखा दिया !!'

भैयाराजा भी अपनी कार्रवाई पर बहुत लज्जित हुए और जैपाल का हाथ पकड़ कर बोले, "इन्द्रदेव जी ! आपने तो मुझे बड़ा ही धोखा दिया ! पर आखिर आपने इस दिल्लगी में फायदा क्या सोचा था ?'

इन्द्र० । दारोगा के तमचे से निकली हुई गोली जो आपके पास ही जमीन पर गिर कर फूट गई थी साधारण न थी बल्कि सैकड़ों को बेबस

और बेहोश करने के लिए एक ही काफी थी। उसमें से निकला हुआ धूँआ जिसके कारण आप लोग बेहोश हो गये थे इतना जहरीला था कि लखलखा सुंघाने अथवा होश में लाने पर भी देर तक आप लोग इस योग्य न होते कि अपनी जगह से हिल सकें और मुझे इस मकान में देर तक रहना पसन्द नहीं। इसलिए मैंने यह ढंग किया जिसमें क्रोध आने तथा हाथ पैर हिलाने से आप लोगों के बदन में फुर्ती आ जाय और आप लोग यहाँ से निकल कर जल्द बाहर हो सकें।

भूत०। तो क्या हम लोगों को दारोगा ने बेहोश किया था?

इन्द्र०। हाँ।

भूत०। तब वह हम लोगों को छोड़ कर चला क्यों गया?

इन्द्र०। वह अपनी तबियत से नहीं गया बल्कि मैंने खुद उसे उल्लू बना कर अलग किया। आप जानते ही हैं कि वह जैपाल का कितना विश्वास करता है और मैं जैपाल की सूरत में था ही, यही कारण है कि वार खाली न गया और वह मेरे चकमे में आ गया।

भूत०। (बिहारी और हरनाम की तरफ देख कर) इनको भी आप ही ने बेहोश किया होगा?

इन्द्र०। और क्या?

जमना०। क्या मैं भी कुछ पूछ सकती हूं?

इन्द्र०। तुम जो कुछ पूछोगी मैं खूब जानता हूँ परन्तु समय बहुत ही कम है और हम लोगों को जहाँ तक जल्द हो सके इस जगह से बाहर निकल जाना चाहिये। बाहर निकल चलने पर मैं तुम्हारी बातों का खुशी से जवाब दूँगा। (भूतनाथ की तरफ देख कर) तुम इस मकान में किस तरह आये हो? कमन्द लगा कर या...?

भूत०। मैं और भैयाराजा जी कमन्द लगा कर यहाँ तक आये हैं मगर अब उस तरह बाहर जाने में कठिनता होगी क्योंकि सुबह हो चली

है और इस समय कमन्द के जरिये उतरने में किसी न किसी की निगाह पड़ जाने का डर है।

इन्द्र०। नहीं नहीं, अब कमन्द लगाने का मौका नहीं है, हम लोगों को दरवाजे की राह ही बाहर निकलना होगा। बेहतर होगा अगर जमना और सरस्वती एक बार फिर बेहोश किया जाना पसन्द कर लें क्योंकि अब तुम और मैं बिहारी और हरनाम की सूरत बन कर इन्हें बखूबी कैदियों की तरह ले जा सकेंगे।

भूत०। बेशक आपकी राय बहुत ठीक है। ऐसा करने में किसी तरह की कठिनता न होगी और हम लोग बेखटके बाहर निकल जायँगे।

इन्द्र०। (जमना की तरफ देख कर) क्यों तुम्हारी क्या राय है?

जमना०। आपकी राय बहुत अच्छी है पर मैं कुछ और ही सोचती हूँ। यदि ये दोनों ऐयार (बिहारी और हरनाम की तरफ बता कर) भी किसी तरह यहाँ से चले चलते तो बहुत उत्तम होता।

भूत०। तो क्या हर्ज है, मैं बिहारी और हरनाम को एक गठड़ी में बांध कर उठा लूँगा और जमना और सरस्वती को आप उठा लें।

सरस्वती०। दो दो आदमियों को एक साथ गठ्ठर में ले जाने से पहरे वाले शायद शक करें

भूत०। उँह! शक क्या करेंगे और शक करके ही क्या कर लेंगे? हम लोगों से बोलने की हिम्मत उनकी न पड़ेगी। (इन्द्रदेव की तरफ देख कर) क्यों साहब! आप क्या समझते हैं?

इन्द्र०। उन सभों को सन्देह तो जरूर होगा मगर खैर क्या किया जायगा इसके सिवाय और कोई कार्रवाई करने का मौका भी तो नहीं है क्योंकि सवेरा हुआ ही चाहता है और थोड़ी ही देर में दुष्ट दारोगा आ पहुँचेगा। तुम फुर्ती से अपने को हरनामसिंह बना लो और मैं बिहारीसिंह बन जाता हूँ। भैयाराजा जैपाल बन जायँगे।

थोड़ी ही देर में भूतनाथ हरनामसिंह की सूरत बन गया और

इन्द्रदेव बिहारीसिंह बनकर भैयाराजा को जैपाल की सूरत में बनाने लगे। जब इस काम से छुट्टी मिली तो इन्द्रदेव ने अपनी पौशाक जिसे पहन कर वह जैपाल बने थे, भैयाराजा को पहिना दी और आप बिहारीसिंह की पौशाक पहिन कर खड़े हो गये। भूतनाथ ने हरनामसिंह के कपड़े पहन लिये।

जमना और सरस्वती बेहोश करके एक कपड़े में बांधी गईं और इन्द्रदेव ने उन दोनों को अपनी पीठ पर उठा लिया। भूतनाथ ने हरनाम और बिहारी की गठड़ी बांध पीठ पर लादा और तब जैपाल बने भैयाराजा को साथ लिये ये सब मकान के बाहर की तरफ चले।

दारोगा के पहरेदारों ने जैपाल और हरनामसिंह तथा बिहारीसिंह को इस तरह जाते देख कर भी यह समझ कर ये लोग शायद दारोगा साहब के हुक्म से कैदियों को कहीं लिये जा रहे हैं उन सभों को कुछ न कहा और वे लोग बेखटके दारोगा के मकान के बाहर हो गये।

सुबह की सुफेदी आस्मान पर फैल चुकी थी जब जमना और सरस्वती को लिये इन्द्रदेव, उनके पीछे भैयाराजा और सबके पीछे बिहारी और हरनामसिंह को पीठ पर लादे भूतनाथ शहर के बाहर निकले और तेजी के साथ कदम बढ़ाते हुये मैदान की तरफ रवाना हुए।

पन्द्रहवां बयान

शहर के बाहर बहुत दूर निकल जाने बाद सुस्ताने और जमना तथा सरस्वती को होश में लाने की नीयत से इन्द्रदेव ठहर गये और उन दोनों की गठड़ी जमीन पर उतार कर रखने बाद भैयाराजा की तरफ घूम कर बोले, "यहाँ जरा ठहर कर इन दोनों को होश में ले आना चाहिये!" जिसके जवाब में भैयाराजा ने कहा, "अच्छी बात है।"

इतने ही में इन्द्रदेव का खयाल भूतनाथ की तरफ गया और उसे

अपने साथ न देख कर उन्होंने आश्चर्य के साथ भैयाराजा से पूछा, "भूतनाथ नहीं है, कहाँ चला गया ?"

भैयाराजा ने "साथ ही में तो था !" कह कर पीछे की तरफ देखा मगर उस पर कहीं निगाह न पड़ी। यह देख उन्होंने ताज्जुब से कहा, "रास्ते में साथ आता आता वह कहाँ चला गया ? हम लोगों से कुछ कह भी तो नहीं गया ! कहीं उसका मिजाज फिर तो नहीं बदला !!"

इन्द्रदेव ने इस बात का कुछ जवाब नहीं दिया और चुपचाप बैठ कर जमना और सरस्वती को होश में लाने का उद्योग करने लगे। थोड़ी ही देर में वे दोनों भी होश में आ कर उठ बैठीं और चारो तरफ देख कर बोलीं, "भूतनाथ कहाँ चला गया ?"

इन्द्र०। उसका कहीं पता नहीं, न मालूम रास्ते में आते आते कहां गायब हो गया !

जमना०। किसी दुश्मन के फेर में तो नहीं पड़ गया ?

इन्द्र०। नहीं दुश्मन के फेर में तो न पड़ा होगा क्योंकि वह एक ही धूर्त और चौकन्ना आदमी है, कोई दूसरी ही बात मालूम होती है।

भैया०। शायद फिर हम लोगों के विरुद्ध हो गया हो और.....

जमना०। मैं भी यही समझती हूं। वह ऐसा पाजी और झूठा है कि उसके कहे पर किसी को बिल्कुल विश्वास नहीं करना चाहिये (इन्द्रदेव की तरफ देख कर) मगर न मालूम आप क्यों उसके ऊपर इतना विश्वास और भरोसा करते हैं।

इन्द्र०। मैं उसके ऊपर विश्वास या भरोसा तो नहीं करता, हाँ उसे बिल्कुल नष्ट या गया गुजरा भी नहीं समझता हूँ। मेरा यही विश्वास है कि यदि चेष्टा की जाय और उसे समझा दिया जाय कि बुरे कर्मों का फल बुरा और भले का भला होता है तो वह जरूर सुधर जायेगा।

सरस्वती०। मैं तो यही समझती हूँ कि लाख कोशिश करने और समझाने पर भी उसका स्वभाव कभी न बदलेगा और वह अपनी दुष्टता

न छोड़ेगा। हमी लोगों के साथ देखिए कैसी कैसी प्रतिज्ञाएँ, कैसे कैसे वादे उसने किये पर अन्त में सब बातों में खोटा ही निकलता गया। और तो जाने दीजिये इन्हीं भैयाराजाजी के साथ उसने कैसा.....

भैयाराजा०। खैर जो कुछ हो, और मेरे साथ उसने अभी तक चाहे जैसे जैसे वादे और जिस प्रकार की दुष्टता की हो पर इस समय तो उसके अहसान का बहुत बड़ा बोझ मेरी गर्दन पर है। इस समय अपनी स्त्री को जो मैंने पाया है सो केवल उसी की मदद से। अगर वह धूर्तता और चालाकी से इस बात का पता न लगाए होता कि दारोगा ने अपने कैदियों को अजायबघर में ले जा कर बन्द किया है तो मै कदापि अपनी स्त्री को पा न सकता।

जमना०। कैदियों के अजायबघर में भेजे जाने का हाल तो हम लोगों को पहिले ही से मालूम था और जैपाल से भी इस बात की पुष्टि हो गई थी। हाँ, वहाँ की ताली के विषय में बेशक उसका अहसान मानना पड़ेगा।

भैया०। केवल मै ही क्यो, उसी की सहायता से तो प्रभाकरसिंह अपने माता पिता को पा सके हैं तथा दयाराम का पता लगने का भी एक प्रकार से उसी को कारण समझना पड़ेगा।

सरस्वती०। उसने हम लोगों के साथ कैसा बुरा बर्ताव किया यह जानते हुए भी आप ऐसा कहते हैं जिससे मुझे ताज्जुब होता है। यही दुष्ट उनके (दयाराम के) इतना कष्ट भोगने का कारण है और अपनी समझ मे वह उनकी जान ही ले चुका था, फिर भी आप कहते हैं कि 'उनके पता लगाने का कारण भी उसी को समझना चाहिये।' आश्चर्य है! आपकी जुबानी ऐसा सुन के मुझे.....

सरस्वती ने अपनी बात समाप्त नहीं की थी कि यकायक सभों की निगाह भूतनाथ पर पड़ी जो सामने से आ रहा था। सब लोग आश्चर्य और प्रसन्नता के साथ उसकी तरफ देखने लगे। बात की बात में वह

नजदीक आ पहुँचा और इन्द्रदेव से बोला, "मुझे रास्ते में से यकायक गायब हो जाते देख कर आप लोग ताज्जुब तो अवश्य करते होंगे !"

इन्द्र० ' बेशक हम लोग इस बात पर आश्चर्य कर रहे थे किन्तु तुम रास्ते में से कहाँ गायब हो गये ।

भूत० । मुझे एक आवश्यक काम के कारण आप लोगों से अलग होना पड़ा (कुछ रुक कर इन्द्रदेव से) यदि आप जरा सा मेरे साथ इधर आ जाते तो उत्तम होता ।

इतना कह भूतनाथ वहाँ से कुछ दूर हट गया और एक पेड़ के पास जा खड़ा हुआ । यह देख इन्द्रदेव अपनी जगह से उठे तथा भैयाराजा इत्यादि को उसी जगह बैठे रहने के लिये कह भूतनाथ के पास जाकर बोले, "कहो क्या बात है ?"

भूतनाथ ने एक दफे अच्छी तरह अपने चारो तरफ देखने बाद धीमी आवाज में कहा, "रास्ते में अपने एक शागिर्द की जुबानी मुझे मालूम हुआ है कि मेरे मालिक रणधीरसिहजी को मेरी जरूरत आ पड़ी है और उन्होंने मुझे बुलाने के लिए आदमी भेजा है । साथ ही इस बात का पता भी लगा है कि इधर बहुत दिनों तक उनसे न मिलने और दूसरे दूसरे कामों में फंसे रहने के कारण वे मुझसे नाराज भी हो गये हैं अस्तु अब मै इधर के सब कामों की फिक्र छोड़ अपने मालिक के पास जाना ही उत्तम समझता हूँ । हरनाम और बिहारी को मैंने अपने शागिर्दों के हवाले कर दिया है, वे उन्हें आपके मकान पर पहुँचा देंगे । आपसे अब मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि जो कुछ दुष्कर्म और भूलें मुझसे हो गई हैं उनको क्षमा करें और मेरे पिछले कामों को भूल कर भैयाराजा से भी मुझे माफी दिलाने का उद्योग करें ।

इन्द्र० । तो क्या अब तुम उनसे न मिलोगे ?

भूत० । नहीं, मुझे जरा भी फुरसत नहीं है । यदि इस बात का खयाल न होता कि मेरे यकायक गायब हो जाने पर आप लोग मेरे ऊपर सन्देह

करने लगेंगे तो मैं यहाँ आता भी नहीं, केवल इसी खयाल से और आपको सूचना दे देने की नीयत से मैं यहाँ आया हूँ।

इन्द्र०। तो अब तुम मुझसे कब मिलोगे?

भूत०। कुछ ठीक नहीं कि मुझे कब फुरसत मिलेगी। जमानिया में बहुत जल्द ही बड़ा भारी उपद्रव मचने वाला है जिसकी खबर अगर आपको लगी नहीं तो थोड़ी ही देर में लग जायगी।

इन्द्र०। जमानिया में कैसा उपद्रव मचने वाला है? मुझे तो कुछ खबर नहीं!!

भूत०! ठीक ठीक खबर तो मुझे भी नहीं है, हाँ इतना पता लगा है कि उन सब की जड़ में यही दुष्ट दारोगा है। अपने पुराने सब कैदियों के छूट जाने तथा भैयाराजा इत्यादि के हाथ में आ कर भी निकल जाने से वह बिल्कुल पागल सा हो रहा है और कोई भयानक काम कर डाला चाहता है। खैर जो कुछ भी हो, सब सामने ही आ जायगा।

इतना कह भूतनाथ इन्द्रदेव से बिदा हुआ, मगर थोड़ी दूर जाने बाद फिर लौट आ कर बोला, "जहाँ तक हो इस बात का ध्यान रखियेगा कि भैयाराजाजी अब जमानिया न जायँ, वहाँ उनके लिये कुशल नहीं है।"

इतना कह बिना उत्तर की राह देखे भूतनाथ इन्द्रदेव के सामने से हट गया और इसके बाद तेजी के साथ एक तरफ को जाता हुआ उनकी आँखों की ओट हो गया।

इन्द्रदेव को भूतनाथ की इन बातों से बड़ा आश्चर्य हुआ और वे भूतनाथ के इस विचित्र ढंग से माफी और बिदा मांगने पर ताज्जुब करते हुए भैयाराजा इत्यादि के पास लौट आये। जमना के पूछने पर उन्होंने भूतनाथ से जो कुछ बातें हुई थीं पूरी पूरी कह सुनाईं और तब कहा, "कुछ समझ में नहीं आता कि क्या मामला है और भूतनाथ इस तरह पर यहाँ से हट कर अपने मालिक के पास क्यों जाना चाहता है?"

भैया० । और मुझे जमानिया जाने से क्यों रोकता है इसका भी कोई कारण नहीं मालूम होता ।

सरस्वती० । मैं समझती हूँ कि उसे दारोगा की किसी नई चाल का पता लग गया है ।

इन्द्रदेव० । उसके सच्चे होने में तो कोई सन्देह नहीं मालूम होता और उसने जिस ढंग से सब बातें कही हैं उनसे यह भी नहीं मालूम होता कि वह झूठ कहता है । जरूर कोई ऐसी आवश्यक और आश्चर्य-जनक घटना हुई या होने वाली है जिसके कारण उसके सिर यकायक ऐसी स्वामीभक्ति सवार हो गई है ।

भैया० । खैर इन बातों को अब इस समय जाने दीजिये, चलिये पहिले अपने ठिकाने पहुँचें तो फिर सब बातें होती रहेंगी । मेरा जी अपनी स्त्री तथा प्रभाकरसिंह के माता पिता को देखने के लिए बहुत व्याकुल हो रहा है, उन्हें आपने कहाँ छोड़ा है ?

इन्द्र० । मैं उन्हें अपने स्थान से थोड़ी ही दूर पर एक पहाड़ के पास छोड़ कर जमना और सरस्वती को छुड़ाने निकला था । जहाँ तक मैं समझता हूँ अभी तक वे सब वहीं होंगे । अच्छा अब देर करने से कोई फायदा नहीं, उठना चाहिये ।

इतना कह इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और उनके साथ भैयाराजा जमना और सरस्वती भी उठ खड़ी हुईं ।

सोलहवां बयान

दोपहर की टनटनाती धूप में भी भूतनाथ को चैन नहीं है । वह न मालूम किस फिक्र में इस समय भी एक मामूली नकाब से अपना मुँह ढाँके उसी जंगल में इधर उधर घूम फिर रहा है जहां उसने छिप कर छन्नों को देखा या उसके साथी दोनों सवारों को गिरफ्तार किया था ।

इधर उधर घूमते फिरते भूतनाथ को बहुत देर हो गई और वह

घबड़ा कर धीरे से बोल उठा, "न मालूम वह कहाँ रह गया ! मैंने उसे इसी जगह आने के लिए कहा था, कहीं किसी झंझट में तो नहीं पड़ गया ?"

इतना कहने के साथ ही भूतनाथ के कान में सूखे पत्तों की चरमराहट की आवाज ने पड़ कर इस बात की सूचना दी कि कोई उसी की तरफ आ रहा है। वह उत्कण्ठा और प्रसन्नता के साथ उस तरफ देखने लगा और थोड़ी ही देर में उसे मालूम हो गया कि यह आने वाला रामेश्वरचन्द्र है जिसकी राह वह इतनी देर से देख रहा था।

भूतनाथ पर निगाह पड़ते ही रामेश्वरचन्द्र तेजी के साथ चल कर उनके पास आ गया और बोला, "क्षमा कीजियेगा, मेरे आने में कुछ देर हो गई "

भूत०। बेशक, और मैं घबड़ा रहा था कि कोई झमेला तो नहीं पैदा हो गया ! खैर, यह बतलाओ सब काम ठीक तरह से हो गया न ?

रामे०। जी हाँ, आपकी दया से कोई झमेला नहीं हुआ और सब काम निर्विघ्न हो गया। दूकान की सब चीजें लामाघाटी में पहुँचा दी गईं और उस मकान की ताली दामोदरसिंहजी के हवाले कर मैं अभी चला आ रहा हूँ।

भूत०। दारोगा या उसके साथियों को किसी प्रकार का सन्देह तो नहीं हुआ ?

रामे०। जहाँ तक मैं समझता हूँ उन्हें इस बात की अभी खबर भी न लगी होगी। हाँ, थोड़ी देर बाद वे लोग सब हाल अवश्य जान जायँगे।

भूत०। खैर, अब यदि दारोगा को मालूम भी हो जायगा तो कोई हर्ज नहीं, वह मेरा कुछ कर नहीं सकता ! अच्छा तो फिर चलो, जिस काम के लिए तुम्हें यहाँ बुलाया था अब उसको भी निपटा देना चाहिये।

रामे०। वह कौन सा काम है ?

भूत० । चलो रास्ते ही में बताऊँगा ।

इतना कह रामेश्वरचन्द्र को साथ लिए भूतनाथ वहाँ से उठा और कुछ सोचता हुआ एक तरफ को रवाना हुआ ।

कुछ देर तक चुपचाप चले जाने बाद भूतनाथ ने एक लम्बी साँस लेकर रामेश्वरचन्द्र की तरफ देखा और कहा, "अच्छा, अब सुनो कि मैं क्या चाहता हूँ और तुम्हें मैंने किस लिए बुलाया है । इधर जो कुछ बातें हो गई हैं उनकी तुम्हें पूरी खबर तो शायद न होगी ?

रामे० । जी नहीं, कहाँ से ? उस दिन भी जो आप मुझसे मिले थे तो इधर का कोई हाल मुझसे न कह पाये थे, सिर्फ.....

भूत० । मै उस समय जल्दी में था । तुमने मुझे शिवदत्तगढ़ के विषय का जो बात सुनाई थी उसे सुन कर मेरा वहाँ जाना जरूरी हो गया था इसीसे मैं इधर के हालचाल की पूरी खबर तुम्हें न दे पाया था ।

रामे० । तो क्या आप शिवदत्तगढ़ गये थे ?

भूत० । हाँ गया था और वहाँ बहुत सी बातों का पता भी लगा जिसका हाल किसी दूसरे समय तुम्हें मालूम हो जायगा ।

रामे० । खैर कोई चिन्ता नहीं, मैं केवल यही जानना चाहता था कि जो कुछ मैने आपसे कहा वह ठीक था या मुझे गलत खबर लगी थी !

भूत० । नहीं, तुम्हारी खबर बिल्कुल ठीक थी और तुम्हारे साथी ने कोई बात गलत नहीं कही थी ।

रामे० । अच्छा आप क्या कह रहे थे सो कहिये ?

भूत० । दयाराम वाले मामले की तो तुम्हें खबर हो ही गई है ?

रामे० । हाँ अच्छी तरह से—आपने खुद ही तो वह सब हाल पूरा पूरा मुझे सुनाया था और कहा था कि उनकी दोनों स्त्रियाँ जमना और सरस्वती अभी तक जीती हैं और अपने पति के खून का बदला आपसे लिया चाहती हैं, मगर यह सब तो बहुत पुरानी बात है ।

भूत० । हाँ, तो जमना और सरस्वती को पहिले मैं अपना दुश्मन

समझता था—पहिले क्यों अभी तक उन्हें मैं अपना शत्रु ही समझता हूँ मगर लाचार हूँ कुछ कर नहीं पाता क्योंकि उनकी मदद पर बड़े बड़े लोग उठ खड़े हुए हैं !

रामे० । हाँ, प्रभाकरसिंह और भैयाराजा वगैरह सब उनका साथ दे रहे हैं ।

भूत० । केवल यही नहीं बल्कि इन्द्रदेव भी उन्हीं की मदद पर हैं ।

रामे० । (आश्चर्य से) क्या सचमुच ! इन्द्रदेव जमना और सरस्वती की मदद कर रहे हैं !! यह आपको कैसे मालूम हुआ ?

भूत० । पहिले तो मुझे इस बात का केवल शक ही था बल्कि एक दफे जब मैं उनसे मिला तो बात चलने पर वे साफ इन्कार कर गये थे और मेरे कुछ कहने पर बिगड़ कर बोले थे कि तुम्हारे पास इस बात का क्या सबब है कि मै उन सभों की मदद कर रहा हूँ !! उस समय मेरे पास इस बात का कोई सबूत था ही नहीं इससे मैं चुप रह गया पर आज इस बात का पूरा पता लग गया और मालूम हो गया कि यदि इन्द्रदेव खुलासा तौर पर उन सभों की मदद नहीं करते तो कम से कम गुप्त रीति से उनकी सहायता जरूर करते रहते हैं ।

रामे० । सो कैसे मालूम हुआ ?

भूत० । सुनो मैं कहता हूँ । उस दिन जब मैं तुम्हारी दूकान ही में था उसी समय भैयाराजा के दोस्त नन्दरामजी वहाँ आ पहुँचे थे। उन्हें मैं अपने काम के लिये लेता गया था और उन्हें अपनी सूरत बना अजायबघर की ताली उनके हवाले कर स्वयम् शिवदत्तगढ़ चला गया था ।

रामे० । ठीक है, मुझे मालूम है । अच्छा तब ?

भूत० । अजायबघर में और किसी कैदी का पता तो न लगा मगर थोड़ी ही मेहनत में बहुरानी, प्रभाकरसिंह के पिता दिवाकरसिंह, तथा माता नन्दरानी मिल गईं जिनकी उन सभों को जरूरत थी । इन तीनों

कैदियों को लेकर वे लोग बाहर निकल ही रहे थे कि दारोगा ने बहुत से सिपाहियों के साथ आ कर वह जगह घेर ली। उस समय जमना और सरस्वती भी किसी कारण से जिसकी मुझे खबर नहीं, वहीं आई हुई थीं और एक पेड़ की आड़ में खड़ी थीं जिन पर दारोगा इत्यादि की निगाह पड़ गई और दारोगा ने उन दोनों को गिरफ्तार कर लिया।

रामे०। प्रभाकरसिंह इत्यादि को यह बात नहीं मालूम थी कि जमना और सरस्वती भी वहाँ मौजूद हैं?

भूत०। पहिले शायद उन्हें यह बात नहीं मालूम थी पर बाद में इसका उन्हें पता लगा और मेरी सूरत बने हुए नन्दराम तथा भैयाराजा को उन लोगों ने जमना तथा सरस्वती को छुड़ाने और दारोगा के आदमियों को धोखा देने के लिये भेजा। भैयाराजा और नन्दराम दारोगा के आदमियों को धोखा देकर अपने साथ लिए हुए वहाँ से दूर हटा ले गये और तब जमना और सरस्वती को छुड़ाने की फिक्र में लगे। भैयाराजा दिन के समय खुले आम तो जमानिया में घूम फिर नहीं सकते थे, इस कारण वे तो भरथसिंह के मकान पर चले गये और नन्दराम अकेले रह गये। भाग्य से उसी समय मैं उनके पास पहुँच गया और उन्हें बिदा कर खुद जमना और सरस्वती का पता लगाने लगा जो दारोगा के मकान में कैद थीं। यह मालूम हो जाने पर कि दारोगा ने उन सभों को अपने मकान में कैद किया है, मैं भैयाराजा के साथ रात के वक्त उस मकान में पहुँचा। दारोगा उस समय वहां न था इससे हम लोगों को अपने काम में बहुत सुभीता हुआ और मैं भैयाराजा के साथ शीघ्र ही उस कोठरी में जा पहुँचा जहाँ वे दोनों बन्द थीं मगर उसी समय न जाने किस तरह दारोगा भी बिहारी हरनाम तथा जैपाल के साथ वहाँ जा पहुँचा और एक तरह की गोली चला कर उसने हम सभों को बेहोश कर दिया। मगर वह जैपाल असल में इन्द्रदेव थे जो जमना और सरस्वती को छुड़ाने की नीयत से उसके साथ वहाँ आये थे।

रामे० । तो उन्होंने आप लोगों को छुड़ाया ?

भूत० । हाँ, दारोगा को वहाँ से बिदा कर उन्होंने हरनाम और बिहारी को बेहोश कर दिया और तब हम लोगोंकी बेहोशी दूर की । हरनामसिंह और बिहारीसिंह को भी जमना और सरस्वती के साथ ही लिये हुए हम तीनों आदमी दारोगा के मकान से बाहर निकले और इन्द्रदेव के घर की तरफ चले ।

रामे० । तो क्या आप इस समय इन्द्रदेव के मकान से आ रहे हैं ?

भूत० । नहीं, रास्ते ही में मेरे एक शिष्य ने हेलासिंह और दारोगा के बारे में कुछ बहुत ही जरूरी खबरें सुनाईं जिससे मुझे उनका साथ छोड़ देना पड़ा ।

रामे० । तो क्या आपने इन्द्रदेव को भी इन बातों की खबर दे दी ?

भूत० । नहीं भाई, सच तो यह है कि अब मुझे इन्द्रदेव से कुछ डर सा मालूम होने लगा है । जब से मुझे यह बात मालूम हुई है कि वे जमना और सरस्वती की मदद कर रहे हैं और मै उन सभों से दुश्मनी कर रहा हूँ तब से मुझे इन्द्रदेव के नाराज हो जाने का खौफ हो रहा है । इन्द्रदेव के आगे मेरी कुछ भी हकीकत नहीं है और अगर वे मुझसे बिगड़ जायँगे तो मैं किसी लायक न रहूँगा । अब तो मैंने यही सोचा है कि जमना इत्यादि की तरफ से बिल्कुल हाथ खींच लूँ और दयाराम के विषय में अपने को भाग्य तथा इन्द्रदेव के भरोसे पर छोड़ दूँ । वे कई दफे मुझसे यह बात कह चुके हैं कि अगर मैं जमना और सरस्वती इत्यादि के साथ शत्रुता न करता तो यह भेद जितने आदमियों को मालूम हुआ है उनसे आधे भी इस बात को न जानते और न मुझे इतनी मुसीबत ही में पड़ना पड़ता और मुझे विश्वास होता है कि अब भी मैं यदि जमना सरस्वती से अपना हाथ खींच लूँ और उनसे दुश्मनी करने का खयाल छोड़ दूँ तो वे इस भेद को छिपाने में अवश्य मेरी मदद करेंगे, अस्तु यही सब सोच विचार कर मैंने अपने उसी शागिर्द के हाथ जिसने मुझे

वह सब खबर दी थी हरनाम और बिहारी को इन्द्रदेव के मकान की तरफ भेज दिया और स्वयम् उनसे कुछ बहाना करके अलग हो गया।

रामे०। ठीक है, मगर मेरी समझ में यह न आया कि आपने अपनी ऐयारी वाली दूकान क्या सोच कर उठवा दी?

भूत०। दारोगा को यह बात तो मालूम ही हो चुकी है कि इस दूकान का कर्ता धर्ता मैं ही हूँ और मैं ही ने उसका तथा उसके साथियों का भेद लेने के लिए यह दूकान खोली है, अस्तु इसमें तो कोई शक नहीं कि वह इस दूकान को नष्ट करने की प्राणपण से चेष्टा करता और उस हालत में ताज्जुब नहीं कि उसके सबब से मुझे या मेरे शागिर्दों को कुछ तकलीफें उठानी पड़तीं, इसी से मैंने पहिले ही से उस दूकान को उठा देना उत्तम समझा! यद्यपि उस दूकान की बदौलत मुझे कई बातों का पता लगा था और भविष्य में लगने की आशा भी थी तथापि दारोगा की दुश्मनी तथा अपने शागिर्दों के खयाल से मैंने तुम्हें दूकान उठा देने के लिए.....

भूतनाथ ने अपनी बात समाप्त नहीं की थी कि यकायक पीछे की तरफ से घोड़ों के टापों की आवाज आई जिसे सुन वह ठिठक गया। गौर के साथ कान लगा कर सुनने से उसे मालूम हो गया कि ये आने वाले उसी की तरफ आ रहे हैं। अस्तु उसने धीमे स्वर में रामेश्वरचन्द से कहा, "कहीं पेड़ की आड़ में छिप कर देखना चाहिये कि ये सवार कौन हैं।" जिसके जवाब में उसने "बहुत अच्छा" कहा और तब दोनों आदमी एक पेड़ की आड़ में खड़े होकर उन सवारों के आने की राह देखने लगे।

थोड़ी ही देर में भूतनाथ को मालूम हो गया कि वे सवार गिनती में तीन हैं जो तेज घोड़ों पर सवार उसी तरफ जा रहे हैं जिधर भूतनाथ को जाना था। आगे आगे मुश्की रंग के घोड़े पर सवार सत्रह या अट्ठारह बरस का एक लड़का था और उसके पीछे दो सवार थे जो नौकर

या सिपाही मालूम होते थे, मगर भूतनाथ की तेज आँखों ने शीघ्र ही पहिचान लिया कि यह आगे आगे जाने वाला कोई लड़का नहीं बल्कि औरत है जो चपकन तथा पैजामा पहिने और मुड़ासा बाँधे मर्दानी सूरत में जा रही है। इसके साथ साथ भूतनाथ को यह देख कर और भी आश्चर्य हुआ कि दोनों पीछे पीछे जाने वाले सवार वास्तव में वे ही दोनों ऐयार हैं जिन्हें उसने छन्नों के साथ बातें करते देखा था या जिन्हें गिरफ्तार कर और जिनकी सूरत बन वह छन्नों से मिला था।*

भूतनाथ का इरादा हुआ कि इन तीनों का पीछा करे, पर उसी समय न मालूम किस तरह की आहट पाकर उस आगे जाने वाली औरत ने अपना घोड़ा तेज किया और वे पीछे वाले सवार भी घोड़ा तेज करके बात की बात में आँखों की ओट हो गये। सवारों के निकल जाने बाद भूतनाथ रामेश्वरचन्द के साथ पेड़ की आड़ से निकला और फिर अपने पहिले रास्ते पर चलता हुआ रामेश्वरचन्द से बोला, "तुमको उस छन्नों वाली बात तो याद होगी?"

रामे०। कौन छन्नों?

भूत०। वही जमना सरस्वती की सहेली जिसकी जुबानी मुझे पहिले पहिल दयाराम के जीते रहने का गुमान हुआ था!

रामे०। हाँ, ठीक है, आपके शागिर्द ने मुझसे वह सब हाल कहा था।

भूत०। वे दोनों ऐयार जिन्हें मैंने गिरफ्तार किया था ये ही दोनों हैं जो पीछे पीछे जा रहे थे।

रामे०। (आश्चर्य से) सो क्या? उन्हें तो आपने गिरफ्तार कर लिया था! फिर क्या छोड़ दिया?

भूत०। मैंने इन दोनों को गिरफ्तार करके लामाघाटी में भेजवा

---

* पाँचवाँ हिस्सा दूसरा और तीसरा बयान।

दिया था पर इस समय वे यहाँ दिखाई पड़ते हैं। जरूर किसी तरह छूट आये हैं।

रामे०। लामाघाटी में से ये लोग कैसे छूट कर निकल आये?

भूत०। कुछ समझ में नहीं आता। मेरा कोई दुश्मन तो वहां तक नहीं जा पहुँचा! तुम जब दूकान का असबाब पहुँचाने वहाँ गये थे उस समय ये लोग वहां थे?

रामे०। सो मै कुछ ठीक नहीं कह सकता क्योंकि मेरा ध्यान इनकी तरफ नहीं गया और न किसीने इनके बारेमें कोई जिक्र ही मुझसे किया।

भूतनाथ कुछ देर तक चुप रहा इसके बाद बोला, खैर इस बात का पता भी लग ही जायगा कि ये लोग आपसे आप छूट कर भाग आये हैं या किसी ने इन्हें छुड़ाया है। अब तुम यह सुनो कि मैं तुमसे क्या काम लिया चाहता हूँ।

रामे०। बतलाइये?

भूत०। यह तो मैंने अभी तुमसे कहा ही है कि मैं अब इस दयाराम तथा जमना और सरस्वती वाले मामले से अपना हाथ बिलकुल खींच लूँगा और अपने को इन्द्रदेव की कृपा पर छोड़ दूँगा मगर इसके साथ ही मै अब यह भी चाहता हूँ कि रणधीरसिंहजी के यहाँ चला जाऊँ और कुछ दिन वहाँ रह कर उनकी नाराजगी को दूर करने की कोशिश करूँ।

रामे०। तो इसमें रुकावट क्या है? आप जब चाहें वहां जा सकते हैं।

भूत०। हां, जा सकता हूँ पर मैं यह चाहता हूँ कि दारोगा इत्यादि के सब मामलों का पता भी बराबर मुझे लगता रहे और यह भी मालूम होता रहे कि वे सब क्या कर रहे या किया चाहते हैं।

रामे०। अपने शागिर्दों की जुबानी यह सब हाल बराबर जानते रह सकते हैं।

भूत० । नहीं, सिर्फ शागिर्दों की मदद से मैं सब बातों को न जान सकूंगा, इधर दो तीन नई घटनाओं का मुझे पता लगा है जिनके बारे में बिना स्वयम् कोई कार्रवाई किये ठीक ठीक पता न लगेगा ।

रामे० । वे घटनाएँ क्या ?

भूत० । दारोगा वाली कुमेटी का हाल तो तुमने सुना ही होगा ?

रामे० । हाँ, अच्छी तरह ।

भूत० । उस गुप्त कुमेटी के मुखिया यानी दारोगा और जयपाल वगैरह का मतलब तो कुछ दूसरा हो है पर उस सभा में कुछ भले आदमी भी हैं जिन्हें दारोगा और जैपाल की चालें पसन्द नहीं आतीं पर फिर भी लाचारी के कारण उन्हें उनका साथ देना ही पड़ता है । दारोगा के मित्रों में एक हेलासिंह भी है ।

रामे० । हाँ हाँ, मैं हेलासिंह को बखूबी जानता हूँ, वही तो जिसकी लड़की सुन्दर हाल ही में विधवा हो गई है ?

भूत० । हाँ वही, तो वह हेलासिंह यह चाहता है कि गोपालसिंह की शादी बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी से न हो कर सुन्दर से हो जिसमें वह राजरानी बने और मायारानी कहलावे । पिछली मायारानी की जान इसी लिये गई कि उन्हें गोपालसिंह का विवाह लक्ष्मीदेवी के साथ करने की जिद्द पड़ गई थी ।

रामे० । तो क्या दारोगा ही यहां की महारानी की मृत्यु का कारण है ?

भूत० । हां, मुझे शक तो पहिले ही था पर आज दो तीन बातें और मालूम होने से निश्चय हो गया कि दारोगा ही मायारानी की मृत्यु का कारण है और उसने यह काम हेलासिंह और सुन्दर के लिये किया है ।

रामे० । आप यह बार बार मायारानी किसको कहते हैं ? यह माया-रानी कौन है ?

भूत० । मायारानी जमानिया की महारानी का तिलिस्मी नाम है । जमानिया की सब महारानियाँ मायारानी कहलाती हैं ।

रामे० । अच्छा ! मुझे यह बात नहीं मालूम थी ! आपको यह...

भूत० । मुझे यह बात मालूम है, मुझे ही क्यों जमानिया राज्य के सभी मुख्य मुख्य आदमी इस बात को जानते हैं और मुझे तो यह बात और भी अच्छी तरह इसलिये मालूम है कि दारोगा का साथी बन कर मायारानी का भी कुछ काम कर चुका हूँ ।

रामे० । अच्छा ! आप जमानिया की रानी का कुछ काम कर चुके हैं !! मगर यह कब ?

भूत० । यह आज कल की नहीं, कई बरस पहिले की बात है, फिर किसी समय तुम्हें सुनाऊँगा । यद्यपि वास्तव में पूछा जाय तो उस समय मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया था जिससे लोगों को मुझ पर ऐब लगाने अथवा ताना मारने की जगह मिले पर तो भी इसी बात को लेकर जमना सरस्वती तथा प्रभाकरसिंह वगैरह ने मुझ पर आवाज़ें कसी थी ।

रामे० । सो कब ? मुझसे यह हाल आपने नहीं कहा ।

भूत० । शायद तुमसे न कहा हो । मेरी उस तिलिस्मी घाटी के पास ही में एक अगस्ताश्रम नामक स्थान.....

रामे० । हां है, एक छोटे से मन्दिर में अगस्त मुनि की मूर्ति है । आपकी उस घाटी के पास ही में यह स्थान है जिसके बगल में जमना और सरस्वती रहती थीं ।

भूत० । हां, तो मूर्ति कोई तिलिस्मी रास्ता है । यद्यपि उसका पूरा पूरा हाल मुझे नहीं मालूम पर जब मैं प्रभाकरसिंह बन कर जमना और सरस्वती वाली उस घाटी में गया था तो इतना पता लगा था कि उस मूर्ति और इस घाटी में कोई सम्बन्ध है। इसी मूर्ति की जुबानी जमना और सरस्वती ने एक दफे मुझे और गुलाबसिंह को कई विचित्र ढंग की बातें सुनाई थीं और गुलाबसिंह को मुझसे अलग करा दिया था* । पर वह

---

* पहिला हिस्सा, दसवाँ बयान ।

सब बहुत पुरानी बातें हैं, उनका जिक्र छोड़ो और मैं जो कहता था सो सुनो। दारोगा को विश्वास था कि महारानी के मरने पर राजा साहब उसकी बातें मान कर लक्ष्मीदेवी से गोपालसिंह का ब्याह करने की इच्छा छोड़ देंगे और किसी दूसरी लड़की से गोपालसिंह की शादी करने पर तैयार हो जायँगे, उस समय हेलासिंह की मुन्दर के साथ उनकी शादी कराने का मौका मिलेगा पर अब दारोगा को मालूम हुआ है कि उसका ख्याल गलत है और राजा साहब भी लक्ष्मीदेवी के साथ गोपालसिंह की शादी करने पर तुले हुए हैं। पहिले तो भैयाराजा के ख्याल से शादी रुक गई थी पर अब राजा साहब ने इसी बरस यह शादी कर डालने का निश्चय कर लिया है जो दारोगा की मर्जी से बिलकुल विरुद्ध है, अस्तु अब दारोगा यह चाहता है कि राजा साहब भी इस दुनिया से उठा दिए जायँ।

रामे०। अरे! उसने यहाँ तक करने का निश्चय कर लिया!!

भूत०। हाँ, और इस विषय तथा मुन्दर के साथ गोपालसिंह की शादी के विषय में इस समय हेलासिंह और दारोगा के बीच में तरह तरह की बातचीत तथा चिट्ठी पत्री हो रही है। इस मामले का पूरा पूरा हाल मैं जानना चाहता हूँ और साथ ही महाराज के विषय में दारोगा और उसकी गुप्त कुमेटी क्या करती है इसका भी पता रखना चाहता हूँ।

रामे०। और साथ ही साथ अपने मालिक की खिदमत में भी रहा चाहता हूँ! (हँस कर) भला अब ये तीनों बातें एक ही साथ कैसे निभें! अब या तो आप अपने मालिक के साथ रहिये या इन्हीं बातों का पता लगाइये।

भूत०। नहीं, मैं यह चाहता हूँ कि ये सभी काम साथ ही साथ हों और इसी लिए मैं तुम्हारी सहायता लिया चाहता हूँ।

रामे०। मैं तो सब तरह से तैयार ही हूँ, कहिये क्या कहते हैं!

भूत०। मैं यह चाहता हूँ कि तुम इस समय मेरी सूरत बन रणधीर-

सिंहजी के यहाँ चले जाओ तथा उनकी तावेदारी में हाजिर रहो, और मैं यहाँ रह कर इन बातों का पता लगाऊँ। मैं अपने हाल चाल की बराबर तुम्हें खबर देता रहूँगा और तुम्हें जब कभी मिलने की जरूरत आ पड़े मुझसे मिल सकते हो बल्कि यों भी अपनी खबर बराबर मुझे देते ही रहना।

रामे०। बहुत खूब।

भूत०। तो बस तुम इसी समय अपनी सूरत बदल लो और वहाँ चले जाओ, शान्ता के नाम की चीठी मैं लिखे देता हूँ सो उसे दे देना जिससे वह सब मामला समझ जायगी।

इतना कह भूतनाथ रामेश्वरचन्द्र के साथ एक झाड़ी में चला गया। रामेश्वरचन्द्र अपनी सूरत भूतनाथ की तरह बनाने लगा और तब तक भूतनाथ ने वह चीठी लिख कर तैयार कर डाली।

थोड़ी ही देर में रामेश्वरचन्द भूतनाथ बन कर तैयार हो गया और भूतनाथ ने भी अपनी सूरत मामूली ढंग पर बदल ली। इसके बाद दोनों आदमी झाड़ी के बाहर निकले और दो तरफ को रवाना हो गये।

सत्रहवां बयान

वास्तव में वे दोनों सवार जिन्हें भूतनाथ ने देखा था वेही हैं जिन्हें उसने गिरफ्तार किया था और उनके आगे आगे जाने वाली औरत भी पाठकों की जानी पहिचानी वह निरञ्जनी ही है जिसका जिक्र चौथे हिस्से के अन्तिम बयान में आ चुका है।

निरञ्जनी अपने दोनों साथियों के साथ घोड़ा फेंकती बराबर काशी की तरफ चली गई और जब तक शहर के पास पहुँच न गई उसने अपने घोड़े की चाल कम न की। जब वह सारनाथ के पास पहुँची तो उसने घोड़े की तेजी कम की और पीछे आने वाले सवारों की तरफ घूम

कर बोली, "क्यों अब क्या इरादा है ? सीधे घर चले चलना है, या यहाँ पर रुकना है ?"

निरञ्जनी का साथी सवार० । नहीं यहाँ रुकना ठीक नहीं, यहाँ वाले पहिले आपको तंग कर चुके हैं, अब फिर कदाचित् कुछ दिक करें, चलिये, सीधे घर ही चलें ।

"हाँ यही ठीक है !" कह कर निरञ्जनी ने घोड़ा बढ़ाया और फिर तेजी के साथ काशी की तरफ रवाना हुई ।

त्रिलोचन महादेव के पास पहुँच कर निरञ्जनी ने घोड़ा रोका और उतर पड़ी । उसके दोनों साथी सवार भी उतर पड़े और तब निरञ्जनी ने अपने घोड़े की लगाम एक सवार के हाथ में देकर कहा, "लो, तुम चलो, घर चल कर कुछ सुस्ताओ, मैं अभी आती हूँ तो तुमसे बातें करती हूँ ।"

दोनों सवार "बहुत अच्छा" कह कर निरञ्जनी के मकान की तरफ बढ़ गए जो वहाँ से दिखाई पड़ता था । जब वे मकान के अन्दर चले गये तो निरञ्जनी भी हटी और बगल की एक गली में घुस गई ।

यह गली जो बहुत सकरी तथा अन्धेरी थी ज्यादा दूर तक नहीं गई थी । लगभग पचास कदम के जाने बाद सामने ही एक मकान पड़ता था और वहाँ पहुँच कर यह गली बन्द हो जाती थी । निरञ्जनी इसी मकान के पास आ कर रुक गई और कुछ देर चुप खड़े रह कर इधर उधर की आहट लेने के बाद उसने दर्वाजे का कुण्डा धीरे धीरे खटखटाया । दर्वाजा तुरत खुल गया और निरञ्जनी ने अन्दर जाकर उसे बन्द कर दिया ।

सामने ही सहन पड़ता था और बगल में से ऊपर वाली मंजिल में जाने के लिए सीढ़ियाँ थीं । निरञ्जनी इन सीढ़ियों की राह चढ़ कर ऊपर वाले खण्ड में पहुँची जहाँ नीचे की बनिस्बत ज्यादा सफाई तथा चाँदना था । सामने के एक दालान में साफ सुथरा फर्श बिछा हुआ था जिस पर दो औरतें बैठी हुईं आपुस में धीरे धीरे कुछ बातें कर रही थीं ।

इन दोनों औरतों में से एक जो सूरत शक्ल तथा पौशाक से सर्दार

मालूम होती थी बहुत ही हसीन और खूबसूरत थी। उसकी बड़ी बड़ी आँखों ने उसके चेहरे पर एक प्रकार का रोआब सा डाल रक्खा था मगर फिर भी उसका चेहरा भोलेपन से बिल्कुल खाली था और कभी कभी उस पर एक प्रकार की ऐसी झलक आ जाती थी जिसमें क्रूरता की गन्ध मिलती थी, तौ भी उसके खूबसूरत होने में कोई सन्देह नहीं था और वह सौ दो सौ सुन्दर औरतों में सुन्दर कही जा सकती थी।

उसके साथ वाली औरत जो कपड़े लत्ते के खयाल से उसकी मातहत या सहेली कही जा सकती थी यद्यपि खूबसूरती में उसका मुकाबला नहीं कर सकती थी तथापि बदसूरत भी नहीं थी। वह इस ढंग पर उस पहिली औरत की तरफ झुकी हुई थी मानों उसकी बातों को बड़े ध्यान और दिलचस्पी के साथ सुन रही है।

हमारे पाठक इन दोनों ही औरतों को जानते हैं। इनमें से वह जो सर्दार मालूम होती है बेगम के नाम से पुकारी जाती है और दूसरी का नाम जमालो है। चन्द्रकान्ता सन्तति में इनका कुछ हाल लिखा जा चुका है* तथा यह भी दरसाया गया है कि गदाधरसिंह (भूतनाथ) और जैपाल इत्यादि से इनका कुछ घना सम्बन्ध है।

निरञ्जनी को देखते ही बेगम और जमालो उठ खड़ी हुईं और बेगम ने कुछ आगे बढ़ कर कहा, 'वाह सखी! अबकी दफे तो बहुत दिन बाद आईं!! कहो कुशल तो है? कोई नई खबर है क्या?"

निरञ्जनी बेगम के पास पहुँची और बोली, "मैं तो स्वयम् तुमसे खबर लेने आई हूँ भला तुम्हें क्या खबर सुनाऊँगी! क्या कहूँ, इधर बहुत दिनों से कुछ ऐसी झञ्झटों में पड़ी हुई हूँ कि मिल न सकी।"

"क्यों, झञ्झटें कैसी?" कहती हुई बेगम ने निरञ्जनी को अपने ठिकाने ले जाकर बैठाया और आप उसके सामने बैठ कर बोली, "तुम्हारे लिये

---

*चन्द्रकान्ता सन्तति, पन्द्रहवाँ हिस्सा, दसवां बयान।

और झंझट ! यह तो असम्भव बात मालूम होती है !! मामला क्या है ?"

निरञ्जनी ने जमालो को भी बैठने को इशारा किया और तब बेगम से कहा, 'ठहरो जरा सुस्ता लेने दो तो सब हाल तुमको सुनाऊँ। (चारो तरफ देख कर) नौरतन नहीं दिखाई देती, कहाँ है ?"

बेगम०। वह एक काम से गई है, अभी आती होगी। मगर तुम्हारी सूरत देखने से जान पड़ता है कि तुम कहीं दूर से आ रही हो ?

निरञ्जनी०। मैं इस समय जमानिया से आ रही हूँ।

बेगम०। (आश्चर्य से) जमानिया से ! क्या जमानिया गई थीं ? दारोगा साहब से मिलने ?

निरञ्जनी०। हाँ।

बेगम०। कोई जरूरी काम था ?

निरञ्जनी०। हाँ, मगर वह सब पीछे बताऊँगी। यह कहो जैपालसिंह का कुछ पता लगा ?

बेगम०। नहीं, कुछ भी नहीं, बड़ी बड़ी कोशिशें कीं पर अभी तक कोई कामयाबी न हुई, क्या तुम्हें कोई पता लगा है ?

निरञ्जनी इस बात का कुछ जवाब दिया ही चाहती थी कि नीचे से दर्वाजा खटखटाने की आवाज आई। बेगम ने जमालो की तरफ देख कर कहा, 'देख कौन है, मालूम होता है नौरतन आई है।"

जमालो यह सुन बाहर चली गई और बेगम और निरञ्जनी आपुस में धीरे धीरे कुछ बातें करने लगीं। थोड़ी ही देर बाद नीचे का दर्वाजा खुलने और फिर बन्द होने की आवाज आई और साथ ही यह भी मालूम हुआ कि कोई आदमी सीढ़ी चढ़ कर ऊपर आ रहा है।

बेगम और निरञ्जनी यह जानने की नीयत से सीढ़ी की तरफ देखने लगीं कि यह आने वाला कौन है और जब वह ऊपर आ पहुँचा तो यह देख उनके ताज्जुब और प्रसन्नता की कोई हद्द न रह गई कि यह आने वाले और कोई नहीं स्वयं जैपालसिंह ही हैं।

जैपाल को देखते ही बेगम लपक कर उसकी तरफ बढ़ी मगर निरञ्जनी अपने ठिकाने ही पर बैठी रही। जब जैपाल बेगम के साथ उस दालान में पहुँचा तो निरञ्जनी को भी वहाँ बैठा देख बोला, "अक्खाह! बीबी मनोरमा भी यहाँ बैठी हुई हैं!"

पाठकों को अब इस जगह यह बात बता देना उचित है कि यह निरञ्जनी वास्तव में मनोरमा ही है और अपना कोई गुप्त काम साधने के लिये ही इसने निरञ्जनी का रूपक रचा हुआ है। अब यहाँ से हम इसे इसके असली और मशहूर नाम मनोरमा ही से पुकारेंगे! जैपाल की बात सुन मनोरमा ने कहा, "आओ जी जैपालसिंह! कहो इतने दिनों तक कहां गायब थे? यहां बैठो और अपना हाल कहो।"

जैपाल मनोरमा के पास बैठ गया और उसके बगल में ही बेगम भी बैठ गई। दो चार सायत तक चुपचाप रहने के बाद जैपाल ने कहा:—

जैपाल०। मैं कैद में पड़ गया था पर यह अभी तक न जान पाया कि किस जगह था या मुझे किसने कैद किया था।

मनो०। (आश्चर्य से) क्या इतने दिनों तक कैद ही में थे! और फिर भी यह पता नहीं लगा कि तुम्हें किसने कैद किया था!

जै०। नहीं, कुछ भी नहीं।

मनो०। फिर छूटे कैसे?

जै०। वह सब हाल पीछे सुनाऊँगा मगर तुम पहिले यह बताओ कि यह मर्दानी पोशाक और मुँड़ासा वगैरह तुमने क्यों पहिर रक्खा है?* क्या कहीं से सफर करती आ रही हो?

मनो०। हाँ, मैं इस समय दारोगा साहब के पास से आ रही हूँ, वे आज कल बड़े फेर में पड़े हुए हैं।

---

*मनोरमा इस समय भी उसी सूरत और पोशाक में है जिसमें भूतनाथ ने उसे देखा था।

जै० । सो क्या ?

मनो० । तुम्हें कैद से छूटे कितनी देर हुई ?

जै० । बस अभी थोड़ी ही देर हुई है, छूट कर मैं सीधा इसी तरफ आ रहा हूँ ।

मनो० । तो फिर ठीक है, बेशक दारोगा साहब का सोचना सही है और किसी ऐयार ने तुम्हारी सूरत बन उन्हें धोखा दिया है ।

जै० । (ताज्जुब के साथ) क्या कोई मेरी सूरत बन उनके पास पहुँचा था ? जरा कुछ खुलासा कहो तो पता लगे ।

मनो० । खुलासा हाल तो तुम दारोगा साहब से जा कर पूछना, मुख्तसर में मैं बताए देती हूँ कि अजायबघर में उनके जो कैदी थे वे छूट गये या यों कहना चाहिए कि उनके दोस्त लोग उन्हें छुड़ा ले गये ।

जै० । क्या सचमुच ! मगर अजायबघर में किसी साधारण आदमी का पहुँचना या वहाँ से निकल जाना तो बहुत कठिन है ! बिना ताली की मदद के यह काम कभी हो ही नहीं सकता और वहां की ताली दारोगा साहब बड़ी हिफाजत से अपने पास रखते हैं ।

मनो० । ठीक है, मगर जब उस दगाबाज साधू ने तुम लोगों को बेहोश किया था† उस समय तुम्हें कहीं ठिकाने करने बाद वह या उसका कोई साथी तुम्हारी सूरत बन दारोगा साहब से मिला और कैदियों के भोजन इत्यादि का इन्तजाम करने के बहाने उनसे तालियों का झब्बा ले लिया, ले क्या लिया उन्होंने स्वयम् दे दिया क्योंकि दिन का समय हो जाने के कारण वे उस समय नागर के मकान से निकल नहीं सकते थे । उसी गुच्छे में अजायबघर की ताली भी थी और इसमें कोई शक नहीं कि उसी ताली की मदद से कैदी लोग छुड़ाए गये हैं क्योंकि वह नकली जैपाल भी फिर लौट कर नहीं आया ।

---

†देखिये छठवां हिस्सा, बीसवां बयान ।

जैपाल० । ओफ, यहां तक नौबत आ गई !! खैर तब क्या हुआ ?

मनो० । दारोगा साहब को जब इस बात का पता लगा कि वह जैपाल जिसे उन्होंने तालियां दी थीं नकली था तो वे बहुत घबराये और अपने कैदियों के छूट जाने का उन्हें बहुत डर पैदा हुआ । उन्होंने किसी तरह महाराज से अजायबघर की दूसरी ताली ली और कैदियों को हटा देने की नीयत से वहां पहुँचे पर कैदी लोग पहिले ही अजायबघर के बाहर आ चुके थे और उनके साथी लोग ऐसे जबर्दस्त थे कि दारोगा साहब उनका कुछ कर न सके । वे लोग निकल ही गये मगर दो औरतें उनके हाथ लगीं जिन्हें उन्होंने अपने मकान में कैद किया । उन औरतों को छुड़ाने के लिये भैयाराजा और भूतनाथ दारोगा साहब के मकान पर पहुँचे और इधर दारोगा साहब के पास एक दूसरा ऐयार पहुँचा जो तुम्हारी सूरत बना हुआ था । दारोगा साहब ने इसे भी जैपाल ही समझा और साथ लिये हुए हरनाम तथा बिहारी सहित वहां जा पहुँचे जहां वे दोनों औरतें कैद थीं और भूतनाथ तथा भैयाराजा भी जा पहुँचे थे । इन दोनों को उन्होंने बेहोश कर लिया मगर उस नकली जैपाल ने बातचीत कर उस समय उन्हें वहां से बिदा कर दिया और फिर न जाने किस ढंग से उन दोनों औरतों और भैयाराजा तथा भूतनाथ को भी छुड़ा ले गया । जाते जाते मालूम होता है कि बिहारी और हरनाम पर भी हाथ साफ करता गया है, क्योंकि वे दोनों भी तभी से दिखाई नहीं पड़े हैं । सुबह को जब दारोगा साहब उस मकान में पहुँचे तो उन्हें मालूम हुआ कि वह दूसरा जैपाल भी नकली था और इस तरह पर उन्हें धोखा दे अपने साथियों को निकाल ले गया है । बस तब से उनका बुरा हाल हो रहा है । खैर अब तुम आ ही गये हो, जहाँ तक शीघ्र हो सके उनके पास पहुँचो और उनकी सहायता करो ।

जैपाल० । (अफसोस का मुंह बनाकर) यह तो तुमने बहुत बुरी खबर सुनाई, न जाने उनका दुश्मन ऐसा कौन निकल आया !! अब मैं

यहां बिल्कुल न रुकूंगी, सीधे उन्हीं के पास जाऊंगा और अपने सामर्थ भर उनकी मदद करूँगा।

मनोरमा०। बेशक तुम्हें ऐसा ही करना चाहिये।

मनोरमा जैपाल तथा बेगम में थोड़ी देर तक और भी बातें होती रहीं। इसके बाद मनोरमा, बेगम और जैपाल से बिदा हुई और मकान के बाहर निकल आई। उसको दर्वाजे तक पहुँचाने की नीयत से बेगम नीचे तक आई और वह बाहर चली गई तो दर्वाजा बन्द कर फिर ऊपर चली आई। जैपाल और बेगम में थोड़ी देर तक कुछ बातें होती रहीं और इसके बाद जैपाल भी उठ खड़ा हुआ।

अठारहवां बयान

बेगम के मकान से निकल कर मनोरमा सीधी अपने मकान की तरफ रवाना हुई और बहुत शीघ्र वहां जा पहुँची।

जिस मकान में हमारे पाठक पहिले मनोरमा को देख चुके हैं या जहां निरञ्जनी के नाम से इसका परिचय दिया जा चुका है अथवा जहां पर इसने ध्यानसिंह की लड़की ज्वाला को कैद किया हुआ था वह मकान अब इसके रहने के काम में नहीं आता। इसने उस मकान के पास ही के एक दूसरे बड़े मकान पर अपना कब्जा किया है और उसी में रहने लगी है मगर गुप्त रीति पर, प्रगट में अब भी वह पहिला मकान इसके पास ही है और इस समय वह उसी में गई भी है।

दर्वाजे पर पहुँचते ही मनोरमा को वह लड़का मिला जो इसे मौसी कह के सम्बोधन करता था और जिसका नाम प्रताप था। मनोरमा ने उससे दो चार बातें कीं और फिर उसे साथ में लिये हुए मकान के अन्दर जा कर एक कमरे में पहुँची जहां वे दोनों सवार जो उसके साथ आये थे बैठे हुए उसका इन्तजार कर रहे थे।

मनोरमा को देख वे दोनों उठ खड़े हुए और उसके बैठ जाने पर सामने बैठ गए। प्रताप भी मनोरमा की आज्ञानुसार उसके बगल में बैठ गया।

मनोरमा०। (उन दोनों में से एक की तरफ देख कर) अच्छा गोविंद! अब मुझे कुछ देर के लिये फुरसत है, तुम अपना हाल सुनाओ कि क्या हुआ और अब तक तुम कहां गायब रहे या किसकी कैद में पड़ गये थे।

गोविन्द०। (अपने साथी की तरफ बता कर) जी मेरी बनिस्बत ये सब हाल अच्छी तरह कह सकेंगे क्योंकि इन्हें मुझसे ज्यादा खबर है।

मनो०। (दूसरे की तरफ देख कर) अच्छा मायासिंह तुम्हीं कहो।

माया०। बहुत अच्छा, यह तो आप जानती ही होंगी कि हम दोनों ऐयार छन्नोजी का काम किया करते थे।

मनो०। हां, यह मुझे मालूम है।

माया०। मगर शायद आप यह बात न जानती होंगी कि उन्होंने (छन्नों ने) अब आपका साथ छोड़ कर जमना तथा सरस्वती की मदद करने का इरादा कर लिया है। जिस समय हम लोग गिरफ्तार हुए हैं उस समय से कुछ ही पहिले उन्होंने अपना यह इरादा हम लोगों पर जाहिर किया था।

मनो०। (चौंक कर) क्या यह तुम ठीक कह रहे हो? क्या छन्नो जमना सरस्वती की मदद पर तैयार हो गई है?

माया०। हां, अगर तैयार नहीं हो गई हैं तो ऐसा करने का पक्का इरादा उन्होंने जरूर कर लिया है।

मनो०। (कुछ सोचती हुई, धीमे स्वर से) बेशक ऐसा ही हुआ होगा! इसी से बहुत दिनों से वह मुझसे मिलने भी नहीं आई!! (आप ही आप) तो कहीं दयाराम का दारोगा साहब की कैद से निकल जाना भी तो उसी...(रुक कर) खैर कम्बख्त जाती कहाँ है, समझूँगी उससे! (मायासिंह से) हाँ तो तुम क्या कह रहे थे?

माया० । छन्नोजी पहिले किसी समय जमना और सरस्वती के ससुराल में अर्थात् रणधीरसिंहजी के यहाँ उन दोनों की सखी के ढंग पर रहती थीं मगर जब उन दोनों अर्थात् जमना और सरस्वती के मरने की खबर फैली तो इन्होंने भी वह घर छोड़ दिया ।

मनो० । हाँ ठीक है, मुझे यह बात मालूम है, परन्तु छन्नो यद्यपि अब रणधीरसिंहजी के यहाँ रहती नहीं है तथापि कभी कभी जाती है जरूर क्योंकि.....

माया० । हाँ अब भी वह कभी कभी वहाँ जाती हैं । खैर तो उसी पिछली मित्रता के कारण छन्नो जमना सरस्वती की मदद करने पर तैयार हुई और आप से तथा और भी कितने आदमियों से मिलजुल कर उन्होंने दयाराम विषयक कई नई बातों का पता लगाया ।

मनो० । (कुछ रंज के साथ) बेशक ऐसा ही है ।

माया० । मगर इस काम में उन्हें कुछ ऐयारी मदद की जरूरत पड़ी और उन्होंने हमें अपनी मदद के लिए कहा तथा कई तरह की लालचें दीं जिससे हम लोग उनका काम करने के लिए तैयार हो गये, मगर उन्होंने यह बात बहुत ही गुप्त रखने की आज्ञा दी थी जिससे हम आप पर इस बात को प्रगट न कर सके और उसके लिए अब क्षमा चाहते हैं !

मनो० । नहीं नहीं, इसमें माफी माँगने की क्या जरूरत है ? तुम लोग कुछ मेरे ऐयार या ताबेदार तो थे नहीं जो सब बातें मुझे बतलाते ? मैं तो तुमको पहिले से जानती भी नहीं थी । इसी छन्नो के ही सबब से मेरी तुम लोगों से जान पहिचान हुई । अच्छा तो खैर, तुम लोगों से छन्नो ने किस काम में मदद ली ?

माया० । उन्हें इस बात का पता लग गया था कि दयाराम जमानिया के दारोगा साहब की कैद में हैं.....

मनो० । (चौंक कर) किसकी कैद में ? दारोगा साहब की ! उसको ऐसा पता लगा था !

माया० । जी हाँ, और वे हम लोगों की सहायता से उनको दारोगा साहब की कैद से छुड़ाया चाहती थीं, मगर बीच ही में एक धूर्त ऐयार ने हम लोगों को गिरफ्तार कर लिया और तब से आज ही हम लोगों को बाहर की हवा नसीब हुई है, इस बीच में क्या कुछ हो गया इसकी हमें कुछ भी खबर नहीं ।

इतना कह कर मायासिंह ने भूतनाथ द्वारा अपने कैद किये जाने का वह हाल मनोरमा से कहा जिसे पाठक पांचवें हिस्से के तीसरे बयान में पढ़ चुके हैं । पूरा हाल कह चुकने के बाद वह बोला, "उस समय से आज तक हम लोग कैद ही में रहे, आज एक विचित्र ढंग पर हम लोगों का छुटकारा हुआ और बाहर निकलने पर मालूम हुआ कि हम गदाधरसिंह की लामाघाटी में कैद थे ।

मनो० । तो अवश्य तुम लोगों को गदाधरसिंह ही ने कैद भी किया होगा ?

माया० । जी हां, तब और क्या ? उसी ने तो हम लोगों को .....

बाहर से किसी लौंडी के खाँसने की आवाज सुन कर मनोरमा ने हाथ के इशारे से मायासिंह को रोका और बगल में बैठे हुए प्रताप की तरफ झुक कर धीरे से कहा, "कोई बुला रहा है, जाकर देखो तो कौन है और क्या कहता है ?"

प्रताप उठ कर कमरे के बाहर चला गया और थोड़ी ही देर में लौट आकर बोला, "आपसे मिलने के लिये गदाधरसिंह आये हैं और बाहर खड़े हैं ।"

भूतनाथ के आने का हाल सुनते ही मनोरमा चौंक पड़ी और मन ही मन बोली, "इस समय उसका यहाँ पहुँचना जरूर मतलब से खाली नहीं है ।" उसने गोविन्द और मायासिंह की तरफ देखा और कहा, "तुम लोगों ने सब हाल साफ साफ मुझसे कह दिया, इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता

है। यदि तुम मेरा साथ देना चाहो तो मैं बड़ी खुशी से तैयार हूँ, तुम लोग यहाँ रह कर मेरा काम कर सकते हो।"

माया०। हम लोग बड़ी खुशी से आपकी सेवा करने को तैयार हैं, जो आज्ञा हो सो करें।

मनोरमा०। अच्छा तो इस समय तुम लोग जाओ, फिर कभी तुमसे खुलासा तौर पर बातें करूँगी और काम भी बताऊँगी। (प्रताप की तरफ देख कर) तुम इनके साथ चले जाओ और इनका सब इन्तजाम कर दो। (पास बुला कर धीरे से) देखो पिछले रास्ते से इन दोनों को ले जाओ जिसमें भूतनाथ की निगाह न पड़े।

प्रताप ने "बहुत अच्छा" कह कर गोविन्द और मायासिंह की तरफ देखा और वे दोनों उठ कर खड़े हो गये। प्रताप उनको ले कर कमरे के बाहर हुआ ही चाहता था कि यकायक भूतनाथ स्वयम् वहाँ आ पहुँचा और उनकी राह रोक कर खड़ा हो गया।

उन्नीसवां बयान

रात आधी से ज्यादे जा चुकी है। अपने खास मकान के ऊपर वाली मंजिल के एक कमरे में गद्दी के ऊपर दारोगा साहब बैठे हुए हैं। सामने एक छोटी सी चौकी पर मोमी शमादान रक्खा हुआ है जिसकी रोशनी इस बड़े कमरे को पूरी तरह से उजेला नहीं कर सकती है, क्योंकि सिवाय इस शमादान के इस कमरे में और कोई रोशनी नहीं, हाँ, बाहर की तरफ दालान में जरूर काफी रोशनी है और वहाँ की सब चीजें साफ साफ दिखाई दे रही हैं।

दारोगा साहब के बगल ही में मगर कुछ हट कर बैठा हुआ जैपाल बेचैनी के साथ दारोगा की तरफ देख रहा है जो सिर झुकाये कुछ सोचता हुआ चुपचाप बैठा है।

बहुत देर के बाद दारोगा ने सिर उठाया और जैपाल की तरफ देख

कर कहा, 'खैर कोई हर्ज की बात नहीं है, अब तुम छूट कर आ गये हो तो मैं धीरे धीरे सभी मामले फिर से ठीक कर लूँगा, मगर अफसोस यही है कि वह दुष्ट ऐयार जाती समय जमना और सरस्वती के साथ साथ हरनाम और बिहारी को भी लेता गया है।''

जैपाल०। बेशक, और यह बहुत अफसोस की बात है, क्योंकि महाराज को जब इन ऐयारों के गायब होने का पता लगेगा तो वे जरूर घबड़ावेंगे।

दारोगा०। अवश्य घबड़ावेंगे, बल्कि मुझ पर भी कुछ शक करें तो ताज्जुब नहीं! (रुक कर) सच तो यह है कि मैं अब देखता हूँ कि उनका विश्वास मुझ पर से धीरे धीरे उठ रहा है और वे मुझ पर इतना भरोसा नहीं करते जितना पहिले करते थे।

जैपाल०। कहीं उन्हें आपकी किसी कार्रवाई का पता.....

दारोगा०। जरूर कुछ ऐसी ही बात है, अभी तक उन्होंने मुझसे कुछ साफ साफ तो नहीं कहा है, मगर मुझे शक है कि (जैपाल की तरफ झुक कर धीरे से) महारानी के मरने के विषय में उन्हें मुझ पर किसी तरह का सन्देह हो गया है।

जैपाल०। यदि ऐसी बात है तो जरूर आपके ऊपर बहुत बड़ी खराबी आ सकती है। आपने उस सन्देह को दूर करने की कोई चेष्टा नहीं की?

दारोगा०। उन्होंने इस विषय में कभी मुझसे साफ साफ बातें तो की नहीं जो मैं उनका शक दूर करने की कोशिश करता! हाँ, बातों बातों में जब कभी जिक्र आता है तो ये अकसर यही कहते हैं कि न जाने महारानी अपनी मौत से मरीं कि किसी दुश्मन ने उन्हें कुछ खिला पिला दिया।

जैपाल०। तो क्या महारानी के बारे में अभी तक जिक्र हुआ करता है?

दारोगा०। हाँ, बल्कि आज ही वह बात उठी थी और महाराज मेरी तरफ देख कर बोल उठे थे, "महारानी की मौत बड़ी अचानक में हुई!

किसी तरह की बीमारी का कोई आसार नजर नहीं आया और उनकी हालत इतनी खराब हो गई कि किसी तरह के दवा इलाज तक का समय नहीं मिला !' मैं तो यह सुनते ही काँप उठा मगर किसी तरह बात काट कर दूसरा जिक्र छेड़ उस बात को दबा दिया।

जैपाल०। महाराज को इस तरह का सन्देह हो जाना आपके लिए ठीक नहीं है !!

दारोगा०। बेशक ! और (धीरे से) इसी सबब से तो मैं यह चाहता हूँ कि अब महाराज भी इस दुनिया से उठा दिए जायँ क्योंकि केवल एक यही बात नहीं—गोपालसिंह की शादी के विषय में भी मैंने देख लिया है कि अब वे कभी मेरी बात नहीं मानेंगे और बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी को ही अपनी पतोहू बनावेंगे।

जैपा०। (कुछ सोच कर) मगर महाराज का उठ जाना तो ..

दारोगा०। क्यों इसमें डर की क्या बात है ! किसी को पता थोड़े ही लगेगा कि महाराज की जान हम लोगों के कारण गई है, और फिर मैं अपनी कुमेटी को भी इस काम में शामिल कर लूँगा और सब मेम्बरों की इच्छा से ही यह काम किया जायगा।

जैपा०। (चौंक कर) तो क्या आप अपना इरादा कुमेटी पर प्रगट कर देंगे ? मगर ऐसा तो न होना चाहिये, क्योंकि आपके कई भेद ऐसे हैं जिनका किसी दूसरे के कान तक पहुँचना—चाहे वह कमेटी का मेम्बर ही क्यों न हो, आपके हक में अच्छा न होगा।

दारोगा०। नहीं नहीं, मै ऐसा बेवकूफ नहीं हूँ कि अपनी गुप्त बातें दूसरों पर प्रगट कर दूँ। देखो यही महारानी वाला हाल—कुमेटी के किसी मेम्बर को इस बात का स्वप्न में भी गुमान न हुआ कि यह काम मेरा है, मैंने अलग ही अलग कारवाई कर डाली। इसी तरह महाराज के विषय में भी मैं असल कारण किसी से थोड़े ही कहूँगा। कमेटी पर

यही प्रगट करूँगा कि आज़कल महाराज की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, अच्छी तरह राज्य का काम नहीं देखते और न्याय भी ठीक नहीं करते...

जैपा० । मगर ऐसा है तो नहीं ।

दारोगा० । (हंस कर) अगर नहीं है तो हो जायगा ! कम से कम अदालती मामलों में वह मेरी राय जरूर पूछते हैं । किसको क्या सजा देना चाहिये या किसके साथ कब कैसी कारवाई होनी चाहिये, इन सब बातों में बिना मेरी राय लिये वे कुछ नहीं करते । फिर मुश्किल क्या है ! दो चार काम उनके हाथ से ऐसे करा दूँगा कि जिससे झखमार कर कुमेटी वालो को मेरी बात माननी पड़ेगी । उस वक्त मै कह सुन कर महाराज के उठा देने और गोपालसिंह को राज्य दिलाने का हुक्म ले लूँगा और इस तरह पूरी कमेटी मेरे साथ.....

जैपाल० । मगर ऐसा करने से आपको फायदा क्या होगा ? क्या तब गोपालसिंह खुद लक्ष्मीदेवी के साथ शादी न कर लेंगे ? क्या वे आपके समझाने से किसी दूसरी औरत के साथ शादी करना मंजूर कर लेंगे ?

दारोगा० । अगर समझाने से नहीं मानेंगे तो कोई दूसरी तर्कीब की जायगी । मैं बिना मुन्दर की शादी उसके साथ कराये छोड़ने वाला नहीं !

जैपाल० । मगर मेरा तो फिर वही सवाल है कि इन बातों का नतीजा क्या निकलेगा ? अगर आपकी ये बातें किसी पर प्रगट न भी हुईं और गुप्त ही रह गईं तौ भी आपके लिये लक्ष्मीदेवी और मुन्दर दोनों ही बराबर हैं, चाहे लक्ष्मीदेवी के साथ गोपालसिंह की शादी हो चाहे मुन्दर के साथ ।

दारोगा० । हेलासिंह हमारा दोस्त है ।

जैपाल० । बलभद्रसिंह के साथ भी तो आप दोस्ती का दम भरते हैं!

दारोगा० । हां मगर वह दोस्ती जैसी है इसे तुम बखूबी जानते हो ! खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं, लक्ष्मीदेवी की जगह मुन्दर का

मायारानी बनना मेरे हक में अच्छा ही होगा। यह मैं अच्छी तरह से सोच चुका हूँ और अब अपने निश्चय को नहीं बदलूँगा।

दारोगा बड़ा ही धूर्त और काइयाँ आदमी था। मुन्दर को राजरानी बनाने में उसके लिए कई तरह के फायदे थे जिसको वह अच्छी तरह जानता और समझता था, मगर इस बात को वह जाहिर नहीं करना चाहता था, यहाँ तक कि अपने दिली दोस्त जैपाल को भी वह इस भेद में पूरी तौर पर शामिल नहीं किया चाहता था। जैपाल भी इस बात को समझ गया और यह सोचकर कि किसी दूसरे समय इस बात का पता लगाऊँगा इस समय बात टाल कर बोला, "मगर आप मुन्दर की शादी गोपालसिंह के साथ करा क्योंकर सकेंगे? क्या वह उसे पहिचानेंगे नहीं?"

दारोगा० । जहाँ तक मुझे पता लगा है गोपालसिंह ने अभी तक न तो मुन्दर को ही कभी देखा है और न लक्ष्मीदेवी पर ही उनकी निगाह पड़ी है। ऐसी हालत में लक्ष्मीदेवी की जगह मुन्दर का ब्याह गोपालसिंह के साथ करा देने में किसी तरह की कठिनाई न होगी। अब तुम एक काम करो, हेलासिंह के साथ इस विषय में बातचीत पुनः शुरू करो और सब बातें इस तौर पर तै कर डालो जिसमें बाद में किसी तरह का झंझट न रह जाय। तुमसे और उससे इस विषय में पहिले भी कुछ बातें हो चुकी हैं, अस्तु मेरी बनिस्बत तुम ही इस काम को ठीक तौर पर कर सकोगे.....

इतने ही में दारोगा को बाहर दालान में किसी तरफ की आहट मालूम पड़ी जिससे वह रुक गया और उसी तरफ देखने लगा। हम ऊपर लिख आये हैं कि इस समय बाहर दालान में काफी रोशनी हो रही थी जिसके सबब से वहाँ की सब चीजें साफ दिखाई पड़ रही थीं। उसी रोशनी में दारोगा को एक छाया सी दीवार पर पड़ती दिखाई दी जिसे देखते ही कोई आदमी होने का गुमान कर वह अपनी जगह से उठा और दर्वाजे के पास गया मगर वहाँ कोई दिखाई न पड़ा। इधर उधर के

कमरों और कोठड़ियों में भी खोजा पर जब किसी को न पाया तो अपना शक समझ कर वह ठिकाने लौट आया और पुनः जैपाल से बातें करने लगा।

बासवाँ बयान

भूतनाथ को यकायक वहाँ आ पहुँचते देख एक बार तो मनोरमा घबराई मगर उसने तुरत ही अपने को संभाला और इस्तकबाल के तौर पर कुछ दूर आगे बढ़ कर मुस्कुराती हुई बोली, "आज किधर से सूरज निकल पड़ा ! कहीं रास्ता तो नहीं भूल गए !!"

भूतनाथ हंस पड़ा और तब उन दोनों ऐयारों मायासिंह तथा गोविन्द की तरफ देख कर बोला, "ये लोग कौन हैं ?"

मनोरमा ने हाथ के इशारे से प्रताप तथा गोविन्द और मायासिंह को एक तरफ हट जाने के लिए कहा और तब मुस्कुराती हुई भूतनाथ का हाथ पकड़े अपनी जगह पर ले जाकर बैठाने बाद बोली, "क्या आप इन दोनों को नहीं पहिचानते ? आप ही ने तो इन्हें कैद किया था ?"

भूत०। (आश्चर्य का मुँह बना गोविन्द तथा मायासिंह की तरफ देखते हुए) मैंने इन्हें कैद किया ! आज के पहिले मैंने इन्हें कभी देखा तक नहीं !! (मनोरमा से) अच्छा तुम खड़ी क्यों हो, बैठ तो जाओ !

मनोरमा नजाकत के साथ मचलती हुई भूतनाथ से कुछ हट कर बैठ गई और तब बोली, "यह तो आप आश्चर्य की बात सुनाते हैं ! क्या आपने इन्हें अपनी लामाघाटी में नहीं कैद किया था !!"

भूत०। लामाघाटी में ! कौन लामाघाटी ?

मनो०। कौन लामाघाटी ? क्या लामाघाटी भी कोई दस बीस हैं ! वही स्थान जहाँ आप रहते हैं।

भूत०। मैंने तो बहुत दिन हुए वह स्थान छोड़ दिया और कभी वहाँ

आता जाता तक नहीं, क्योंकि वहाँ अब मेरे एक दुश्मन का कब्जा हो गया है।

मनो०। (आश्चर्य से) ऐसा! यह कब? मुझे बिल्कुल नहीं मालूम! तो क्या आप लामाघाटी में अब नहीं रहते!!

भूत०। नहीं।

मनो०। तो अब वहाँ कौन रहता है?

भूत०। हमारा दुश्मन दलीपशाह।

मनो०। दलीपशाह उस जगह रहता है? यह तो आपने बड़े आश्चर्य की बात सुनाई!!

इतना कह मनोरमा थोड़ी देर के लिए चुप हो गई और सर नीचा करके कुछ सोचने लगी। थोड़ी देर के बाद उसने सिर उठाया और भूतनाथ की तरफ झुक कर धीरे से कहा, "अच्छा पहिले इन सभों को ठिकाने पहुँचा दूँ तो आपसे खुलासा बातें करूँ।"

भूतनाथ के "जैसी तुम्हारी इच्छा" कहने पर मनोरमा उठी और गोविन्द तथा मायासिंह को साथ ले कमरे के बाहर निकल गई। अब उस कमरे में केवल भूतनाथ और प्रताप रह गए।

भूतनाथ कुछ देर तक तो कमरे में इधर उधर नजर दौड़ाता रहा। इसके बाद प्रताप की तरफ देख कर बोला, "क्यों जी प्रताप, अच्छे तो हो?"

प्रताप ने एक हलकी मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया, "जी हाँ, आपकी दया से!"

भूतनाथ ने फिर पूछा, "तुम्हें मालूम है कि ये दोनों आदमी जो यहाँ मौजूद थे, कौन हैं? देखने में तो ऐयार जान पड़ते थे।"

प्रताप०। जी, मैं कुछ ठीक नहीं कह सकता।

भूतनाथ कुछ देर तक चुप रहा और इसके बाद यकायक बोल उठा, "अच्छा निरंजनी किस औरत का नाम है तुम कह सकते हो?"

प्रताप यह सुन घबराया और सोचने लगा कि इस सवाल का क्या जवाब दे, क्योंकि हमारे पाठक तो जानते ही हैं कि निरञ्जनी इसी मनोरमा का एक बनावटी नाम है, परन्तु यह भेद भूतनाथ पर खोलना चाहिए या नहीं इसी सोच में वह पड़ गया मगर उसी समय मनोरमा वहाँ आ पहुँची और भूतनाथ की इच्छानुसार उसके पास बैठ गई।

मनोरमा०। तो क्या सचमुच आप उन्हें नहीं जानते?

भूत०। नहीं, वे दोनों कौन हैं?

मनोरमा०। दोनों ऐयार हैं, किसी छन्नो नामी औरत के काम में लगे रहते थे, पर अब उसका साथ छोड़ मेरा काम करने पर तैयार हो गये हैं। बीच में उन्हें किसी ऐयार ने गिरफ्तार करके लामाघाटी में कैद कर दिया था पर अब वे छूट कर निकल आये हैं।

भूत०। तुमने उन्हें छुड़ाया है?

मनोरमा०। नहीं वे छूटे तो अपनी ही कारीगरी से, हाँ छूट कर सीधे यहां मेरे ही पास आये हैं। उन्हें तो यही विश्वास था कि तुमने ही उनको कैद किया था पर अब तुम्हारे कहने से जाहिर होता है कि किसी दूसरे का वह काम था।

भूत०। जरूर वह काम दलीपशाह का होगा! (कुछ सोच कर) अच्छा यह छन्नो कौन है?

मनोरमा०। एक औरत जिसे शायद तुम नहीं जानते।

भूत०। और निरञ्जनी?

मनोरमा यह सवाल सुनते ही चौंकी और गौर के साथ भूतनाथ की सूरत देख कर बोली, "मैं नहीं जानती निरञ्जनी कौन है, तुमने इस नाम को कब और कहां सुना?"

भूतनाथ ने इस बात का कुछ जवाब नहीं दिया और पूछा, "नागर कहां है?"

मनोरमा०। मैं कह नहीं सकती, शायद जमानिया में है।

भूत० । आज कल वह जमानिया में ज्यादा रहने लगी है, काशी रहना तो उसने एकदम छोड़ ही दिया ।

मनोरमा० । जब आपने उसे छोड़ दिया तो लाचार उसने भी काशी छोड़ दी ।

भूत० । इसका क्या मतलब ?

मनोरमा० । अब आप ही इसका मतलब समझिये ।

भूत० । सो क्या ?

मनोरमा० । वह एक दिन मुझसे आपके विषय में कहती थी कि 'अब वे मुझे नहीं चाहते और न मुझ पर भरोसा ही करते हैं ।'

भूत० । यह बात तो नहीं है, मैं अब भी उसे प्यार की नजर से देखता हूँ और उस पर उतना ही विश्वास करता हूँ जितना पहिले करता था ।

मनोरमा० । तो मैं नहीं कह सकती कि वह ऐसा क्यों सोचने लगी !

भूत० । अभी थोड़े ही दिन हुए मैं उससे वहाँ जमानिया में मिला था पर उसने इस किस्म की कोई शिकायत मुझसे नहीं की !

मनोरमा० । अब यह तो वही जाने, शिकायत करे या न करे, हाँ मुझसे उसने जो कहा सो मैंने तुमसे कह दिया । (कुछ ठहर कर) शायद उसके जमानिया में ज्यादा रहने के कारण दारोगा साहब हों ।

भूत० । (कुछ सोचता हुआ) हाँ हो सकता है, आज कल उनकी उस पर बहुत कृपा रहती है । (हँस कर) और उनकी कृपा किस पर नहीं रहती, तुम भी तो उनकी कृपापात्री हो ।

मनोरमा ने एक विचित्र ढंग की निगाह भूतनाथ पर डाली और तब प्रताप की तरफ देखा जो थोड़ी दूर पर बैठा हुआ था । प्रताप उसका मतलब समझ कर उठा और कमरे के बाहर चला गया । अब ये दोनों उस कमरे में अकेले रह गये ।

भूतनाथ कुछ देर तक किसी सोच में डूबा रहा । मनोरमा यह देख

खसक कर उसके पास आ गई और अपने मुलायम हाथों से उसका पंजा पकड़ कर बोली, "आज तुम किसी तरद्दुद में मालूम होते हो !"

भूत० । हाँ, आज मैं एक बड़े तरद्दुद में पड़ गया हूँ, पर तुम पहिले यह बताओ कि नागर से तुमसे आखिरी दफे कब मुलाकात हुई थी ?

मनो० । अभी तो मैं कल ही उससे मिली हूँ ।

भूत० । क्या वह आज कल यहीं है ?

मनो० । नहीं, मैं जमानिया गई थी, वहीं उससे मुलाकात हुई थी ।

भूत० । (चौंक कर) तो क्या तुम आज ही जमानिया से लौटी हो ?

मनो० । हाँ !!

भूत० । तुम्हें लौटे कितनी देर हुई ?

मनो० । अभी थोड़ी ही देर हुई कि मैं जमानिया से लौटी आ रही हूँ ।

भूत० । (आश्चर्य से) अभी लौटी आ रही हो ! हाँ ठीक है, मैंने रास्ते में तुम्हें देखा भी था । मर्दानी पोशाक में थीं और यह दोनों आदमी जिन्हें अभी मैं देख चुका हूँ तुम्हारे साथ थे ।

मनो० । तुमने मुझे कहाँ देखा !!

भूत० । रास्ते में देखा था, खैर—अच्छा तो तुम दारोगा साहब से भी मिली होगी ?

मनो० । जरूर, मगर इधर दो एक दिन के अन्दर मैंने उन्हें नहीं देखा, क्योंकि मैं जमानिया अपने किसी निजी काम से गई थी और फुरसत न मिलने के कारण पुनः दारोगा साहब से मिल न सकी ।

भूत० । (गौर से मनोरमा का मुँह देख और कुछ मुस्कुरा कर) अच्छा तुम इन दोनों ऐयारों का कुछ हाल बताओ जो यहाँ बैठे हुए थे और जिनके बारे में तुम कहती हो कि छन्नो नामी किसी औरत का काम करते हैं ?

मनो० । इनका पूरा हाल मुझे अभी मालूम नहीं हुआ । धीरे धीरे कोशिश करके सब पता लगाऊँगी । ऐयार लोग जल्दी अपना भेद किसी को बताते थोड़े ही हैं ?

भूत० । तो फिर तुम्हारा और इनका साथ कैसे हुआ ? जब ये तुमको और तुम इनको नहीं जानतीं तो ये छन्नो को छोड़ तुम्हारे पास कैसे और क्यों आये ?

मनो० । मैं नहीं कह सकती कि ये मेरे पास क्यों आये, कदाचित् मुझे जानते हों ! मुझसे इनसे रास्ते ही में मुलाकात हो गई जब मैं जमानिया से लौट रही थी ।

भूत० । अच्छा अगर तुम कहो तो मैं खुद उन दोनों से बातचीत करूँ और पता लगाऊँ कि वे कौन हैं और छन्नो किसका नाम है ।

मनो० । तुम खुशी से उनसे बातें कर सकते हो मगर मैं समझती हूँ कि तुम्हारी बनिस्बत अगर मैं उनसे बातें करूँगी तो ज्यादा कामयाब हूँगी क्योंकि तुमको तो वे अपना शत्रु समझते हैं और जानते हैं कि तुम ही ने उन्हें लामाघाटी में कैद किया था, ऐसी हालत में कदाचित् तुमको सब हाल बताने में वे कुछ आगा पीछा करें । जब मैं स्वयम् उनसे बातें करूँगी तब ठीक ठीक मालूम हो जायगा कि ये कौन हैं, इस समय तो मैंने उन्हें दम दिलासा देकर बिदा किया है ।

भूत० । खैर तुम्हीं उनसे बातें करना पर मुझे बताना अवश्य कि क्या मामला है ।

मनो० । जरूर ।

भूत० । और इस बात का भी पता लगाना कि निरञ्जनी किस औरत का नाम है ?

मनो० । बहुत अच्छा कोशिश करूँगी, मगर तुमने यह नाम कहाँ सुना ?

भूत०। सो मैं इस समय तुम्हें न बताऊँगा किसी दूसरे समय पूछ लेना।

मनो०। जैसी मर्जी।

इसके बाद भूतनाथ और मनोरमा में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं जिसे इस जगह बयान करने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती।

सन्ध्या होने में कुछ ही कसर थी जब भूतनाथ मनोरमा के मकान से बाहर निकला और कुछ सोचता हुआ एक तरफ को रवाना हुआ।

इक्कीसवाँ बयान

अब हम अपने पाठकों को पुनः इन्ददेव की उस विचित्र तिलिस्मी घाटी के अन्दर ले चला चाहते हैं जहाँ बहुत दिनों के बिछुड़े हुए प्रेमी इस समय एकत्र हो रहे हैं और अपने पिछले दुःख और गम को पुनर्मिलाप रूपी सुख के आँसू से धोकर बहा देना चाहते हैं।

यद्यपि दोपहर का समय है तथापि इन्द्रदेव के इस अनूठे और विचित्र स्थान में धूप और गर्मी का कोई कष्ट नहीं है। पहाड़ियों से टकराकर आती हुई गरम हवा को बीच वाले मैदान के घने और गुञ्जान पेड़ ठंडी और रुचिकर बना देते हैं और तरह तरह के फूलों की सुगन्ध हवा में मिल कर उसे खुशबूदार बनाए दे रही हैं।

एक बड़े मौलसिरी के पेड़ के नीचे संगमर्मर के खूबसूरत चबूतरे पर कई कुर्सियें रक्खी हुई हैं जिन पर प्रभाकरसिंह, उनके पिता दिवाकरसिंह, भैयाराजा, दयाराम और इन्द्रदेव बैठे हुए आपुस में बातें कर रहे हैं।

दयाराम०। (दिवाकरसिंह से) यह हम लोगों के लिये बड़े सौभाग्य की बात थी कि यकायक भैयाराजा जी को आपके जीते रहने का गुमान हुआ और उन्होंने हम लोगों को इसकी सूचना दी, नहीं तो हम लोग तो आपको पंचतत्व में मिल गया हुआ समझ एक तरह पर बेफिक्र ही

से थे और कभी आपका दर्शन भी करने में पुनः आवेगा इस बात का गुमान तक हम लोगों को न होता।

भैया०। मुझे यकायक ही इस बात का सन्देह हुआ कि आप दुष्ट दारोगा की कैद में पड़े हुए हैं। जमना सरस्वती और इन्दुमति को जब भूतनाथ ने एक कूएँ की राह तिलिस्म के अन्दर पहुँचा दिया* और मुझे इसका पता लगा तो उन तीनों पर मुझे बड़ी दया आई और मैं गुप्त रीति से उनकी मदद पर तैयार हो गया। इसके बाद ही मुझे दारोगा की कार्रवाइयों का पता लगा और मैं उसकी तरफ से भी होशियार हो गया तथा वह किस किस को कहाँ कैद रखता है इसकी भी टोह लेने लगा। गुप्त रूप से उसके कैदियों से तथा आपसे भी मैं कई बार मिला मगर उस समय मैं आपको पहिचान या जान न सका और इसी लिए निश्चय रूप से यह न समझ सका कि आप प्रभाकरसिंह के पिता और हम लोगों के निकट सम्बन्धी हैं, हाँ इस बात का शक जरूर हो गया और वह शक बढ़ता ही गया। तिलिस्म में प्रभाकरसिंह को भी एक बार मैंने आपके जीवित रहने की सूचना दी थी† और उसके बाद यदि मैं तरह तरह की झंझटों में न पड़ जाता तो आपका और भी हाल जानने की अवश्य चेष्टा करता और मुमकिन था कि आपको कैद से छुड़ाने में भी सफलता प्राप्त करता पर ईश्वर को यह स्वीकार न था और आपको दुष्ट दारोगा की कैद का दुःख कुछ दिनों तक और भोगना बदा था।

दिवा०। फिर भी इसे ईश्वर की महान दया कहना चाहिये कि आप लोगों की बदौलत मेरा छुटकारा हुआ और मैं उस भयानक कैदखाने के बाहर निकल कर स्वतंत्रता की हवा खाने लायक हुआ।

इन्द्र०। (दिवाकरसिंह से) अच्छा अब यदि आपको कोई कष्ट न हो

---

* भूतनाथ, दूसरा हिस्सा, अट्ठाइसवां बयान।

† भूतनाथ, तीसरा हिस्सा, छठा बयान।

तो आप अपना अनूठा किस्सा बयान कीजिये और बताइए कि आप किस तरह दारोगा के कब्जे में पड़ गए ?

दिवा० । हाँ, मै कहता हूँ सुनिए. वह कोई लम्बा चौड़ा और दिलचस्प या अनूठा हाल नहीं हैं । मैं थोड़े ही शब्दों में सब बयान कर देता हूँ ।

यह तो आप जानते ही हैं कि मैं शिवदत्त के पिता के समय से वहाँ की फौज का सेनापति हूँ या यों कहना चाहिये कि था । अस्तु शिवदत्त ने भी (राज्याधिकार पाने के बाद) कुछ दिनों तक मुझे प्रसन्नता के साथ अपनी फौज का सेनापति बनाये रक्खा । मैं उस समय तक उसके ऐबों को लड़कपन समझ कर उन पर ध्यान न देता था, पर धीरे धीरे मुझे उसकी कार्रवाइयों का पता लगा और यह मालूम हुआ कि वह बड़ा ही दुष्ट और कमीना होता जा रहा है । (इन्द्रदेव की तरफ देख कर) आपको कदाचित् स्मरण होगा कि प्रभाकर की शादी पहिले मैंने मालती नामक एक लड़की से ठीक की थी जिसके पिता को मैं बहुत ही चाहता और मानता था ।

इन्द्र० । हाँ, मुझे यह बात बखूबी याद है ।

दिवा० । तो मेरी बदनसीबी का असल कारण वही हुआ । शिवदत्तने किसी तरह उस लड़की (मालती) को देख लिया और उस पर आशिक हो गया । उसने मालती के पिता पर मालती का विवाह अपने साथ करा लेने के लिये जोर डाला और जब उसने साफ इन्कार कर दिया तो मुझे इस विषय में जोर देने लगा कि मैं प्रभाकर की शादी मालती के साथ न कर किसी दूसरी लड़की से करूँ ।

मुझे शिवदत्त की बदचलनी और दुष्टता की खबर तो थी ही, अस्तु उसकी यह बात सुन मैं बड़ी फिक्र में पड़ गया क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि वह बड़ा ही जिद्दी और मतलबी है और साफ जवाब दे देने से वह मेरा भी दुश्मन हो जायगा, अस्तु मैंने उसे साफ साफ कोई

जवाब न दिया और टालमटोल करता हुआ इस फिक्र में लगा कि गुप्त रीति से प्रभाकर की शादी मालती के साथ कर शिवदत्त की नौकरी छोड़ दूँ और किसी दूसरी जगह जा बसूँ।

मुझे अपने काम में बहुत कुछ सफलता हुई और शिवदत्त के बे जाने ही मैंने प्रभाकर के विवाह का सब सामान कर लिया। चुनारगढ़ से दूर एक दूसरे ही शहर में शादी का सब इन्तजाम किया गया। मैंने बीमारी का बहाना करके शिवदत्त से कुछ दिनों की छुट्टी ली और अपनी स्त्री तथा प्रभाकर इत्यादि को साथ ले वहाँ पहुँचा जहाँ शादी का इन्तजाम किया था। मुझे विश्वास था कि शिवदत्त को मेरी कार्रवाई का पता नहीं लगा है मगर यह मेरी भूल थी। उसने मेरा पीछा न छोड़ा और ठीक बिवाह वाले दिन मालती को उसके बाप के घर से चुरवा मँगवाया मैं यह निश्चय रूप से नहीं कह सकता कि यह काम शिवदत्त ही का था या दारोगा का भी इसमें कुछ हाथ था पर जहाँ तक मैं समझता हूँ यह शिवदत्त ही की कार्रवाई थी।

इन्द्र०। इस काम में वे दोनों ही बेईमान शामिल थे, खैर तब ?

दिवा०। मालती के इस तरह गायब होने से मुझे बड़ा ही रंज हुआ मगर शादी रोकना व्यर्थ समझ दूसरे ही दिन प्रभाकर की शादी इन्दु के साथ कर दी गई। इसके बाद सभों के साथ मैं चुनार लौट आया और इस फिक्र में लगा कि मालती की खबर लगाऊँ, मगर उसका कुछ भी पता न लगा उधर शिवदत्त मुझसे पूरी तरह बिगड़ बैठा और अन्त में उसने मुझे गिरफ्तार कर ही लिया।

मुझे शिकार खेलने का बहुत शौक था और प्रायः शिवदत्त के साथ शिकार खेलने जाया करता था। प्रभाकर की शादी के कुछ ही दिनों बाद एक दिन शिवदत्त ने मुझे अपने साथ शिकार के लिए चलने को कहा और यह भी कहा कि मैं अपनी स्त्री इत्यादि को साथ ले चलता हूँ, तुम भी अपने घर में से सभी को साथ लेते चलना जिसमें औरतों का भी

जी बहला रहे। मुझे यह बात पसन्द तो न थी मगर उसके जोर देने पर लाचार होकर मैंने अपनी स्त्री तथा कई लौंडियों को साथ ले लिया। इन्दुमति या प्रभाकरसिंह को मैं अपने साथ न ले गया। वहाँ शिकारगाह ही में मुझे तथा मेरी स्त्री को शिवदत्त ने ऐयारों की मदद से बेहोशी की दवा खिला अपने कब्जे में कर लिया और किले के एक गुप्त स्थान में हम दोनों कैद कर दिये गये। यह मैं नहीं कह सकता कि इसके बाद शिवदत्त ने कौन सी ऐसी कार्रवाई की जिससे मैं मरा हुआ मशहूर कर दिया गया और मेरे सम्बन्धियों तथा मित्रों को भी विश्वास हो गया कि मैं अब दुनिया में नहीं हूँ।

प्रभा०। आपके जाने के दूसरे ही दिन शिवदत्त के एक खास आदमी ने मुझे यह खबर पहुँचाई कि शिकार खेलते समय आपको एक जंगली सूअर ने सख्त चोट पहुँचाई है। मैं घबड़ाया हुआ वहाँ पहुँचा मगर पहुँचने पर आप की (नकली) लाश देखने में आई तथा अपनी माता को भी अन्तिम अवस्था में पाया जिनके विषय में मुझसे कहा गया कि अपने पति की मौत न देख सकने के कारण उन्होंने किसी तरह का तेज जहर खा लिया है। शिवदत्त ने वहाँ मेरे साथ बड़ी सहानुभूति दिखाई और मुझे उसके ऊपर सन्देह होने के बदले कुछ विश्वास हो गया। मैंने अपनी समझ में अपने माता पिता की क्रिया इत्यादि दुःखी चित्त से करके छुट्टी पाई और पितृ-मातृहीन की तरह किसी प्रकार ग्रहदशा के दिन काटने लगा। शिवदत्त ने अपनी फौज का मुझको सेनापति बना दिया और मुझे इस बात का जरा भी सन्देह न हुआ कि मेरे माता पिता के बारे में उस हरामजादे ने मुझे कितना बड़ा धोखा दिया है।

इन्द्र०। प्रभाकरसिंह की तरह हम लोग भी बिल्कुल धोखे में रह गये और इस बात का जरा भी गुमान न हुआ कि आपकी मौत में किसी प्रकार का रहस्य भरा हुआ है। मालती वाली घटना का हाल यद्यपि मुझे मालूम हुआ था और मैं अपनी तरफ से उसका पता लगाने की कुछ

चेष्टा भी कर रहा था पर आपकी मृत्यु की खबर पाकर मैंने उस तरफ से भी अपना ध्यान एक प्रकार से खींच लिया।

दिवा०। आखिर कुछ मालूम भी हुआ कि मालती कहाँ चली गई! शिवदत्त को जब बीरेन्द्रसिंह ने हराया और गिरफ्तार किया तो उसके कैदियों का तो कुछ पता लगा ही होगा?

इन्द्र०। नहीं, उसका कोई हाल फिर न मालूम हुआ मगर सन्देह होता है कि आपकी तरह मालती भी कदाचित् दारोगा के कब्जे में चली गई क्योंकि जब जमना सरस्वती और इन्दुमति को छुड़ाने के लिये प्रभाकरसिंह तिलिस्म में घुसे थे तो वहां दारोगा ने मनोरमा को मालती बना कर इन्हें धोखा देना चाहा था बल्कि एक तरह पर ये उसके फन्दे में पड़ गए थे पर मैंने वहां पहुँच कर इन्हें छुड़ाया*।

दिवा०। हाँ ऐसा? मुझे यह हाल नहीं मालूम, यह कब की बात है?

इन्द्र०। थोड़े ही दिन की बात है। आप अपना किस्सा समाप्त कर लीजिये तो प्रभाकरसिंह वह सब हाल सुनावेंगे।

दिवा०। बस मेरा किस्सा अब समाप्ति ही पर है। शिवदत्त के यहाँ चुनारगढ़ में मैं ज्यादा दिनों तक कैद न रहा और न मुझे यही मालूम हुआ कि उसने मुझे कैद क्यों कर रक्खा है। कुछ दिन बाद जब चन्द्रकान्ता के सबब से उसमें और बीरेन्द्रसिंह में खटपट शुरू हुई तो उसने हम दोनों को दारोगा के यहाँ भेजवा दिया और तब से हम लोग बराबर उसी दुष्ट की कैद में पड़े रहे।

भैयाराजा०। आपको कैद रखने में दारोगा का भी कुछ न कुछ स्वार्थ होगा ही?

दिवा०। कुछ न कुछ तो जरूर था, नहीं तो वह कम्बख्त मुझे शिवदत्त के यहाँ से कदापि न लाता क्योंकि ऐसे लोग दोस्ती का हक

---

* भूतनाथ चौथा हिस्सा बारहवाँ बयान।

अदा करने के लिए अपने ऊपर आफत लाना या कोई खतरनाक काम करना कदापि पसन्द नहीं करते। इस तरह के लोगों में स्वार्थ की मात्रा इतनी अधिक रहती है कि जिसके लिये वे लोग अपने बड़े से बड़े दोस्त या रिश्तेदारों के साथ भी कपट करने में आनाकानी नहीं करते। मैं नहीं कह सकता कि मुझे और मेरी स्त्री को दारोगा के पास भेजते समय शिवदत्त ने उसे क्या क्या बातें समझाई थीं तथापि इतना कह सकता हूँ कि तरह तरह के दुःख और कष्ट देने तथा धमकी दिखाने पर भी दारोगा ने मेरी जान लेने का प्रयत्न या ऐसा करने का डर भी कभी नहीं दिखाया। हाँ उसने दो एक बार मुझसे एक पत्र लिखवाने की चेष्टा जरूर की थी पर उस चीठी का मजमून भी कुछ ऐसा आवश्यक या अनूठा न था कि जिससे यह समझता कि केवल उसी चीठी के न लिखने के कारण मेरी जान बची जा रही है या यही सोचता कि केवल उसी चीठी को लिखाने के लिये दारोगा ने मुझे कैद कर रक्खा है।

दयाराम०। उस चीठी का मजमून क्या था?

दिवा०। वह चीठी कुछ आपके और गदाधरसिंह के सम्बन्ध में थी, ठीक ठीक शब्द तो मुझे याद नहीं हैं हाँ इतना स्मरण है कि आशय उस चीठी का यह था कि दयाराम का पता लगाने की गदाधरसिंह ने हद्द से ज्यादा कोशिश की मगर अफसोस कि जीता जागता उन्हें छुड़ा न सका और राजसिंह के हाथ दयाराम की जान गई। उनकी मृत्यु में भूतनाथ का कोई कसूर न था, या अगर कुछ था तो केवल इतना ही कि उनकी जान के बदले में वह केवल राजसिंह की जान ही लेकर रह गया और पूरी तरह से उनकी मृत्यु का बदला ले न सका जिसका कि उसे बड़ा दुःख है। मैं इस बात को पूरी तरह से जाँच और समझ कर लिखता हूँ" (इन्द्रदेव की तरफ देखकर) इस समय ईश्वर की दया से मैं दयाराम को जीता जागता देख रहा हूँ पर कैद की अवस्था में जब तक मैं

रहा तब तक इन्हें मरा हुआ ही समझता रहा और इसी बात का विश्वास रणधीरसिंहजी तथा मेरे और दोस्तों ने भी मुझे दिलाया था।

इन्द्र०। आपको क्या हम सभी लोगों को इनकी मृत्यु का विश्वास हो गया था। अभी थोड़े ही दिन हुए कि इनके जीते रहने का पता एक विचित्र ढंग से मुझे लगा और मैंने इन्हें कैद से छुड़ाया।

दिवा०। आपको इनके जीते रहने का पता कैसे लगा?

इन्द्र०। जमना और सरस्वती ने राजसिंह के कुल को अपने हाथ से तहस नहस करने का विचार कर लिया था जिसके कारण उन्हें इतने दुःख भोगने पड़े थे। राजसिंह तो गदाधरसिंह के हाथ से मारा ही गया था पर उसके लड़के ध्यानसिंह को इस बात का पता लग गया और वह अपनी जान बचाने की फिक्र में लगा। उसे भूतनाथ और जमना सरस्वती की दुश्मनी का हाल किसी तरह मालूम हो गया था अस्तु अपनी मदद के लिए उसने भूतनाथ ही को अपना मित्र बनाने का निश्चय किया और इसका जरिया दयाराम को बनाया। एक नकशा तथा एक पत्र भूतनाथ के नाम लिख कर उसने यह दरसाया कि गदाधरसिंह ने दयाराम के मारने में धोखा खाया और जिसको उसने दयाराम समझा था वह वास्तव में राजसिंह का भतीजा था, असल दयाराम अभी तक दारोगा के कब्जे में है। यह चीठी और नकशा ध्यानसिंह ने अपने आदमी के हाथ भूतनाथ के पास भेजा मगर उस आदमी को बीच ही में मार कर निरञ्जनी ने वह दोनों चीजें अपने कब्जे में कर लीं।

दिवा०। निरञ्जनी कौन?

इन्द्र०। रणधीरसिंहजी के यहां महल में छन्नो नामी एक औरत थी, शायद आप उसे जानते हों।

दिवा०। मुझे कुछ स्मरण नहीं आ रहा है।

इन्द्रदेव०। उसी की दूर के रिश्ते में यह निरञ्जनी नामक मौसेरी बहिन है। निरञ्जनी चालचलन की बहुत ही खराब और बदकार औरत

है और आज कल मनोरमा के नाम से मशहूर हो रही है, पर जमानिया के दारोगा साहब का उस पर बड़ा ही प्रेम और विश्वास है और वे प्रायः अपने गुप्त भेदों में उसकी राय और मदद लिया करते हैं। इधर जब जमना और सरस्वती के विरुद्ध गदाधरसिंह ने दारोगा से सहायता की प्रार्थना की तो दारोगा ने निरञ्जनी से भी इस काम में मदद ली और उसे जमना और सरस्वती का पता लगाने को कहा। निरञ्जनी ने इस काम के लिए छन्नो को अपने साथ मिलाना उचित समझा क्योंकि वह बहुत दिनों तक जमना सरस्वती के साथ रह चुकी थी और उनके भेदों को बखूबी जानती थी। वह छन्नो से मिली और तरह तरह की बातें बना कर उसे उसने अपने ढब पर कर लिया। यद्यपि छन्नो को निरञ्जनी का साथ नापसन्द था पर जमना सरस्वती के हित के खयाल से वह उसकी मदद पर तैयार हुई। निरञ्जनी ने कोशिश करके ध्यानसिंह का पता लगाया और उस आदमी को गिरफ्तार किया जिसके हाथ ध्यानसिंह ने वह नकशा और चिठी गदाधरसिंह को भेजी थी। मगर उस चीठी और नकशे को पाकर निरञ्जनी की नियत बदल गई और उसने स्वयं दयाराम को दारोगा की कैद से छुड़ाने और उनके साथ जमना या सरस्वती बन कर रहने का इरादा किया क्योंकि दारोगा ने दयाराम के जीते रहने का हाल उससे (निरञ्जनी से) भी नहीं कहा था।

छन्नो ने निरञ्जनी की मदद के लिए दो ऐयार ठीक किये जिनका नाम मायासिंह और गोविन्द था। मेरा एक शागिर्द मनोरमा के साथ बहुत पहिले से उसी के एक साथी की सूरत बना कर लगा हुआ था जिसने मुझे इन बातों की खबर दी और मैंने मायासिंह तथा गोविन्द को गिरफ्तार करा के उसके बदले में अपने दो ऐयारों को उन्हीं की सूरत में छन्नो और निरञ्जनी के साथ रहने का हुक्म दिया।

छन्नो को जब यह मालूम हुआ कि निरञ्जनी की नीयत बदल गई है और वह स्वयम् जमना या सरस्वती बन कर दयाराम के साथ रहना

चाहती है तो उसको यह बात बहुत बुरी मालूम हुई और उसने निरञ्जनी का साथ छोड़ मायासिंह और गोविन्द की मदद से स्वयम् दयाराम को छुड़ाना चाहा। इसी बीच में मेरे शागिर्दों ने पहुँच कर उन दोनों ऐयारों को गिरफ्तार कर लिया और स्वयम् मायासिंह तथा गोविंद बन गये मगर इसका कोई अच्छा नतीजा न निकला क्योंकि भूतनाथ ने एक जंगल में छिप कर इन सभों की बातें सुन लीं और उन दोनों ऐयारों को (जो वास्तव में मेरे शागिर्द ही थे) गिरफ्तार कर लिया। इस बीच छन्नो स्वयं जमना और सरस्वती के पास चली आई और सब हाल साफ साफ उनसे कह दिया। मुझे भी अपने ऐयारों की सहायता से इन सब बातों का कुछ पता लग चुका था अस्तु मैंने उसी दिन से दयाराम को छुड़ाने का उद्योग आरम्भ किया और ईश्वर की दया से अपने काम में कृतकार्य भी हुआ।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने दयाराम के छुड़ाने के सम्बन्ध में जो जो कार्रवाई की थी और जिन्हें हमारे पाठक पांचवें हिस्से के पांचवें तथा सातवें बयान में पढ़ चुके हैं मुख्तसर तौर पर कह सुनाई और अन्त में कहा, "आज ही मेरे कुछ साथियों ने उन दोनों को जो गोविन्द और मायासिंह बने थे भूतनाथ की कैद से छुट्टी दी है अस्तु असली गोविन्द और मायासिंह को भी मैंने छोड़ दिया है, देखें अब उनमें और निरञ्जनी में कैसी निपटती है?

दिवा०। छन्नो अब कहाँ है?

इन्द्र०। वह भी अब जमना और सरस्वती के साथ ही रहती है। निरञ्जनी का साथ उसने छोड़ दिया है। राजसिंह का लड़का ध्यानसिंह भी हमी लोगों के कब्जे में है और उसकी लड़की ज्वाला भी जिसे निरञ्जनी ने गिरफ्तार किया था और जिसे उसकी कैद से मैं ही छुड़ा लाया था यहीं है।

इसके बाद दिवाकरसिंह की आज्ञानुसार प्रभाकरसिंह ने अपना सब पिछला हाल शिवदत्त से अलग होने से लेकर इस समय तक का बयान किया और नकली मालती वाला वह हाल भी कह सुनाया जिसे चौथे हिस्से के बारहवें बयान में हम लिख आये हैं। कुछ देर तक और इधर उधर की बातें होती रहीं और तब इन्द्रदेव के कथनानुसार सब कोई पहाड़ी पर वाले उस बंगले की तरफ चले जहाँ जमना सरस्वती इन्दुमति बहुरानी तथा नन्दरानी इत्यादि इस समय थीं और जहाँ इन्द्रदेव के हुक्म से उन सभों के अलग अलग रहने तथा आराम करने का बहुत ही अच्छा इन्तजाम किया गया था।

* सातवां हिस्सा समाप्त *

२००० प्रति गुटका ग्यारहवां संस्करण—१९५२ ई०।

मुद्रक आर. एस. धवन, कमर्शियल प्रिंटिंग वर्क्स, गायघाट, बनारस।

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा

भूतनाथ की जीवनी

आठवाँ हिस्सा

—*—

पहिला बयान

सुबह हुआ ही चाहती है। सूर्य भगवान का लाल पेशखेमा आस्मान पर तन रहा है और इसे देख अपने प्रभु चन्द्रदेव का अनुसरण करते हुए छोटे छोटे तारों ने भी अपना मुँह छिपाना शुरू कर दिया है। खुशबूदार जंगली फूलों की महक से भरे हुए हवा के हलके झोंके दक्खिन तरफ से आ रहे हैं और उस नौजवान के दिल की कली को भी खिला देने का प्रयत्न कर रहे हैं जो एक हल्की नकाब से मुँह ढांके हुए पत्थर की चट्टान पर सिर झुकाये बैठा कुछ सोच रहा है।

कुछ देर के बाद एक लम्बी साँस लेकर इस आदमी ने अपनी नकाब उलट दी और उसी समय पीछे की तरफ से पत्तों के चरमराहट की

आवाज ने उसके कानों में पहुँच कर किसी के आने की सूचना दी। उसने पीछे की तरफ घूम कर देखा और भूतनाथ को तेजी के साथ अपनी तरफ आते देख कर प्रसन्नता के साथ उठ खड़ा हुआ।

बात की बात में भूतनाथ उस जगह आ पहुँचा और उस आदमी की तरफ देख कर बोला, "क्या तुम देर से मेरी राह देख रहे हो?"

आदमी०। हाँ, अगर बहुत देर से नहीं तो काफी देर से तो जरूर ही इस जगह बैठा आपकी राह देख रहा हूँ और अब जाने की सोच रहा था क्योंकि मुझे अपने मालिक के कई जरूरी काम निपटाने हैं जिसको न करने से उनका बहुत नुकसान होगा।

भूत०। नहीं नहीं हरदीन, मैं तुम्हारा या तुम्हारे मालिक का नुकसान करके तुमसे कोई काम नहीं लिया चाहता। सच तो यह है कि तुम स्वयं ही समय समय पर मुझसे मिल कर जिन जिन बातों की मुझे खबर देते रहे हो उसके लिये मैं तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ हूँ। इधर तुमने कई ऐसी बातें मुझे बताई हैं जिनका मुझे स्वप्न में भी गुमान न था और न कभी होता। अभी उसी दिन तुमने जो बातें मुझे कही हैं क्या वे कभी मैं अपनी कोशिश से जान सकता था? कदापि नहीं! मेरे साथ लाख दोस्ती और मुहब्बत का दम भरने पर भी दारोगा मुझे कभी अपने उन भेदों में शरीक न करता जिनकी तुमने मुझे खबर दी है।

हर०। सच तो यह है कि यद्यपि आप बराबर उसके काम में लगे रहते और उसकी मदद करते रहते हैं फिर भी वह आप को अपना विश्वासपात्र नहीं समझता। आपने कई बार उसे बुरी तरह पर धोखा दिया है और इसी से वह हमेशा आपसे डरता रहता है।

भूत०। और उसने मुझे क्या कम दिक किया है?

हर०। मगर ताज्जुब है कि इतना होने पर भी आप न जाने उस दुष्ट का साथ क्यों पसन्द करते हैं? यह तो आप स्वयं ही जानते हैं कि वह हद्द दर्जे का पाजी और कमीना आदमी है और विश्वासघातकता का

तो पूरा पुतला ही है। लेकिन इस पर भी जो आप उसकी मदद करते हैं यह मुझे बहुत गढ़ाता है। आप निश्चय समझिये कि उसका साथ दे कर सुख और प्रसन्नता पाने की आशा करना सरासर भूल है। ऐसों की संगति करने वाला कभी सुख नहीं उठा सकता और न भले आदमियों में ही अपनी गिनती करा सकता है। जिस तरह बुरे कर्मों का फल किसी न किसी समय भोगना ही पड़ता है उसी तरह बुरों का साथ देने वालों को भी कभी न कभी जरूर कष्ट उठाना पड़ता है। आप स्वयं इस बात को पूरी तरह से सोच विचार कर देखिये। जब जब आपने दारोगा का साथ दिया आपको दुःख ही उठाना पड़ा, आपके सिर पर तरद्दुदों का बोझ बढ़ता ही गया और आपसे बुरा मानने तथा दुश्मनी की नीयत रखने वालों की सख्या वृद्धि ही पाती गई। खैर, मैं इस समय आपसे इस विषय पर कुछ कहना सुनना पसन्द नहीं करता हूँ क्योंकि आप स्वयं इन बातों को मुझसे कहीं ज्यादा समझ सकते हैं, दूसरे आप मुझसे यह भी कह चुके हैं कि अब आपने हमेशे के लिए दारोगा वगैरह का साथ छोड़ दिया है और भैयाराजा तथा प्रभाकरसिंह की मदद कर रहे हैं। मुझे आशा है कि इस बार आप अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे और पुनः किसी जरा सी बात पर उनसे नाराज होकर दारोगा के तरफदार न हो जायँगे।

भूत०। क्या करूँ, मैं अपने स्वभाव से स्वयं लाचार हूँ। मुझे बड़ी जल्दी क्रोध आ जाता है और तब मुझे भले बुरे का कुछ भी ध्यान नहीं रह जाता। मैं अपने दिल को बहुत रोकता हूँ और चाहता हूँ कि किसी तरह भी दुष्ट दारोगा या उसके साथियों की कम्बख्त सूरत मुझे देखनी न पड़े मगर मेरी मर्जी के खिलाफ जरा भी कुछ होते ही मेरे यह सब खयाल काफूर हो जाते हैं! खैर अब तुम निश्चय रक्खो कि इस बार मैंने सदा के लिये दारोगा का साथ छोड़ दिया है और अब कभी उसकी मदद न करूँगा।

हरदीन०। अगर ऐसा हो तो क्या बात है!!

भूत० । नहीं नहीं, मुझे पूरी आशा है कि तुम इसके विरुद्ध कोई बात अब मुझमें न देखोगे । अच्छा यह बताओ हेलासिंह के बारे में और किसी बात का पता लगा ?

हरदीन० । जो कुछ हाल आपको मैं सुना चुका हूँ उससे ज्यादा और किसी बात का पता मैं न लगा सका । हाँ, कल रात को गुप्त रीति से मैं दारोगा के मकान में अवश्य घुस गया था । उस समय रघुबरसिंह भी वहाँ ही था और उन दोनों में हेलासिंह के ही विषय में कुछ बातें हो रही थीं ।

भूत० । (कुछ रुकावट के साथ) रघुबरसिंह ! उसे तो किसी ने गिरफ्तार न कर लिया था, फिर क्या छूट आया ?

हरदीन० । छूट ही आया होगा, वहाँ बैठा हुआ तो था ।

भूतनाथ यह सुन चुप हो गया और सिर झुकाकर कुछ सोचने लगा । उसकी आंखो के सामने उस समय का दृश्य घूम गया जब प्रभाकरसिंह और भैयाराजा वगैरह ने उसके शागिर्दों के हाथ से जैपालसिंह को छुड़ा लिया था और स्वयं उसे भी जक पहुँचाई थी* । उसे विश्वास था कि जैपालसिंह अभी तक भैयाराजा के ही कब्जे में है और वे उसको जल्दी कैद से न छोड़ेंगे ।

कुछ ही समय के अन्दर भूतनाथ ने अपने फैले हुए खयालों को दुरुस्त किया और हरदीन की तरफ देख कर कहा, "अच्छा तो रघुबरसिंह और दारोगा में क्या क्या बातें हो रही थीं ?"

हरदीन० । हेलासिंह और बलभद्रसिंह के बारे में बातचीत हो रही थी तथा इस बात पर भी विचार किया जा रहा था कि बड़े महाराज का जीता रहना उनके पक्ष में कहाँ तक हितकर है ।

भूत० । मुझे तो मालूम पड़ता है कि दारोगा महाराज की जान लेने पर उतारू हो गया है, खैर तो क्या.....

---

*देखिये छठा हिस्सा बारहवाँ बयान ।

हरदीन० । उस समय रघुवरसिंह से वह कुछ इसी तरह की बात कह रहा था मगर मैं पूरी तरह से सुन न सका क्योंकि दारोगा को कुछ शक हो गया और मुझे बाहर हो जाना पड़ा ।

भूत० । (कुछ सोचता हुआ) उसके फन्दे से महाराजा साहब को बचाने का कोई उपाय करना चाहिए !!

हरदीन० । कोई नहीं हो सकता ! महाराज दारोगा पर इतना भरोसा और विश्वास करते हैं कि यदि वे स्वयं अपनी आंखों से दारोगा को अपने विरुद्ध कुछ कार्रवाई करते देखें तो भी दारोगा का कुछ दोष न समझ उसे अपनी आंखों का कसूर समझेंगे । ज्यादा क्या, इसी भैयाराजा वाले मामले में ही देख लीजिये. अपने भाई की बातों पर तो उन्हें कोई विश्वास न हुआ मगर दारोगा की गढ़ी एक कहानी को ब्रह्मवाक्य समझ बैठे ! भला यह भी कोई बात है कि अपने देवतुल्य भाई को तो अपना विद्रोही मान लें और एक कमीने को अपना हितू मान कर उसके ऊपर इतने मेहरबान हो जायें कि भाई का नाराज होकर और फिर मुँह न देखने की प्रतिज्ञा करके चले जाना कोई बात ही न समझें ! दो दिन हुआ भैयाराजा जो मेरे मालिक से मिले थे बल्कि दिन भर उन्हीं के यहाँ रहे भी थे क्योंकि वे उनको अपने लड़के के बराबर मानते और प्यार करते हैं । उस समय उनकी बातचीत से यह मालूम हो गया कि वे महाराज से इतना रंज हैं कि अब कभी भी उनके पास न जायंगे । यह सब क्या कोई अच्छे लक्षण हैं !!

भूत० । हाँ वे दारोगा पर विश्वास बहुत करते हैं, कभी उसके विरुद्ध कोई बात जल्दी अपने दिल में न लावेंगे, पर तौ भी एक दफे उनको दारोगा की कार्रवाइयों की सूचना देनी चाहिये, कदाचित् अब भी वे सम्भल जायँ ।

हर० । अच्छी बात है, आप कोशिश कीजिये मगर मैं इस विषय में दखल न दूँगा क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि वे कभी इस बात को नहीं

मानेंगे कि दारोगा उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई कर रहा है। दूसरे अगर कहीं दारोगा को मेरा पता लग जायगा तो मैं कहीं का भी न रहूँगा और मुफ्त में मुझे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। मैं आपसे भी प्रार्थना करता हूँ कि आप कभी मुझे प्रगट न कीजिएगा और न किसी से यही जाहिर कीजिएगा कि मैं आपको या आप मुझे जानते हैं।

भूत० नहीं नहीं, तुम विश्वास रक्खो, मैं कभी तुम्हारा नाम किसी तरह प्रगट न होने दूँगा और किसी को भी तुम पर किसी प्रकार का शक करने का मौका ही न मिलेगा।

हर०। मुझे आपसे ऐसी ही आशा है। (ठहर कर) अच्छा अब यदि आज्ञा हो तो मैं जाऊँ क्योंकि देर हो रही है।

भूत०। अच्छा तुम जाओ मगर मेरी एक बात सुनते जाओ, इसके बाद मुझे अगर तुमसे मिलने की जरूरत होगी तो मैं खुद ही तुमसे मिल लूँगा।

थोड़ी देर तक दोनों में कुछ बातचीत हुई और इसके बाद हरदीन भूतनाथ से बिदा हो जमानिया की तरफ रवाना हुआ और भूतनाथ ने काशी का रास्ता लिया।

पाठक इस हरदीन को पहिचानते हैं। भरथसिंह का यह प्यारा नौकर है और उन्होंने चन्द्रकान्ता सन्तति में अपना किस्सा कहते समय इसी का जिक्र किया है।†

दूसरा बयान

हरदीन के बिदा होने के बाद भूतनाथ कुछ ही दूर आगे बढ़ा होगा कि उसके कानों में घोड़े के टापों की आवाज सुनाई दी। वह रुक कर देखने लगा कि यह आवाज किधर से आ रही है। जिस जगह वह था

†देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति तेईसवाँ हिस्सा, नवाँ बयान।

उसके लगभग पचास गज के फासले पर एक दूसरी पगडण्डी थी जो उसी जंगल में किसी तरफ को निकल गई थी और इसी पर से आते हुए एक सवार पर भूतनाथ की निगाह पड़ी जिसका खूबसूरत और ताकतवर घोड़ा इस जंगली और बेढंगे रास्ते पर अपनी तेजी न दिखा सकने और लगाम खिची हुई पाने के कारण उतावला सा मालूम होता था। उसका सवार भी जिसकी पूरी सूरत अभी तक भूतनाथ को दिखाई न दी थी कोई नौजवान आदमी था जो चुस्त और कीमती पौशाक पहिरे, हरबों को बदन पर सजाये, एक नेजा हाथ में लिए, इधर उधर के पेड़ो की पगडण्डी को रोकने वाली डालों से अपने को बचाता और होशियारी के साथ चारो तरफ देखता हुआ चला आ रहा था।

सवार को अच्छी तरह देखने और पहिचानने की नीयत से भूतनाथ पेड़ों को आड़ में छिपता हुआ धीरे धीरे उस पगडण्डी की तरफ बढ़ा और एक आड़ की जगह में खड़ा होकर उस सवार के पहुँचने की राह देखने लगा जो कि बहुत ही धीरे धीरे आ रहा था। थोड़ी ही देर में वह सवार पास आ पहुँचा और भूतनाथ को यह देख कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि यह जमानिया के कुमार गोपालसिंह हैं।

गोपालसिंह इस जंगल में क्यों आये! इनके साथ कोई आदमी क्यो नहीं है? और ये अकेले कहाँ जा रहे हैं! इत्यादि बातों को सोचता हुआ भूतनाथ काशी जाने का इरादा छोड़ कदम दबाता और पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाता हुआ उनके पीछे पीछे रवाना हुआ।

लगभग घन्टे भर गोपालसिंह उसी धीमी चाल से बराबर चले गये। ज्यों ज्यों वे आगे बढ़ते जाते थे जंगल घना और भयानक मिलता जाता था और पगडंडी पतली और पेचीली होती जाती थी। भूतनाथ का आश्चर्य बढ़ता जाता था और उसकी समझ में नहीं आता था कि इतने घने और भयानक जंगल में गोपालसिंह के अकेले और इस सन्नाटे के समय में जाने का क्या कारण है।

कुछ देर तक और जाने के बाद गोपालसिंह एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ एक छोटा सा नाला जंगल के बीचोबीच में से बहता हुआ किसी तरफ को निकल गया था। उस नाले के किनारे पर ही एक ऊँचा टीला था जो दूर तक फैला हुआ था बल्कि यों कहना चाहिये कि वह नाला बहुत दूर तक इसी टीले की जड़ के साथ साथ बहता हुआ दूसरी तरफ निकल गया था।

यह नाला यद्यपि बहुत चौड़ा या गहरा न था पर इसका जल साफ और मोती की तरह स्वच्छ था। इसके किनारे पहुँच गोपालसिंह ने घोड़ा रोका और उतर पड़े। लगाम पास ही के एक पेड़ की डाल से अटका दी और तब पैदल नाले के किनारे किनारे रवाना हुए। भूतनाथ भी उसी तरह कदम दबाता हुआ उनके पीछे पीछे चल पड़ा।

लगभग पचास कदम जाने के बाद गोपालसिंह एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ नाले का पानी बहुत गहरा मालूम होता था तथा उसकी चौड़ाई भी और जगहों की बनिस्बत ज्यादे थी। नाले के किनारे पर पत्थरों और बड़े बड़े मिट्टी के ढोकों का एक ढेर लगा हुआ था जो कुदरती नहीं मालूम होता था। गोपालसिंह इसी ढेर के पास आकर खड़े हो गये और एकटक नाले की तरफ देखने लगे।

थोड़े ही देर बाद यकायक नाले के जल में एक प्रकार की खलबलाहट पैदा हुई और उसका पानी बीचोबीच से इस तरह चक्कर खाने लगा मानो तह के किसी छेद की राह कहीं निकला जा रहा हो। भूतनाथ बड़े गौर से इस बात को देख ही रहा था कि यकायक कुँअर गोपालसिंह उठे और नाले के पास जा जल में कूद पड़े। इसके कुछ देर बाद जल की खलबलाहट बन्द हो गई और नाले का पानी पूर्ववत् स्थिर और शान्त भाव से बहने लगा।

भूतनाथ को इस बात से बहुत आश्चर्य मालूम हुआ मगर यह सोचकर कि कदाचित् वहाँ नाले के जल के अन्दर से कोई सुरंग या राह

किसी तिलिस्म में गई हो उसने अपने चित्त को सन्तोष दिया और एक ठिकाने बैठ गोपालसिंह के लौटने की राह देखने लगा।

लगभग आधे घण्टे के बाद नाले के जल में फिर पहले की तरह खलबलाहट उत्पन्न हुई और इसके बाद ही गोपालसिंह जल के अन्दर से निकल कर आते हुए दिखाई दिये। इस समय उनके हाथ में एक छोटी-सी गठरी थी जिसे उन्होंने खोला, उसमें से एक धोती तथा कुछ चीजें निकाल कर बाहर रक्खीं, और तब उस धोती को जो कि जल के अन्दर से निकलने पर भी बिल्कुल सूखी थी पहिन कर अपने गीले कपड़े इधर उधर के पेड़ों पर सूखने के लिये डाल दिये।

उन चीजों में जो गठरी के अन्दर से निकली थीं सोने का एक जड़ाऊ डिब्बा भी था जिसको गोपालसिंह ने खोला। अन्दर एक विचित्र ढंग की छोटी सी पुस्तक थी जिसे उन्होंने निकाल लिया और एक पत्थर के ढोंके पर बैठ गौर से पढ़ना शुरू किया। भूतनाथ का जी यह जानने के लिए कि यह किताब कैसी या किस विषय की है घबड़ा रहा था मगर ज्यादा पास जाने की हिम्मत भी वह नहीं कर सकता था, लाचार अपने ठिकाने खड़ा देखने लगा कि अब क्या होता है।

जब तक कपड़े नहीं सूखे गोपालसिंह बराबर उस किताब को पढ़ते रहे, इसके बाद उसे उसी जड़ाऊ सन्दूकड़ी में बन्द किया और तब अपने कपड़े पहिन तथा हर्बे लगाने बाद उस धोती और सन्दूकड़ी को बाकी की चीजों के साथ पहिले ही की तरह बांध हाथ में लिए उस तरफ चले जिधर अपना घोड़ा छोड़ आये थे।

गोपालसिंह अभी दस ही पन्द्रह कदम आगे बढ़े होंगे कि यकायक इधर उधर छिपे हुए कई आदमी बाहर निकल आये और उनकी तरफ झपटे। गोपालसिंह यह देख एक दफे तो चौंके मगर फिर तुरन्त ही उन्होंने अपने को सम्हाला और हाथ की गठड़ी बगल में दबा अपने

नेजे से उन आदमियों का जो गिनती में दस से कम न होंगे मुकाबला करने लगे।

गोपालसिंह को अकेले इतने आदमियों का मुकाबला करने योग्य न समझ भूतनाथ उनकी मदद करने के इरादे से आगे की तरफ झपटा मगर उसी समय उसकी निगाह दारोगा और जैपालसिंह पर पड़ी जो तेजी के साथ उसी तरफ आ रहे थे। उनको देखते ही भूतनाथ रुक गया। बात की बात में वे दोनों भी आ पहुँचे और गोपालसिंह की तरफ होकर उनके विपक्षियों का सामना करने लगे।

लगभग आधी घड़ी तक लड़ाई होती रही। दुश्मनों के कई आदमी जख्मी हुए और दारोगा तथा जैपाल के बदन पर भी हलके हलके कई जख्म लगे मगर भूतनाथ को इस लड़ाई में कोई आनन्द न मिला, न तो गोपालसिंह के दुश्मनों ने ही कुछ ज्यादा फुर्ती या तेजी दिखलाई और न दारोगा या जयपाल ने ही कोई बहादुरी जाहिर की। भूतनाथ लड़ाई के फन को बखूबी समझता था और स्वयम् भी बहादुर तथा हिम्मतवर होने के कारण देख रहा था कि वे लोग जिन्होंने गोपालसिंह पर हमला किया शुरू ही से बिल्कुल बेदिली के साथ लड़ रहे थे।

कुछ देर तक ऐसी ही लड़ाई होती रही, और इसके बाद गोपालसिंह के नेजे की चोट खाकर एक आदमी के जमीन पर गिरते ही बाकी के सब आदमी भाग खड़े हुए तथा देखते देखते आँखों की ओट हो गये। गोपालसिंह ने अपना हाथ रोका और दारोगा साहब की तरफ देख कर बोले, "आप बड़े मौके पर यहाँ पहुँचे !!"

दारोगा०। मैं जैपालसिंह के साथ यहाँ से थोड़ी दूर पर एक काम के लिये आया था कि इन दुष्टों के बातचीत की आहट मुझे सुनाई दी और जब इस तरफ आया तो आप पर निगाह पड़ी, तब तो फिर लौट नहीं सकता था, मालिक की सेवा करना तो नौकर का धर्म ही है, चाहे इसमें उसकी जान ही क्यों न जाती रहे !!

गोपाल० । (दारोगा के बदन की तरफ देखकर) आप जख्मी हो गये हैं !!

दारोगा० । जी हाँ, दो एक मामूली जख्म लगे हैं, लेकिन कोई डर की बात नहीं है. मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि आप पर किसी प्रकार की चोट न पहुँची नहीं तो मैं किसी को मुह दिखाने लायक न रहता ।

गोपाल० । न मालूम ये लोग कौन थे जिन्होंने ऐसे बेमौके मुझपर हमला किया !!

जैपाल यह सुन उस जख्मी आदमी के पास गया जो जमीन पर पड़ा हुआ था और उसके चेहरे को गौर से देख कर बोला, "मैं इस आदमी को नहीं पहिचानता ! (दारोगा साहब की तरफ देख कर) आइये आप देखिये, शायद आपने इसे कहीं देखा हो ।"

दारोगा उस जख्मी के पास गया मगर उसने भी उसे कभी नहीं देखा था । जख्मी के पैर में चोट आई थी और वह आंखें बन्द किए चुपचाप पड़ा था या कदाचित् बेहोश हो गया हो ।

गोपा० । इसे ले चलना चाहिये ।

दारोगा० । जी हाँ, आप चलें, इसको ले चलने का मैं बन्दोबस्त करता हूँ, इतना कह कर दारोगा आगे बढ़ गया और गोपालसिंह के "नहीं नहीं" कहने पर भी उनका घोड़ा खोल कर उनके पास ले आया । गोपालसिंह घोड़े पर सवार हुए और दारोगा तथा जयपाल साथ साथ कुछ बातें करते हुए जाने लगे ।

भूतनाथ भी आगे बढ़ा ही चाहता था कि यकायक किसी ने पीछे से उसके कन्धे पर हाथ रक्खा जिससे वह चौंका और घूम कर देखने से एक नकाबपोश पर निगाह पड़ी । नकाबपोश ने एक खास तरह का इशारा किया जिसके साथ ही भूतनाथ बोल उठा, "हैं ! तुम यहाँ कहाँ आ पहुँचे ?"

नकाब० । आपको खोजता हुआ यहाँ तक आ गया । आपने यह लड़ाई देखी ?

भूत० । हाँ देखी, लड़ाई क्या बच्चों का खिलवाड़ हुआ है ! मेरी तो समझ ही में नहीं आता कि यह मामला क्या हो गया ?

नकाब० । मामला क्या सब बनी ठनी बात थी ! वे हमला करने वाले सब दारोगा के ही आदमी थे ।

भूत० । ऐसा ! मगर तुम्हें कैसे मालूम ?

नकाब० । उन आदमियों में से दो एक को मैं जानता हूँ और शायद आप भी जानते हों । वह आदमी जो गोपालसिंह के हाथ से जख्मी हो कर गिरा है दारोगा का विश्वासपात्र और गुप्त नौकर यादव है !

इतना कह नकाबपोश उस तरफ घूमा जिधर वह आदमी पड़ा था मगर वहाँ कोई दिखाई न पड़ा, यह देख उसने कहा, "मालूम होता है कम्बख्त उठ कर भाग गया नखरा किये हुए पड़ा होगा मौका पाते ही चल दिया !!"

भूत० । खैर जाने दो, यह बताओ तुम इस समय यहाँ कैसे आ निकले ? क्या मुझे खोजते आये हो ? कोई काम है ?

नकाब० । जी हाँ, इसी से तो आना पड़ा ।

भूत० । क्या बात है ?

नकाब० । चलिए कहीं ठिकाने बैठ जायं तो बातें करें ।

नकाबपोश भूतनाथ को साथ लिए उसी नाले के किनारे चला गया और दोनों एक साफ जगह देख कर बैठ गये । घण्टे भर से ज्यादा देर तक दोनों में किसी गुप्त विषय पर बातचीत होती रही और इसके बाद भूतनाथ यह कहता हुआ उठ खड़ा हुआ—"मैं इसी समय काशी जाता हूँ और नानक की माँ से मिलता हुआ वहीं पहुँचता हूँ । तुम शान्ता से कह देना कि किसी प्रकार की चिन्ता न करे, मैं स्वयम् उससे मिल कर सब हाल उसे सुनाऊँगा ।"

नकाबपोश भी "बहुत अच्छा" कह कर उठ खड़ा हुआ और दोनों आदमी दो तरफ रवाना हो गये।

तीसरा बयान

दोपहर का समय है। जमानिया के खास बाग में एक सजे हुए कमरे में राजा गिरधरसिंह सुनहरे पावों की सुन्दर पलंगड़ी पर लेटे हुए हैं, बगल में ही कुंअर गोपालसिंह बैठे हैं और पलंग की पाटी का सहारा लिए महाराज की तरफ कुछ झुके हुए उनसे बातें कर रहे हैं। इन दोनों के सिवाय इस कमरे में और कोई दिखाई नहीं देता।

गोपा०। यद्यपि मुझ पर हमला करने वालों ने गिनती में ज्यादे होने पर भी कोई तेजी या फुर्ती नहीं दिखाई तथापि मैं यह जरूर कहूँगा कि दारोगा साहब के पहुँच जाने से मुझे बहुत कुछ मदद मिली। अगर वे न पहुँचते तो कदाचित् मुझे उन दुष्टों के हाथ तकलीफ उठानी पड़ जाती।

महाराज०। बेशक ऐसा ही है, दारोगा का वहां पहुँच जाना बहुत ही अच्छा हुआ, तुम्हारी मदद करने में उस बेचारे को चोट भी आई जिससे वह यहाँ ज्यादा देर तक न ठहर सका। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह हमारा सच्चा हितैषी है।

गोपा०। जी हाँ, आपका उस पर बहुत विश्वास और भरोसा है।

महाराज०। वह विश्वास के लायक आदमी है, उस पर भरोसा न करेंगे तो किस पर करेंगे?

गोपा०। (कुछ देर तक चुप रह कर) अजायबघर की तालियाँ भी उसी को दे दी गईं.....

महाराज०। हाँ, मैंने उस इमारत की ताली उसी को दे दी है। एक ताली तो वह पहले ही माँग ले गया था, दूसरी भी उसे दे दी। उस जगह का बहुत कुछ भेद मैं उसे बता चुका हूँ। वह उस ऊपरी बंगले में

आराम के साथ रह सकता है। उसके ऐसे साधू प्रकृति आदमी के रहने के लायक वह निराला स्थान है भी बहुत अच्छा।

गोपा०। सिवाय उन दोनों तालियों के और कोई ताली तो अजायबघर की नहीं है?

महाराज०। उन तालियों के सिवाय एक किताब भी इस प्रकार की है जिसके पढ़ने से उस जगह का पूरा पूरा हाल जाना जा सकता है और दर्वाजे खोलने के लिए किसी तरह की तालियों की भी जरूरत नहीं पड़ती। उस किताब को भी "ताली" ही के नाम से सम्बोधन करते हैं मगर इस समय मुझे स्मरण नहीं है कि वह कहाँ है या किसके पास है शायद भैयाराजा से पूछने से कुछ पता लगता मगर अफसोस, वह तो एक जरा सी बात पर मुझसे रंज होकर चले गये। इस बात का भी कुछ खयाल...

इतना कहते कहते महाराज का गला भर आया और आँखें डबडबा उठीं मगर उन्होंने शीघ्र ही अपने को सम्हाला और गोपालसिंह से और कुछ कहा ही चाहते थे कि चोबदार ने हाजिर होकर भरथसिंह के आने की सूचना दी। महाराज ने प्रसन्नता के साथ उनको बुलवा भेजा और पलँगड़ी पर जिस पर लेटे हुए थे तकिये के सहारे उठंग कर बैठ गये। इसी समय भरथसिंह आ पहुँचे और महाराज को सलाम कर कुँअर गोपालसिंह के बगल में बैठ गये।

महाराज०। भरथसिंह से) आज बहुत दिनों के बाद नजर आये!

भरथ०। जी हाँ महाराज, कई प्रकार की झंझटों में ऐसा फँसा हुआ था कि दर्शन कर न सका। आज (गोपालसिंह की तरफ देख कर) इनके विषय में कुछ विचित्र खबर पाकर आना पड़ा। सुना जङ्गल में इनके ऊपर कई आदमियों ने हमला कर दिया था?

महाराज०। हाँ, आज सुबह ये हवा खाने की नीयत से जङ्गल की तरफ गये थे। वहीं कई आदमी इन पर टूट पड़े, बारे दारोगा साहब अपने एक दोस्त के साथ वहाँ पहुँच गये जिनकी मदद से इनकी जान

बची, अगर वे लोग न पहुँचते तो इनके लिए जरूर मुश्किल हो जाती।

भरत० । (आश्चर्य से) मगर यह तो बड़ी बुरी खबर है !! कुँअर साहब के ऊपर इस तरह का हमला होना कोई मामूली बात नहीं है ! महाराज ने उन लोगों का पता लगाने की आज्ञा दी जिन्होंने ऐसा काम किया।

महाराज० । हाँ मैंने दारोगा साहब से कह दिया है, वे जरूर उन दुष्टों का पता लगावेंगे। मगर वह बेचारा खुद जख्मी हो गया।

भरथ० । (कुछ ठहर कर, गोपालसिंह से) आपने उन आदमियों को पहिचाना जिन्होंने आप पर हमला किया था ?

गोपाल० । नहीं, बिल्कुल नहीं।

भरथ० । कोई उनमें से जख्मी भी हुआ था ?

गोपाल० । हाँ एक आदमी मेरे नेजे की चोट खाकर गिरा था मगर बाद में मालूम हुआ कि वह भी उठ कर भाग गया क्योंकि उसे लेने के लिए दारोगा साहब ने जब आदमियों को भेजा तो कोई वहाँ न मिला।

भरथसिंह यह सुन कुछ देर तक चुप रहे इसके बाद महाराज की तरफ देखकर बोले "जमानिया के इतने नजदीक और खास कुँअर साहब पर इस तरह का हमला होना बड़े आश्चर्य और दुःख की बात है ! दारोगा साहब तो उन दुष्टो का पता लगाने की चेष्टा करें होंगे पर मैं यह अवश्य कहूँगा कि महाराज को और जरियो से भी उनका पता लगाने की पूरी चेष्टा करनी चाहिये तथा भविष्य में पुनः ऐसा न हो इस बात का भी पूरा प्रबन्ध होना चाहिये।

महाराज० । हाँ हाँ ऐसा तो किया ही जायगा। उन कम्बख्तों को पूरी सजा दी जायगी और आगे के लिए भी ऐसा प्रबन्ध होगा जिसमें वे लोग आज की कार्रवाई फिर न करने पावें।

भरथ० । अवश्य ऐसा ही होना चाहिये। (ठहर कर) आज्ञा हो तो मैं चलूँ क्योंकि महाराज के आराम का समय हो गया है और मैंने

भी अभी तक भोजन इत्यादि नहीं किया है। इस सम्बन्ध में तरह तरह की विचित्र बातें सुन मुझसे नहीं रहा गया और मैं बेमौका होने पर भी सही हाल पूछने के लिए चला आया।

महाराज की आज्ञा पाकर भरथसिंह उठे और गोपालसिंह भी साथ ही उठ कर कमरे के बाहर निकल आये। बाहर आकर गोपालसिंह ने भरथसिंह का हाथ पकड़ लिया और यह कहते हुए कि पहिले मेरी दो चार बातें सुन लीजिये तो फिर भोजन करने जाइयेगा! अपने खास कमरे की तरफ बढ़े जो महाराज के कमरे से ज्यादा दूर न था।

चौथा बयान

भरथसिंह को साथ लिए कुँअर गोपालसिंह अपने कमरे में गये और एक आराम कुरसी पर बैठ उन्हें भी एक कुरसी पर बैठने का इशारा किया।

यह कमरा बहुत बड़ा और बहुत ही खूबसूरती के साथ सजा हुआ था। झाड़ फानूस कंवल और दीवारगीर इत्यादि रोशनी की चीजों के अलावे जगह जगह पर पहाड़ जंगल तथा लड़ाई इत्यादि के चित्र लगे हुए थे जो बहुत ही खूबसूरती और कारीगरी के साथ बनाये गये थे। कमरे का पिछला हिस्सा बाग की तरफ पड़ता था और उस तरफ की खिड़कियों से बाग की पूरी पूरी कैफियत देखने में आती थी।

गोपालसिंह कुछ देर तक चुपचाप दीवार के साथ लटकती हुई एक तस्वीर की तरफ देखते रहे जिस पर परदा पड़ा था, इसके बाद भरथसिंह की तरफ देख धीमे स्वर से बोले, "आज मैं चाचाजी से मिलने गया था।"

भरथसिंह ने चौंक कर कहा, "हाँ!! तो क्या सबेरे वहीं से लौट रहे थे जब आप पर लोगों ने हमला किया था?"

गोपाल०। हाँ।

भरथ०। उनसे क्या क्या बातें हुईं?

गोपाल० । सुनो मैं सब कहता हूँ ।

इतना कह कर गोपालसिंह उठे और कमरे के एक कोने में रक्खे लोहे के एक सन्दूक के पास पहुँचे । कोई खटका दबा कर उन्होंने उसका ताला खोला और उसमें से एक गठरी निकाल हाथ में लिए हुए फिर भरथसिंह के पास आये । यह गठड़ी वही थी जिसे आज सवेरे भूतनाथ ने नाले में से लिए हुए निकलते उन्हें देखा था ।

गठड़ी जमीन पर रख कर गोपालसिंह फिर कुर्सी पर बैठ गये और तब यों कहने लगे :—

चाचाजी जब दारोगा साहब के विषय में पिताजी से नाराज होकर चले गये तो रास्ते में मैंने उन्हें रोक लिया* और एक एकान्त स्थान में ले जाकर सब हाल उनसे सुना । उन्होंने सब बातें साफ साफ मुझसे कहीं और अन्त में मेरे इस पूछने पर कि मुझे कभी आवश्यकता पड़ी तो मैं किस तरह आपसे मिल सकूँगा ? मुझे एक स्थान का पता बता कर कहा कि उस स्थान पर जब भी जाऊँगा मेरी उनकी मुलाकात हो सकेगी ।

इसके कुछ दिन बाद जब मेरी माता का देहान्त हुआ तो उस समय उन्हें यहां आना पड़ा । उस वक्त उन्होंने मुझे तरह तरह की बातें बताईं तथा एक ग्रन्थ भी मुझे दिया जिसके पढ़ने से तिलिस्म का बहुत कुछ हाल जाना जा सकता था । उस समय मैं माँ के गम में बिल्कुल पागल हो रहा था इससे मैंने उनकी बातों तथा उस पुस्तक पर ज्यादा ध्यान न दिया मगर बाद में मैं उस किताब को अच्छी तरह पढ़ गया और उसमें की लिखी बातों को भी अपने दिल में अच्छी तरह नक्श कर लिया ।

आज यकायक मेरे मन में उनसे मिलने की इच्छा हुई और मैं उनके बताये हुए ठिकाने पर रवाना हुआ । अजायबघर वाली इमारत के पास ही के एक घने और भयानक जंगल में एक नाले के किनारे उनके

---

* देखिये छठवाँ हिस्सा पाँचवाँ बयान ।

बताये हुये ठिकाने पर मैं पहुँचा और वहां पहुँचने की चेष्टा करने लगा जहां चाचाजी से मिलने की आशा थी।

चाचाजी की जुबानी मुझे मालूम हुआ कि उस स्थान पर नाले की तह में एक कड़ी लगी हुई है और जल में गोता मार कर उस कड़ी को खींचने से अन्दर जाने का रास्ता खुल जाता है। मैं गोता मारने के लिये अपने कपड़े उतारा ही चाहता था कि यकायक जल के खलबलाने से मालूम हुआ कि कोई आदमी अन्दर से बाहर आया चाहता है क्योंकि जल की खलबलाहट इस बात की सूचना देती थी कि इस छोटे से तिलिस्म में जाने का विचित्र दर्वाजा खुल गया है। मुझे यह खयाल हुआ कि कदाचित् चाचाजी ही न हों जो बाहर आया चाहते हैं और मैं इस खयाल से फौरन नाले में कूद पड़ा कि अन्दर के तिलिस्म का कुछ हाल जानने के सिवाय चाचाजी से अंदर ही मुलाकात कर सकूंगा क्योंकि नाले के बाहर जंगल में मुलाकात करने से लोगों की निगाह पड़ने का डर था।

नाले में कूदते ही मै नीचे चला गया और जब पास पहुँचा तो मालूम हुआ कि यहाँ दोनों बगल की दीवारें तथा सतह पत्थर की संगीन बनी हुई हैं। बाईं बगल की दीवार में एक बड़ा सा छेद मालूम पड़ रहा था जिसकी राह नाले का पानी अन्दर जा रहा था। खिचाव के कारण पानी के साथ ही साथ मैं भी उसी खिड़की की राह दीवार के अन्दर चला गया।

ज्यादा दूर जाना न पड़ा और जरा ही देर बाद मैं एक ऐसे स्थान में पहुँचा जो चारो तरफ से बन्द एक कोठड़ी सा मालूम होता था और लगभग पन्द्रह हाथ के चौड़ा, इतना ही लम्बा, और करीब छः हाथ के ऊँचा होगा। छत के पास तीन चार रौशनदान ऐसे बने हुये थे जिनकी राह रोशनी और हवा बखूबी आ रही थी। मैंने देखा कि उस जगह जहाँ से पानी के साथ मैं उस कोठड़ी में पहुँचा था कोठड़ी के निचले हिस्से में दीवार के साथ लगा हुआ एक छोटा सा दर्वाजा है जिसकी

राह नाले का पानी इस समय भी तेजी के साथ आ रहा है और जमीन में बनी एक चौड़ी तथा गहरी नाली में से होता हुआ सामने की तरफ वाले उसी किस्म के एक दूसरे मगर कुछ बड़े दर्वाजे की राह कहीं निकला जा रहा है।

मुझे मालूम था कि तिलिस्म में जाने का रास्ता समाप्त नहीं हुआ और अभी इस सामने की दीवार वाली राह से पानी के साथ बहते हुए मुझे कुछ दूर तक और जाना होगा। यह सोच कुछ देर तक सुस्ताने बाद मै फिर पानी में उतरने का इरादा कर ही रहा था कि यकायक बगल की एक दीवार में खटके की सी आवाज आई और दीवार का एक पत्थर हट कर किवाड़ के पल्ले की तरह बगल से जा लगा। इस दर्वाजे के खुलने के साथ ही नाले के पानी का बह कर इस कोठड़ी में आना भी बन्द हो गया।

दर्वाजा खुलने के कुछ ही सायत बाद चाचाजी उसी राह से कोठड़ी में आते दिखाई पड़े। मुझे देखते ही वे बड़ी प्रसन्नता के साथ मेरी तरफ लपके और मुझे गले से लगा कर बोले, "बेटा, तुम आ गये! मैं इस समय स्वयम् तुमसे ही मिलने के लिये बाहर निकल रहा था।"

मैंने उनके चरण छुए और पूछा, "आपको मुझसे मिलने की क्या आवश्यकता आ पड़ी! मगर आपके चेहरे से प्रसन्नता प्रगट होती है, कदाचित् आप कोई खुशखबरी मुझे सुनाया चाहते हैं!"

भैया०। बेशक इधर दो तीन बातें ऐसी हो गई हैं जिन्हें जानने से तुम्हें भी प्रसन्नता हो सकती है, मगर यदि मैं उन्हें तुमको सुनाऊँगा तो साथ ही में कुछ ऐसी खबरें भी तुम्हें सुननी पड़ेंगी जो उतनी अच्छी नहीं हैं। लेकिन तुम अभी लड़के हो, मैं तुम्हें उन सब पेचीले मामलों में घसीटा नहीं चाहता और न उन तरद्दुदों में तुम्हारा शरीक होना ही मुझे पसन्द है, अस्तु किसी दूसरे समय या मुनासिब मौके पर इन

बातों की खबर तुम्हें दूँगा, इस समय मैं सिर्फ इतना जानना चाहता हूँ कि अजायबघर के विषय में तुम्हें क्या मालूम है ?

मैं० । अजायबघर के विषय में मैं सिर्फ यही जानता हूँ कि वहाँ एक से एक नायाब चीजें रक्खी हुई हैं जिनकी हिफाजत के लिए एक छोटा सा तिलिस्म बना कर ऊपर एक रहने लायक स्थान या बङ्गला बनवा दिया गया है। इससे ज्यादा उसके विषय में मैं और कुछ नहीं जानता। हां एक बात इतनी जरूर कह सकता हूँ कि महाराज ने वह बंगला रहने के लिए दारोगा साहब को दे दिया है। उसकी दो तालियाँ महाराज के पास थीं—एक तो पहिले ही दारोगा साहब को दे दी गई थी जो उनसे कहीं गिर या खो गई और दूसरी कल या परसों वे यह कह कर ले गये हैं कि राजविद्रोही दो तीन कैदी वहाँ रक्खे जायंगे।

भैया० । मगर यह तुम कैसे कहते हो कि अजायबघर दारोगा को दे दिया गया है ?

मैं० । पिताजी ने ही जिक्र होने पर एक दफे कहा था कि दारोगा वह इमारत रहने और साधन भजन करने के लिए माँगता है और मैं चाहता हूँ कि उसे दे दूँ। मगर मैं ठीक ठीक नहीं कह सकता, यदि आप कहें तो महाराज से दरियाफ्त करके सही-सही पता आपको दूँ।

भैया० । हां जरूर, क्योंकि अगर तुम्हारा कहना ठीक है और वह जगह महाराज ने दारोगा को दे दी है तो मुझे अपने निश्चय में बहुत बड़ा परिवर्तन करना पड़ेगा। (कुछ सोच कर) अच्छा तुम एक काम करो—अजायबघर की दो तालियाँ थीं और दोनों ही तुम कहते हो कि दारोगा के कब्जे में चली गई हैं ?

मैं० । जी हाँ।

भैया० । उनमें से एक तो हम लोगों को मिल गई है और दूसरी मैं समझता था कि महाराज के पास होगी मगर अब मालूम हुआ कि वह भी दारोगा के पास पहुँच गई है—(रुक कर) अच्छा तो मैं तुम्हें एक

किताब देता हूँ, उसमें उस अजायबघर का पूरा पूरा हाल और उसके सब दर्वाजों को (बगैर किसी ताली की मदद के) खोलने और बन्द करने की पूरी पूरी तर्कीब लिखी है। तुम उस किताब को शुरू से आखीर तक अच्छी तरह पढ़ जाओ। उससे तुम अजायबघर का पूरा हाल जान जाओगे और वहाँ जब चाहे आ जा सकोगे। महाराज से तुम अजायबघर के विषय में सब निश्चय करके परसों शाम को मुझसे वहीं मिलना और बताना कि वास्तव में वह स्थान महाराज ने दारोगा को दे दिया है या अभी केवल विचार ही विचार है। अगर उन्होंने अभी दारोगा को दे न दिया हो या देने का वचन न दे दिया हो तो जहाँ तक हो सके तुम ऐसा करने से उन्हें रोकना फिर परसों मैं जैसा कहूँगा वैसा ही करना।

मैं०। बहुत अच्छा, मैं महाराज से उस विषय की सब बातें दरियाफ्त करके परसों शाम को अजायबघर पहुँचूँगा। आप वहाँ मुझसे किस जगह मिलेंगे ?

भैया०। तुम उस इमारत के अन्दर किसी जगह भी रहना मैं तुम्हें खोज लूँगा, क्योंकि मुमकिन है कि तुम्हें लोगों की निगाहों से अपने को छिपाने की जरूरत पड़े, ऐसी हालत में बंगले के बाहर रहना ठीक न होगा, उस किताब की मदद से जो मैं तुम्हें दूँगा तुम बँगले के अन्दर बहुत सी छिपने लायक जगहें पा सकते हो।

मैं०। बहुत अच्छा, पर यदि महाराज ने वह जगह दारोगा साहब को दे ही दी होगी और उन्होंने वहाँ अपना कब्जा कर लिया होगा तो मैं कैसे बँगले के अन्दर जा सकूंगा या आप ही कैसे वहाँ आ सकेंगे ?

भैया०। जहाँ तक मैं समझता हूँ वह बँगला मिल जाने पर भी दारोगा हमेशा वहाँ रहता न होगा, और यदि वह ऐसा करता ही हो तो तुम्हें अपनी चालाकी से काम लेना होगा और बिना दारोगा या उसके साथियों की नजर पर चढ़े बंगले के अन्दर पहुँचने की कोशिश करनी होगी। बंगले के अन्दर जाने की कई गुप्त राहें भी हैं जिनसे तुम काम ले

सकते हो और जिनका भेद तुम्हें उस किताब में मिलेगा। बाकी रहा मेरे लिये, सो तुम कोई चिन्ता न करो, मैं किसी न किसी तरह वहां पहुँच ही जाऊँगा बल्कि मेरे साथ एक व्यक्ति और भी होगा जिसे देख तुम बहुत प्रसन्न होगे।

मैं०। वह कौन ?

भैया०। यह भी तुम्हें परसों ही मालूम होगा। अच्छा ठहरो, तुम्हें वह किताब दे दूँ।

इतना कह चाचाजी मेरे पास से हट कर दीवार के पास गये और वहाँ कोई खटका दबाया जिससे एक छोटी सी आलमारी दीवार में दिखाई देने लगी। उस आलमारी में से यही गठरी जो तुम सामने देख रहे हो उन्होंने निकाली और मेरे पास लाकर बोले, "लो, इस गठड़ी में वह किताब है तथा दो एक रोशनी कपड़े भी हैं जिन पर पानी का कुछ असर नहीं होता। ये तुम्हारे काम आवेंगे और इन्हें पहिन कर तुम अपनी पोशाक जो बिलकुल गीली हो गई है सूखने को डाल सकते हो। बस अब तुम जाओ, परसों शाम को मुझसे मिलने का खयाल रखना।"

इतना कह और उस पुस्तक तथा उस जगह से बाहर निकलने के विषय में कुछ और बातें बताने के बाद चाचाजी मुझसे बिदा हो उसी दर्वाजे की राह जिससे कि वे आये थे, कहीं चले गये। उनके जाते ही वह दर्वाजा बन्द हो गया और मैं उस कोठड़ी के बाहर आने की कोशिश में लगा।

चाचाजी की बताई हुई तरकीब से मैंने वह छोटी खिड़की जिसकी राह कुछ ही देर पहिले उस कोठड़ी में दाखिल हुआ था खोली। नाले का पानी पूर्ववत् बह कर आने लगा जिसकी तेजी के कारण इस तरफ से गोता मार कर दूसरी तरफ बाहर जा निकलना कठिन था, मगर मुझे एक पीतल की जञ्जीर मिल गई जो शायद इसी काम के लिये लगी हुई थी

और उसी के सहारे मैं बाहर निकल आया। रास्ता बन्द किया और नाले के ऊपर निकला।

भरथ०। और शायद उसी समय उन लोगों ने आप पर हमला किया?

गोपाल०। उसी समय तो नहीं, हां जब कपड़े इत्यादि सुखा कर वहां से चलने लगा तो थोड़ी दूर आ जाने बाद वे लोग मिले जिन्होंने मुझ पर हमला किया, मगर न मालूम उन्होंने ऐसा क्यों किया! मैंने तो कभी उनकी सूरत तक भी नहीं देखी थी। देखें महाराज और दारोगा साहब उस विषय में क्या करते हैं।

भरथ०। (कुछ ठहर कर) तो आप परसों चाचाजी से मिलने जायंगे?

गोपाल०। हां, अवश्य जाऊँगा।

भरथ०। महाराज से अजायबघर के विषय में आपने पूछा?

गोपाल०। दारोगा साहब ने आज मेरी जान बचाई इससे प्रसन्न होकर महाराज ने वह स्थान उन्हें दे दिया। फिर इस विषय में ज्यादा कुछ पूछना या कहना सुनना उचित न जान कर मैंने कुछ न कहा, हां पूछ कर इस बात का निश्चय जरूर कर लिया कि उस किताब का हाल जो चाचाजी से मुझे मिली है उन्हें कुछ नहीं मालूम है। ठहरिये आपको वह किताब दिखलाऊं।

इतना कह गोपालसिंह गठड़ी की तरफ झुके मगर भरथसिंह ने रोक कर कहा "इस समय आप उसे रहने दीजिये, मुझे एक जरूरी काम है जिसके लिये मैं आपसे इस वक्त इजाजत लूँगा, फिर किसी समय वह किताब देखूँगा।"

गोपालसिंह ने "खैर ऐसा ही सही" कह कर वह गठड़ी फिर उसी लोहे के संदूक में रख कर बंद कर दी। भरथसिंह भी उठ खड़े हुये और उनसे बिदा हो खास बाग के बाहर निकल गये।

पाँचवाँ बयान

रात होने में अभी घण्टे भर से ज्यादे देर है पर सन्नाटे ने अभी से जंगल और मैदानों में अपना दखल जमाना शुरू कर दिया है। आसमान से बातें करने वाले बड़े बड़े पेड़ इस समय एक दम शान्तभाव से खड़े हैं और उनका एक पत्ता भी हिलता हुआ दिखाई नहीं देता। प्रायः संध्या के समय चहकने और फुदकने वाली चिड़ियों ने भी अपने अपने घोसलों का आश्रय ले लिया है और उनकी मीठी तान भी किसी ओर से आती नहीं सुनाई देती है।

सूर्यदेव अस्ताचलगामी हुए। रात्रि का अंधकार और भी तेजी के साथ बढ़ने लगा और उसके साथ ही जङ्गल के सन्नाटे में भी ज्यादती हो गई। मगर कुछ ही देर बाद पूरब तरफ से काले काले बादल उठते हुए दिखाई पड़ने लगे और ऐसा मालूम होने लगा मानों तेज आँधी के साथ पानी भी अब आया ही चाहता है।

ऐसे समय में हम दो सवारों को जमानिया की सड़क पर से जाते हुए देख रहे हैं। दोनों के तेज घोड़े इस समय पसीने से लथपथ हो रहे हैं पर तो भी आने वाले तूफान की तरफ ध्यान देकर वे उनकी चाल कम नहीं कर रहे हैं।

दोनों सवारों के चेहरों पर नकाबें पड़ी हुई हैं, चुस्त और कीमती पोशाकों के साथ ही कई तरह के हरबे भी बदन पर सजे हुए हैं, और कीमती तलवारें उछल उछल कर घोड़ों की पीठ से लगती हुई मानों उनकी तेजी को और भी बढ़ा रही हैं।

देखते देखते अंधकार चारो तरफ फैल गया और तेज हवा के झोकों से जङ्गल गूँजने लगा, साथ ही पानी की बूँदे भी गिरने लगीं जिसे देख एक सवार ने घबड़ा कर अपने साथी से कहा, "लीजिये अब तो पानी भी आ गया, अब कहीं रुक जाना चाहिये।"

दूसरे ने यह सुन जवाब में कहा, "मगर इस जङ्गल में सिवाय पेड़ों की आड़ के रुकने लायक जगह मिलेहीगी कहाँ ?"

पहिला० । कुछ दूर आगे सड़क के किनारे एक जगह ऐसी है जहाँ कुछ आराम मिल सकता है, यदि वहाँ कोई दूसरा मुसाफिर न हुआ तो ।

दूसरा० । तब वहीं चलना चाहिये, पानी तो बेतरह आता दिखाई देता है ।

दोनों तेजी के साथ आगे बढ़ने लगे । अंधकार और हवा की सन-सनाहट तथा तेजी बढ़ने लगी और कुछ ही देर बाद इतनी हो गई कि कुछ बातें करना या कहना तक मुश्किल हो गया । कुछ दूर और जाते जाते पानी भी अपनी पूरी तेजी से बरसने लगा और बिजली की कड़-कड़ाहट आँधी की सनसनाहट के साथ मिल कर कान के परदे फाड़ने लगी ।

दोनों सवारों के कष्ट का कोई ठिकाना न रहा मगर यकायक बिजली की रोशनी में सड़क के किनारे ही पर एक पक्का कूँआ उन्हें दिखाई दिया जिसकी ऊँची जगत के निचले हिस्से में एक अच्छा दालान इस लायक बना हुआ था जिसमें बैठकर वे लोग यद्यपि बौछाड़ से तो नहीं पर पानी और आँधी से अपने को बहुत कुछ बचा सकते थे । दोनों सवार इसी को गनीमत समझ कर अपने अपने घोड़े पर से उतर पड़े जिनको उन्होंने अपने साथ ही उस दालान के अंदर कर लिया जो ऊँचाई या चौड़ाई के खयाल से किसी तरह कम या छोटा न था । बिजली की रोशनी में यह भी दिखाई पड़ा कि उस दालान ही में से एक तरफ से तो कूएँ के ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं और दूसरी तरफ एक कोठड़ी है जिसका दर्वाजा बंद है ।

दोनों साथियों में से एक ने उस कोठड़ी का दर्वाजा खोलना चाहा पर वह न खुला (शायद अंदर से बंद हो) इससे वे दोनों लाचार हो उस दालान के एक कोने में बैठ गये और दो कम्बलों की मदद से जो

घोड़ों के साथ थे पानी और बौछाड़ से अपने को यथासम्भव बचाने की चेष्टा करने लगे। थोड़ी देर बाद यद्यपि पानी में तो कुछ कमी नहीं हुई पर हवा की तेजी कम हो गई और दालान के अंदर बौछाड़ का आना बंद हो गया जिससे वे दोनों भी अब कुछ आराम के साथ कम्बल बिछा कर लेट गये और आपस में धीरे धीरे बातें करने लगे।

एक०। यह पानी बड़े बेमौके आया नहीं तो हम लोग अवश्य जमानिया पहुँच जाते।

दूसरा०। हाँ, और यह रात भर बंद होता भी नहीं दिखाई देता।

पहिला०। अगर इस समय पानी कुछ कम हो जाय तो हम लोग चल पड़ेंगे क्योंकि अब हम जमानिया से ज्यादा दूर नहीं हैं।

दूसरा०। जमानिया पहुँच कर सीधे आप दारोगा साहब के यहाँ जाइयेगा?

पहिला०। नहीं, क्योंकि अब वैसा करने की कोई जरूरत नहीं रही।

दूसरा०। क्यों?

पहिला०। महाराज ने गोपालसिंह की शादी लक्ष्मीदेवी से करने का वचन मुझे दे दिया है।

दूसरा०। हाँ, मगर दारोगा साहब जो इस शादी के विरुद्ध हैं!

पहिला०। भले ही रहा करें, अब कर ही क्या सकते हैं? और फिर मैं तो समझता हूँ कि अब वे अपना यह विरोध छोड़ देंगे।

दूसरा०। न मालूम उन्हें इस शादी से इतनी चिढ़ क्यों हो गई है! उनका तो इससे कोई सम्बंध ही नहीं है।

पहिला०। कोई भी नहीं! ईश्वर जाने क्या बात है! सच तो यह है कि उनसे दोस्ती होते हुए भी इस मामले के कारण मुझे उनसे बहुत चिढ़ हो गई है और मैं मिलना या बोलना उनसे तक पसंद नहीं करता!

दूसरा०। वही हाल मेरा भी है, मुझे स्वयम् उससे नफरत हो गई है। यद्यपि मेरा उससे कोई खास वास्ता नहीं है तथापि मैं उसके सब हाल

चाल की खबर बराबर रखता हूँ और मुझे बखूबी मालूम है कि ऊपर से वह चाहे जितना महात्मा और साधू बना रहे पर भीतर ही भीतर वह बड़ा ही कमीना और नमकहराम आदमी है और उसे साथी भी वैसे ही मिल गये हैं—जैपालसिंह, हेलासिंह, गदाधरसिंह इत्यादि उसके दोस्त भी उसी की टक्कर के हैं।

पहिला०। (हंस कर) भला गदाधरसिंह को आप क्यों बदनाम कर रहे हैं, वह तो आपका.....

दूसरा०। (बात काट कर) चाहे वह मेरा कोई भी हो मगर असल बात तो कहने में आती ही है। गदाधरसिंह के सिर से अपने मालिक को मारने का कसूर कभी नहीं जायगा, उसकी स्त्रियों के साथ कुटिलता करने के कलंक का टीका उसके माथे से कभी दूर नहीं होगा!

पहिला०। मगर रणधीरसिंहजी तो ऐसा नहीं समझते हैं?

दूसरा०। न समझें, यह उनकी भूल या नादानी है और इसके लिए कभी न कभी जरूर उन्हें अफ़सोस करना पड़ेगा। पर दरअसल बात यह है कि उन्हें अभी इन मामलों की कोई खबर ही नहीं लगी है और दयाराम के मारे जाने के बाद से वे एक दम उदासीन तथा संसार से विरक्त हो गये हैं जिससे इन सब बातों की खोज बीन करने की उन्हें कोई इच्छा भी नहीं जान पड़ती, नहीं तो वे अगर सच्चा हाल जानते तो गदाधरसिंह से अवश्य बुरी तरह पेश आते! और फिर भूतनाथ के ऊपर केवल यही एक इलजाम तो नहीं है, दारोगा इत्यादि के साथ मिल उसने न जाने और कितने दुष्ट कर्म किये हैं जिनका कोई ठिकाना है?

पहिला०। मुश्किल तो यह है कि उसमें स्थिरता बिल्कुल नहीं है। अभी दारोगा का साथी बना है, तुरन्त ही उसको छोड़ किसी दूसरे का साथी बन जायगा, उससे किसी बात पर रञ्ज हुआ चट उसका भी दुश्मन बन बैठेगा और किसी तीसरे से दोस्ती का दम भरने लगेगा।

दूसरा०। हाँ यही तो बात है, हम लोगों के देखते देखते वह न

जाने कितनी दफे दारोगा का साथी बन चुका है और कितनी दफे प्रभाकर-सिंह वगैरह का काम कर चुका है। इसका तो पता ही नहीं लगता कि वह कब क्या सोचता और क्या करने की इच्छा रखता है। उसके कसम खाने और प्रतिज्ञा करने का तो और भी इतबार नहीं रह गया है। झूठों और दगाबाजों का उसे सिरताज कहना चाहिये।

पहला०। मगर ऐयारी में तेज है!

दूसरा०। हाँ सो तो है, मगर केवल ऐयारी और धूर्तता में तेज होने का अर्थ यह तो नहीं है कि मनुष्य जो चाहे बुरा भला काम किया करे!!

पहिला०। नहीं नहीं सो कैसे हो सकता है।

दूसरा०। यदि मान भी लिया जाय कि जैसा वह कहता है कि मैंने भूल से दयाराम को मारा—यह बात ठीक है तो भला दयाराम की स्त्रियों से दुश्मनी करने की क्या जरूरत थी? यदि यह कहा जाय कि वे अपने पति का बदला लिया चाहती थीं तो भूतनाथ उनकी बनिस्बत बहुत ज्यादा ताकतवर था, उन्हें किसी अच्छे ढङ्ग से अपनी बेकसूरी साबित करके दिखा देता कि वास्तव में वह दयाराम का खूनी नहीं है, सो न करके उन बेचारी औरतों की भी जान लेने का प्रयत्न करना बल्कि साथ ही साथ उनके मित्रों और रिश्तेदारों पर भी सफाई का हाथ फेरना क्या वाजिब था?

पहिला०। मगर वह तो इन सभी बातों से अपने को दूर बतलाता है और कहता है कि मैं बिल्कुल बेकसूर हूँ।

दूसरा०। मेरे सामने भला वह ऐसा कहे तो सही! उसकी एक एक बात खोल कर दिखा दूँ, बड़ा सच्चा बना फिरता है!

पहिला०। हाँ आप तो उसका सब हाल जानते ही हैं। आपही के सबब से तो जमना और सरस्वती का वह कुछ बिगाड़ नहीं सका, नहीं तो वह क्या उन्हें जीता छोड़ता?

दूसरा०। खैर इन सब बातों का जिक्र करने से कोई फायदा नहीं,

अब पानी बन्द हो गया है, केवल बदली है सो भी साफ हो रही है, अब यदि आप चाहें तो यहाँ से चल सकते हैं।

पहिला०। हाँ अब चलना चाहिए, यहाँ रुकने की कोई आवश्यकता नहीं है, कपड़े इत्यादि सब बिलकुल तरबतर हो गये हैं, इन्हें बदलना होगा और बिना जमानिया पहुँचे इसका कोई बन्दोबस्त नहीं हो सकता।

दोनों साथी उठ खड़े हुए और सामान ठिकाने कर घोड़ों को दालान के बाहर निकाला। पानी अब बिल्कुल बन्द हो गया था और बादल फट रहे थे। पूरब तरफ से उठते हुए चन्द्रभगवान की शीतल किरणें बादलों में से छन छन कर आने लगी थीं।

दोनों आदमी अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए और सड़क पर आ कर तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुए। उसी समय दालान वाली कोठड़ी का दर्वाजा जो पहिले बन्द था खुला और भूतनाथ निकल कर बाहर आया।

उन दोनों सवारों की तरफ देख कर जो अब दूर निकल गये थे भूतनाथ ने क्रोध से दाँत पीसा और कहा, "भला दलीपशाह! कोई हर्ज नहीं। इन बातों का बदला लिये बिना भूतनाथ कदापि न रहेगा! मैंने तो तुम्हारी प्रतिज्ञा पर विश्वास किया था और सोचा था कि तुम दयाराम वाला भेद अपनी जुबान से किसी पर प्रगट न करोगे मगर अब मालूम हो गया कि तुम्हारी प्रतिज्ञा कहाँ तक सच है!!"

इतना कह भूतनाथ ने पुनः क्रोध से उस तरफ देखा और तब लौट कर दालान वाली कोठड़ी के पास जाकर कहा, "पारस! अब तुम रोशनी कर लो, वे दोनों चले गये।"

कोठड़ी के अन्दर भूतनाथ का पारस नामी शागिर्द भी था जिसे पाठक छठें हिस्से के बारहवें बयान में देख चुके हैं। भूतनाथ की आज्ञानुसार पारस ने रोशनी की और भूतनाथ कोठड़ी के अन्दर चला गया।

कोठड़ी में एक मामूली कम्बल बिछा हुआ था जिस पर बैठ कर भूत-

नाथ ने पारस से कहा, "मेरी इच्छा तो हुई कि इसी समय इन दोनों का पीछा करूँ और देखूँ कि ये दोनों कहाँ जाते और क्या करते हैं पर सवेरे ही हरदीन से मिलने का वादा किया हुआ है इससे रुक गया।"

पारस० । इनमें से एक तो दलीपशाह ही है ?

भूत० । हाँ वही है, मैं उसे बोली से ही पहिचान गया, मगर दूसरा आदमी न जाने कौन है, दूर होने के सिवाय वे दोनों बातें भी बहुत धीरे धीरे कर रहे थे इससे उस दूसरे आदमी को मै पहिचान न सका।

पारस० । यदि आज्ञा हो तो मैं उनका पीछा करूँ, यद्यपि वे दोनों घोड़ों पर सवार हैं पर तौ भी मै उनको शीघ्र ही.....

भूत० । नहीं इसकी कोई जरूरत नहीं, मै इस समय एक दूसरा काम तुम्हारे सुपुर्द किया चाहता हूँ।

पारस० । आज्ञा।

भूत० । इन दोनों के आने के पहिले यह तो मैं तुमसे कह ही चुका हूँ कि मैंने रामेश्वरचन्द्र को अपनी सूरत बना कर रणधीरसिंहजी के यहाँ भेज दिया है।

पारस० । जी हाँ।

भूत० । उसे रवाना करने के बाद मैं स्वयम् काशी पहुँचा और मनोरमा से मिला, उसके मकान पर मैंने दो आदमियों को देखा जिन्हें कई दिन पहिले मैं गिरफ्तार करके लामाघाटी भेज चुका था। मैंने उन दोनों को छोड़ देने की कोई आज्ञा नहीं दी थी इससे मुझे शक होता है कि उन दोनों को किसी ने कैद से छुड़ा दिया है अस्तु तुम लामाघाटी जाकर इस बात का पता लगाओ कि वास्तव में बात क्या है और वे दोनों कैसे छूट गये लेकिन सिर्फ इतना ही नहीं इसके सिवाय और भी दो एक बातों का तुम्हें पता लगाना पड़ेगा।

भूतनाथ पारस को बहुत देर तक कुछ कहता और तरह तरह की बातें समझाता रहा। इसके बाद बोला, "अब बादल बिल्कुल साफ

हो गये हैं, तुम इसी समय चले जाओ। मैं बाकी रात इसी जगह काट दूँगा क्योंकि कल सुबह ही हरदीन से मिलने का वादा कर चुका हूँ।"

पारस "बहुत अच्छा" कह कर वहाँ से रवाना हुआ और भूतनाथ ने वह रात उसी कोठड़ी में काटी। सुबह को सुफेदी आसमान पर फैल रही थी जब वह उस छोटी कोठड़ी के बाहर निकला और अपना कम्बल लपेट कर पास ही के एक पेड़ पर रख देने बाद कोठरी को खुला ही छोड़ कर हरदीन से मिलने के लिए रवाना हो गया। हरदीन से उसकी जो कुछ बातें हुईं या उसके बाद जो कुछ हुआ पाठक ऊपर के बयानों में पढ़ चुके हैं।

छठवाँ बयान

दोपहर का समय है और यद्यपि सूर्य्यभगवान् अपनी पूरी तेजी से चमक रहे हैं फिर भी रात को बरस जाने वाले पानी ने अच्छी ठंढक कर रक्खी है और उस पर तेज हवा सूर्य्य की किरणों को अपना काम करने से और भी रोक रही है।

कैलाशभवन के एक सुन्दर कमरे में इन्द्रदेव बलभद्रसिंह और दलीपशाह बैठे आपुस में कुछ बातें कर रहे हैं। इन तीनों के सिवाय कमरे में और कोई नहीं है।

बलभद्र०। हम लोग तो कल ही यहाँ पहुँच जाते पर पानी ने मुश्किल कर दी और हमें रास्ते में एक जगह बहुत देर तक ठहर जाना पड़ा। बारे आज सुबह ही महाराज से मुलाकात हो गई और सब बातों का फैसला भी हो गया जिससे बहुत सुविधा हुई।

इन्द्र०। क्या निश्चय हुआ?

बल०। महाराज का इरादा है कि शादी इसी साल हो जाय, अस्तु इस बात का इन्तजाम अब शीघ्र ही आरम्भ हो जायगा, परन्तु भैयाराजा तथा रानी साहिबा के कारण शादी में ज्यादा खुशी नहीं मनाई जा सकती।

इन्द्र० । हाँ सो तो ठीक ही है, कम से कम रानी साहबा के खयाल से महाराज का ऐसा सोचना वाजिब है, पर भैयाराजा का खयाल कैसा ?

बल० । जो कुछ हो, मैं ठीक नहीं कह सकता । अच्छा भैयाराजा प्रभाकरसिंह इत्यादि दिखाई नहीं देते, क्या कारण है ?

दलीप० । हाँ यही सवाल तो मैं भी आपसे किया चाहता हूँ ।

इन्द्र० । प्रभाकरसिंह तो इन्दुमति तथा जमना सरस्वती के साथ आजकल एक गुप्त स्थान में हैं जहाँ कुछ कार्य्यवश मैंने ही उन्हें भेज दिया है, और भैयाराजा आज सुबह मुझसे यह कह कर गये हैं कि गोपालसिंह से मिल कर कई बातें दरियाफ्त करेंगे तथा अजायबघर के विषय में भी दो एक बातों का पता लावेंगे ।

दलीप० । यह किस लिए ?

इन्द्रदेव । उनका विचार है कि अजायबघर ही को अपना निवासस्थान बनावें क्योंकि वहाँ उनके रहने लायक काफी जगह है तथा वह स्थान ऐसा गुप्त भी है कि जिसका हाल स्वयम् महाराज भी ठीक तरह से नहीं जानते । ईश्वर की दया से उनकी स्त्री का पता लग ही गया है अस्तु वे अब अपने को सब तरह के झगड़ों से अलग ही रक्खा चाहते हैं ।

दोनों० । (आश्चर्य से) क्या बहूरानी का पता लग गया !

इन्द्र० । हाँ, बल्कि प्रभाकरसिंह के माता पिता भी ईश्वर की दया से जीते जागते मिल गये । मैं यह सब हाल आप लोगों को सुनाया ही चाहता था ।

इन्द्रदेव ने भूतनाथ की सहायता से बहूरानी दिवाकरसिंह तथा नन्दरानी को अजायबघर से छुड़ाने का सब हाल पूरा पूरा बलभद्रसिंह तथा दलीपशाह से कह सुनाया पर अपनी बातों में दयाराम को बिल्कुल ही अलग रक्खा अर्थात् उनका कोई भी जिक्र इसमें आने न दिया क्योंकि वे उनके प्रकट होने का हाल अभी किसी पर जाहिर नहीं किया चाहते थे और ऐसी ही दयाराम की भी इच्छा थी ।

दलीपशाह और बलभद्रसिंह यह सब हाल बड़ी दिलचस्पी और प्रसन्नता के साथ सुनते रहे और अन्त में बलभद्रसिंह ने कहा, "यह आपने बड़ी ही अच्छी खबर सुनाई ! प्रभाकरसिंह के माता पिता जीवित होंगे ऐसा कभी स्वप्न मे भी खयाल न आता था, कम से कम मैं तो उन्हें मुर्दा ही सोचा करता था। अवश्य ही उन बेचारों ने बड़ा ही कष्ट भोगा, पर आखिर आपकी बदौलत उनके दुःखों का अन्त भी आ ही गया।"

दलीप०। सो तो अभी कैसे कहा जा सकता है, हाँ अगर शिवदत्त और दारोगा की कोई नई चाल न हुई तो जरूर कहा जा सकता है कि उनके दुःख की घड़ी समाप्त हो गई।

इन्द्रदेव०। शिवदत्त तो भला अब क्या कर सकता है ! हाँ दारोगा का कुछ डर बेशक है।

दलीप०। नहीं सो न कहिये, शिवदत्त अब भी अपनी कार्रवाईयों से बाज नहीं आ रहा है। आपने सुना ही होगा कि शिवदत्त राजा सुरेन्द्रसिंह से हार कर साधू हो जंगल में तपस्या करने के लिए चला गया था मगर अब कुछ दूसरी फिक्र में लग गया है ! चुनार से आठ ही दस कोस के फासले पर उसने एक पुराने किले पर दखल जमाया है और उसकी मरम्मत करवा तथा उसका नाम शिवदत्तगढ़ रखकर वहाँ राज्य कर रहा है। जंगली पहाड़ियों को सिखा पढ़ा कर उसने थोड़ी फौज भी तैयार कर ली है तथा कई ऐयार भी उसके साथ हो गये हैं। कुछ ही दिनों में आप देखियेगा कि वह फिर सुरेन्द्रसिंह पर चढ़ाई करेगा और अपना खोया हुआ राज्य लौटाने की चेष्टा करेगा।

इन्द्र०। हाँ ! यहाँ तक उसकी हिम्मत हो रही है !!

दलीप०। जी हाँ और आजकल रोहतासगढ़ के दिग्विजयसिंह से भी उसका मेल मिलाप बहुत कुछ बढ़ रहा है जिसका कारण यह दुष्ट दारोगा ही है जिसको दिग्विजयसिंह अपने गुरू की तरह मानता है।

बलभद्र०। दुष्टों और दगाबाजों का अच्छा जमावड़ा हुआ है।

दलीप० । हाँ और ताज्जुब नहीं कि ये सब मिल कर कोई गहरी कार्रवाई कर डालें ।

इन्द्र० । हाँ क्या आश्चर्य है । हमें तो इन महाराज गिरधरसिंह पर अफसोस होता है कि बुद्धिमान होकर भी दारोगा साहब के फन्दे में इस कदर पड़े हुए हैं !!

दलीप० । आप देख लीजियेगा, वह दुष्ट कभी न कभी महाराज पर भी जरूर हाथ साफ करेगा !!

बलभद्र० । इसमें आश्चर्य ही क्या होगा ? वे एकदम सूधे हैं और दारोगा की चालों को समझने की उनमें सामर्थ्य ही नहीं है । यह तो कुछ भैयाराजा ही की होशियारी और दूरदर्शिता थी कि वे दारोगा की कार्रवाइयों को समझ गए मगर उनकी कुछ चली ही नहीं । दारोगा की खुशामदों में पड़ भैयाराजा की बातों पर महाराज ने कुछ ध्यान ही नहीं दिया ।

दलीप० । मैं तो समझा हूँ कि अब वे उन झगड़ों में न पड़ें और महाराज तथा दारोगा को उनकी किस्मतों के फैसले पर छोड़ दें । ईश्वर की दया से उनकी स्त्री मिल ही गई है, फिर बेफायदे इन झगड़ों में पड़ने की आवश्यकता ?

इन्द्र० । हाँ यही राय तो उनकी भी अब है और इसी विचार से वे जमानिया गये भी हैं । अगर अजायबघर में रहने के विषय में किसी तरह की झंझट न हुई तो वे अवश्य ही वहाँ रहने लगेंगे ।

दलीप० । क्या अजायबघर में इतनी जगह है कि वे वहाँ रह सकें ? देखने में तो वह कुछ बड़ी इमारत नहीं मालूम पड़ती दूसरे वह स्थान आम लोगों की निगाह में है और महाराज तथा दारोगा को उनके वहाँ रहने का सहज ही में पता लग सकता है ।

इन्द्र० । हाँ उसका ऊपरी हिस्सा तो काम का नहीं है मगर भीतर ही भीतर उसमें कई एक ऐसे स्थान है जहाँ आदमी गुप्त रीति से वर्षों इस प्रकार रह सकता है, किसी को भी उसका पता न लगे । असल में वह

बड़े ही आनन्द और सैर की जगह है और उसे एक तरह छोटा तिलिस्म कहना चाहिये।

बलभद्र०। यदि ऐसी बात है तो फिर क्या है, वे खुशी से वहाँ रह सकते हैं। वहां रहने से फिर दारोगा भी उनका कुछ बिगाड़ न सकेगा।

इतने में बाहर से आवाज आई, "मगर ऐसा हो तब तो!" और इसके साथ ही सभों ने भैयाराजा को कमरे के अन्दर आते देखा।

साहब सलामत के बाद भैयाराजा के बैठने पर इन्द्रदेव ने कहा, "यह आपने अभी क्या कहा? क्या अजायबघर में भी दारोगा का जोर चल सकता है।"

भैया०। नहीं, अजायबघर के भीतरी हिस्से में तो दारोगा के बाप की भी पहुँच नहीं हो सकती मगर कठिनता यह है कि भाई साहब ने वह स्थान दारोगा को दे देने का इरादा कर लिया है और ऐसी हालत में वहां रहने में मुझे मुश्किल होगी।

इन्द्र०। सो आपको कैसे मालूम हुआ?

भैया०। गोपालसिंह की जुबानी यह बातें मुझे मालूम हुई हैं।

इतना कह भैयाराजा ने अजायबघर के विषय में जो कुछ गोपालसिंह से सुना था कह सुनाया और कहा, "अब परसों इस बात का ठीक ठीक पता लगेगा कि भाई साहब का इरादा क्या है? अगर सचमुच उन्होंने वह स्थान दारोगा को दे दिया तो वहां मेरा रहना फिर उचित न होगा।"

इन्द्र०। मगर इसमें कठिनता की क्या बात है? आपके रहने के लिए जगहों की कमी तो है नहीं? एक से एक उत्तम स्थान आप अपने रहने के लिए पा सकते हैं। मै कई ऐसे स्थान आपको बता सकता हूँ जहाँ आप आराम के साथ रह सकते हैं और फिर हर हालत में तिलिस्म तो आपके लिए तैयार है ही।

भैया०। हाँ सो तो है पर मुझे वह जगह बहुत पसन्द थी और वहाँ रह कर मैं दारोगा इत्यादि से भी कुछ छेड़खानी करता रह सकता था।

खैर जो कुछ होगा देखा जायगा, अब इन बातों का जिक्र छोड़िये और यह बताइये कि यहाँ कुछ भोजन का भी इन्जाम है या भूखे ही रहना पड़ेगा। आज सुबह से मेरे मुँह में एक दाना अन्न का नहीं पड़ा।

इन्द्रदेव ने भैयाराजा के लिए भोजन का इन्तजाम किया और तब उन सभों में दूसरे दूसरे विषयों पर बातें होने लगीं।

सातवां बयान

दोपहर का समय है पर अजायबघर के चारो तरफ वाले घने जंगल में एक प्रकार से अन्धेरा ही छाया हुआ है क्योंकि सूर्य की किरणों में वहाँ के पेड़ों की घनी छाया को भेद कर जमीन तक पहुँचने की ताकत नहीं है।

अजायबघर की इमारत के नीचे से बहने वाले चश्मे के किनारे हम दो आदमियों को बैठे हुए देख रहे हैं जिनको हमारे पाठक बखूबी जानते हैं क्योंकि एक तो जमनिया के प्रसिद्ध दारोगा साहब हैं और दूसरे हैं उनके प्रिय मित्र जैपालसिंह।

अवश्य ही इन दोनों में इस समय किसी गूढ़ विषय में बातचीत हो रही है जिनका किसी दूसरे के कानों तक पहुँचना शायद वे पसन्द नहीं करते, क्योंकि थोड़ी थोड़ी देर पर उनका चारो तरफ होशियारी के साथ देखना इस बात की सूचना देता है।

जैपाल की किसी बात के उत्तर में दारोगा ने कहा: --

दारोगा०। हेलासिंह के साथ सामना सामनी बातें न करके चीठी के जरिये बातचीत करने में एक फायदा यह भी होगा कि अगर कभी वह अपने कथन से फिर गया तो हम लोगों के पास इस बात का सबूत रहेगा कि वह भी हमारी इस कार्रवाई में शामिल रहा है और उसी के कहने पर यह सब काम किया गया है।

जैपाल० । बेशक यह तो ठीक ही है, और इस बात का सबसे अच्छा सबूत उसकी वह चीठी होगी जो उस दिन उसने मेरे पास भेजी है ।

दारोगा० । हाँ जरा वह चीठी मुझे फिर से तो दिखाओ !

जैपाल ने 'बहुत अच्छा' कह कर चीठी निकाली जिसे वह बहुत सावधानी के साथ छिपाये हुए था और उसे दारोगा के हाथ में देखकर कहा, "भाग्यवश मेरी चाल ठीक बैठ गई और पहिले हेलासिंह ही ने मुझे चीठी भेजी । अब उसे यह कहने का मौका नहीं रहा कि हम लोग स्वयं चाहते हैं कि मुन्दर की शादी गोपालसिंह के साथ हो जाय ।"

दारोगा ने चीठी खोल कर पढ़ा, यह लिखा हुआ था···

"श्रीयुत् रघुवीरसिंह योग्य लिखी हेलासिंह का राम राम,

मेरे प्यारे दोस्त,

आपको मालूम है कि राजा गोपालसिंह की शादी बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी के साथ होने वाली है, मगर मैं चाहता हूँ कि आप कृपा करके कोई ऐसा बन्दोबस्त करें जिसमें वह शादी टूट जाय और उसके बदले में मेरी लड़की मुन्दर की शादी राजा गोपालसिंह के साथ हो जाय । अगर ऐसा हुआ तो मैं जन्म भर आपका अहसान मानूँगा और जो कुछ आप कहेंगे, करूँगा मुझे आपकी दोस्ती पर बहुत भरोसा है ।

शुभम्"

दारोगा० । (चीठी पढ़ कर) इस चीठी में हेलासिंह ने एक बड़ी भारी धूर्तता की है ।

जैपाल० । सो क्या ?

दारोगा० । इस चीठी में कहीं दिन या मिती नहीं दी गई है जिससे हम यह साबित कर सकें कि यह चीठी फलाँ वक्त पर हमारे पास आई थी ।

जैपाल० । (गौर से चीठी देख कर) आपका कहना ठीक है ! मगर मुमकिन है कि वह भूल गया हो ।

दारोगा० । मगर इसके सिवाय एक बात और भी इस चीठी में है जिस पर तुमने गौर नहीं किया । खैर जाने दो और मेरी बात सुनो ! कल कुमेटी में मैंने इस बात का जिक्र उठाया था कि राजा गिरधरसिंह में अब राजकाज चलाने की क्षमता नहीं रही और शीघ्र ही यदि कोई प्रबन्ध नहीं किया जायगा तो वे इस राज्य को चौपट कर देंगे ।

जैपाल० । अच्छा ! तब आपकी बात का सभासदों ने क्या उत्तर दिया !

दारोगा० । बहुत से लोग मेरी बात से सहमत हुए बल्कि कइयों की राय हुई कि इनको उतार कर भैयाराजा को गद्दी पर बैठाया जाय, पर मैं इस बात को भला कैसे स्वीकार कर सकता था ? अस्तु मैंने वह बात वहीं पर खतम कर दी । फिर किसी समय मौके से उसकी चर्चा छेड़ूँगा ।

जैपाल० । अच्छा यह बताइये हेलासिंह को इस चिठी का जवाब क्या दिया जाय ?

दारोगा० । अभी जरा ठहर जाओ, समझ बूझ कर जवाब देंगे ।

जैपाल० । आपको शायद नहीं मालूम कि आज बलभद्रसिंह महाराज से मिलने आये थे और यह निश्चय हो गया है कि शादी जहाँ तक हो सके जल्द ही कर दी जाय !!

दारोगा० । (चौंक कर) क्या वास्तव में यह बात ठीक है ! बलभद्रसिंह महाराज से मिलने आये थे ? मगर आश्चर्य की बात है कि यह खबर मेरे किसी आदमी ने मुझको नहीं दी ।

जैपाल० । आप आज सुबह ही से गोपालसिंह वाले मामले की फिक्र में पड़े हुए थे, दूसरे बलभद्रसिंह सवेरे ही बल्कि यों कहना चाहिये कि रात ही को यहाँ आए और बहुत तड़के ही महाराज से बातें कर बिदा भी हो गये ।

दारोगा० । (कुछ सोच कर) खैर कोई हर्ज नहीं, इसका भी बन्दोबस्त किया जायगा । अब इस समय इन बातों को बन्द करो और जिस काम के लिये आए हो पहिले उसे करो ।

जैपाल० । हाँ, पहिले हमें अजायबघर की सब अजाय बातों को अच्छी तरह देख और समझ लेना चाहिये । (मुस्कुरा कर) ईश्वर की दया से आपकी आज की चाल बहुत ही ठीक बैठी और गोपालसिंह की जान बचाने के इनाम में आपको ऐसा उत्तम स्थान महाराज ने दे दिया।

दारोगा ने भी इसके जवाब में मुस्कुरा दिया और तब दोनों आदमी सीढ़ियाँ चढ़ कर मकान के अन्दर चले गए ।

लगभग घण्टे भर तक ये दोनों आदमी उस इमारत के अन्दर न मालूम क्या क्या करते रहे । इसके बाद पहले दारोगा मकान के बाहर निकला और उसके पीछे पीछे जैपाल बाहर आया तथा दोनों आदमी शहर की तरफ रवाना हुए ।

अभी ये लोग बहुत दूर न गये होंगे कि यकायक दारोगा की निगाह भूतनाथ पर पड़ी जो पगडण्डी के किनारे ही एक घने पेड़ के नीचे लेटा हुआ था । भूतनाथ को देखते ही दारोगा झिझका मगर उसी समय भूतनाथ ने इन दोनों की तरफ देख कर कहा, "आइये, आइये ! मैं बहुत देर से आप ही लोगों की राह देख रहा हूँ ।

दारोगा ने अपने मन के भाव को छिपा हँस कर कहा, "क्यों, सो क्यों ! क्या अब भी मेरी कैद से किसी को छुड़ा कर ले जाना है ?'

भूत० । (आश्चर्य का मुँह बना कर) सो क्या ! आपके इस कहने का क्या मतलब ?

दारोगा० । सिर्फ इतना ही कि मेरे साथ तरह तरह के वादे करने और दोस्ती का इकरार करने पर भी अन्त में आपने मुझी को धोखा दिया और मेरे कई कैदी छुड़ा ले गये ।

भूत० । बड़े ही ताज्जुब की बात है ! मुझे कुछ भी स्मरण नहीं पड़ता कि आप कब की बात कह रहे हैं ! मैं तो इधर बहुत दिनों से आप से मुलाकात भी नहीं कर सका, भला फिर आपके किसी कैदी को क्यों और कैसे छुड़ा ले जाऊँगा !

दारोगा० । (हँस कर) बहुत खासे, थोड़ी ही देर में कह देना कि मैं तुमसे कभी नागर के मकान पर मिला ही नहीं था !

भूत० । नहीं नहीं, सो मैं भला कैसे कह सकता हूँ, मगर मेरे कहने का मतलब यह कि उस दिन के बाद से आज तक फिर मैंने आपको कभी नहीं देखा और न आपके मकान पर ही कभी गया ।

दारोगा० । (अविश्वासपूर्वक) तो क्या परसों रातको तुम भैयाराजा के साथ मेरे मकान पर नहीं गये थे ?

भूत० । हरगिज नहीं ! मैं तो उस दिन नागर के मकान पर से जो आपसे बिदा हुआ तो फिर आपको मैंने सूरत तक नहीं देखी और आप कहते हैं कि मैं भैयाराजा के साथ आपके मकान पर गया था ! जरूर यह किसी दुष्ट ऐयार का काम है जिसने मेरी सूरत बन आपको धोखा दिया है, और आश्चर्य की बात तो यह कि इस समय मैं आपके साथ जैपालसिंह को देख रहा हूँ जिनके दुश्मन के कब्जे में पड़ने की खबर स्वयम् मैंने ही आप तक पहुँचाई थी और जिनको छुड़ाने के लिये हरनामसिंह को साथ लेकर मैं गया भी था, पर कुछ कार्य न हो सका जिसका मुझे बहुत अफसोस है । यह कब और कैसे छूट आये !

भूतनाथ की इन चलती फिरती बातों ने दारोगा को सोच में डाल दिया और सिर नीचा कर देर तक चुपचाप कुछ सोचने बाद उसने भूतनाथ से कहा, "अच्छा तो जिस दिन तुम मुझसे नागर के मकान पर मिले उस दिन के बाद से आज तक तुम कहां थे ?"

भूत० । मैं अपने मालिक रणधीरसिंहजी के पास गया हुआ था, जिन्हें मेरी बहुत सख्त जरूरत पड़ गई थी । तब से अब तक उन्हीं के काम में फँसा रहा और आज ही फुरसत पाकर इस तरफ आ रहा हूँ । आपको उस तरफ जाते देख इस खयाल से यहीं रुक गया था कि आप अपना काम करके लौटें तो आपसे बातें करूँ क्योंकि मुझे स्वयम् इस बात का अफसोस था कि आपके साथ वादा करने पर भी लाचारी में पड़

जाने के कारण मैं आपका कोई काम न कर सका था। मगर यहाँ आपकी बातों से कोई दूसरी ही बात मालूम होती है! भला यह तो कहिये कि आपके कौन कौन से कैदी छूट गये हैं जिनके छुड़ाने का इलजाम आप मुझ पर लगाया चाहते हैं।

दारोगा०। दो औरतें जिनको मैं जमना और सरस्वती समझता हूँ मेरी कैद से निकल गईं और हरनामसिंह तथा बिहारीसिंह भी शायद छुड़ाने वालों के ही फन्दे में पड़ गये हैं क्योंकि उनका भी तब से पता नहीं है। अभी तक मुझे यही विश्वास था कि तुम्हीं इन सभों को ले गये हो मगर अब तुम कुछ दूसरी ही बात कह रहे हो!

भूत०। भला आप ही सोचें कि यह भी कोई बात है कि आप जमना सरस्वती को गिरफ्तार करें और मैं उन्हें छुड़ा ले जाऊं! मैं जिन लोगों का दुनिया से उठ जाना पसन्द करता हूँ उन्हीं लोगों को कैद से छुड़ाने की कोशिश करूँगा? यह तो आपको खुद सोचना चाहिए कि क्या गदाधरसिंह इतना बेवकूफ है कि अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारे?

दारोगा०। अजीब बात है, कुछ समझ में नहीं आता! अगर वह तुम नहीं थे जो उस रात को भैयाराजा के साथ मेरे मकान में आये और मेरी कारीगरी से बेहोश हुए थे तो जरूर तुम्हारी ही सूरत का कोई ऐयार होगा।

भूत०। जरूर यही बात है! हाँ, एक बात तो आपसे कहना ही मैं भूल गया। मैंने सुना है कि आज कल दलीपशाह ने मेरे विरुद्ध कमर कसी है और मेरी सूरत बन इधर उधर घूमा फिरा करता है, मैंने हरनामसिंह से भी इस बात का जिक्र किया था, पर उसने शायद आपसे नहीं कहा।

दारोगा०। हाँ, उसने कहा था कि गदाधरसिंह कहते हैं कि मेरी सूरत में आने और तुम्हें कैद कर भैयाराजा को छुड़ा ले जानेवाला वास्तव में दलीपशाह है तो मुमकिन है कि वही तुम्हारी सूरत में मेरे यहाँ भी

पहुँचा हो। खैर इन बातों का फैसला इस तरह खड़े खड़े नहीं हो सकता तुम शाम को मुझसे मिलो तो बातचीत करके ठीक निश्चय किया जाय कि मामला क्या है ?

भूत०। बहुत अच्छा मैं आज तो नहीं पर कल शाम को आपसे जरूर मिलूँगा।

दारोगा को सलाम कर भूतनाथ वहाँ से चला गया और दारोगा त्रिपाल से बातें करता हुआ जमानिया की तरफ रवाना हुआ।

आठवाँ बयान

मिरजापुर में भूतनाथ के रहने के लिये जो मकान उसके मालिक रण धीरसिंहजी ने दिया है वह बहुत ही सुन्दर तथा आलीशान है। मकान के पिछवाड़े की तरफ एक छोटा सा नजरबाग भी है जो पहिले तो बहुत ही गुलजार सुहावना और हरा भरा रहा करता था, मगर आजकल भूतनाथ का आना जाना तथा रहना कम होने के कारण कुछ रद्दी हालत में हो रहा है।

बाग के बीचोबीच में एक छोटा सा दोमञ्जिला कमरा (या बँगला) है जिसमें आज रात के समय हम भूतनाथ और उसकी स्त्री शान्ता को बैठे देख रहे हैं। बहुत दिनों के बिछुड़े हुए प्रेमियों में जिस प्रकार की बातें हुआ करती हैं, उसी तरह की प्रेम, हँसी, मुहब्बत तथा उलाहने की बातें दोनों में हो रही हैं।

कुछ देर बाद एकाएक शान्ता ने कुछ मुस्कुरा कर कहा, "मगर मैंने तो सुना है कि काशी में जाकर आप एक और भी बड़े तरद्दुद में पड़ गये थे !"

भूत०। (आश्चर्य से) सो क्या ?

शान्ता०। मुझे पता लगा है कि वहाँ रामदेई नामक कोई औरत

बेतरह आपके पीछे पड़ी हुई है और आप उससे इतना घबड़ा गये हैं कि वह जगह छोड़ मेरे पास आने की हिम्मत नहीं कर सकते !!

भूत० । (मुस्कुरा कर) जरूर तुमसे यह बात रामेश्वर ने कही होगी।

भूतनाथ के इस जवाब ने बातचीत का ढङ्ग बदल दिया और शान्ता ने पूछा, "मगर यह आपने अभी तक नहीं बताया कि अपनी जगह पर आपने रामेश्वरचन्द्र को यहाँ क्यों भेज दिया है ? और सो भी अपनी ही सूरत में ! मैंने उससे बहुत पूछा, पर कोई ठीक ठीक जवाब नहीं मिला।"

भूत० । इसका सबब यही है कि मैं कुछ दिन अभी और बाहर रहूँगा।

शान्ता० । तो क्या अभी आपका काम समाप्त नहीं हुआ ? पिछली दफे जब आप आये थे तो आपने कहा था कि अब कोई काम नहीं है और मैं मिरजापूर के बाहर न जाऊँगा। इस बात के न जाने कितने दिनों बाद आज आपके दर्शन हुए हैं और अब फिर आप कहते हैं कि मैं कुछ दिन बाहर रहूँगा। आखिर कोई कारण भी तो मालूम हो कि आपको अपना घर छोड़ने की इतनी क्या जरूरत पड़ा करती है कि आप महीने दो महीने भी यहाँ टिक कर नहीं रह सकते ?

भूत० । यही कुछ दयाराम वाला मामला है।

दयाराम का नाम सुन शान्ता की आँखें भर आईं पर उसने अपने को सम्हाल कर कहा, "मरे हुए आदमी का अब क्या मामला बच गया ? जब राजसिंह ने उन्हें मार ही डाला तो अब इस झगड़े को उठाने की जरूरत ही क्या रह गई ? क्या रणधीरसिंहजी ने कुछ कहा है ?"

भूत० । नहीं वे बेचारे तो कुछ भी नहीं बोलते, दयाराम के मरने के बाद से एक दम उदासीन हो गये हैं और इस बात का जिक्र छिड़ने पर दुःख के साथ मुँह फेर कर कह देते हैं कि अब इस विषय को जाने दो पर मेरा ही जी नहीं मानता और मैं अभी तक उनके शत्रुओं के पीछे पड़ा हुआ हूँ, इसके साथ ही वे सब भी मेरे पीछे इतना पड़े हुए हैं कि

मुझे दम मारने की फुरत नहीं मिलती। खैर, कोई हर्ज नहीं, इस बार मैं सभों से अच्छी तरह समझूँगा।

इतना कह कर भूतनाथ चुप हो गया और थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा, शान्ता भी चुपचाप अपने पति के मुंह की तरफ देखती रही। इसके बाद उन दोनों में दूसरे विषय पर बातें होने लगीं।

इस बँगले के बाहर की तरफ दो आदमी नकाब डाले तथा काले कपड़ों से अपना बदन छिपाये न मालूम कब से खड़े इन दोनों की बातें सुन रहे थे। भूतनाथ को दयाराम का विषय छोड़ दूसरी बातें छेड़ते देख एक ने बहुत धीरे से अपने साथी से कहा, "देखिये अब इसने बातों का ढङ्ग बदल दिया। मैंने आपसे कहा न कि गदाधरसिंह अपने मामूली भेदों की खबर भी अपनी स्त्री को नहीं करता, फिर ऐसा गूढ़ विषय वह क्यों उस पर जाहिर करने लगा।"

दूसरा०। हाँ, यहीं मालूम होता है, खैर अब यहाँ ठहरने की कोई जरूरत नहीं है।

पहिला०। हाँ, अब चलना चाहिये, मगर यदि कहिए तो कोई शगूफा छोड़ने जायँ?

दूसरा०। नहीं, इसके घर में और खास कर इसकी स्त्री के सामने यह मै पसन्द नहीं करता, अकेले में या केवल उसके साथियों या ऐयारों के सामने उसे तंग करने में कोई हानि नहीं है, पर यहाँ ऐसा करना ठीक नहीं और इन्द्रदेव तथा भैयाराजाजी की भी यही आज्ञा है, अस्तु इस समय यहाँ से चले चलना ही ठीक है।

इतना कह वह आदमी वहाँ से हटा और दूसरा भी दबे पाँव उसके पीछे रवाना हुआ। बँगले के बाहर निकल वे दोनों बगीचे की चहार-दीवारी की तरफ बढ़े और उसे पार करने बाद तेजी के साथ एक तरफ रवाना हुये रास्ते में उन दोनों में पुनः इस प्रकार बातें होने लगीं :—

एक० । जहां तक मालूम होता है भूतनाथ यहाँ एक रात से ज्यादा न रहेगा और कल ही फिर बाहर निकलेगा ।

दूसरा० । हाँ, यह तो उसकी बातों मे ही प्रगट हो गया है । हम लोगों को इसी शहर में कहीं ठहर कर उसका इन्तजार करना चाहिये ।

पहिला० । बेशक, भला वह भी क्या कहेगा कि किसी से वास्ता पड़ा था । वह अगर छुका भी है तो हमी लोगों से ।

दूसरा० । हाँ, इसमें क्या शक है, मगर हम लोगों को मदद भी तो बड़ी ऊँची जगह से मिली है !

पहिला० । अभी तक वह इस बात को बिल्कुल नहीं समझ सका कि "चन्द्रशेखर" या "सर्वगुण सम्पन्न चांचला सेठ" कौन है ?

दूसरा० । हाँ ऐसी ही बात है । अभी उस दिन कार्शाजी में लाटभैरव वाले कूँए पर मेरी उसकी देखादेखी हो गई थी । उसकी आधी जान तो 'चन्द्रशेखर" नाम से ही सूख गई और अन्त में मेरी बातें सुन सुन वह यहां तक घबड़ाया और डरा कि बेहोश हो गया ।

पहिला० । आपने उसे परेशान भी तो बहुत किया है ।

दूसरा० । जब से तलवार की लड़ाई में वह मुझसे जक उठा चुका है तब से मुझसे बड़ा ही डरने लगा है और खास कर इस बात से तो वह और भी घबड़ाता है कि मुझे उसके करीब करीब सब गुप्त भेदों की खबर है और वह मेरा कुछ भी हाल नहीं जानता ।

पहिला० । मगर आश्चर्य तो इस बात का है कि वह इतनी दफे आपको देखने और आप से बातें कर चुकने पर भी इस बात का गुमान नहीं कर पाता कि 'चन्द्रशेखर' के पर्दे के अन्दर वास्तव में कौन है ।

दूसरा० । इसका असली सबब यही है कि वह मुझे मरा हुआ समझता है । एक तो ऐसे ही बरसों से उसने मुझे असली सूरत में नहीं देखा दूसरे अपनी कार्रवाइयों से मैं उसे विश्वास दिला चुका हूँ कि अब मैं इस दुनिया में नहीं रहा ।

पहिला० । अच्छा इसके कुछ कागजात भी तो आपके कब्जे में हैं ?

दूसरा० । उसके बटुए में से कुछ चीठियाँ मुझे मिली थीं मगर उन्हें मैंने इन्द्रदेवजी के हवाले कर दिया ।

पहिला० । इन्द्रदेवजी भी विचित्र आदमी हैं, सब कुछ होने पर भी वे दारोगा और भूतनाथ से अपनी दोस्ती का हक निबाहे जा रहे हैं । यदि उनकी जगह कोई दूसरा आदमी होता या किसी दूसरे के कब्जे में उतनी बेइन्तहा ताकत और दौलत होती जितनी उनके कब्जे में है तो वह इन लोगों को बर्बाद करके छोड़ देता ।

दूसरा० । हाँ इसमें क्या शक है ! भूतनाथ या दारोगा जैसों को बर-बाद कर देना या उनकी ताकत को तोड़ देना इन्द्रदेव ऐसे व्यक्ति के लिए कुछ भी कठिन नहीं दारोगा के विषय में तो मैं नहीं कह सकता कि उनके क्या विचार हैं मगर गदाधरसिंह के विषय में बात छेड़ने पर वे बराबर मुझसे यही कहा करते हैं कि वह आदमी तो बहुत ही अच्छा है मगर लालच और ऐयाशी ने उसे खराब कर रक्खा है । अगर किसी तरह भी सुधर जाय तो अपने ढंग का एक ही ऐयार होगा ।

पहिला० । हाँ और इसी खयाल से उन्होंने हम लोगों को इसके पीछे लगा रक्खा है कि शायद ठोकरें खाने और दुःख उठाने से किसी दिन वह सम्हल जाय और बुरे रास्ते को छोड़ कर भली राह पर आ जाय । (रुक कर) मगर देखिये तो, यह आवाज कैसी आ रही है ?

दोनों नकाबपोश रुक गये । पास ही किसी जगह से कुछ इस प्रकार की आवाज आ रही थी मानों दो आदमी आपुस में लड़ रहे हों । बीच बीच में तलवारों की झनझनाहट और पत्तों के चरमराने की आवाज भी आती थी । कुछ देर तक दोनों आदमी आश्चय के साथ वहां खड़े रहे इतने ही में एक हलकी चीख फिर धमाके की आवाज आई और तब एक दम सन्नाटा हो गया ।

दोनों आदमी पाँव दबाए हुए धीरे धीरे उस तरफ बढ़े जिधर से यह

आवाज आई थी। पचास कदम भी न गये होंगे कि पेड़ों के झुरमुट के बीच आग जलती हुई दिखाई दी जिसके अन्दर कोई चीज बलती हुई नजर आ रही थी। उस आंच के पास ही एक आदमी जमीन पर गिरा हुआ था और एक दूसरा आदमी उसकी छाती पर सवार खञ्जर उसके कलेजे के पार किया ही चाहता था।

ये दोनों आदमी यह विचित्र दृश्य देख आश्चर्य में पड़ गए और उस जमीन पर गिरे आदमी की मदद के लिये कुछ किया ही चाहते थे कि इतने ही में वह आदमी जो छाती पर सवार था अपना हाथ रोक यह कहता हुआ कि "जा! आज फिर तुझे छोड़ देता हूँ!! मगर अब कभी अपनी नापाक सूरत मुझे न दिखाइयो!" उठ खड़ा हुआ और अपना खञ्जर कमर में खोंसने के बाद एक तरफ को रवाना हो गया। उस जगह पेड़ों के झुरमुट के कारण इतना अन्धकार छाया हुआ था कि ये दोनों आदमी गौर करने पर भी न तो उसकी सूरत ही देख सके और न उसे पहिचान सके।

मालूम होता था कि वह जमीन पर गिरा हुआ आदमी डर या किसी और कारण से बेहोश हो गया था, क्योंकि अपने ऊपर वाले आदमी के चले जाने के बाद भी वह अपनी जगह से न तो हिला और न अपना हाथ पाँव इत्यादि कोई अङ्ग ही उसने हिलाया। दोनों नकाबपोश यह देख धीरे धीरे उस तरफ बढ़े और उस आदमी के पास जाकर खड़े हो गये।

अन्धकार बहुत था इस कारण पास से देखने पर भी उस बेहोश आदमी की सूरत शक्ल साफ साफ दिखाई नहीं देती थी। एक नकाबपोश ने यह देख आस-पास के कई सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और उनको पास जलती हुई आग पर डाल उसे तेज किया।

रोशनी होते ही उन दोनों नकाबपोशों ने उस आदमी को पहिचान लिया और आश्चर्य भरी आवाज में एक ने दूसरे से कहा, "हैं। यह तो भूतनाथ है!!"

नौवाँ बयान

सन्ध्या हो गई बल्कि रात हो चली है। बढ़ते हुए अन्धकार ने पहिले तो पहाड़ों की गुफाओं तथा दर्रों में अपना दखल जमा लिया और अब उस घने और सुहावने जङ्गल में उसने अपनी हुकूमत फैलाना शुरू कर दिया है जिसमें अजायबघर की छोटी मगर खूबसूरत इमारत है।

बँगले के नीचे बहने वाला चश्मा इस समय बड़े ही शान्त तथा गम्भीर भाव से बह रहा है और उसके दोनों किनारे वाले गुञ्जान पेड़ एक दम स्थिर भाव से खड़े नाले के निर्मल जल में पड़ती हुई अपनी पल पल भर में अन्धकार में विलीन होती जाने वाली छाया को निहार रहे हैं।

बँगले से लगभग पचास कदम के फासले पर नाले को पार करने के लिए छोटा सा पक्का पुल बना हुआ है मगर नाले की चौड़ाई ज्यादा न होने के कारण उसके दोनों किनारे वाले पेड़ों ने एक तरह पर इस पुल को भी अपने साये में ले लिया है और वह पत्तों की आड़ में ऐसा छिप गया है कि एकाएक निगाह में नहीं पड़ता।

इसी पुल पर हम एक आदमी को बागीक कपड़े से अपना मुँह ढाँके टहलता हुआ देख रहे हैं। कभी वह रुक कर नीचे के साफ पानी में उछल-कूद करने वाली मछलियों को देखता है कभी बेचैनी की निगाह से अपने चारो तरफ देख और सन्नाटा पाकर फिर इधर उधर टहलने लगता है, और कभी रुकावट के लिये बनी हुई पुल के किनारे की कमर भर ऊँचा दीवार पर बैठ अपने हाथ की एक छोटी सी पुस्तक खोलकर पढ़ना चाहता है मगर अन्धकार उसे ऐसा करने की इजाजत नहीं देता जिससे वह लाचार हो किताब बन्द कर फिर इधर उधर देखने लगता है।

इस तरह कभी बैठते कभी टहलते और कभी कुछ सोचते इधर उधर देखते हुए लगभग आध घण्टे के बीत गया मगर उस आदमी का

मनबल पूरा न हुआ और अन्त में घबड़ाहट के साथ यह कहने बाद कि—"अभी तक चाचाजी नहीं पहुँचे, न जाने क्या सबब है!" वह पुल से हटा और धीरे धीरे बँगले की तरफ बढ़ा।

पाठक चन्द्रकान्ता सन्तति में इस बँगले तथा इमारत का बहुत कुछ हाल पढ़ चुके हैं और उन्हें याद होगा कि इसकी कुरसी बहुत ऊँची थी और लगभग पन्द्रह सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद मकान का दर्वाजा मिलता था। उन्हें यह भी स्मरण होगा कि बँगले के बीचोबीच में एक बड़ा सा कमरा था जिसके चारो कोनो पर चार कोठड़ियां तथा हर दो कोठड़ियों के बीच में एक दालान पड़ता था*।

यह आदमी सीढ़ियाँ चढ़ मकान के दर्वाजे पर पहुँचा जो इस समय बाहर से बन्द था मगर उसकी भारी कुण्डी में किसी तरह का ताला लगा हुआ न था। उसने सिकड़ी हटा कर दर्वाजा खोला और मकान के दहिने तरफ वाले दालान में पहुँचा, दालान में सामने की तरफ एक कमर बराबर ऊँचा जँगला लगा हुआ था जिसके पास खड़े हो कुछ देर तक वह सामने की तरफ देखता रहा, तब धीरे से बोला, "अन्दर चलना चाहिये, शायद वे भीतर ही भीतर ड्योढ़ी में पहुँच गये हों।"

इतना कह वह बगल वाली कोठड़ी के दर्वाजे के पास गया जो बन्द था मगर यह नहीं मालूम होता था कि क्योंकर बन्द है या किस तरह खुलता है क्योंकि कोई ताला या ताली लगाने की जगह कहीं भी दिखाई नहीं देती थी।

दर्वाजे के ऊपर ठीक बीचोबीच में एक छोटी सी लोहे की कड़ी लगी हुई थी जिसे उस आदमी ने घुमाना शुरू किया। लगभग पचीस दफे घूमने के बाद वह रुक गई और तब नीचे की ओर जोर देते ही टेढ़ी होकर उस आदमी के हाथ की तरफ झुक गई। कड़ी के झुकते ही वह

* चन्द्रकान्ता सन्तति चौथा हिस्सा सातवां बयान।

दर्वाजा भी एक हलकी आवाज के साथ खुल गया और तब उस आदमी ने उस कड़ी को ज्यों का त्यों पहिले की तरह कर दिया।

कोठड़ी के अन्दर एकदम अन्धकार था मगर उस आदमी ने इस बात का कोई खयाल न किया और टटोलता हुआ कोठड़ी के बीचोबीच में जाकर लगभग तीन हाथ ऊँचे किसी धातु के बने एक खम्भे के पास पहुँचा जिस पर एक चर्खी लगी हुई थी। उसने दोनों हाथों से उस चर्खी को घुमाना शुरू किया जिसके साथ ही उसके पैर के नीचे तथा अगल बगल कुछ दूर तक का हिस्सा इस तरह जमीन में धँसने लगा मानो लोहे अथवा और किसी धातु का बना हुआ हो जो चर्खी घुमाने से जमीन में धँस रहा था।

लगभग बीस हाथ के जाने बाद वह टुकड़ा ठहर गया और तब वह आदमी उस पर से उतर अन्धेरे ही में टटोलता हुआ उस स्थान के एक कोने में गया जहाँ के किसी पुरजे को हिलाते ही तेज रोशनी उस कोठड़ी भर में फैल गई जो छत में लगे शीशे के एक विचित्र गावदुम गोले में से निकल रही थी और इतनी तेज तथा साफ थी कि उस पर निगाह नहीं ठहर सकती थी।

इस रोशनी में उस लम्बी चौड़ी कोठड़ी का हर एक कोना साफ दिखाई देने लगा। इसके पूरब तरफ दीवार में एक बन्द दर्वाजा था जो शायद किसी दूसरी कोठड़ी में जाने के लिये था, पश्चिम तरफ एक कुँआ था, उत्तर तरफ एक दालान था जिसमें कई लोहे के सन्दूक तथा विचित्र प्रकार के बर्तन तथा औजार पड़े हुए थे, और दाहिनी तरफ एक कोठड़ी थी जिसके आगे जँगला लगा हुआ था। बस इसके सिवाय वहाँ और कुछ नहीं दिखाई पड़ता था।

वह आदमी कुछ देर तक बेचैनी के साथ इधर उधर देखने बाद यह कह कर कि—"अभी यहाँ नहीं आये!" पूरब तरफ वाले बंद दर्वाजे के पास पहुँचा और उसे किसी ढंग से खोल अन्दर चला गया।

यह तीन चार हाथ चौड़ी और बहुत ही लम्बी एक सुरंग थी जिसमें थोड़ी थोड़ी दूर पर आमने सामने लोहे के जंगलेदार दर्वाजे एक ही रंग ढंग के बराबर लगे हुए थे। हर एक दर्वाजे में ताला बन्द था और ताले के साथ धातु की पतली चद्दर बंधी हुई थी जिस पर कुछ लिखा हुआ था। इस सुरंग में भी थोड़ी थोड़ी दूर पर उसी किस्म की विचित्र रोशनी हो रही थी जैसी कि इस समय बाहर की कोठड़ी में थी।

उस आदमी ने एक दर्वाजे के पास पहुँच उसकी तख्ती को उठा कर देखा। उस पर खूब मोटे और साफ अक्षरों में "खास बाग" लिखा हुआ था। उसको छोड़ सामने वाले दूसरे दर्वाजे की तख्ती देखी, उस पर "वायु मण्डप" लिखा हुआ पाया। फिर एक तीसरे दर्वाजे की तख्ती पर गौर किया तो उस पर "चौथा दर्जा—देवमन्दिर" लिखा देखा। चौथे पर "नाले वाला दर्वाजा" और पाँचवें पर "केन्द्र" पाया। इसी प्रकार हर एक दर्वाजे पर जो गिनती में बीस से किसी प्रकार कम न होंगे एक न एक स्थान का नाम लिखा हुआ था जिसे वह आदमी आदि से अन्त तक बराबर पढ़ता चला गया।

लगभग दो सौ कदम के चले जाने बाद वह आदमी एक ऐसे महराबदार फाटक के पास पहुँचा जिसके बीचोबीच में एक जंजीर के सहारे एक पुतली लटक रही थी जो देखने में पत्थर की मालूम होती थी। यह पुतली अपने दाहिने हाथ से तो वह जंजीर जो महराब में से उतरी थी पकड़े थी और बाएँ हाथ में एक बड़ी सी चाभी लिये हुई थी जिसके साथ एक छोटी पुस्तक और लाल रंग का कागज का टुकड़ा बँधा हुआ था जिस पर साफ अक्षरों में "अजायबघर" लिखा हुआ था।

वह आदमी यहाँ तक पहुँचा ही था कि यकायक किसी प्रकार की हलकी आवाज आई और उस सुरंग में जलते हुए वे विचित्र लम्प जो अपने प्रकाश से इस स्थान को बिल्कुल दिन की तरह उजाला किये हुये थे यकायक बुझ गये जिससे वहाँ घोर अन्धकार छा गया। वहम आदी

यह देख घबड़ाहट के साथ बोला, "हैं ! यह क्या हुआ ? रोशनियाँ क्यों बुझ गईं !! कहीं चाचाजी तो नहीं आ गये और उन्हीं की तो यह कार्रवाई नहीं है ?"

अन्दाज से चलता हुआ वह आदमी उस स्थान के बाहर वाली बड़ी कोठड़ी में लौटा और उसी समय वहाँ का विचित्र लम्प जो सुरंग की रोशनियों के साथ ही बुझ गया था आपसे आप यकायक पुनः बल उठा। कोठड़ी में उसकी तेज रोशनी फैल गई और उस जगह का एक एक कोना साफ दिखाई देने लगा, मगर किसी की सूरत नजर न आई।

कुछ देर तक इधर उधर देखने और खोज ढूँढ़ करने के बाद वह आदमी फर्श के उस छोटे टुकड़े के पास पहुँचा जो उसे ऊपर वाली कोठड़ी से यहाँ तक लाया था और उस पर चढ़ चरखी को उलटा घुमाने लगा जिससे वह टुकड़ा ऊपर की तरफ चढ़ने लगा और धीरे धीरे ऊपर वाली कोठड़ी की जमीन के साथ जा लगा।

इस कोठड़ी में इस समय घोर अन्धकार था। वह आदमी कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा और जब किसी प्रकार की आहट न आई तब उस कोठड़ी से बाहर निकल दालान में पहुँचा। यहाँ भी एक प्रकार पूर्ण अन्धकार था और किसी आदमी के होने का गुमान नहीं हो सकता था।

दालान के बरामदे के साथ पीठ लगा कर उस आदमी ने धीरे से कहा, "न मालूम क्या बात है ! किसकी आहट मैंने पाई और रोशनी बुझाने वाला कौन था ? कुछ पता नहीं लगता !! अब क्या करूँ और चाचाजी को कहाँ ढूँढूँ ?"

पाठकों का तरददुद ज्यादा न बढ़ा कर हम कहे देते हैं कि यह वास्तव में कुँअर गोपालसिंह हैं जो वादे के मुताबिक भैयाराजा से मिलने के लिये बहुत देर से यहाँ आये हुए हैं और उनको न पाकर बेचैन हो रहे हैं।

कुछ देर तक गोपालसिंह तरह तरह की बातें सोचते उसी जगह खड़े रहे। उदय होते हुए चन्द्रदेव का प्रकाश धीरे धीरे फैलने लगा और उनकी

हलकी रोशनी में बहुत दूर से दो आदमियों को तेजी के साथ इधर ही आते हुए उन्होंने देखा। उन दोनों का बदन स्याह कपड़ों से ढँका हुआ था इस कारण उनकी सूरत शक्ल के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता था। आगे आने वाला आदमी बीच बीच में रुक जाता था और पीछे वाला आदमी जो कद में नाटा मालूम होता था आगे बढ़ उसकी कुछ बातें सुनने बाद फिर पीछे हट जाता था।

गोपालसिंह को शक हुआ कि ये दोनों आने वाले ही शायद भैया-राजा और उनका वह साथी न हों जिसके विषय में उन्होंने कहा था कि मेरे साथ और भी एक व्यक्ति होगा जिसे देख तुम बहुत ही प्रसन्न होगे। कुछ और नजदीक पहुँचने पर चाल ढाल देख कर उनका शक और भी बढ़ गया और वे तेजी के साथ दालान के बगल की कोठड़ी से होते हुए बाहर की तरफ लपके।

परन्तु दरवाजे के पास पहुँचने पर उन दोनों आदमियों को गोपाल-सिंह ने कहीं न पाया और वे उन्हें खोजने के लिये सीढ़ियाँ उतर कर आगे की तरफ जिधर से उन दोनों को आते देखा था बढ़ने लगे। अभी पचीस या तीस कदम ही गये होंगे कि पीछे निगाह फेरने पर दो आदमी सीढ़ी चढ़ने दिखाई पड़े मगर उस जगह चन्द्रमा की रोशनी न पहुँचने के कारण वे निश्चय रूप से नहीं कह सकते थे कि ये दोनों वे ही हैं जिनको उन्होंने पहले देखा था या कोई दूसरे, पर तो भी वे लौटे और सीढ़ियों की तरफ बढ़े।

जब तक गोपालसिंह सीढ़ियों के पास पहुँचें तब तक वे आदमी अन्दर के कमरे में जा पहुँचे और वहाँ से होते हुए किसी दूसरे स्थान में चले गये। गोपालसिंह ने इस आशा से कि अब वे इस इमारत के अन्दर ही तो कहीं होंगे कई बार धीरे धीरे "चाचाजी, चाचाजी!" कह कर आवाज भी दी मगर कोई जवाब न मिला. लाचार फाटक बन्द करते हुए ये उस कोठड़ी में पहुँचे जहाँ से "ड्योढ़ी" में जाने का रास्ता था या जहाँ

से कि वे अभी थोड़ी ही देर हुई वापस हुए थे। चन्द्रमा की रोशनी आड़ी होकर बाहर वाले दालान में पहुँच रही थी जिसके कारण वहाँ का अन्धकार बहुत कम हो गया था पर तो भी उस जगह किसी आदमी की सूरत नजर न आई।

"कदाचित् वे ड्योढ़ी में पहुँच गये हों" कह कर गोपालसिंह कोठड़ी के अन्दर गये और पहिले की तरह चरखी घुमा कर नीचे की कोठड़ी में पहुँचे जहाँ का विचित्र लम्प अभी तक उसी तरह जल रहा था मगर उसकी तेज रोशनी ने भी वहाँ किसी आदमी की सूरत न दिखाई दी।

बहुत देर तक इधर उधर घूमने और कमरे कोठड़ियों तथा सुरंगों में तलाश करने पर भी जब भैयाराजा या किसी दूसरे आदमी पर गोपालसिंह की निगाह न पड़ी तो लाचार दुःखी और खिन्नचित्त से वे वहाँ से निकले और ऊपर वाली कोठड़ी में पहुँचे, मगर वहाँ पहुँच यह देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ कि इस कोठड़ी का दर्वाजा जिसे अन्दर जाती समय वे खुला छोड़ गये थे इस समय बन्द था। उन्हें विश्वास हो गया कि जरूर कोई न कोई आदमी इस कोठड़ी तक आया है। तो फिर वह आदमी कहाँ चला गया? इस कोठड़ी में से तो सिवाय अजायबघर की कोठड़ी के और कहीं जाने का रास्ता नहीं है! तो फिर वहाँ उस आदमी से उनकी मुलाकात क्यों न हुई? या कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि वह आदमी कोठड़ी के अन्दर न आया हो और बाहर ही से दर्वाजा बन्द करता हुआ चला गया हो? लेकिन तो भी उस आदमी को यह बात तो अवश्य ही मालूम हो गई कि नीचे ड्योढ़ी में कोई गया हुआ है!!

इत्यादि कई तरह की बातें गोपालसिंह ने तेजी के साथ सोचीं और तब उस दर्वाजे को खोलने का प्रयत्न करने लगे। दर्वाजे के ऊपरी हिस्से पर ठीक वैसी ही कड़ी लगी हुई थी जैसी कि बाहर की तरफ थी और उस कड़ी को उलटा घुमा कर दबाने से दर्वाजा खुल जाता था। गोपालसिंह ने कड़ी घुमा कर दर्वाजा खोलने का प्रयत्न किया मगर यह जान

कर उनके आश्चर्य, दुःख और घबराहट का कोई ठिकाना नहीं रहा कि वह दर्वाजा किसी तरह नहीं खुलता।

बहुत देर तक गोपालसिंह दर्वाजा खोलने की कोशिश करते रहे मगर जब किसी तरह भी दर्वाजा न खुला तो कुछ सोचते हुए फिर पहिले ढङ्ग से नीचे की कोठड़ी अर्थात् ड्योढ़ी में पहुँचे। यहाँ इस समय अन्धकार था क्योंकि चलते समय गोपालसिंह ने सब रोशनियाँ बुझा दी थीं पर उन लम्पों को फिर से जलाने में गोपालसिंह को किसी तरह का तरद्दुद न करना पड़ा और थोड़ी ही देर में वह कोठड़ी रोशनी से जगमग करने लगी। एक नजर चारो तरफ देख कर गोपालसिंह पूरब की तरफ वाली सुरङ्ग में घुसे और अगल बगल के दर्वाजों तथा उन पर लगे धातु के पत्थरों को देखते हुए उस दर्वाजे के सामने जाकर खड़े हो गये जिसके ताले पर "नाले वाला दर्वाजा" लिखा हुआ था।

गोपालसिंह कुछ देर तक खड़े रहे, इसके बाद उदास भाव से उन्होंने किसी गुप्त रीति से वह ताला खोल कर दर्वाजा खोला और कोठरी के अन्दर चले गये।

दसवाँ बयान

उन दोनों नकाबपोशों ने यह तो जान लिया कि यह जमीन पर पड़ा हुआ बेहोश आदमी भूतनाथ है पर इसके बाद आगे वे कुछ भी न कर सके क्योंकि उस आग में जिसे तेज करके उन्होंने भूतनाथ को पहिचाना था कोई एक ऐसी विचित्र वस्तु जल रही थी जिसमें इतनी तेज बेहोशी का असर था कि उसने उन सभों को बात करने की भी फुरसत न दी और वे बेहोश होकर जमीन पर लेट गये।

उन दोनों के गिरने के साथ ही वह जमीन पर पड़ा आदमी जो वास्तव में भूतनाथ था उठ खड़ा हुआ और प्रसन्नता के साथ उन दोनों

की तरफ देखता हुआ बोला, "वह भाग ! कैसा धोखा दिया !! बड़ी डींग की ले रहे थे ! नहीं जानते थे कि गदाधरसिंह भी लोगों की खबर रखता है और उसे अपनी ऐयारी पर घमण्ड है !"

इतना कह भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और "बहादुर, बहादुर" करके कई दफे आवाज दी मगर कोई जवाब न मिला जिससे वह कुछ तरद्दुद के साथ बोला, 'न जाने बहादुर कहाँ गया ! मैंने उससे आस ही पास में कहीं रहने को कहा था, मालूम होता है किसी दूसरी फिक्र में चला गया, मगर ऐसा करना उसे मुनासिब नहीं था। खैर कोई हर्ज नहीं, मैं अकेला ही इन दोनों के लिए काफी हूँ।

भूतनाथ आग के पास गया। उसमें जलती हुई बेहोशी का असर रखने वाली चीज अब जल कर समाप्त हो चुकी थी अस्तु भूतनाथ ने इधर उधर से बटोर कर और भी बहुत सी सूखी डालियाँ तथा पत्तों को आग पर डाला और उसके तेज हो जाने पर यह कहता हुआ दोनों नकाबपोशों की तरफ बढ़ा...अब देखना चाहिये कि यह 'चन्द्रशेखर' या 'सर्वगुण सम्पन्न चाँचला सेठ' कौन है जिसने मेरे नाकों दम कर रक्खा है !!"

भूतनाथ ने बारी बारी से दोनों नकाबपोशों की नकाबें हटा कर उनकी सूरतें देखीं मगर पहिचान किसी को भी न सका। ये सूरतें आज के पहिले उसने कभी देखी ही न थीं, मगर उनकी बातचीत का वह अंश जिसे उसने उनके पीछे पीछे छिप कर आते हुए सुना था इस बात का विश्वास दिलाता था कि ये दोनों उसके जाने-बूझे आदमी हैं, अस्तु उसे निश्चय हो गया कि इन दोनों की यह सूरत असली नहीं है और जरूर इन्होंने अपनी सूरत बदली हुई है।

यह समझ कर कि उनकी सूरत रँगी हुई है और बिना मुँह धोये इस बात का ठीक ठीक पता नहीं लग सकता कि वे दोनों वास्तव में कौन हैं भूतनाथ को कुछ तरद्दुद हुआ क्योंकि इस समय उसके पास इस किस्म

की कोई चीज नहीं थी जिससे वह उनकी सूरत धोकर देख सकता। उस जगह से कुछ ही दूर पर एक गड्ढा था जिसमें प्रायः बरसात का पानी इकट्ठा रहा करता था। सोचते सोचते भूतनाथ को इसी गड्ढे का ध्यान आया और उसने निश्चय किया कि वहाँ से पानी ला कर इन दोनों का मुँह धोना चाहिये।

भूतनाथ उठ खड़ा हुआ पर फिर यह सोच कर कि कहीं इस बीच में वे दोनों होश में आकर भाग न जायँ उसने कमर से कमन्द खोल कर उसी से उन दोनों के हाथ पाँव बड़ी बेदर्दी के साथ कस कर बाँध दिये। इसके बाद यह सोच कर कि इस जलती हुई आग को देख कर किसी आते जाते आदमी का (अगर कोई इस रात के समय में हो तो) ध्यान इस तरफ पड़ सकता है, भूतनाथ ने अपने बटुए में से एक अबरक की छोटी लालटेन निकाली और उसे बाल लेने के बाद मिट्टी से ढाक कर आँच बुझा दी। उस लालटेन को धीमा करके एक आड़ की जगह में रख दिया और अपना दुपट्टा हाथ में लेकर उस गड्ढे की तरफ रवाना हुआ।

एक घड़ी के अन्दर ही गीला दुपट्टा हाथ में लिए भूतनाथ लौटा। उसी गीले कपड़े से उसने उन दोनों का मुँह अच्छी तरह साफ किया और तब लालटेन की रोशनी और तेज कर इस नीयत से उनके मुँह के पास लाया कि देखें अब भी वह उन्हें पहिचान सकता है या नहीं।

बेशक इन सूरतों को भूतनाथ पहिचानता था मगर ये वे सूरतें थीं जिनके होने का वह स्वप्न में भी गुमान नहीं कर सकता था। उसने देखा कि इन दोनों बेहोश आदमियों म एक तो उसका पुराना दोस्त 'गुलाबसिंह' है और दूसरा उसका एक बागी शागिर्द और पहिले का साथी 'विजय' है !!

गुलाबसिंह को इस जगह और ऐसी अवस्था में देखने की भूतनाथ को स्वप्न में भी आशा न थी क्योंकि वह वास्तव में उसे मर गया हुआ

ही समझता था, मगर इस समय उसे यहाँ देख और जान कर कि यह गुलाबसिंह ही 'चन्द्रशेखर' अथवा 'सर्वगुण सम्पन्न चांचला सेठ' इत्यादि नामों से उसका काल हो रहा था उसका क्रोध एकदम भड़क उठा। पुरानी बातें और जो जो तकलीफें या मुसीबतें उसे इनके हाथों उठानी पड़ी थीं वह एक दम उसकी आंखो के सामने नाचने लगीं। दोस्ती और मुहब्बत के नाते को उसने ताक पर रख दिया, लज्जा शर्म और हया को उसने तिलांजलि दे दी, पिछली दोस्ती या गुलाबसिंह के अहसानों को बिल्कुल भूल गया, और भले बुरे के ध्यान को भी अलग रख दिया। अपने दो दो दुश्मनों को सामने देख कर उसकी बुद्धि विचार-शक्ति के साथ मिल कर हवा खाने चली गई और क्रूरता और बेहयाई का जामा पहिन कर उसने कमर से खंजर निकाल गुलाबसिंह का काम तमाम कर दिया। उस के बाद विजय की तरफ झुका और उसकी गर्दन भी धड़ से अलग कर दी।

ओफ! भूतनाथ का कैसा कड़ा कलेजा था कि इतना निर्दय और निष्ठुर काम करने से भी चूर चूर न हो गया! वह कैसा दिल था जिसने उसे ऐसा भयंकर काम करने से भी न रोका! कैसा हाथ था जो अपने मित्र का खून करने से भी न काँपा! भूतनाथ! क्या तूने ऐसा कर्म करके भी इस दुनिया में नेकनाम और भला बनना चाहता है? और क्या ऐसे कर्मों का कोई अच्छा नतीजा निकलेगा!

ग्यारहवां बयान

कैलाशभवन के नजरबाग में इन्द्रदेव गोपालसिंह के साथ टहल रहे हैं। गोपालसिंह के चेहरे से चिन्ता और उदासी झलक रही है और इंद्रदेव का चेहरा भी गम से खाली नहीं है। इन दोनों में आपुस में इस प्रकार धीरे धीरे बातें हो रही हैं :—

गोपाल०। आपकी जुबानी यह बात सुन कर चाचीजी (बहुरानी)

भी उनके साथ थों मुझे और भी रञ्ज हो रहा है। मैंने दूर से उन दोनों को आते देखा और उनसे मिलने के लिये मकान के बाहर तक आया मगर वहाँ वे दोनों कहीं भी दिखाई न पड़े। जब उनको ढूँढ़ता हुआ कुछ आगे बढ़ा तो यकायक सीढ़ी चढ़ते हुए दो आदमी दिखाई दिये मगर जब तक मैं लौट कर वहाँ तक पहुँचूँ वे मकान के अन्दर जाकर कहीं गुम हो गए।

इन्द्रदेव०। तो आप निश्चय नहीं कह सकते कि वे दोनों आदमी जिन्हें आपने सीढ़ियाँ चढ़ते देखा वास्तव में भैयाराजा और बहूरानी ही थीं या कोई और?

गोपाल०। निश्चय रूप से तो मैं यह भी नहीं कह सकता कि दालान में से दूर जंगल में जिन दोनों को मैंने देखा था वे भी वास्तव में चाचाजी और चाचीजी ही थीं या कोई और क्योंकि एक तो वहाँ कुछ अन्धकार था, दूसरे दूर होने के कारण सूरतें भी नहीं दिखाई देती थीं मगर मेरा सन्देह यही था और अभी तक है कि चाचाजी ही थे क्योंकि चाल ढाल इत्यादि सब ठीक उन्हीं की तरह थी।

इन्द्रदेव०। जब वे दोनों आदमी जो सीढ़ी पर दिखे थे अजायबघर के अन्दर चले गये तो उसके बाद आपने भी वहाँ पहुँच कर उनको तलाश किया?

गोपाल०। हाँ पहिले तो दो एक आवाजें दीं और जब कुछ जवाब न मिला तो जहाँ जहाँ और जिस जिस कोठड़ी में मैं जा सकता था वहाँ वहाँ जा जाकर अपने भरसक अच्छी तरह उन्हें ढूँढ़ा मगर कहीं पता न लगा। अन्त में ड्योढ़ी में गया और वहाँ भी उन्हें न पाया, मगर लौटने लगा तब जैसा कि मैंने आपसे पहिले कहा कि ऊपर वाली कोठड़ी का दर्वाजा जिसे खुला ही छोड़ कर मै अन्दर गया था बन्द मिला और बहुत कोशिश करने पर भी मैं उसे खोल न सका। और कोई रास्ता या

ढङ्ग बाहर आने का मुझे मालूम न था इससे लाचार हो नाले वाले दर्वाजे की राह मुझे बाहर आना पड़ा।

इन्द्रदेव०। नाले वाला दर्वाजा कौन ?

गोपाल०। वहा जहाँ चाचाजी मुझसे मिले थे और अजायबघर की ताली दे दूसरे दिन मिलने का वदा कर गये थे।

इन्द्रदेव०। तो आपको इतनी दूर जाने की क्या जरूरत थी, उसी जगह अजायबघर के बाहर आने का दूसरा दर्वाजा था।

गोपाल०। मुझे नहीं मालूम कि वहाँ से बाहर आने का और भी कोई दर्वाजा है। मैने "ताली" में इसका कोई जिक्र नहीं पाया यद्यपि मुमकिन है कि उसमें हो, क्योंकि उस पुस्तक में कई शब्द ऐसे हैं जिनका कोई अर्थ ही समझ में नहीं आता। न जाने वे कैसे शब्द हैं या किस मतलब से रक्खे गये हैं, चाचाजी ने भी उसके विषय में मुझसे कुछ नहीं कहा।

इन्द्रदेव०। जी हाँ, उस पुस्तक में कई जगह ऐसे शब्द आये हैं जिनका अर्थ लगाना कठिन हो जाता है पर समय पर आपको उसका भेद मालूम हो जायगा।

गोपाल०। आपको कैसे मालूम! क्या आपने उस पुस्तक को देखा है।

इन्द्रदेव०। नहीं, देखा तो नहीं है पर मैं जानता हूँ। खैर इससे कोई मतलब नहीं, अब सोचना यह है कि भैयाराजा कहाँ चले गये और कोठड़ी का दर्वाजा क्योंकर बन्द हो गया।

गोपाल०। हाँ इसी का पता लगाना चाहिये।

इन्द्रदेव०। भैयाराजा अजायबघर के सब भेदों से बखूबी वाकिफ हैं बल्कि जहाँ तक मैं जानता हूँ कह सकता हूँ कि जितना हाल वे जानते हैं उतना महाराज भी नहीं जानते, अस्तु ऐसा तो हो नहीं सकता कि वे किसी प्रकार का धोखा खा गये हों या तिलिस्मी मामलों में फँस गये हों, हाँ

यह जरूर हो सकता है कि वहाँ उनका कोई दुश्मन छिपा हुआ हो जिसने मौका पाकर उनपर वार किया हो और उन्हें अपने फन्दे में फँसा लिया हो।

गोपाल०। यही शक तो मुझे भी होता है कि वे किसी दुश्मन के फन्दे में न पड़ गये हों। मगर उनका कोई दुश्मन भी तो नहीं जान पड़ता। एक हमारे दारोगा साहब हो सकते हैं मगर उनसे भी मुझे ऐसा विश्वास नहीं होता कि हम लोगों के साथ इस तरह खुले आम दुश्मनी का बर्ताव करेंगे। अभी परसों ही उन्होंने मेरी बड़ी मदद की है।

इन्द्रदेव०। सो क्या? कैसी मदद?

इसके जवाब में गोपालसिंह ने भैयाराजा से मिलकर लौटते समय उनके ऊपर जो हमला हुआ था और दारोगा ने उनको जिस प्रकार सहायता दी थी वह सब पूरा पूरा कह सुनाया। इन्द्रदेव सब हाल चुपचाप सुनते रहे और अन्त में भला बुरा कुछ भी न कह कर बोले, खैर तो अब आपकी क्या राय है इस समय क्या करना चाहते हैं?

गोपाल०। मेरी तो यही इच्छा थी कि यदि आप अजायबघर का कुछ हाल जानते हों तो मेरे साथ वहाँ चलें और स्वयम् वहाँ की हर एक जगह की तलाशी लेकर चाचाजी को खोजें, शायद कहीं पता लग जाय।

इन्द्रदेव०। बहुत अच्छी बात है, मै अजायबघर चलने के लिये तैयार हूँ मगर वहां जाने के लिये या तो वह किताब जिसे तालों के नाम से सम्बोधन करते हैं होनी चाहिये या फिर उसकी खास चाभी मिलनी चाहिये जो वहां के सब दर्वाजो और तालों को खोल सकती है। बिना दोनों में से कोई एक चीज साथ रहे अन्दर के स्थानों की देख भाल नही की जा सकती।

गोपाल०। वह किताब मेरे पास इस समय मौजूद है।

इन्द्रदेव०। तो बस ठीक है, हमलोग इसी समय वहां जा सकते हैं, मगर दिन के समय जाने में कोई हर्ज तो न होगा?

गोपाल०। नहीं, हर्ज क्या होगा, अगर कोई आदमी हमलोगों को

देख भी लेगा तो क्या कर लेगा। केवल कुछ सावधानी की जरूरत है। हां, आपको दिन के समय वहां चलने में किसी तरह की असुविधा जान पड़ती हो तो उस हालत में इस समय न चल कर रात के समय चलिए।

इन्द्र०। (कुछ सोच कर) खैर कोई हर्ज नहीं, मै इसी समय चलने को तैयार हूँ।

गोपाल०। तो फिर चलिये, मैं तो सब तरह से तैयार हूँ।

इन्द्र०। बहुत अच्छा, तो आप जरा थोड़ी देर इसी जगह ठहरें मैं जाकर सवारी इत्यादि का इन्तजाम कर आऊँ।

गोपाल०। हाँ आप जाइये।

इन्द्रदेव वहाँ से उठे और अपने मकान में पहुँच अपने एक शागिर्द को कई बातें बताने और सवारी का इन्तजाम करने के लिये कहने के बाद उस तरफ चले जो मकान का जनाना हिस्सा था और जहां सर्यू इत्यादि रहा करती थीं।

एक बड़े कमरे में सर्यू बैठी हुई अपनी छोटी बच्ची इन्दिरा के साथ कोई किताब देख रही थीं। इन्द्रदेव को देखते ही वह उठ खड़ी हुई और इन्द्रदेव के बैठ जाने के बाद आप भी सामने बैठ कर बोली, "आप इस समय बहुत उदास मालूम होते हैं, कहिये कुशल तो है?'

इन्द्रदेव ने अपनी बेटी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "नहीं, कुशल नहीं है। भैयाराजा और बहूरानी किसी भारी मुसीबत में पड़ गये मालूम होते हैं। कुँअर गोपालसिंह यहाँ आये है और उन्हीं की जुबानी मुझे यह हाल मालूम हुआ है।"

इन्द्रदेव की बात सुन सर्यू ने घबराहट के साथ कहा, 'कैसी मुसीबत! क्या हुआ?"

इन्द्र०। भैयाराजा ने कल शाम को गोपालसिंह से अजायबघर में मिलने का वादा किया था। जहां वे अपनी स्त्री के साथ रहा चाहते हैं। मुझसे कल शाम को वे यह कह कर बिदा हुये कि गोपालसिंह से मिलने

जाता हूँ कल किसी समय तक लौटूँगा और मेरे मना करने पर भी अपनी स्त्री को साथ लेने गये।

सर्यू०। हां यह मुझे मालूम है। तब क्या वे अजायबघर नहीं पहुँचे।

इन्द्र०। गोपालसिंह अपने वादे के मुताबिक शाम को वहां गये मगर बहुत देर तक राह देखने पर भी भैयाराजा दिखाई न पड़े जिससे वे बहुत ही घबराये और इधर उधर कई जगह उन्होंने भैयाराजा को खोजा भी। आखिर बड़ी देर के बाद दूर से दो आदमी आते उन्हें दिखाई पड़े जो कि कदाचित् भैयाराजा और बहूरानी ही थे. क्योंकि आगे वाले आदमी की चाल ढाल बिल्कुल भैयाराजा की ही तरह थी गोपालसिंह उनसे मिलने के लिये अजायबघर के बाहर निकले मगर तब तक वे दोनों आदमी कहीं गायब हो गये थे। बीच में थोड़ी देर के लिए सीढ़ियों पर दो आदमी नजर आये मगर वे भी अजायबघर के अन्दर घुस कर न मालूम कहां गायब हो गये। फिर उन्होंने बहुत कुछ ढूँढा मगर कहीं किसी का पता न लगा बल्कि उस जगह से बाहर आने का मुख्य दर्वाजा न मालूम किस तरह बन्द हो गया जिसके कारण उन्हें एक पेचीले रास्ते से बाहर निकलना पड़ा। इस समय उनका आग्रह है कि मैं उनके साथ अजायबघर जाकर भैयाराजा को खोजूँ शायद मिल जायँ मगर मैं तो यही समझता हूँ कि वे दुश्मन के कब्जे में पड़ गये।

सर्यू०। उनका दुश्मन सिवाय दारोगा के और कौन है? वे बेचारे तो किसी से दुश्मनी रखने वाले आदमी नहीं, हाँ इस दारोगा से बेशक उन्हें नफरत थी।

इन्द्र०। कुछ कहा नहीं जा सकता कि ठीक बात क्या है। जाहिर में तो सिवाय इसके और कुछ भी जान नहीं पड़ता कि दारोगा ने मौका पाकर किसी तरह उन्हें फँसा लया है मगर यह भी कुछ निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकता, देखो अब वहाँ जाने से जो कुछ है उसका पता लग

ही जायगा। मैं गोपालसिंह के साथ अजायबघर जाता हूँ तुमको यही कहने आया था।

सूर्य०। कितनी देर में लौटियेगा?

इन्द्र०! (खड़े होकर) शायद आज रात को किसी समय लौ... (कमरे के बाहर की तरफ देख और एक लौंड़ी को आते पाकर) हैं! यह तो तुम्हारे पिता के घर की लौंडी है! यहाँ क्यों आई है?

इन्द्रदेव की आज्ञा पाकर वह लौंडी जिसका नाम कौशल्या था अन्दर आई और प्रणाम करने के बाद उसने एक चीठी इन्द्रदेव के हाथ में दे दी। इन्द्रदेव चीठी पढ़ने लगे और सूर्य उस लौंडी को साथ ले दूसरे कमरे में चली गई।

थोड़ी ही देर बाद सूर्य वहाँ लौट आई और इन्द्रदेव ने उसकी तरफ देख कर कहा, "तुम्हारे पिता ने तुमको इसी दम बुलाया है और इन्दिरा को भी साथ लेते आने को कहा है।"

सूर्य०। जी हाँ कौशल्या की जुबानी भी मुझे यही मालूम हुआ है, सवारी के साथ ही दो खास ऐयार भी मुझे ले जाने के लिये आये हैं और इसी समय साथ लेकर लौट जाया चाहते हैं। न मालूम इसका क्या कारण है!

इन्द्र०। यह चीठी भी कुछ ऐसे ढंग से लिखी गई है जिससे जाना जाता है कि लिखते समय वे बड़ी ही घबड़ाहट और जल्दी में थे, लो तुम भी चीठी पढ़ कर देखो।

सूर्य ने चीठी लेकर शुरू से आखीर तक पढ़ा और इन्द्रदेव की तरफ देख कर कहा, "तो जैसी आपकी आज्ञा हो।"

इन्द्र०। मैं तुम्हें इस समय जाने से नहीं रोक सकता, हाँ इतना जरूर कहूँगा कि तुम जितनी जल्द हो सके यहाँ लौट आने की चेष्टा करना। इस चीठी में मेरे विषय में भी कहा है कि यदि किसी जरूरी काम में न फँसे हो तो तुम भी दो दिन के लिये साथ आना, मगर मैं तो इस समय वहाँ

नहीं जा सकता, हां यदि हो सका तो दो चार दिन बाद आऊँगा। तुम जाने की तैयारी करो, मैं भी अब गोपालसिंह के साथ जाता हूँ।

सूर्य को दो चार बातें और भी बताने तथा इन्दिरा को प्यार करने के बाद इन्द्रदेव बाहर निकले और अपने ससुर दामोदरसिंह के भेजे हुए ऐयारों से मिले, साहब सलामत कर कुशल-मंगल का हाल पूछा तथा कुछ देर तक बातें करते रहे, इसके बाद यह कह कर कि मुझे एक बड़े ही जरूरी काम से इसी समय बाहर जाना है और मैं ज्यादे देर तक यहां ठहर नहीं सकता उनसे बिदा हुए कपड़े पहिनने के बाद बगीचे में पहुँचते ही गोपालसिंह ने उनसे कहा, "आपने तो बहुत देर लगा दी !"

इन्द्र०। जी हां जमानिया से मेरे ससुर ने आदमी भेज मेरी स्त्री और लड़की को तुरत बुलाया है और इसी समय उनको जाना होगा। इसी कारण मुझे कुछ देर हो गई, मगर कोई हर्ज नहीं, अब मैं सब तरह से खाली हूँ, आप चलिये।

इन्द्रदेव और गोपालसिंह कैलाश-भवन के बाहर निकले। कुँअर गोपालसिंह जिस घोड़े पर वहाँ आये थे उसके बगल ही में इन्द्रदेव की सवारी के लिये भी एक तेज घोड़ा तैयार खड़ा था, दोनों सवार हुए और तेजी के साथ अजायबघर की तरफ रवाना हुए।

बारहवाँ बयान

सन्ध्या के कोई सात या आठ बजे होंगे। जमानिया के दारोगा साहब अपने लम्बे चौड़े और शैतान की आँत की सूरत वाले मकान के एक भीतरी कमरे में बैठे अपने प्रिय मित्र जैपालसिंह से कुछ बातें कर रहे हैं। उनसे थोड़ी दूर हट कर एक और अधेड़ उम्र का आदमी बैठा है जिसकी छोटी छोटी चमकदार आँखें, पतली नाक और भूरे बाल के साथ ही साथ चिपटा चेहरा साफ बता रहा है कि यह भी दारोगा की ही मंडली में शामिल रहने लायक कोई आदमी है।

दारोगा अपने बगल में बैठे जैपाल की तरफ झुका हुआ गौर से कुछ देख रहा है जो एक छोटी चौकी के सामने बैठा एक कागज पर महीन अक्षरों में कुछ लिख रहा है। आस पास में और कई कागजात तथा चीठियाँ इत्यादि फैली हुई हैं।

लिखना समाप्त कर जैपाल ने उस कागज को एक बार गौर से देखा और तब दारोगा के हाथ में देकर कहा, "लीजिये, देखिये! मैं तो समझता हूँ यह लिखना मुनासिब होगा।"

दारोग ने कागज हाथ में ले खूब गौर से पढ़ा और तब सिर हिला कर कहा, "नहीं यह ठीक नहीं, इससे जाहिर होगा कि मै खुद मामले में पड़ा चाहता हूँ। ऐसा नहीं होना चाहिये, तुम ऐसे ढङ्ग से लिखो जिसमें यह जाहिर हो कि मैं हेलासिंह के इस विचार को जानता तक नहीं और न ऐसा करने की मेरी इच्छा है, हाँ कुछ लालच दिलाने पर मैं उसकी बात मान सकता हूँ।

जैपाल ने "बहुत अच्छा" कह कर वह कागज दारोगा के हाथ से ले लिया और दूसरा कागज सामने रख कर कुछ देर सोचता रहा इसके बाद यह मजमून उस पर लिखा :—

"मेरे प्यारे दोस्त हेलासिंह,

आपका पत्र पहुँचा। मैं इस काम का उद्योग कर रहा हूँ, मगर इस काम में हद से ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। खुल्लम खुल्ला तो आपकी लड़की की शादी कुँवर गोपालसिंह से नहीं हो सकती क्योंकि गोपालसिंह को आपकी लड़की का विधवा होना मालूम है। हाँ उनके दारोगा साहब अगर हमारे साथ मिल जायँ तो कोई तर्कीब निकल सकती है, लेकिन उसमें यह कठिनाई है कि दारोगा साहब लालची हैं और आप गरीब।

रघुबरसिंह।"

दारोगा ने इस चीठी को लेकर पढ़ा और कुछ गौर करके कहाँ, 'हाँ यह ठीक है, मगर इसमें दो एक बात दुरुस्त करनी होगी। एक तो नाम

के आगे राजा का शब्द होना चाहिये, दूसरे मेरे नाम के आगे से साहब का शब्द निकल जाना चाहिये।'

"बहुत खूब" कह जैपाल ने दारोगा के कहे मुताबिक ठीक कर दिया और तब उसे एक साफ कागज पर लिखने के बाद दारोगा को पढ़ने के लिए दिया। दारोगा ने पुनः ध्यान से पढ़ा और तब कहा, "हां, बस ठीक है, इसे लिफाफे में बन्द कर अभी बेनीसिंह के हवाले करो कि इसे हेला-सिंह के पास पहुँचावे।"

जैपालसिंह ने चीठी लिफाफे में बन्दकर जोड़ पर अपनी अँगूठी से मोहर कर दी और तब उसे हाथ में ले बाहर चला गया। दारोगा ने वे दोनों पहिली चीठियाँ जो जैपाल ने लिखी थीं शमादान में लगा कर जला दीं और तब उस आदमी की तरफ घूमा जो उससे थोड़ी दूर पर बैठा हुआ था।

दारोगा०। हाँ कहिये वैद्यजी, आपने क्या सोचा?

वैद्यजी०। जी, इसमें सोचना क्या है, मैं तो आपका ताबेदार ही हूँ, जो आज्ञा दीजिये करूँगा।

दारोगा०। नहीं मोहनजी, सो न सोचिये, मैं जबर्दस्ती आपसे कोई काम नहीं कराया चाहता। मगर साथ ही आपको यह भी समझ रखना चाहिये कि अपनी प्रतिज्ञानुसार अब आप पीछे नहीं हट सकते और न ऐसा करने में आप का कल्याण ही है। अब हम लोगों के साथ ही रहने में आपका शुभ है।

मोहन०। जो हाँ सो तो मैं देखता हूँ मगर (रुकते हुए) आप समझते ही हैं कि यह कैसा जान जोखिम का काम है और इसमें...

दारोगा०। हाँ हाँ आप कहिये, रुकिये मत।

मोहन०। इस किस्म की चीजों और दवाइयों के बनाने में खर्च भी बहुत पड़ता है। दवाइयाँ तो मुझे ऐसी ऐसी मालूम हैं कि जिसका कोई

हिसाब नहीं, एक से एक तेज जहर और मारण की चीजें मैं जानता हूँ और बना सकता हूँ मगर रुपये की पूरी मदद होनी चाहिये।

दारोगा०। (एक आलमारी के पास जा और उसमें से अशर्फियों का एक तोड़ा निकाल महोनजीके सामने रख कर) लीजिये, यह एक हजार अशर्फियाँ हैं। इन्हें आप जिस तरह चाहिये खर्च कीजिये और काम में लाइये। यदि घट जाय तो फिर मुझसे कहिये। और साथ ही यह भी याद रखिये कि दारोगा ऐसा आदमी नहीं है जो अपने वादे से फिर जाय। आप खूब समझ रखिये कि महाराज के मरने के बाद आप ही राजवैद्य माने जायँगे। और यद्यपि इस समय भी आपकी राजदर्बार में अच्छी इज्जत और कदर है पर उस समय धन दौलत में आपका मुकाबिला करने वाला फिर कोई भी दिखाई न देगा। आप किसी तरह का भी शक या तरद्दुद न करें, मैं आप पर किसी किस्म की जोखिम न आने दूंगा। मगर बात यही है कि जहर वैसा ही तेज और बे मालूम होना चाहिये जैसा मैंने आपसे कहा है।

मोहन०। बेशक ऐसा ही होगा, पहिले आप परीक्षा करके देख लीजियेगा तब उसे इस्तेमाल कीजियेगा। (जैपाल की तरफ देख कर, जो अब बाहर से लौट आया था) आप इन्हीं से पूछ लीजिये कि जहर इत्यादि के मामलों में मै कैसा सिद्धहस्त हूँ।

जैपाल०। बेशक यह तो मै कहूँगा। (दारोगा की तरफ देख कर) एक बात इस समय आश्चर्य की हुई है। कुँअर गोपालसिंह कल दोपहर के कहीं गये हुए इस समय लौटे हैं और आते ही उन्होंने अपना खास आदमी आपको बुलाने के लिए भेजा है जो इस समय बाहर दर्वाजे पर खड़ा है और कहता है कि आपको अपने साथ लेकर आने का हुक्म है।

दारोगा०। (चौंक कर) गोपालसिंह ने मुझे बुलाया है। कहीं... (रुक कर) तो तुमने उस आदमी से कह नहीं दिया कि मैं कल से बीमार पड़ा हुआ हूँ और घर के बाहर नहीं निकल सकता।

जैपाल० । मैंने कहा मगर वह किसी तरह नहीं मानता, कहता है कि मुझे सख्त हुक्म है जिस तरह हो उनको लेकर आओ । वहाँ दस मिनट से ज्यादा ठहरना न होगा ।

दारोगा० । खैर, लाचारी है, जाना ही पड़ेगा ! (मोहनजी से) आप भी मेरे साथ ही चलें ! (जैपाल से) तुम मेरे लौटने तक यहाँ ही रहना ।

दारोगा उठ खड़ा हुआ और कपड़ा पहिनने के बाद वैद्यजी का हाथ पकड़े काँखता कूँखता मकान के बाहर निकला, दर्वाजे पर दो घोड़ों का तेज रथ तैयार था जिस पर वह मोहनजी के साथ बैठ गया और गोपालसिंह का आदमी आगे बैठा । रथ तेजी के साथ महल की तरफ रवाना हुआ ।

थोड़ी ही देर में रथ महल की ड्योढ़ी पर जा पहुँचा जहाँ पूछने से मालूम हुआ कि कुँअरसाहब खास अपने कमरे में हैं, और कह गये हैं कि दारोगा साहब आते ही उनके पास पहुँचाये जायँ, अस्तु मोहनजी को साथ लिए और उनका हाथ थामे धीरे धीरे चलता हुआ दारोगा गोपालसिंह के कमरे में पहुँचा जहाँ वे इस समय बड़ी ही बेचैनी के साथ इधर उधर टहल रहे थे ।

दारोगा को देखते ही गोपालसिंह झपट कर उनकी तरफ बढ़े मगर उसकी हालत देख रुक कर बोले, "हैं ! यह आपकी क्या हालत है ! क्या आप कुछ बीमार हैं !"

दारोगा० । (रुक रुक कर) जी हाँ, परसों से मेरी तबियत बहुत ही खराब हो रही है । दस दस बीस बीस मिनट पर कै और दस्त होते हैं, बीच बीच में मूर्छा भी आ जाती है ये बेचारे वैद्यजी कल से बराबर मेरे... साथ...हैं...मैं ज्यादा...खड़ा...नहीं...

कहता कहता दारोगा जमीन पर बैठ गया और तब लेट गया । उसकी आँखें बन्द हो गईं और वह जोर जोर से साँसें लेने लगा । वैद्यराज ने यह हाल देख झपट कर एक शीशी दारोगा के नाक से लगाई और कुछ

देर सुंघाते रहे इसके बाद अपनी जेब से डिबिया निकाल उसमें से एक प्रकार की सफेद गोली निकाली और बड़ी मुश्किल से दारोगा का मुंह खोल उसमें डाल दी फिर शीशी सुँघाने लगे। बड़ी देर के बाद किसी तरह दारोगा को होश आया और वह धीरे धीरे उठ कर बैठ गया।

गोपाल०। (मोहनजी से) क्या परसों से यही हालत है ?

मोहन०। जी हाँ, परसों से यही हालत है मगर अब कुछ अच्छा मालूम होता है। पहिले तो आध आध घण्टे तक इसी तरह मूर्छा रहा करती थी। इस समय भी बड़ी कठिनता से ये बेचारे यहाँ तक आये हैं।

दारोगा०। (धीमी और कमजोर आवाज में) आपकी क्या आज्ञा है, मै इस अवस्था में भी आपका हुक्म बजा लाने के लिये तैयार हूँ।

गोपाल०। नहीं आपकी ऐसी हालत देख कर मैं भला आपको क्या काम बता सकता हूँ मैंने आपको केवल यह जानने के लिये बुलाया था कि महाराज से अजायबघर की ताली पाकर आप वहाँ फिर कभी गये थे या नहीं ?

दारोगा०। महाराज ने मुझ दास पर बड़ी कृपा की जो अजायबघर ऐसा अद्भुत स्थान मुझे रहने के लिये दे दिया। मै वहाँ जाने और अपने रहने इत्यादि का इन्तजाम करने वाला था पर महाराज के पास से लौटते ही इस कम्बख्त बीमारी में पड़ गया कि जान बचने की भी कोई आशा नहीं दिखाई पड़ती।

मोहन०। नहीं नहीं दारोगा साहब ! आप घबड़ाइये नहीं, अब किसी तरहका खतरा नहीं है। मैं इस बात का जिम्मा लेता हूँ कि अब आपको इस बीमारी से डर नहीं है और तीन चार दिन के अन्दर ही आप पूरी तरह से आरोग्य हो जायँगे।

गोपाल०। (मोहनजी से) बेशक आपको ऐसी ही चेष्टा करनी चाहिये। यदि ये शीघ्र ही अच्छे हो गये तो मैं बहुत प्रसन्न हूँगा और आपको अच्छा इनाम मिलेगा।

मोहन० । (आशीर्वाद देकर) आपकी दया से किसी प्रकार का डर नहीं है पर अब इनको आराम करना चाहिये क्योंकि इस बीमारी में ज्यादा देर बैठना या बातें करना अच्छा नहीं होगा !

गोपाल० । नहीं नहीं, अब आप जायँ, यहाँ बैठने की कोई जरूरत नहीं है जिस सवारी पर आये हैं वह बाहर तैयार ही होगी । (दारोगा को अपने हाथ से उठाते हुये वैद्यजी की तरफ घूम कर) ऐसा तो नहीं है कि उस दिन मेरी सहायता करने में इनको जो चोट लगी उसी के कारण यह तकलीफ उठानी पड़ी है ।

मोहन० । जी हाँ खून ज्यादे निकलने और कमजोरी आ जाने के सबब से ही यह हाल हुआ है ।

गोपाल० । तो बस आप लोग जायँ ।

गोपालसिंह दारोगा के साथ कमरे के बाहर तक आये और जब वह काँखता कूँखता वैद्यराज का हाथ पकड़े चला गया तो मन ही मन यह कहते लौटे, "जब इनका परसों से यह हाल हो रहा है तो इनकी कोई कार्रवाई तो हो नहीं सकती । जरूर कोई और ही बात है और किसी दूसरे ही कारण से चाचाजी और चाचीजी गायब हो गई हैं । हाय ! अब मैं क्या करूँ और कहाँ उन्हें ढूँढूँ !'

तेरहवाँ बयान

जमानिया वाले अपने मकान के एक कमरे में बैठी नागर एक हसीन आदमी के साथ बातें कर रही है ।

इस आदमी की उम्र लगभग तीस वर्ष के होगी, साफ गोरा रंग, ऊँचा माथा और बड़ी बड़ी आँखें बता रही हैं कि यह जरूर किसी ऊँचे घराने का आदमी है और साथ ही उसकी बेशकीमती पोशाक उसके अमीर होने की भी सूचना दे रही है । खूबसूरती के साथ ही उसके बदन की सुडौली पर ध्यान देने से वह ताकतवर भी मालूम होता है और

सामने रक्खी हुई तलवार उसके बहादुर होने में कोई सन्देह नहीं रहने देती। इस समय वह आदमी तकिये के सहारे लेटा हुआ नागर के चेहरे की तरफ देख रहा है और मुस्कुराहट के साथ हँसता हुआ उससे बातें भी करता जा रहा है।

नागर के चेहरे पर इस समय एक प्रकार की बेचैनी छाई हुई है जिसको दूर करने की वह बहुत चेष्टा कर रही है। यद्यपि उस आदमी की बातों का जवाब वह बड़ी ही नजाकत और मुस्कुराहट के साथ दे रही है तथापि ऐसा मालूम होता है कि यह मुलाकात या बातचीत का ढंग उसे पसन्द नहीं है अथवा वह इस आदमी की बातों का जवाब दिया नहीं चाहती।

बातें करते करते हँस कर उस आदमी ने नागर का पंजा पकड़ लिया और कहा, "तो तुमने फिर मेरी बात उड़ा दी, भला बताओ तो सही कि 'खून से लिखी किताब' क्या है या किस बला का नाम है? क्या वास्तव में वह कोई किताब है जो खून से लिखी गई है?

नागर०। मैं कह नहीं सकती क्या बात है, उसके विषय में मैं कुछ नहीं जानती।

आदमी०। वाह! तुम्हीं ने तो इसका जिक्र मुझसे किया और अब तुम्हीं कहती हो कि मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती! तुम्हारी यही बात तो मुझे अच्छी नहीं लगती। अच्छा यही बताओ तुमने यह नाम कहाँ सुना?

नागर०। (कुछ रुक कर) मैंने एक आदमी से सुना था।

आदमी०। किस आदमी से?

नागर०। आप उसे नहीं जानते।

आदमी०। वह रहता कहाँ है!

नागर०। मिर्जापुर में।

आदमी०। (हँस कर) गदाधरसिंह तो नहीं!!

नागर० । (चिढ़ कर) आप फिर उसी कम्बख्त का नाम लेते हैं । मैं आपसे कसम खाकर कह चुकी कि मैंने उस दुष्ट का साथ बिल्कुल छोड़ दिया है और इधर बरसों से उसकी शक्ल तक नहीं देखी है फिर भी न जाने क्यों आप बार बार उसी का नाम लेते हैं ।

आदमी० । खैर जाने दो.....

नागर० । जाने क्या दूं, आप बार बार उसी का जिक्र करते हैं और कोई बात ही आपको नहीं आती । अच्छा यह बताइये कि आपका यहाँ आना क्योंकर हुआ ?

आदमी० । बस तुम्हीं को खोजता हुआ तो आया हूँ, बड़ी मुश्किल से किसी तरह तुम्हारा पता लगा है ! (कुछ ठहर कर) तुमने भी न जाने कितने स्थान बदले हैं । कुछ दिन मिर्जापुर की धूल उड़ाई, कुछ दिन काशी के बाजार की सैर की, अब जमानिया की हवा खा रही हो, एक जगह टिक के तो तुमसे रहा ही नहीं जाता, ऐसा भागी भागी क्यों फिरती हो ?

नागर० । (मुस्कुराती हुई) आप ऐसे कद्रदानों को खोजती फिरती हूँ ।

आदमी० । ओह, यह बात है ! अब मैं समझा !! अच्छा तो यहाँ भी आपको कोई कद्रदान मिल गया तभी आप इतने दिनों से जमी हुई हैं !! खैर, देखो तुमने फिर बात उड़ा दी, बताओ तो सही कि खून से लिखी किताब कौन सी है ?

नागर० । भाई मैं कह चुकी कि उसके विषय में मैं ज्यादा कुछ नहीं जानती, वह शायद किसी तिलिस्म से सम्बन्ध रखने वाली किताब है ।

आदमी० । तिलिस्म ! तिलिस्म क्या चीज होता है ? क्या वही तो नहीं जिसके विषय में कहा जाता है कि यहाँ के महाराज भी किसी भारी तिलिस्म के मालिक हैं ।

नागर० । हाँ कुछ ऐसी ही बात है—मैं खुद इस विषय में कोई

जानकारी नहीं रखती। (उस आदमी की उँगली में पड़ी एक अँगूठी की तरफ देख के) यह अँगूठी तो नई मालूम होती है, जरा निकालो तो सही देखूँ कैसी है।

"तुम्हारे ही लिए तो इसे लाया हूँ!" कह कर उस आदमी ने वह अँगूठी अपनी उँगली से उतार नागर की उँगली में पहना दी। नागर ने विचित्र निगाह से उसकी तरफ देखा और तब अँगूठी को देखती हुई बोली, "बेशक बहुत ही खुशरंग मानिक है, कीमती होने में भी कोई शक नहीं है। क्या सचमुच इसे मेरे ही लिए लाये हो?"

आदमी०। क्या मै झूठ कह रहा हूँ? (हँस कर) मैंने सोचा कि आज बहुत दिन बाहर रहने के बाद दर्बार में चलना हो रहा है, कुछ न कुछ नजर के लिए जरूर ले चलना चाहिये, नहीं तो खफगी होगी। अच्छा मेरी बात का पूरा जवाब तो दे लो – वह खून से लिखी किताब पढ़ने से क्या आदमी तिलिस्म का मालिक बन जाता है।

नागर०। नहीं, मालिक क्या हो जायगा? हाँ, उसे तिलिस्म मामलों में कुछ जानकारी जरूर हो जायगी, वहाँ की सैर करने योग्य हो जायगा और यदि चाहे तो कुछ अंश तोड़ कर वहाँ के धन दौलत पर भी कब्जा कर सकेगा।

आदमी०। ऐसा! तब तो वह बड़ी कीमती किताब है; ऐसी चीज पर तो जरूर कब्जा करना चाहिये। वह है किसके पास?

नागर०। राजा बीरेन्द्रसिंह के पास है।

आदमी०। राजा बीरेन्द्रसिंह के पास! तब तो उसका मिलना असम्भव है।

नागर०। असम्भव तो नहीं हाँ कठिन अवश्य है। आखिर उसके लिये कुछ लोग कोशिश तो कर ही रहे हैं?

आदमी०। ऐसा! सो कौन?

नागर०। (कुछ रुक कर धीरे से) एक तो गदाधरसिंह।

आदमी० । गदाधरसिंह ! क्या वह रिक्त...खून से लिखी किताब पाने की कोशिश कर रहा है ?

नागर० । हां मगर इससे यह न समझियेगा कि मैंने खुद उसी की जुबानी यह हाल सुना है, उसकी तो बरसों से मैंने सूरत भी नहीं देखी, यह हाल मैंने एक दूसरे ही आदमी से सुना है जैसा कि मैं पहले कह चुकी हूँ ।

आदमी० । हां हां, नहीं तो क्या तुम मुझसे झूठ बोलोगी ? अच्छा तो गदाधरसिंह उस किताब को लेकर क्या करेगा ?

नागर० । मालूम नहीं—(रुक कर) शायद अपनी जोरू को तिलिस्म की सैर करावेगा ।

आदमी० । अच्छा ! उसकी जोरू को तिलिस्म की सैर का शौक कब से लगा !! वह तो बड़ी सीधी सादी औरत थी !!

नागर० । अजी वह ब्याहता नहीं, यह नई औरत जो उसने काशीजी में रक्खी हुई है । वह बड़ी खराब औरत है और उसके दिल में तिलिस्म की सैर का शौक उठना कोई ताज्जुब नहीं है ।

आदमी० । क्या गदाधरसिंह ने काशी में और कोई औरत भी रक्खी हुई है ? उससे कुछ लड़का बाला है ?

नागर० । एक लड़का थोड़ी ही उमर का है, मगर मैं ठीक ठीक कह नहीं सकती कि कै बरस का है ।

आदमी० । खैर—तो गदाधरसिंह उस किताब को लेने की फिक्र में हैं ? (कुछ देर चुप रह कर धीरे से) अच्छा सच बताना, देखो झूठ न बोलना, यहां के दारोगा साहब आते हैं या नहीं ?

नागर० । हां, कभी कभी आते तो हैं क्यों ?

आदमी० । मैं सोचता हूँ कि ऐसी किताब इनके बड़े मसरफ की होगी और जब तुमसे उनसे मुलाकात होती है तो अवश्य तुमने उनसे भी इस

किताब का जिक्र किया होगा, बल्कि ताज्जुब नहीं कि दारोगा साहब ने उस किताब के लिये तुमसे दरखास्त भी की हो ?

नागर० । (चौंक कर) क्या कहा ! मैं आपका मतलब नहीं समझी ?

आदमी० । मैंने कहा कि शायद दारोगा साहब ने तुम पर उस किताब को गदाधरसिंह से ले लेने का भार सौंपा हो ?

नागर० (हँस कर बात उड़ाने के ढग से) वाह क्या खूब ! आप भी वही मसल करते है कि गॉव बसा ही नहीं और लुटेरे पहले से आ पहुँचे । अजी पहिले गदाधरसिंह के हाथ में तो वह किताब लग लेने दीजिये फिर देखा जायगा ।

आदमी० । अच्छा तो अभी गदाधरसिंह के हाथ में किताब नहीं लगी है । नहीं तो अवश्य तुम्हें मालूम होता ।

नागर० । (रुकते हुए) यह भला मैं क्या जान सकती हूँ कि वह किताब गदाधरसिंह के हाथ लगी या नहीं और फिर मैं इस झगड़े में पड़ने ही क्यों लगी ? मुझसे इससे वास्ता ही क्या ! किसी की किताब किसी के पास, मुझसे मतलब !

वह आदमी हँस पड़ा मगर कुछ बोला नहीं । कुछ देर तक दोनों चुप रहे इसके बाद नागर ने पूछा :—

"अब रात हो चली है यदि कहिये तो आपके लिए भोजन का सामान मँगाऊँ ?"

आदमी० । नहीं, अब तो मैं जाऊँगा । क्या कहूँ इतने दिनों के बाद तुम्हें देखा है ? इस समय यही जी चाहता है कि तुम्हारे ही पास बैठा रहूँ और बातें करता रहूँ । मगर क्या करूँ ? इस समय एक जरूरी काम है जिसके सबब से मै रुक नहीं सकता, अब फिर किसी दिन आऊँगा तो तुम्हारी मिहमानदारी कबूल करूँगा ।

इतना कहकर वह आदमी उठ खड़ा हुआ, सामने रक्खी हुई तलवार उठा ली और दर्वाजे की तरफ बढ़ा, नागर उसकी खातिरदारी के लिये

सामनेवाले नजरबाग तक उसे पहुँचाने आई और जब तक वह दर्वाजे के बाहर न निकल गया उसकी तरफ देखती रही, इसके बाद यह कहती हुई लौटी, "सूरत शक्ल तो जरूर पहिचानी हुई सी मालूम होती है पर मुझे कुछ भी याद नहीं आता कि कब और कहाँ इसको देखा है। खैर इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह रुपयेवाला है और मुझे इससे बहुत कुछ फायदा हो सकता है।"

चौदहवां बयान

नागर के मकान से निकल कर वह आदमी लगभग पचास कदम तक सीधा बढ़ता चला गया, तब रुका और एक मकान की आड़ में खड़ा हो कर कुछ सोचने लगा।

थोड़ी ही देर बाद एक रथ जिसमें पर्दे इत्यादि लगे रहने के कारण कोई जनानी सवारी के होने का गुमान हो सकता था नागर के मकान के दर्वाजे पर आकर रुका, फाटक खोला गया और वह रथ अन्दर चला गया, इसके बाद नौकरों ने फिर फाटक बन्द कर लिया।

थोड़ी देर तक और उस जगह रुकने बाद वह आदमी वहाँ से हटा मगर उसी समय किसी ने उसके कन्धे पर हाथ रक्खा, उसने घूम कर देखा और साथ ही प्रसन्नता के साथ कहा, "हैं प्रभाकरसिंह! तुम भी आ गये!"

प्रभाकर०। हाँ, मगर यहाँ रुकने या बात करने का मौका नहीं है, चलो बढ़े चलो।

दोनो आदमी वहाँ से रवाना हुए, थोड़ी दूर निकल जाने बाद प्रभाकरसिंह ने अपने साथी से कहा, "यहाँ क्या नागर के पास गये थे?"

पाठकों को ज्यादा देर तक तरद्दुद में न डाल कर हम कह देते हैं कि ये महाशय जिन्हें आप नागर के मकान में देख चुके हैं वास्तव में मेघराज (दयाराम) हैं और किसी धुन में पड़े अपना अद्भुत स्थान छोड़

इस समय जमानिया में घूम रहे हैं, तथापि यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि उन्होंने अपनी सूरत भली भाँति बदली हुई है और इन्द्रदेव के दिये हुए ऐयारी तथा तिलिस्मी सामान तथा हर्बों से भी भलीभाँति सुसज्जित हैं।

प्रभाकरसिंह की बात सुन कर मेघराज ने कहा, "हाँ, नागर ही से मिलने आया था। मगर भाई इसमें शक नहीं कि नागर परले सिरे की धूर्ता है। उसके पास आकर और उसकी बातें सुन कर यदि मुझे पिछली बातों का ध्यान न रहता तो मैं अवश्य उसके फन्दे में फिर पड़ जाता, बातें बनाने में तो वह ऐसी चन्ट है कि नाक पर मक्खी नहीं बैठने देती।"

प्रभा०। (हंस कर) क्यों, सो क्यों?

मेघ०। मैंने उससे पूछा कि गदाधरसिंह आता है या नहीं तो साफ मुकर गई और कहने लगी मैंने तो बरसों से उसका मुँह नहीं देखा।

प्रभा०। झूठी है, गदाधरसिंह बराबर उसके यहाँ आया जाया करता है!!

मेघ०। हाँ सोई तो, मगर उससे मैंने कितनी दफे घुमा फिरा कर पूछा लेकिन उसने न कबूल किया। अच्छा कहाँ जाती है, अभी तो उसे मुझसे बहुत कुछ वास्ता पड़ना है और कई बातों का पता हम लोगों को उसी के जरिये से लगेगा। उसको अपने कब्जे में रखना जरूरी है।

प्रभाकर०। मगर कहीं ऐसा न हो कि तुम फिर उसके फंदे में फँस जाओ।

मेघ०। अब क्या बार बार मुझसे बेवकूफी होती रहेगी? वह तो कहो कि पहले मैं नहीं जानता था कि कम्बख्त ऐसी खोटी है नहीं तो क्या यह मुझे फँसा सकती थी। अभी तो मैंने पिछली बातों का बदला उससे लेना है। अब जब चाचाजी की दया से मैं अपने दुश्मनों से बदला लेने के योग्य हो गया हूँ तो ऐसा अच्छा मौका हाथ से जाने दूँगा? तब

इस बात का मुझे अवश्य खयाल रखना पड़ेगा कि मेरी किसी कार्रवाई से उनकी बदनामी न हो और वे किसी मामले में प्रगट रूप से घसीटे न जायँ! अच्छा यह बताओ कि तुम यहाँ कहाँ आ पहुँचे? मैंने चलते समय पूछा था कि चलोगे या नहीं तब तो तुमने चलने से इन्कार किया था?

प्रभा०। हाँ कुछ ऐसी ही बात हो गई जिससे यकायक मुझे अपना इरादा बदल देना पड़ा और यहाँ आने की जरूरत पड़ गई, और सो भी ऐसी जल्दी में कि न तो मैं अपनी सूरत ही बदल सका और न कोई हथियार ही ले सका। केवल एक खञ्जर मेरे पास है।

मेघ०। खैर हथियार की चिन्ता नहीं, मेरे पास दो तलवारें हैं जिनमें से एक तुम ले सकते हो। हाँ सूरत बदलने का अवश्य कोई इंतजाम करना चाहिये क्योंकि इस शहर में यदि तुम्हें दारोगा या गदाधरसिंह के किसी आदमी ने देख लिया तो मुश्किल होगी मगर कठिनता यह है कि मेरे पास सूरत बदलने का कोई सामान इस समय मौजूद नहीं है।

प्रभा०। ऐयारी का बटुआ मैं अपना लेता आया हूँ पर सूरत बदलने का मौका अभी तक मुझे नहीं मिला।

मेघ०। तब फिर क्या है, जब बटुआ तुम्हारे पास है तो तुम पहिले सूरत बदल लो पीछे कोई काम करो। असली सूरत में यहाँ घूमना फिरना ठीक नहीं है।

प्रभा०। मगर मुश्किल तो यह है कि जिस काम को करने के इरादे मैं यहाँ आया हूँ उसके लिए एक साथी की जरूरत है और हमारा कोई साथी इस समय यहाँ दिखाई नहीं देता, यदि तुम दो कुछ देर के लिए मेरे साथ हो जाते तो बड़ा अच्छा था।

मेघ०। हाँ हाँ मैं तो तैयार ही हूँ, मेरा अपना काम हो गया, अब

जब तक के लिये कहो तुम्हारे साथ रह सकता हूँ। मगर तुम्हारा काम क्या है सो तो कहो।

प्रभा०। अब सूरत बदल कर ही मै तुम्हें बताऊँगा, क्योंकि गदाधरसिंह का मुझे भी डर लगा हुआ है कि कहीं वह देख और पहिचान न ले।

मेघराज०। हाँ, उस दुष्ट की तरफ से होशियार ही रहना ठीक है। वह बड़ा ही काइयाँ है। और किस समय कहाँ होगा इसका तो कुछ पता ही नहीं रहता।

प्रभा०। तो अगर मैं गदाधरसिंह ही की सूरत बन जाऊँ तब?

मेघराज०। (हँस कर) तुम्हारी खुशी, मगर यदि वह तुम्हें अपनी सूरत में देख लेगा तो तुरत चौकन्ना हो जायगा।

प्रभा०। हाँ, लेकिन दिल्लगी भी खूब होगी! मगर वह हम लोगों का कर ही क्या लेगा! हम लोग कुछ उससे कमजोर थोड़े ही हैं।

बातें करते हुए ये लोग अब शहर के बाहर निकल आये थे। रात का समय हो जाने के कारण इस जगह सड़क पर चलनेवाला कोई दिखाई नहीं देता था अस्तु सूरत बदलने के लिये यह स्थान उत्तम समझ और पास ही एक कुँआ भी देख प्रभाकरसिंह रुक गये और बोले, "बस यही जगह ठीक है, तुम जरा इसी जगह रुके रहो तो मैं कूएँ के पीछे जाकर अपनी सूरत गदाधरसिंह की सी बनालूँ सामान मेरे पास है।

मेघराज के "अच्छी बात है मैं यहाँ खड़ा रहता हूँ" कहने पर प्रभाकरसिंह कुँए पर चढ़ गए और पानी खींच हाथ मुँह धोने के बाद आड़ में जा सूरत बदलने का उद्योग करने लगे।

प्रभाकरसिंह को गये कठिनता से कुछ सायत बीती होगी कि मेघराज अपने पीछे किसी की आहट पा चौंके और घूमने पर उन्हें पेड़ों की आड़ में खड़ा एक आदमी दिखाई पड़ा जो हाथ के इशारे से इन्हें अपनी तरफ बुला रहा था। तलवार के कब्जे पर हाथ रख मेघराज उसकी

तरफ बढ़े और उससे दो तीन कदम के फासले पर खड़े हो गौर से उस की सूरत देखने लगे मगर अन्धकार के कारण कुछ ठीक ठीक मालूम न पड़ा।

पास आने में मेघराज को हिचकते देख उस आदमी ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा, "कोई डर नहीं है, पास आ जाओ।" मैं हूँ 'चन्द्रोदय !'

"चन्द्रोदय" शब्द सुनते ही मेघराज प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़े और बोले, "क्या बात है ? आप यहाँ कैसे ?"

"चन्दोदय" ने झुक कर कोई बात मेघराज के कान में कही जिसके सुनते ही वह चौंक पड़े और कुछ पूछना ही चाहते थे कि उस आदमी ने फिर धीरे से कहा, 'बस इस समय बात करने का मौका नहीं है, मगर कोई घबड़ाने की बात भी नहीं है। अब तुम होशियार हो गये, बचे रहना और कोई तिलिस्मी हर्बा अपने पास से जाने न देना, मुझे हर दम अपने पास ही समझना क्योंकि मैं देखना चाहता हूँ कि अद्वितीय शिक्षक की शिक्षा और मेहनत से तुमने कहाँ तक लाभ उठाया है।'

इतना कह वह आदमी पीछे हट कर अन्धकार में मिल गया और मेघराज भी कुछ सोचते हुए अपने स्थान पर लौट कर प्रभाकरसिंह के आने का इन्तजार करने लगे।

थोड़ी ही देर बाद प्रभाकरसिंह एक हाथ में छोटी सी जलती हुई लालटेन और दूसरे हाथ में पानी से भरा हुआ लोटा लिये हुए गदाधरसिंह की सूरत बने आ पहुँचे और लालटेन ऊँची कर अपना चेहरा दिखाते हुए मेघराज से बोले "क्यों, ठीक गदाधरसिंह की सूरत बनी है या नहीं ?"

मेघ०। बेशक अब आप बिल्कुल गदाधरसिंह ही मालूम होते हैं। अगर आपको पहिले न देख चुका होता तो यही समझता कि आप वास्तव में गदाधरसिंह हैं और मुझे धोखा देने के लिये आये हैं।

प्रभाकर० । आपके लिये भी मैं लोटे में पानी लेता आया हूँ, यदि आप अपना मुँह धोना चाहें तो धो सकते हैं ।

मेघराज ने हाथ बढ़ा कर लोटा ले लिया मगर फिर कुछ सोच कर बोले, "नहीं, मुँह धोने से चेहरे का रंग छूट जायगा, और पुनः ठीक करना पड़ेगा तो भी मैं यह लोटा अपने साथ लिये चलता हूँ शायद कहीं पानी की जरूरत पड़ जाय तो काम देगा ।"

प्रभाकर० । जैसी आपकी मर्जी ।

मेघ० । अच्छा तो अब आप अपना काम बताइये, कहाँ जाया चाहते हैं या क्या किया चाहते हैं ? मैं आपके साथ हूँ ।

प्रभा० । बहुत अच्छा तो आइये ।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने अपने हाथ की लालटेन बुझा दी जो अबरक की थी और इस लायक थी कि मोड़ माड़कर बहुत छोटी की जा सके । उसे जेब में रखने बाद वे दाहिनी तरफ घूमे और दोनों आदमी तेजी के साथ किसी तरफ जाने लगे ।

आसमान में चन्द्रमा दिखाई नहीं पड़ते थे, पर तौ भी उन तारों की रोशनी जो आज बहुतायत से दिखाई दे रहे थे इन दोनों आदमियों को रास्ता दिखाने के लिये काफी थी । जिस तरफ ये लोग जा रहे थे उधर कोई आम राह या सड़क नहीं थी केवल पगडण्डियाँ थीं जिन पर ये दोनों आदमी तेजी के साथ चल रहे थे । आस पास में पेड़ों की कमी होने के कारण इन्हें दूर की चीजें कुछ कुछ दिखाई पड़ सकती थीं ।

लगभग आध कोस के चले जाने बाद ये दोनों एक ऐसे स्थान के पास पहुँचे जो किसी बहुत बड़े मकान या किले का हिस्सा मालूम होता था पर इस समय बिल्कुल ही टूटा फूटा और बर्बाद हो रहा था । इस जगह पेड़ों की बहुतायत होने के कारण अन्धकार भी मामूली से ज्यादा था ।

अभी तक प्रभाकरसिंह और मेघराज में किसी तरह की बातचीत नहीं हुई थी और ये दोनों चुपचाप अपनी अपनी चिन्ता में डूबे चले जाते थे

पर इस जगह पहुँच कर मेघराज रुके और बोले, हम लोग जमानिया के बाहरवाले प्रान्त में आ पहुँचे हैं जहाँ बहुत से टूटे फूटे मकानात हैं और जिनके बारे में लोगों में तरह तरह की बातें फैली हुई है कि भूत प्रेत और जिन्न इत्यादि का बास.....

प्रभा० । हाँ और इन खँडहरों का सिलसिला दूर तक चला गया है। मगर मैं अब इन्हीं खँडहरों के अन्दर जाना चाहता हूँ।

मेघराज० । (चौंककर और गौर से प्रभाकरसिंह की तरफ देखकर) सो क्यों ?

प्रभा० । इसी स्थान में जमानिया के दारोगा साहब की वह गुप्त कुमेटी हुआ करता है जिसका हाल शायद आपने भी सुना होगा।

मेघ० । (ताज्जुब से) दारोगा साहब की गुप्त कुमेटी ! वह कैसी ? तुमने कभी इसका जिक्र तो मुझसे नहीं किया !!

प्रभा० । क्या आप नहीं जानते ? हाँ, ठीक है आप क्योंकर जान सकते हैं, मुझे भी हाल ही में इसका पता लगा है।

मेघ० ! खैर तो आप उस कुमेटी का हाल चाल देखा चाहते हैं ! अच्छा तो फिर आगे बढ़िये यहाँ रुकने से क्या फायदा। मगर आप आगे ही चलिए क्योंकि मैं इस जगह का हाल बिल्कुल नहीं जानता।

आगे आगे प्रभाकरसिंह और उनके पीछे मेघराज बड़ी होशियारी के साथ कदम बढ़ाते हुए उस खण्डहर की तरफ बढ़े और उसके ऊबड़ खाबड़ तथा गिरे हुए हिस्सों पर से होते हुए जाने लगे। प्रभाकरसिंह आगे आगे सब तरह से बचते हुए इस तरह जा रहे थे मानो वे इस स्थान को पहिले भी देख चुके हैं, अथवा कई दफा आ जा चुके हैं, और इस कारण मेघराज को उनके पीछे पीछे जाने में ज्यादा तकलीफ न हुई, नहीं तो बहुत सम्भव था कि वे किसी ऊँचे या कुढ़ंगे स्थान से गिर कर अपने हाथ पैर तुड़वा डालते।

अब ये लोग उस खण्डहर के बीचोबीच के हिस्से में आ पहुँचे।

ऐसा मालूम होता था कि मानों यह किसी बड़े मकान या महल का चौक है जिसके चारो तरफ किसी समय में बहुत ही आलीशान इमारत बनी हुई होगी जो इस समय बिल्कुल बर्बाद हो रही है पर तो भी कहीं कहीं एक आध कोठरी या कमरा ऐसा था जो बिल्कुल ही बर्बाद नहीं हुआ था और इस कारण रहने लायक माना जा सकता था। स्थान स्थान पर लगे हुये छ,टे बड़े पेड़ और जंगली लताओं ने उस बीहड़ स्थान को और भी भयङ्कर बना रक्खा था।

प्रभाकरसिंह और मेघराज एक ऊँचे स्थान पर जो शायद किसी कोठरी की छत थी खड़े होकर अपने चारो तरफ देखने लगे। सब जगह सन्नाटा छाया हुआ था और घोर अन्धकार के कारण इन दोनों को इस बात का कुछ भी पता न लगता था कि हम किस स्थान पर आ गये हैं या आस पास में क्या है।

थोड़ी देर रुकने बाद प्रभाकरसिंह से कुछ पूछने के इरादे से यकायक मेघराज उनकी तरफ घूमे ही थे कि अपने सामने की तरफ एक रोशनी देख चमक कर रुक गये। उनके देखते ही देखते सामने का सब स्थान रोशनी से भर गया और कई आदमी भी चलने फिरते दिखाई देने लगे। प्रभाकरसिंह ने यह देख इशारे से उनको उसी जगह पर लेट जाने के लिये कहा और तब वह आप भी जमीन पर लेट कर बड़े गौर से उस तरफ देखने लगे।

यही स्थान जो कुछ देर पहिले एकदम अन्धकारमय और भयावना हो रहा था अब कन्दीलों और शमादानों तथा मशालों की रोशनी से जगमगाने लगा। मेघराज ने देखा कि उनके सामने की तरफ लगभग सौ कदम के फासले तथा कुछ निचाई पर एक बड़ा कमरा और दालान है जिसमें घूम फिर कर कई आदमी रोशनी तथा बिछावन का इन्तजाम कर रहे हैं।

कुछ ही देर में सब इन्तजाम ठीक हो गया और इसके बाद वे सब

आदमी जो कपड़े लत्ते से नौकर मालूम होते थे मगर सभों के चेहरे नकाब से ढँके रहने के कारण जिनका पहिचानना असम्भव था उस खंडहर के दर्वाजे के पास जा कर खड़े हो गये जो इस समय भी अच्छी हालत में था और उस जगह से जहां मेघराज और प्रभाकरसिंह छिपे हुये थे साफ दिखाई पड़ रहा था।

फाटक पर भी एक रोशनी हो रही थी जिसकी सहायता से मेघराज ने देखा कि उनमें से कुछ आदमी हाथ में नंगी तलवारें ले इधर उधर घूम फिर कर पहरा दे रहे हैं। उन्हें आश्चर्य मालूम हुआ तथा वे और भी गौर के साथ देखने लगे कि अब क्या होता है।

थोड़ी ही देर बाद दो आदमी अमीराना ढंग की पौशाक पहिने तथा हरबे लगाये आपस में कुछ बातें करते हुए फाटक पर आ मौजूद हुए। आगे आने वाले आदमी ने पहरेदारों की तरफ देख कुछ गुप्त इशारा किया जिसे देखते ही उन लोगों ने उसे झुक कर सलाम किया और एक बगल हट कर उनको अन्दर चले जाने दिया। वे दोनों अन्दर आ पहुँचे और उसी दालान में जाकर बैठ गये।

थोड़ी ही देर बाद और भी दो आदमी पहुँचे और फिर धीरे धीरे लगभग तीस पैंतीस आदमियों के उस दालान में दिखाई देने लगे मगर सभों के चेहरे नकाब से छिपे हुए थे और इस कारण बहुत गौर और विचार करने पर भी मेघराज यह न जान सके कि इन पर्दों के अन्दर कौन सी सूरतें छिपी हुई हैं।

यकायक मेघराज को अपने पीछे किसी तरह की आहट सुनाई पड़ी जिसके साथ ही वे चौंक कर उठने लगे मगर उठ न सके क्योंकि उसी समय किसी ने पीछे से कपड़े की एक मोटी चादर इनके सिर पर डाल दी जिसमें से ऐसी सड़ी बू आ रही थी कि मेघराज बर्दास्त न कर सके और धीरे धीरे बेहोश होकर जमीन में गिर पड़े।

पन्द्रहवां बयान

मेघराज को जब होश आया तो उन्होंने देखा कि वे अभी तक उसी स्थान पर है जहाँ से छिप कर उस गुप्त कमेटी का हाल देखा था पर इस समय वे अकेले ही नहीं हैं बल्कि उनके चारो तरफ बहुत से आदमी खड़े हैं और कई मशालों की रोशनी भी उस जगह का अन्धकार दूर कर रही है।

ये आदमी जो मेघराज को घेरे हुए थे लगभग दस बारह होंगे। सभों के चेहरे नकाब से ढँके हुए थे इस कारण यद्यपि उनकी सूरत तो नहीं देखी जा सकती थी पर फिर भी मेघराज को यह मालूम हो गया कि वे लोग उन्हीं में से हैं जिन्हें थोड़ी देर हुई वे नीचे वाले कमरे में पहुँचते देख चुके थे। परन्तु मेघराज ने यह भी देखा कि ये लोग दूर ही से उन्हें घेरे हुए हैं पास आने में हिचकते हैं, साथ ही उनकी तेज निगाहों ने थोड़ी ही दूर पर गिरे हुए दो बेहोश आदमियों को भी देख लिया जिनको कई आदमी होश में लाने का उद्योग कर रहे थे।

शीघ्र ही चैतन्य होकर मेघराज उठ बैठे और इसके बाद उन्होंने प्रभाकरसिंह को देखने की इच्छा से इधर उधर नजर घुमाई मगर वे कहीं दिखाई न पड़े।

मेघराज को होश में आया देख उनके चारो तरफ के आदमी कुछ और दूर हट गये मगर एक आदमी हाथ मे नंगी तलवार लिये अपने स्थान ही पर खड़ा रहा और कुछ हुकूमत की आवाज में बोला, "तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये हो ?"

मेघराज कुछ क्षण उस आदमी की तरफ देखते रहे और इसके बाद बड़ी लापरवाही के साथ बोले, "इसका जवाब हम तुमको क्यों दें।"

आदमी०। (क्रोध के साथ) तुमको मेरी बात का जवाब देना ही

पड़ेगा ! अगर सीधे से जवाब न दोगे तो हम लोग तलवार के जोर से दरियाफ्त करेंगे कि तुम कौन हो !!

मेघराज कुछ देर के लिये चुप हो रहे और इसी बीच में अपने कतव्य का भी उन्होंने निश्चय कर लिया। इसके बाद वे जमीन से उठ खड़े हुए और तब बड़ी फुर्ती के साथ अपने खाली हाथ से उन्होंने उस आदमी की नंगी तलवार पकड़ और उसे छीन कर दूर फेंक दिया। इतना ही नहीं, तलवार पकड़ते ही उस व्यक्ति का बदन काँपा और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

सब आदमी आश्चर्य के साथ मेघराज का मुँह देखने लगे क्योंकि उस तलवार से मेघराज का हाथ जख्मी होना तो दूर रहा जरा चरका तक नहीं लगा उनको आश्चर्य में पड़े देख मेघराज ने हस कर कहा, "तुम लोगों की तलवारें मेरे जिस्म के किसी हिस्से को भी नुकसान नहीं पहुँचा सकतीं बल्कि मेरे बदन को छुने की भी तुम्हारी ताकत नहीं है जिसका सबूत (जमीन पर पड़े बेहोश की तरफ बता कर) यह आदमी है।"

सब लोग आश्चर्य के साथ मेघराज को देखने लगे।

मेघ०। मैं तुम लोगों का दुश्मन नहीं हूँ मगर तुम्हारी दुश्मनी बरदाश्त भी नहीं कर सकता। खैर, तुम लोग या तो मुझे जाने दो और या फिर अपने सरदार के पास ले चलो, वहीं मुझे जो कुछ कहना होगा कह सुन लूँगा।

मेघराज की बात सभी ने स्वीकार की और दो आदमी हाथ में मशाल ले आगे आगे चलने के लिये तैयार हुए। मेघराज उनके पीछे पीछे चले पर दो ही चार कदम जाने बाद यह कह कर लौटे कि पहिले इन लोगों की बेहोशी दूर कर देनी चाहिये' और उन आदमियों के पास पहुँचे जो बेहोशी की हालत में जमीन पर गिरे हुए थे और जिन्हें अब भी कई आदमी घेरे हुए होश में लाने की चेष्टा कर रहे थे।

मेघराज को देखते ही बाकी के लोग दूर हट गये और मेघराज ने

पास जाकर कुछ खास तर्कीब के साथ उनके बदन पर धीरे धीरे हाथ फेरा जिसके साथ ही उसकी बेहोशी दूर हो गई और वे उठ कर आश्चर्य के साथ अपने चारो तरफ देखने लगे।

मेघराज फिर उस जगह न ठहरे और उन सभों के साथ शीघ्र ही उस दालान में जा पहुँचे जहाँ की कैफियत थोड़ी देर पहिले वे देख चुके थे।

बीचोबीच में एक ऊँची गद्दी लगी हुई थी। जिस पर एक नकाब-पोश सरदाराना ढङ्ग से बैठा हुआ था। उसके दोनों तरफ लगातार कई आदमी बैठे हुए थे मगर सभों के चेहरे नकाब से ढँके हुए थे। मेघराज को ले जाकर उन आदमियों ने सामने खड़ा कर दिया और आप अगल बगल हटकर खड़े हो गये।

मेघराज ने गौर के साथ अपने चारो तरफ देखा मगर अपने दोस्त प्रभाकरसिंह को वहाँ कहीं न पाया जिससे उन्हें विश्वास हो गया कि वे इन लोगों के हाथ नहीं पड़े।

गद्दी पर बैठे सरदार ने एक आदमी की तरफ देख कर कहा, "क्या ये ही वे हैं, जो छिप कर हमारी कुमेटी का हाल देख रहे थे?"

उस आदमी ने हाथ जोड़ कर "जी हाँ" कहा और तब मेघराज की तरफ घूम कर सभापति ने कहा, "क्या आप जानते हैं कि इस सभा का यह नियम है कि जो आदमी छिप कर इसका हाल जानने की कोशिश करता है वह मार डाला जाता है?"

मेघ०। नहीं, मुझे यह बात नहीं मालूम थी। यदि मालूम होती तो कदाचित् मैं इस तरफ न आता।

सभापति०। कदाचित् के क्या माने?

मेघ०। यही कि आप लोग मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते क्योंकि आप लोगों की बनिस्बत मैं बहुत जबर्दस्त हूँ मगर साथ ही मैं यह भी कह दिया चाहता हूँ कि आप लोगों से मेरी कोई दुश्मनी नहीं है, मैं

किसी बुरी नीयत से यहाँ नहीं आया और न मेरा इधर आने का कोई इरादा ही था।

सभापति०। इसका सबूत ?

मेघ०। सबूत यह कि मैंने उन आदमियों का जो मेरी गिरफ्तारी के लिये भेजे गये थे कोई अनिष्ट नहीं किया बल्कि उनकी भी बेहोशी दूर कर दी जो मेरा बदन छू कर बेहोश हो गये थे।

सभा०। (आश्चर्य से) क्या आप में यह सामर्थ है कि जो आदमी आपका बदन छूएगा वह बेहोश हो जावगा !

मेघ०। बेशक, और इसका सबूत अभी आप पा सकते हैं !!

इतना कह मेघराज ने अपना बदन जोर से झटकारा जिसके साथ ही उनके बदन से आग की भयानक चिनगारियाँ निकलने लगीं जो शीघ्र ही यहाँ तक बढ़ीं कि उनके अगल बगल के सब आदमी डर कर दूर दूर हट गये और वह सभापति भी घबरा उठा।

मेघराज ने शीघ्र ही उन चिनगारियों को बन्द किया और तब सभापति की तरफ देख कर कहा, "आपने देखा कि मुझ में बड़ी विचित्र शक्ति है जिसके कारण आप लोग मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते, मगर फिर भी मैं आपका कोई अनिष्ट नहीं किया चाहता। हाँ. इतना मैं कह देना चाहता हूँ कि आपकी सभा का हाल मैं सुन चुका हूँ और इसमें सम्मिलित होने की इच्छा रखता हूँ क्योंकि मैंने सुना है कि यह सभा अच्छे कामों के लिए बनाई गई है और जमानिया की त्रुटियों को दूर करने के लिये ही इसका जन्म हुआ है !"

सभापति कुछ देर तक मेघराज की बातों पर गौर करता रहा और तब अपने बगल में बैठे एक सभासद की तरफ झुका जिसके आगे एक छोटी चौकी पर कागज पत्र आदि लिखने पढ़ने का सामान पड़ा हुआ था। दोनों में कुछ देर तक बातचीत होती रही और तब सभापति ने मेघराज से कहा, "इसके पहिले कि हम लोग आपकी बात का विश्वास करें और

आपको अपनी सभा का सभासद बनावें आपका परिचय पाना जरूरी है तथा इस बात का भी विश्वास हो जाना चाहिये कि आपका इरादा हम लोगों को धोखा देने का तो नहीं है। पर जहाँ तक मैं समझता हूँ आप इस समय या इतने आदमियों के बीच में अपना परिचय देना स्वीकार न करेंगे अस्तु थोड़ी देर के लिए हम लोग आप पर विश्वास करते हैं और सभा की कार्रवाई आरम्भ करते हैं। सभा का कार्य समाप्त होने के बाद आपसे बातचीत की जायगी। अब हम अपना काम प्रारम्भ करते हैं।"

इतना कह सभापति ने अपने बगल वाले आदमी की तरफ देखा जो सभा का मन्त्री मालूम होता था और उस आदमी ने अपने सामने की चौकी पर से कई कागजात उठा कर उसके हाथ में दे दिये। मेघराज कुछ हट कर एक बगल में हो गये और देखने लगे कि यह विचित्र सभा अब क्या करती है।

कुछ देर सभा में सन्नाटा छाया रहा और सब सभासद आश्चर्य मिली हुई उत्कण्ठा के साथ मेघराज की तरफ देखते रहे। इसके बाद सभापति से कुछ इशारा पाकर उसके बगल में बैठा हुआ व्यक्ति, जिसको हम सभामन्त्री मान लेते हैं, उठ कर खड़ा हो गया और कहने लगा :—

"यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह सभा इस समय राज्य की भलाई और रक्षा तथा सुप्रबन्ध के लिये बनाई गई है और समय समय पर जो कुछ कार्रवाई यह सभा करती है वह सब सभासदों की राय तथा इच्छा से ही की जाती है।

"आज की बैठक जिस काम के लिए की गई है वह मैं आप लोगों को सुना चुका हूँ और इस समय पुनः यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि आज यहाँ के प्रसिद्ध रईस केशवदास की हत्या पर विचार करके

उसके खूनी को समुचित दण्ड दिया जायगा जो काम यहाँ के राजा गिरधरसिंह नहीं कर सके हैं।"

इतना कह मन्त्री रुका और झुक कर अपने सामने की चौकी पर से एक कागज उठा उसे पढ़ने लगा जसका हाल यहाँ लिखना पाठकों का समय नष्ट करना है।

कागज सुना देने के बाद मन्त्री ने फिर कहना शुरू किया—

"इन कागजों के सुनने से आप लोग जान गये होंगे कि यहाँ के राजा की तरफ से खून की जो जाँच हुई है उसमें राजदर्बार का एक प्रसिद्ध व्यक्ति श्रीनिवास, केशवदास का खूनी साबित हो गया है। मैं आशा करता हूँ कि इस बात का कोई सबूत देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि राजकीय जाँच के उस कागज की नकल ने जिसे मैं अभी आपको सुना चुका हूँ साबित कर दिया है कि श्रीनिवास ही केशवदास का खूनी है और स्वयं उसने भी अपने मुँह से खून करना स्वीकार कर लिया है।"

इतना कह मन्त्री कुछ देर के लिए चुप हो गया और इस आशा से सभापति और सभासदों की तरफ देखने लगा कि कदाचित् कोई कुछ कहे, पर जब किसी ने कुछ नहीं कहा तो उसने फिर कहना शुरू किया—

"अस्तु अब इस बात पर विचार किया जाना चाहिये कि श्रीनिवास को इस जुर्म की क्या सजा मिलनी चाहिये। राजा गिरधरसिंह ने उसे केवल देश निकाले का दण्ड दिया है जो मेरी समझ में बिल्कुल ही कम है पर इसके विचार का भार मैं आप लोगों पर छोड़ता हूँ।"

इतना कह मन्त्री बैठ गया। कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया और लोग एक दूसरे की तरफ देखते तथा कानफूसी करते रहे। उसके बाद एक आदमी ने उठकर कहा, "इसके पहिले कि यह सभा कुछ फैसला करे एक दफे खूनी का सामना करना मैं उचित समझता हूँ।"

सभापति यह सुन बोला, "ऐसा करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

यदि आप लोग चाहें तो खूनी को अपने सामने बुला सकते हैं यद्यपि मैं इसकी बहुत आवश्यकता नहीं देखता।"

ज्यादा आदमियों की राय खूनी को बुलाने की हुई अस्तु मन्त्री ने कुछ आदमियों की तरफ देख इशारा किया और थोड़ी ही देर में हथ-कड़ी बेड़ी से मजबूर एक कैदी को उन लोगों ने वहाँ हाजिर किया।

सभापति की आज्ञा से कैदी को दालान के एक खम्भे से बाँध दिया गया। उसके बाद मन्त्री ने उससे पूछा—

मन्त्री०। श्रीनिवास! क्या तुमने केशवदास का खून किया है?

कैदी०। इस बात पर विचार करने की सामर्थ्य आप लोगों में नहीं है। ईश्वर की ओर से जो हम लोगों का राजा बनाया गया है और जिसे जनता ने न्याय सिंहासन पर बैठाया है उसके हुक्म को काटने की सामर्थ्य, उसके किये हुये न्याय को मेटने की सामर्थ्य, आप लोगों म नहीं है। राजा गिरधरसिंह ने मेरा विचार कर केवल देश निकाले का ही दण्ड मुझे दिया है और अगर आप इस विचार पर कलम चलावेंगे और जबर्दस्ती मुझे फाँसी वा और किसी दण्ड से दण्डित करेंगे तो आप लोग न्यायवान नहीं अन्याई अत्याचारी और खूनी माने जायेंगे।

सभापति०। (क्रोध से) हम लोग तुम्हारी वक्तृता सुनने के लिये नहीं इकट्ठे हुये हैं और न हमको इतना समय ही है कि तुम्हारी इन सब बातों का जवाब तुम्हें दें और यह बतावें कि यह सभा दोषियों का न्याय करने तथा उन्हें समुचित दण्ड देने के लिये बनाई गई है जिन्हें यहाँ का राजा, जो व्यर्थ ही अपने को राजा कहता है महात्मा और साधू बना हुआ है तथा दयावान कहलाने के लिए मरा जाता है, दोषी जान कर भी ठीक ठीक दण्ड नहीं देता है और योही छोड़ देता है। आज इस सभा की यह बैठक केवल तुम्हारा ही विचार करने के लिये बैठी है और सभा का विश्वास है कि तुम्हें तुम्हारे कसूर के मुताबिक सजा नहीं मिली है, अस्तु तुम व्यर्थ की बकवाद कर अपना और इस सभा का

समय नष्ट न करो और जो पूछा जाता है उसका जवाब दो। बताओ तुमने केसवदास का खून किया है या नहीं ?

कैदी०। (दृढ़ता के साथ) मैं खूनियों और अत्याचारियों की किसी बात का उत्तर दिया नहीं चाहता !!

सभापति ने कई दफे पूछा पर फिर भी कैदी ने किसी बात का उत्तर न दिया। आखिर लाचार हो कैदी को वहाँ से हटाने का हुक्म हुआ और तब इस बात पर विचार आरम्भ हुआ कि उसको क्या सजा मिलनी चाहिये।

सभापति की राय फाँसी की हुई और यही राय अधिकांश सभासदों की भी हुई। अस्तु मन्त्री एक बार फिर उठ खड़ा हुआ और बोला, "तब यह निश्चय हुआ कि केशवदास का खूनी यही आदमी है अस्तु यह सभा खूनी को फाँसी का दण्ड देती है। आज ही खूनी को फाँसी दे दी जाय और उसकी लाश जमानिया शहर की किसी चौमुहानी पर रखवा दी जाय।"

सब सभासदों ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाये और मन्त्री एक कागज पर कुछ लिखने लगा।

दयाराम एक तरफ खड़े बड़ी दिलचस्पी के साथ इस विचित्र सभा की यह सब कारवाई देख रहे थे। जिस समय उस कैदी को फांसी देने का हुक्म हुआ उसी समय यकायक किसी आदमी ने एक मोड़ा हुआ कागज का टुकड़ा उनके हाथ में दे दिया। उन्होंने घूम कर देखना चाहा कि किसने यह कागज उनको दिया पर कोई दिखाई न दिया अस्तु उन्होंने उसे खोल डाला और सावधानी से पढ़ा, यह लिखा था :—

"जहाँ तक शीघ्र हो यहाँ से निकल भागो और जब तक दूर न भाग जाओ अपनी जान की खैर न समझो, कागज पढ़ कर बर्बाद कर दो !'

दयाराम शीघ्रता के साथ उपरोक्त मजमून पढ़ गये और तुरत ही

उठकर बिना किसी की तरफ देखे या किसी का कुछ खयाल किये दालान के बाहर चले आये।

सोलहवां बयान

प्रभाकरसिंह, इन्दुमति दिवाकरसिंह और नन्दरानी के साथ ही साथ मेघराज और जमना सरस्वती के रहने के लिए जो स्थान इन्द्रदेव ने मुकर्रर किया था वह बहुत ही गुप्त था बल्कि यों कहना चाहिये कि वह भी तिलिस्म का एक हिस्सा ही था।

एक लम्बा चौड़ा मैदान जिसे चारो तरफ से ऊँची ऊँची पहाड़ियों से घेरा हुआ है तरह तरह के गुलबूटों तथा जंगली फूलों और लताओं से बड़ा ही सुहावना हो रहा है।

पूरब तरफ की पहाड़ी पर से नाला तेजी से गिर रहा है जिसका पानी कई नालियों में घूमता हुआ नीचे के मैदान से फैलता और उसे सरसब्ज बनाता हुआ एक तरफ जाकर बड़े गहरे और अन्धकारमय गड्ढे में गिर कर गायब हो जाता है। जिस जगह से यह नाला नीचे गिरता है उसके ठीक ऊपर पहाड़ी पर एक तरह का पुल बाँध कर उस पर दो मञ्जिला बँगला बना हुआ है। जिस पर से उस मैदान का पूरा पूरा दृश्य बड़ी ही मनोहरता से दिखाई देता है।

इस बँगले के सामने तथा नाले के ऊपर पड़ने वाले बरामदे में इस समय हम मेघराज, प्रभाकरसिंह और इन्द्रदेव को बैठे हुए देख रहे हैं। प्रभाकरसिंह के वयस्थ पिता कमरे के अन्दर आराम कर रहे हैं। क्योंकि दोपहर के भोजन के बाद प्रायः कुछ देर तक सोने की उनकी आदत है।

आज कई दिनों के बाद इन्द्रदेव को इतना समय मिला है कि वे इस स्थान में आवें और मेघराज इत्यादि से मिलें अस्तु इस बीच की बीती बातों को वे मेघराज और प्रभाकरसिंह को सुना रहे हैं और वे दोनों बड़े ही ध्यान के साथ सुन रहे हैं।

इन्द्र० । कई दिन हुए बलभद्रसिंह महाराज गिरधरसिंह से मिलने आये थे और लौटते समय मेरे पास से होते गये थे, उनके साथ दलीपशाह भी थे। महाराज ने बलभद्रसिंह से कहा है कि गोपालसिंह की शादी लक्ष्मीदेवी के साथ इसी साल हो जानी चाहिये और अब कुछ ही दिनों में इसका इन्तजाम शुरू भी हो जायगा। मगर इस समय एक बात बड़ी ही दुःखदाई हो गई है।

प्रभा० । सो क्या ?

इन्द्र० । इधर कई दिनों से भैयाराजा और बहुरानी का कुछ भी पता नहीं है।

मेघ० । अभी दो या तीन दिन से ज्यादा न हुए होंगे कि वे यहाँ आकर चाचीजी (बहुरानी) को साथ ले गये थे और कहते थे कि हम अजायबघर की तरफ जाते हैं उस दिन से फिर मैंने उन्हें नहीं देखा।

इन्द्र० । हाँ, बात यह है कि हम लोगों के समझाने बुझाने से तथा यह भी देखकर कि वे दारोगा का कुछ बिगाड़ नहीं सकते बल्कि ऐसी चेष्टा करने से स्वयम् उन्हीं का अनिष्ट हो जाने की आशंका है, उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि अब वे अजायबघर में ही रहेंगे। वे कुँवर गोपालसिंह से मिले और उनसे अपना इरादा जाहिर किया कि वे अजायबघर ही को अपना निवास स्थान बनाया चाहते हैं, पर गोपालसिंह की जुबानी उन्हें मालूम हुआ कि राजा साहब ने वह स्थान दारोगा को रहने के लिये देने का इरादा कर लिया है। उसकी दो तालियों में से एक ताली तो पहिले ही दारोगा के पास थी (जो अब गदाधरसिंह से तुम लोगों ने पा ली है) और दूसरी ताली भी दारोगा ने राजा साहब से माँग ली है। अस्तु इन सब बातों को बता कर कुवर गोपालसिंह ने भैयाराजा से कहा कि वे एक दिन बाद इस बात का निश्चय कर उन्हें बता सकते हैं कि महाराज का क्या इरादा है और वे वास्तव में अजायबघर दारोगा को दे दिया चाहते हैं या नहीं। भैयाराजा ने अजायबघर में उनसे मुलाकात

करने का निश्चय किया और वादे के मुताबिक वे अपनी स्त्री के साथ अजायबघर जाने के इरादे से मुझसे बिदा भी हुए।

इधर गोपालसिंह जब भैयाराजा से बिदा हो लौटे तो रास्ते में कुछ बदमाशों ने उन्हें घेर कर लड़ना शुरू कर दिया। उस समय अचानक दारोगा साहब ने वहाँ पहुँच कर उनकी मदद की और दुष्टों को भाग जाना पड़ा पर गोपालसिंह और दारोगा दोनों ही को कुछ जख्म अवश्य लगे।

जब महाराज को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने दारोगा पर प्रसन्न हो इनाम के तौर पर अजायबघर का मालिक उसे बना दिया। गोपालसिंह लाचार हो गये और इसी खबर को ले कर वे अजायबघर में भैयाराजा से मिलने के इरादे से पहुँचे मगर वहाँ बहुत देर तक राह देखने पर भी उनको कहीं न पाया। लाचार हो वे मुझसे-आकर मिले और मुझे अपने साथ ले उन्हें खोजने के इरादे से अजायबघर लौटे।

जहाँ जहाँ मैं जा सकता था और जिस जिस स्थान का पता मुझे था वहाँ वहाँ अपने भरसक मैंने अच्छी तरह ढूँढा पर कहो उनका पता न लगा और न आज तक वे फिर कभी दिखाई ही दिये। गोपालसिंह को भी इस बातका बहुत ही रञ्ज है और बड़े ही दुःखी हैं। भैयाराजा के साथ ही साथ उनकी स्त्री का भी पता नहीं है और यद्यपि मैंने अपने कई ऐयारों को उन दोनों की खोज में भेजा है पर अब तक कुछ पता नहीं लगा।

मेघराज और प्रभाकरसिंह को यह हाल सुन बहुत ही दुःख हुआ और मेघराज बोले, "सिवाय दारोगा के और तो कोई ऐसा दुश्मन दिखाई नहीं पड़ता जो उनका अनिष्ट करे या कर सके।"

इन्द्र०। हाँ, प्रगट रूप में तो यही बात है। खैर जो कुछ भी हो, कम से कम अभी तक इस बात का कुछ ठीक ठीक पता नहीं लग सका है। यद्यपि इसके पहिले भी वह कई दफे गायब हो चुके हैं पर ऐसा कभी नहीं हुआ था कि बिना मुझसे कहे वे कहीं चले गये हों!

मेघ०। हाँ यही बात न सन्देह पैदा करने वाली है!!

कुछ देर तक इसी विषय पर बातें होती रहीं और तब मेघराज ने कहा, "कल एक बात बड़े ही आश्चर्य की हुई ! जमानिया में घूमते फिरते यकायक भूतनाथ ने मुझे देख लिया जो उस समय (प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर) इनकी सूरत बना हुआ था। यह तो कहिये कि भाग्यवश स्वयम् ये प्रभाकरसिंह ही मुझे मिल गये और इन्होंने मुझे उसकी तरफ से चैतन्य कर दिया नहीं तो मैं अवश्य ही उसके फन्दे में पड़ जाता।"

प्रभा०। यह भी एक बड़ी ही विचित्र घटना है, मेघराज अपना हाल कह लें तो मैं आपको सब हाल सुनाऊँ। भाग्यवश मैंने गदाधरसिंह को अपनी सूरत बनते देख लिया अस्तु समय पर पहिचान गया कि वह गदाधरसिंह ही है नहीं तो वास्तव में उसके हाथ में पड़ मेघराज को तकलीफ उठानी पड़ती।

इन्द्र०। अच्छा हुआ क्या ?

मेघ०। बात यह हुई कि (कुछ रुक कर) कल मैं यहाँ से जब गया तो सीधे नागर के मकान पर पहुँचा, क्योंकि उससे गदाधरसिंह के बाबत कुछ हालचाल मिलने की आशा थी, परन्तु उस धूर्ता ने किसी बात का भी पता ठीक ठीक मुझे लगने न दिया। यद्यपि दो तीन बातें मालूम हुईं पर मेरा असल तात्पर्य पूरा न हुआ, अस्तु। जब मैं उसके मकान के बाहर निकला तो यकायक प्रभाकरसिंह की सूरत बने हुए गदाधरसिंह ने मुझे टोका। मैं उसे देख प्रसन्न हुआ और इस बात का तो उस सयय मुझे जरा भी सन्देह न हुआ कि यह प्रभाकरसिंह नहीं है, नहीं तो उसी समय मैं अपना सन्देह दूर कर लेता।

इतना कह मेघराज वह हाल जिसे हमारे पाठक पिछले बयान में पढ़ चुके हैं मुख्तसर में इन्द्रदेवजी से कह गये और तब आगे का हाल इस प्रकार कहने लगे —

जैसे ही मैं उस दालान के बाहर आया वैसे ही उस सभा के सभा-

पति की निगाह मुझ पर पड़ गई। उसने मुझे जाता देख दो तीन आदमियों को कुछ इशारा किया और वे लोग बिना कुछ कहे सुने मेरे पीछे हो लिये।

"मैंने उन तीनों आदमियों को देख लिया जो मेरा पीछा करने के लिए भेजे गये थे और साथ ही साथ मुझे इस बात का भी विश्वास हो गया कि ये तीनों मेरी गिरफ्तारी के लिए भेजे गये हैं पर मेरे उस कवच से डरते हैं और मेरे बदन में हाथ लगाने की हिम्मत नहीं करते। अस्तु मै इनकी तरफ बिना कुछ ध्यान दिये उस तरफ रवाना हुआ जहाँ से मैंने और गदाधरसिंह ने सब हाल देखा था अथवा जहाँ से वे लोग मुझे पकड़ कर ले गये थे।

'धीरे धीरे चलता हुआ मै बाहर मैदान में आ पहुँचा और तब तक किसी ने मुझको न टोका। मैदान में आते ही यकायक मुझे एक लालटेन की रोशनी दिखाई दी जो एक पेड़ की आड़ मे बल रही थी और उसी जगह दो आदमियों के लड़ने की आहट मालूम हुई। अपने को पेड़ों की आड़ में छिपाता और बचाता जब मै उन दोनों लड़कों के पास पहुँचा तो यह देख मेरे ताज्जुब का हद न रहा कि उन दोनों ही की सूरत गदाधरसिंह की सी है और कपड़े लत्ते के खयाल से भी दोनों ही गदाधरसिंह मालूम पड़ते हैं।

"मैं आश्चर्य के साथ सोचने लगा कि यह मामला क्या है और दो गदाधरसिंह क्यो दिखाई दे रहे हैं यह तो मैं अभी आप से कह ही चुका हूँ कि गदाधरसिंह जब मेरे साथ था तो धूर्तता करके उसने अपनी असली सूरत धारण कर ली थी और मेरे सामने ही प्रभाकरसिंह की सूरत को इस्तीफा दे दिया था अस्तु मुझे विश्वास हो गया कि उन दोनो मे एक तो वही गदाधरसिंह है जो कुछ देर पहिले तक मेरे साथ साथ था अस्तु मै सोचने लगा कि फिर दूसरा गदाधरसिंह यह कौन है और इन दोनों में तकरार क्यों हो रही है?

"यह सब बातें मैं सोच ही रहा था कि एक गदाधरसिंह के हाथ की तलवार खा दूसरा जमीन पर गिर पड़ा। उस समय विजयी गदाधरसिंह मेरी तरफ घूमा (कदाचित् उसने मुझे देख लिया था) और प्रसन्नता से बोला, 'क्या आप उस सभा से बच कर निकल आये? मैं तो बड़े ही तरद्दुद में पड़ गया था और आपके छुटकारे का कोई उपाय सोच ही रहा था कि यकायक असली गदाधरसिंह ने मुझे देख लिया और हम दोनों में लड़ाई होने लगी। मैं बचाता और तरह देता यहाँ तक आ गया जिसमें उस सभा को हम लोगों की आहट न मिले और आपकी तरह मैं गिरफ्तार न कर लिया जाऊँ।'

मैं०। (आश्चर्य के ढंग से) क्या वह असली गदाधरसिंह है?

गदा०। हाँ, आप पास चल कर देखिये।

मैंने "हाँ चलो" कह कर भूतनाथ का हाथ पकड़ लिया और उस तरफ ले चला जिधर दूसरा गदाधरसिंह था, मगर उसका हाथ छूते ही आपके दिए विचित्र कवच की अद्भुत तासीर से गदाधरसिंह बेहोश हो कर गिर गया।

पहिले तो मैंने सोचा कि इसे गिरफ्तार कर अपने साथ लेता जाऊँ पर फिर ऐसा करना व्यर्थ समझ मैंने एक दूसरी ही चालाकी की। अपनी तिलिस्मी तलवार म्यान से निकाल उसी जगह बेहोश गदाधरसिंह के पास रख दी और तब हट कर आड़ में हो गया और उन तीनों आदमियों की तरफ देखने लगा जो उस कुमेटी के सभापति के भेजे मेरे पीछे पीछे आये थे और जरूर अभी तक पास ही कहीं छिपे खड़े होंगे।

थोड़ी देर के बाद उन तीनों में से एक आदमी आगे बढ़ा और गौर से गदाधरसिंह की सूरत देखने लगा। इसके बाद उसकी निगाह मेरी तलवार पर पड़ी जिसका लोहा तारों की रोशनी में भी चमक रहा था। उसने तलवार उठाने की चेष्टा की पर छूते ही बेहोश हो कर गिर पड़ा।

उसको बेहोश होते देख उसके दोनों साथी भी उस जगह आ पहुँचे मगर कुछ कर न पाये और पहिले आदमी की तरह मेरी तलवार छू छू कर बेहोश हो गये। उस समय मैं आगे बढ़ा और जल्दी जल्दी गदाधरसिंह के बटुए में से जो उसके पास था सामान निकाल कर मैंने उसकी सूरत प्रभाकरसिंह की सी बनाई। इसके बाद मैं उस तरफ घूमा जिधर जमीन पर दूसरा गदाधरसिंह पड़ा हुआ था पर उसको कहीं न पाया कदाचित् वह उठ कर कहीं चला गया था, अस्तु उन तीनों आदमियों की बेहोशी दूर करने का सामान उनके नाक के पास रख मैं अपनी तलवार उठा कर वहाँ से हट गया। थोड़ी देर में उन तीनों की बेहोशी दूर हो गई और वे होश में आकर ताज्जुब भरी बातें करने लगे पर अन्त में मुझे कहीं न पा नकली प्रभाकरसिंह अर्थात् गदाधरसिंह ही को उठा ले गये। फिर मुझे नहीं मालूम कि क्या हुआ और गदाधरसिंह पर क्या बीती क्योंकि फिर मैंने उन सभों का पीछा नहीं किया और प्रभाकरसिंह के साथ इधर आ गया।

इन्द्र०। तो प्रभाकरसिंह फिर तुम्हें कहाँ मिले?

प्रभा०। मैं भी इनके और भूतनाथ के पीछे पीछे चलता हुआ उस गुप्त कुमेटी के पास तक पहुँच गया था और एक जगह छिपा हुआ सब हाल देख रहा था, अगर वे सब इनके साथ कुछ जोर जबर्दस्ती करते तो अवश्य मैं इनकी मदद करता पर इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। जब ये वहाँ से बच कर निकल आये और गदाधरसिंह को भी अपनी होशियारी से इन्होंने बेहोश कर दिया तो मैं फिर इनके साथ हो लिया और साथ ही साथ यहाँ लौट आया।

इन्द्र०। (मेघराज से) खैर तो तुम भी उस गुप्त कमेटी की हवा खा आये! अच्छा ही हुआ! मगर यह तो कहो कि वहाँ की बातचीत और रंग ढंग से क्या तुम यह कह सकते हो कि सभा दारोगा साहब के कब्जे में है और वे ही उसके मुखिया हैं?

मेघ० । यह तो मैं नहीं जान सका, पर हाँ इतना सन्देह दो एक बार मुझे अवश्य हुआ कि वह सभापति अपनी बोली बिगाड़ कर बातें कर रहा है, पर सन्देह के सिवाय निश्चय रूप से मैं कुछ भी नहीं कह सकता।

इन्द्रदेव यह सुन कुछ देर तक गौर करते रहे और तब प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर बोले, "अच्छा अब तुम अपना हाल सुनाओ कि कहां और किस जगह तुमने गदाधरसिंह को अपनी सूरत बनते देखा था ?"

प्रभाकरसिंह इसका कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि उसी समय इन्द्रदेव का एक खास आदमी उस जगह आ पहुँचा और हाथ जोड़कर इन्द्रदेव से बोला, "जमानिया से दामोदरसिंहजी का एक विश्वासपात्र आदमी आया है और कोई बहुत ही जरूरी खबर लाया है ?"

इन्द्र० । (चौंक कर) जमानिया से आया है ! क्या कहता है ?

आदमी० । कुछ बताता नहीं, कहता है कि और किसी को कहने का हुक्म नहीं है। कदाचित् कोई पत्र भी लाया है जो अपने हाथ से आप को देगा ?

इन्द्र० । (मेघराज और प्रभाकरसिंह से) उस आदमी से मिलना जरूरी जान पड़ता है। मैं जाता हूँ और देखता हूँ कि वह क्या खबर लाया है, यदि कोई आवश्यक बात होगी तो तुम्हें भी सूचना दूँगा मगर तुम लोग अब बिना मुझसे कहे इस स्थान के बाहर न जाना, कदाचित् मुझे तुम लोगों से मदद की जरूरत पड़ जाय।

इतना कह इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और उस आदमी से कुछ बातें करते हुए बाहर चले गये।

सत्रहवाँ बयान

अपने मित्र और साथी गुलाबसिंह का खून करते हुए भूतनाथ ने कुछ भी आगा पीछा न किया और उसकी गरदन धड़ से अलग करने के बाद अपने शागिर्द विजय का भी सिर अलग कर दिया, तब खंजर पोंछ उसके स्थान में रक्खा और वहीं जमीन पर बैठ सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये।

कुछ ही देर बाद यकायक भूतनाथ के कान में जफील की आवाज सुनाई दी जिसे सुन वह चौंक कर खड़ा हो गया और इधर उधर देखने लगा।

पुनः जफील की आवाज आई और इस बार भूतनाथ को मालूम हो गया कि यह सीटी पहिले की बनिस्बत नजदीक से बजाई गई है और साथ ही आवाज पूरब की तरफ से आई है। यह मालूम होते ही उसने अपनी लालटेन बुझा दी जिससे वहाँ घोर अन्धकार छा गया और तब दोनों लाशों को भी खींचकर एक तरफ कर देने के बाद कुछ दूर पर खड़ा हो गौर के साथ इधर उधर नजर दौड़ाने लगा।

थोड़ी ही देर के बाद तीसरी बार जफील की आवाज आई और इसी समय भूतनाथ की निगाह दो मशालों पर पड़ी जिन्हें हाथ में लिये दो आदमी उसी की तरफ बढ़े आ रहे थे। साथ ही भूतनाथ को यह भी मालूम हो गया कि वे दोनों आदमी अकेले नहीं हैं बल्कि उनके साथ और भी कई आदमी हैं जो पीछे पीछे चले आ रहे हैं।

भूतनाथ चौकन्ना हो अपने स्थान से और भी पीछे हट गया क्योंकि उसने देखा कि ये आने वाले सीधे उसी तरफ बढ़े आ रहे हैं। भूतनाथ उनकी सूरत पहिचानने की चेष्टा करने लगा पर थोड़ा ही और पास आने पर उसे मालूम हो गया कि इन आने वालों में से सिवाय एक के और सभों की सूरतें नकाब से ढकी हुई हैं।

थोड़ी ही देर में वे लोग उस जगह पर आ पहुँचे जहाँ कुछ देर पहिले भूतनाथ ने ऐसी निर्दयता का काम किया था। वहाँ पहुँच वे दोनों आदमी जो मशाल लिए हुए सबसे आगे आगे आ रहे थे रुक गये और मशाल नीची कर गौर के साथ देखने के बाद बोले, "बेशक यहाँ कुछ खूनखराबा हुआ है।"

दोनों मशाल वालों के पीछे पीछे लगभग दस आदमियों के झुण्ड और आ रहे थे जिनके आगे आगे एक ऐसा आदमी था जिसकी सूरत नकाब से ढकी न थी। मशाल वाले आदमियों की बात सुन वह आदमी आगे बढ़ आया और जमीन की तरफ देख बोला, "बेशक तुम लोगों का कहना ठीक है। यहाँ जरूर खूनखराबा हुआ है और वह थोड़ी ही देर पहिले क्योंकि ये खून के निशान बिलकुल ताजे हैं !!"

ज्यादा खोजने की जरूरत न पड़ी, थोड़ी ही देर में ये गुलाबसिंह तथा विजय की लाशों के पास पहुँच गये और उन्हें चारो तरफ से घेर गौर से देखने लगे।

उस बेनकाब वाले आदमी ने जिसका नाम हम थोड़ी देर के लिये 'जैराम' मान लेते हैं एक आदमी की तरफ देख कुछ इशारा किया जिस पर उसने अपने कपड़ों में से एक छोटी सी बोतल जिसमें किसी तरह का अर्क भरा हुआ था निकाली और जैराम के हाथ में दे दी।

जैराम ने आहिस्ते से इन दोनों लाशों के सिर सीधे किये और तब उस बोतल के पानी से छींटा मार मार कर खून इत्यादि दूर किया, इसके बाद कमर से एक कपड़ा खोल उसने उनका चेहरा साफ किया और तब मशाल की रोशनी में गौर से देख कर कहा, "हैं ! ये दोनों तो गदाधर सिंह के ऐयार बहादुर और पारस हैं !"

भूतनाथ अभी तक जैराम की सब कार्रवाई गौर से देखता हुआ उसके पहिचानने की कोशिश कर रहा था पर जैराम की इस बात ने कि ये दोनों तो गदाधरसिंह के ऐयार बहादुर और पारस हैं, उसको एकदम

घबड़ा दिया और वह बेचैनी के साथ कुछ आगे बढ़कर उन दोनों लाशों की तरफ देखने लगा।

वास्तव में उस समय भूतनाथ को वे चेहरे गुलाबसिंह और विजय के नहीं बल्कि बहादुर और पारस के ही मालूम हुए। वह एकदम परेशान हो गया और इतने आदमियों की मौजूदगी का कुछ भी ख्याल न कर झपट कर उनके पास पहुँच गया तथा जमीन पर बैठ देखने लगा कि ये सूरतें किसकी हैं। एक ही निगाह ने उसे बता दिया कि उस अजनबी का कहना ठीक है और बेशक ये दोनों उसी के प्यारे शागिर्द बहादुर और पारस हैं जिन्हें यह जान से ज्यादा मानता था।

भूतनाथ एकदम पागल सा हो गया। उसने अपने बटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का तेल था। उसे अंगुली से दोनों के चेहरे पर लगा कर कपड़े से रगड़ कर पोंछा तथा फिर गौर से देखा मगर उन सूरतों में किसी तरह का अन्तर न पड़ा और उसे विश्वास हो गया कि उसकी आँखें उसे धोखा नहीं दे रही है और वास्तव में वह अपने सामने अपने प्यारे शागिर्द बहादुर और पारस की ही लाश देख रहा है जिन्हें गुलाबसिंह और विजय समझ कर उसने अपने हाथ से मार डाला था। उसने दोनों हाथों से अपना माथा पकड़ लिया और जमीन पर बैठ गया बल्कि यों कहना चाहिये कि गिर गया।

थोड़ी देर बाद भूतनाथ कुछ चैतन्य हुआ और तब उसे मालूम हुआ कि इस समय वह अकेला है और सिवाय उन दोनों लाशों तथा एक मशाल के जो उसी जगह जमीन में गड़ी हुई जल रही है वहाँ और कोई नहीं है। इधर उधर नजर दौड़ाने से उसे मालूम हो गया कि वे सब आदमी जो थोड़ी देर पहिले उस जगह मौजूद थे अपना एक मशाल वहीं रख उसे अकेला छोड़ चले गये हैं।

वह एक लम्बी साँस ले उठ खड़ा हुआ। एक निगाह उसने बहादुर

और पारस की लाशों की तरफ पुनः डाली और तब इधर उधर से सूखी लकड़ियाँ ला उस जगह एक बड़ी चिता तैयार करने लगा।

थोड़ी ही देर में बहुत सी लकड़ियाँ इकट्ठी हो गईं और तब आँसू बहाते हुए भूतनाथ ने उन दोनों लाशों को मय सिर के चिता पर रख उसमें आग लगा दी।

चिता धधकने लगी और भूतनाथ उससे थोड़ी दूर हट जमीन पर बैठ चिन्ता सागर में गोते लगाने लगा। उसकी समझ में नहीं आता था कि यह क्या मामला हो गया। उसने अपने हाथ से उन दोनों आदमियों का चेहरा साफ किया था और तब इस बात का निश्चय कर लेने के बाद कि वे दोनो गुलाबसिंह तथा विजय हैं उसने उनका खून किया था। तब क्या उसकी आखें ऐसी कमजोर हो गईं कि वह अपने प्राण से प्यारे दोनों शागिर्दों को पहिचान न सका और उन्हें गुलाबसिंह और विजय समझ उनका खून कर बैठा! या इसमें भी उसके साथ किसी तरह की ऐयारी खेली गई है! यद्यपि अपने इन दोनों शागिर्दों के मरने का गम उसे हद से ज्यादा हुआ पर बहुत गौर करने पर भी वह यह निश्चय न कर सका कि यह बात क्या हो गई।

जब तक चिता बुझ कर ठण्डी न हो गई तब तक भूतनाथ वहां बैठा कभी सोचता और कभी अपने शागिर्दों के गम में आंसू बहाता रहा। इसके बाद वह उठा और अपने घर की तरफ रवाना हुआ।

घर पहुँच कर भी भूतनाथ ने दम न लिया। वह कुछ ही देर बाद वहां रुका और अपने शागिर्दों को जो वहां मौजूद थे कुछ समझाने बुझाने के बाद एक शागिर्द को साथ ले फिर बाहर निकल गया। न तो उसने अपनी स्त्री से ही मुलाकात की और न किसी शागिर्द को ही अपनी बदहवासी का सबब बताया।

सन्ध्या होने के कुछ देर पहिले जमानिया के बाहर वाले एक कुँए पर पहुँच कर भूतनाथ रुका। मालूम होता है कि यह स्थान भी भूतनाथ का

अड्डा था क्योंकि उसके पहुँचते ही उसका एक शागिर्द जो न जाने कितनी देर से यहाँ मौजूद था उससे मिला और एक गुप्त इशारे से अपने को प्रगट करने बाद बोला, "आपने आने मे बहुत देर कर दी !!"

भूत०। हाँ मैं एक बुरी मुसीबत मे पड़ गया था जिसका हाल तुम्हे बताऊँगा, मगर पहिले तुम यह बताओ कि नागर के मकान का पहरा दे इतने दिनों मे तुमने कुछ पता भी लगाया या नहीं।

शागिर्द० इतने दिनों तक तो सब साधिक दस्तूर ही रहा मगर आज मैंने एक नये आदमी को उसके घर में जाते देखा है जिसे इसके पहिले कभी नहीं देखा और जिसके कोई ऐयार होने का मुझे शक होता है। यदि आपने इस समय मुझसे यहा मिलने के लिये कहा न होता तो मै अवश्य उसका पीछा करता, बल्कि कोई ताज्जुब नहीं कि वह अभी तक वहीं हो क्योंकि उसके अन्दर जाने के बाद मजदूरनी ने आकर नौकरो को फाटक बन्द कर देने का हुक्म दिया।

भूत०। उस आदमी का हुलिया तो जरा मुझे सुनाओ, शायद मैं उसे जानता होऊँ।

अपने शागिर्द की जुबानी जो हुलिया भूतनाथ ने सुना उससे उसे बिश्वास हो गया कि वह आदमी और कोई नहीं बल्कि मेघराज ही है जिसके साथ भैयाराजा के कारण कई बार उसकी देखादेखी हो चुकी थी।

भूतनाथ इस समय सचमुच ही बेपेंदी का लोटा हो गया था। एक तो उसका स्वभाव ही कुछ ऐसा था कि अपने किसी एक विचार पर वह ज्यादा देर तक कायम नहीं रह सकता था, दूसरे इस समय से थोड़ी ही देर पहिले वाली घटना ने उसे और भी बदहवास कर दिया था और उसमें अपना भला बुरा पहिचानने की शक्ति नहीं रह गई थी। यद्यपि कुछ दिन पहिले वह दारोगा का साथ छोड़ प्रभाकरसिंह तथा भैयाराजा का साथी बन चुका था, प्रभाकरसिंह के माता पिता तथा भैयाराजा की स्त्री को छुड़ाने का कारण बन चुका था, जमना सरस्वती के बचाने का उद्योग कर

चुका था, और खास इन्द्रदेव के सामने कह चुका था कि अब वह इन झगड़ों में नहीं पड़ेगा और अपने को उनकी दया और भरोसे पर छोड़ देगा पर ये सभी बातें उसे विस्मरण हो गईं। उस मेघराज की जिनके विषय में बहुत कुछ ताज्जुब की बातें वह देख और सुन चुका था तथा जिनके असली भेद का पता न पाने के कारण वह भैयाराजा का दुश्मन बन बैठा था, इस समय अकेला और एक प्रकार से अपने दोस्त के घर में घुसा हुआ सुनकर उसका असली हाल जानने की इच्छा एकदम बलवती हो उठी और उसने यही निश्चय कर लिया कि ऐसा अच्छा मौका हाथ से जाने न देना चाहिये और जिस प्रकार हो मेघराज को अपने कब्जे में कर उसके असली भेद का पता लगाना ही चाहिये।

भूतनाथ ने सोच विचार में ज्यादा समय नष्ट करना उचित न समझा और उसी समय अपनी सूरत प्रभाकरसिंह की सी बना और अपने दोनों शागिर्दों को गुप्त रीति से पीछे पीछे आने के लिए कह वह तेजी के साथ नागर के मकान की तरफ बढ़ा। उसके दोनों शागिर्द भी भेष बदले उससे थोड़ा हटे हुए साथ साथ जाने लगे।

जैसे ही मेघराज नागर के मकान के बाहर निकले वैसे ही भूतनाथ भी वहाँ पहुँचा और उनसे मिला। पाठक अब समझ ही गये होंगे कि मेघराज अथवा दयाराम की जिस प्रभाकरसिंह से मुलाकात हुई थी वह भूतनाथ ही था।

वह आदमी जिसने 'चन्द्रोदय' के नाम से अपना परिचय मेघराज को दिया था वास्तव में असली प्रभाकरसिंह थे। प्रभाकरसिंह ने यद्यपि मेघराज को भूतनाथ की तरफ से चैतन्य कर दिया और बता दिया था कि वही भूतनाथ ही मेरी सूरत बना तुम्हारे साथ है पर वह स्वयं अपने को भूतनाथ के चंगुल से बचा न सके क्योंकि भूतनाथ के उन दोनों शागिर्दों ने जो बराबर उसके पीछे छिपते हुए आ रहे थे उन्हें देख लिया बल्कि मेघराज से उनकी बातचीत और वह परिचय का शब्द भी जिसके द्वारा

प्रभाकरसिंह ने अपने को मेघराज पर प्रकट किया था सुन लिया और तब किसी ढंग से उन दोनों ने प्रभाकरसिंह को बेहोश कर अपने कब्जे में कर लिया। इस बात का पता मेघराज को कुछ भी न लगा और वे यही समझते रहे कि असली प्रभाकरसिंह अभी तक मेरे पीछे पीछे आ रहे हैं।

जिस समय मेघराज को पकड़ कर उस विचित्र सभा के लोग ले गये उस समय भूतनाथ जिसने छिपकर अपने को उन लोगों के फन्दे से बचा लिया था अपने शागिर्दों से मिला जो उसी जगह मौजूद थे और वहाँ उनकी जबानी उसे मालूम हुआ कि असली प्रभाकरसिंह को वे दोनों गिरफ्तार कर कहीं रख आये हैं। भूतनाथ के मन में मेघराज को गिरफ्तार करने की इच्छा लगी हुई थी पर उनके उस विचित्र कवच की तासीर से वह बहुत डरा हुआ भी था अस्तु यह सुनकर कि प्रभाकरसिंह को उसके शागिर्दों ने पकड़ लिया है वह बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह स्वयम् पुनः प्रभाकरसिंह बन गया और कई बातें समझाने के बाद अपने दोनों शागिर्दों को अपने हाथ से अपनी सूरत में बना और वहाँ से रवाना कर आप इसी इन्तजार में खड़ा हो गया कि थोड़ी देर में मेघराज, जिनके विषय में उसे यकीन था कि सभा उनका कुछ बिगाड़ न सकेगी, यहाँ आ पहुँचेंगे।

भूतनाथ का खयाल ठीक निकला और जब मेघराज सभा से उठकर बाहर आये तो वह छिपता हुआ उनके पीछे रवाना हुआ।

जब मेघराज ने अपनी समझ में असली पर वास्तव में नकली (भूतनाथ) को प्रभाकरसिंह की सूरत में बनाकर छोड़ दिया और सभा के आदमी उसे उठा कर ले गये तो भूतनाथ फिर मेघराज से मिला और 'चन्द्रोदय' शब्द का व्यवहार कर उनके साथ हो लिया। बेचारे मेघराज को कुछ भी पता न लगा कि भूतनाथ गहरी चालाकी खेल गया और उनको धोखे में डाल स्वयं फिर उनके साथ हो गया है। वे उसे ही असली प्रभाकर-

सिंह मान उसके साथ हो गये और अपने गुप्त स्थान (इन्द्रदेव की दी हुई उस अद्भुत घाटी) में आ पहुँचे। आने के साथ ही उनकी मुलाकात इन्द्रदेव से हुई और उनसे जो जो बातें हुईं वह पाठक ऊपर के बयान में पढ़ ही चुके हैं। और अब वे यह भी समझ गये होंगे कि इन्द्रदेव ने जिस प्रभाकरसिंह से मेघराज के सामने बातें की वह वास्तव में भूतनाथ ही है।

अट्ठारहवाँ बयान

इन्द्रदेव के चले जाने के बाद कुछ देर तक मेघराज और नकली प्रभाकरसिंह (भूतनाथ) में उन्हीं के विषय में बातें होती रहीं। इसके बाद मेघराज उठ कर अपने रहने के स्थान पर जो सामने छोटी पहाड़ी पर बना हुआ एक खूबसूरत बँगला था चले गये और भूतनाथ उसी जगह बैठा हुआ तरह तरह की बातें सोचने लगा।

यद्यपि भूतनाथ को इस घाटी में आये ज्यादा देर नहीं हुई थी पर इसी बीच में अपनी चालाकी और धूर्तता की बदौलत वह यहाँ की बातें जान चुका था और यह भी समझ गया था कि प्रभाकरसिंह अपने माता पिता और स्त्री के साथ उसी स्थान में रहते हैं जहाँ वह इस समय बैठा हुआ है तथा मेघराज सामने वाले बँगले में रहते हैं, पर अभी तक वह यह न जान सका था कि यह मेघराज वास्तव में कौन हैं क्योंकि इन्द्रदेव की आज्ञानुसार मेघराज ने अपना असली नाम दयाराम बिल्कुल ही छोड़ दिया था और घर पर भी मेघराज ही के नाम से पुकारे जाते थे। इसी तरह उनकी स्त्रियाँ जमना और सरस्वती भी अपने को छिपाये रहती थीं, यही कारण था कि इस स्थान पर आकर भी भूतनाथ को अभी तक इस बात का पता न लगा था कि मेघराज वास्तव में कौन है और वह इसी बात को जानने की फिक्र में पड़ा हुआ था। जमना और सरस्वती के वहाँ होने

का गुमान भी न था क्योंकि मेघराज की बातचीत में अभी तक उनका जिक्र एक बार भी नहीं आया था।

इन्द्रदेव का वहाँ पर आना भूतनाथ के लिए बहुत ही दुःखदाई हुआ था क्योंकि वह वास्तव में उनसे डरता था और समझता था कि उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई कर वह पार न पा सकेगा। इस समय मेघराज का असली हाल जानने का ढंग सोचने के साथ ही साथ वह इस सोच में भी पड़ा हुआ था की किसी प्रकार मेरा काम जल्दी हो और मैं इस विचित्र स्थान और इन्द्रदेव की पहुँच के बाहर हो जाऊँ।

सन्ध्या होने के कुछ ही देर बाद भूतनाथ तबीयत खराब होने का बहाना कर सोने के कमरे में चला गया और दर्वाजा भीतर से बन्द कर पलङ्ग पर जा लेटा। थोड़ी ही देर बाद इन्दुमति वहाँ आई पर दर्वाजा बन्द पा और अपने पति को थकावट के कारण निन्द्रा के वशीभूत समझ वापस लौट गई।

रात आधी से ज्यादा बीत गई थी जब भूतनाथ दबे पाँव अपने कमरे से बाहर निकला और एक काले कपड़े में अपने को छिपाये बँगले के बाहर निकल एक पेड़ की आड़ में खड़ा हो गया।

चारो तरफ घोर सन्नाटा छाया हुआ था और यद्यपि चन्द्रभगवान की शीतल किरणों से वह स्थान दिन का मुकाबला कर रहा था पर तौ भी वहाँ कोई नजर नहीं आता था। हवा एकदम बन्द थी और चारो तरफ के पेड़ निःशब्द खड़े थे।

लगभग दस मिनट तक चुपचाप खड़ा भूतनाथ सामने की पहाड़ी की तरफ देखता रहा जिस पर मेघराज रहते थे, इसके बाद वहाँ से आगे बढ़ा और बड़ी होशियारी के साथ अपने को पेड़ों की छाया में छिपाता हुआ उसी तरफ बढ़ा।

धीरे धीरे चलता हुआ भूतनाथ पहाड़ी के नीचे पहुँच गया और अब ऊपर चढ़ने का इरादा कर ही रहा था कि यकायक किसी प्रकार की

आहट पा रुक गया। जब बहुत देर तक खड़े रहने पर भी फिर कोई आवाज उसे सुनाई न दी तो वह पुनः हिम्मत बाँध कर आगे बढ़ा और धीरे धीरे पहाड़ी पर चढ़ उस बँगले के पास पहुँच गया।

यह छोटा सा दोमञ्जिला बँगला जिसके सामने भूतनाथ खड़ा था चौकोर और बहुत ही खूबसूरत बना हुआ था। इसके पूरब और दक्खिन तरफ वाली दीवार पर मालती की बहुत ही घनी लता चढ़ी हुई थी जिसके कारण वहाँ एक प्रकार का अन्धकार सा था। भूतनाथ बढ़कर इसी लता की आड़ में हो गया और खड़ा खड़ा सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये।

जिस जगह भूतनाथ खड़ा था उसके ठीक पीछे दीवार में एक खिड़की थी जो शायद किसी कमरे या कोठड़ी में पड़ती होगी। भूतनाथ के हाथ का धक्का लगने से यकायक वह खिड़की जो भीतर से बन्द न थी खुल गई और भूतनाथ घूम कर अन्दर की तरफ देखने लगा।

एक कमरा कई तरह के विचित्र सामानों से सजा हुआ नजर आया जिन्हें भूतनाथ बड़े गौर और दिलचस्पी के साथ देखने लगा। कमरे की छत के साथ शीशे का एक बड़ा सा गोला लटक रहा था जिसमें से बहुत ही साफ और तेज रोशनी निकल रही थी। उस रोशनी में कमरे के एक कोने में रक्खी हुई एक विचित्र वस्तु पर भूतनाथ की निगाह पड़ी। वह वस्तु शीशे की आदमी के बराबर ऊँची एक पुतली थी जो एक पैर के सहारे खड़ी अपने दोनों हाथ सिर से ऊँचे किये ऊपर की तरफ देख रही थी।

भूतनाथ उस पुतली की तरफ ताज्जुब के साथ देख ही रहा था कि वह पुतली अपने स्थान पर तेजी के साथ नाचने लगी जिससे उसे बड़ा ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगा कि यह क्या मामला है।

लगभग पाँच मिनट तक नाचने बाद यह पुतली रुक गई, साथ ही एक खटके की आवाज आई और वह विचित्र लम्प जो छत के साथ

लटका हुआ जल रहा था बुझ गया जिससे कमरे में एकदम अन्धकार छा गया। भूतनाथ चौंक कर कुछ पीछे हट गया मगर उसी समय उसने देखा कि उस शीशे वाली पुतली की बदन में से एक विचित्र तरह की चमक निकल रही है जो थोड़ी ही देर में यहाँ तक बढ़ी कि उस कोठड़ी की चीजें फिर पूर्ववत् साफ साफ दिखाई देने लगीं पर इस रोशनी में विशेषता यह थी कि उसमें यहाँ की सब चीजें हलके हरे रङ्ग से रङ्ग दी गई हुई मालूम होती थीं।

भूतनाथ आश्चर्य के साथ यह हाल देख रहा था कि यकायक उस पुतली के पीछे वाली दीवार में कुछ खटके की सी आवाज आई और वहाँ एक दर्वाजा दिखाई देने लगा जिसमें से हाथ में कोई चीज लिये एक औरत बाहर निकली तथा कोठड़ी के बीच में खड़ी आश्चर्य भरी आवाज में धीरे से बोली, "हैं ! यह क्या मामला है ! आज इस जगह कोई नया आदमी कौन आया !"

भूतनाथ को इस औरत की आवाज पहिचानी सी मालूम हुई और थोड़े ही गौर ने उसे बता दिया कि यह जमना है। मगर इसके साथ ही जमना की निगाह भी उस पर पड़ गई और वह क्रोध भरी निगाहों से उसकी तरफ देखकर बोली, "बेशक तू प्रभाकरसिंह कदापि नहीं है ! तेरा इस जगह आना ही साबित करता है कि तू यहाँ के मामले से बिल्कुल अनजान और नावाकिफ है। दुष्ट ! सच बता तू कौन है !!

भूत०। (धीमी आवाज में) मैं सचमुच प्रभाकरसिंह ही हूँ।

जमना०। (सिर हिला कर और भूतनाथ के कुछ और पास आ कर) नहीं ! कदापि नहीं !

भूत०। मगर सो क्यों।

जमना०। वे इस कोठड़ी और इसके भेदों से भलीभांति जानकार हैं और खूब समझते हैं कि इस कोठड़ी के अन्दर आना या इस

खिड़की के पास खड़े होना जहाँ तू इस समय खड़ा है कितना खतरनाक है। दुष्ट ! यदि मैं और कुछ सायत तक यहाँ न पहुँचती तो यह पुतली फट जाती और इसके बदन से निकले हुए शीशे के टुकड़े इस कोठड़ी तथा उस खिड़की तक पहुँच कर जहाँ तू खड़ा है तुझे बिल्कुल बेकार कर देते, मगर मैं यह बात दूर कर देती हूँ क्योंकि मुझे तेरा बिल्कुल डर नहीं है क्योंकि अब तो पूरा विश्वास हो गया है कि तू प्रभाकरसिंह नहीं बल्कि विश्वासघाती और अपने मालिक का खून करने वाला गदाधरसिंह है।

इतना कह घूम कर जमना ने कोई ऐसा खटका दबाया जिसके साथ ही छत के साथ लटके हुए शीशे के गोले में से पूर्ववत् चमक निकलने लगी और उस पुतली के बदन से निकलने वाली रोशनी बन्द हो गई। इसके बाद जमना फिर भूतनाथ के पास आई और बोली, "अब भी तू सच बोल और बता कि वास्तव में गदाधरसिंह है या नहीं ?"

भूत०। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वास्तव मे मै प्रभाकरसिंह हूँ और यहाँ ऐसे ही घूमता फिरता निकल आया हूँ।

जमना०। नहीं, कदापि नहीं. तू बड़ा भारी झूठा है और मेरा यह सोचना बहुत ठीक है कि तू गदाधरसिंह है—वही गदाधरसिंह जिसने भले को भला और बुरे को बुरा नहीं समझा ! वही गदाधरसिंह जिसने धन और सुख की लालच मे पड़ बुरे से बुरा काम करने से मुँह न मोड़ा ! वही गदाधरसिंह जिसने अपने मालिक दोस्त और साथी को अपने हाथ से छुरी मारी ! और वही गदाधरसिंह जो उनको मारकर भी सन्तोष न पा सका और हम दोनों बहिनों को इस दुनिया से उठा देने की चेष्टा कर चुका तथा कर रहा है !!

भूत०। (क्रोध के कारण लड़खड़ाती हुई आवाज से) क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं वही गदाधरसिंह हूँ ?

जमना०। हाँ, तू वही गदाधरसिंह है जो इतना करने पर भी शान्त

नहीं हुआ है और इस समय भी अपने तीन प्यारे शागिर्दों के साथ ही साथ अपने पुराने दोस्त गुलाबसिंह का भी जिसकी कृपा का तू किसी समय में अहसानमन्द समझता था, खून करके चला आ रहा है !!

अब भूतनाथ बर्दाश्त न कर सका। झपट कर उसने जमना की कलाई पकड़ ली और उसकी चिल्लाहट पर कुछ ध्यान न दे उसे खिड़की के बाहर खींच जमीन पर पटक छाती पर सवार हो खञ्जर उसके गले पर रख बोला, "खैर जब मैं वही गदाधरसिंह हूँ तो एक औरत का खून मेरा कोई नुकसान नहीं कर सकता !!"

* आठवाँ हिस्सा समाप्त *

१९५२ ई०—ग्यारहवां संस्करण—२००० प्रति

मुद्रक—आर. एस. धवन, कमर्शियल प्रिंटिंग वर्क्स, गायघाट, बनारस।

॥ श्रीः ॥

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा भूतनाथ की जीवनी

नौवाँ हिस्सा

पहिला बयान

अब वह जमाना आ गया है जिसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति पढ़ने वाले पाठकों को उसके चौदहवें पन्द्रहवें और सोलहवें हिस्सों से इन्दिरा का किस्सा सुनने से मालूम हुआ होगा।

दामोदरसिंह का इन्दिरा की तस्वीर वाला कलमदान सर्यू को देना, इन्द्रदेव का जमानिया जाना अपनी लड़की तथा स्त्री को लेकर अपने घर लौटना, दामोदरसिंह की मृत्यु, गोपालसिंह की उस विचित्र सभा द्वारा गिरफ्तारी, उनके पिता राजा गिरधरसिंह की मृत्यु, और गोपालसिंह का राजा बन कर इन्द्रदेव की सहायता से गुप्त कुमेटी का भण्डा फोड़ना आदि सब हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में खुलासे तौर पर लिखा जा चुका

है अस्तु यहाँ पर उन बातों का जिक्र बिल्कुल ही न करेंगे या केवल उतना ही करेंगे जितना कि बहुत आवश्यक होगा।

रात पहर भर से कुछ ऊपर जा चुकी है। अपने आलीशान मकान के एक बड़े कमरे में जिसके सब दर्वाजे भीतर से बन्द हैं दामोदरसिंह और भरतसिंह का नौकर हरदीन बैठे हुए कुछ बातें कर रहे हैं।

कमरे में सिवाय एक समादान के जो दामोदरसिंह के सामने जल रहा है और कोई रोशनी नहीं है तथा इस कारण उस बड़े कमरे में एक प्रकार का अन्धकार है पर तौ भी उस शमादान की रोशनी दामोदरसिंह के चेहरे की उदासी और लाचारी की अवस्था प्रगट करने को काफी है।

दामोदरसिंह के हाथ में एक कागज है जिसे वे मन ही मन पढ़ रहे हैं और हरदीन बेचैनी के साथ उनके मुंह की तरफ देख रहा है।

पढ़ना समाप्त कर दामोदरसिंह ने लम्बी सांस खींची और उसी समय हरदीन ने कहा, 'पर मैं पुनः आप से कहने की जुर्रत करता हूँ कि आप अपना यह विचार छोड़ दें। आप निश्चय रक्खें कि दारोगा को—जिसकी चालाकियों का जाल सब तरफ अच्छी तरह फैला हुआ है—आपकी कार्रवाई का पता जरूर लग जायगा और तब वह आपकी दोस्ती और अहसानों पर कुछ भी खयाल न कर आपका कट्टर दुश्मन बन बैठेगा बल्कि ताज्जुब नहीं की आपकी जान का ग्राहक बन बैठे। उस समय आप ही सोचिये कि उसके मुकाबले में आप क्या कर सकेंगे और किस तरह अपने को बचावेंगे।"

दामोदर०। हरदीन, तुम भी कैसी बातें करते हो? भला तुम सोचते हो कि जब मैं इस काम को करने पर उतारू हुआ हूँ तो उसकी मुसीबतों की तरफ मैंने खयाल न किया होगा या आने वाली आफतों को पहिले ही से सोंच न लिया होगा? नहीं हरदीन! मैं यह सब कुछ सोच विचार चुका हूँ और जो कुछ तुमने कहा वह सब कुछ समझ लेने के बाद ही इस काम में हाथ लगाया है। मैं जानता हूँ कि ऐसा करने और कुमेटी

का हाल प्रगट कर देने पर दारोगा कदापि मुझको जीता न छोड़ेगा पर यह विश्वास मेरे निश्चय को नहीं बदल सकता। मैंने जो सोचा है वह मैं अवश्य ही कर डालूंगा पर साथ ही उस प्रतिज्ञा को जो मैंने कुमेटी का मेम्बर होते समय की थी यहाँ तक निबाहूँगा कि मेरे मरने के पहिले इस कुमेटी का हाल लोगों पर प्रगट न होगा। जिस व्यक्ति के हाथ में यह सब कागजात जो मैंने लिख कर तैयार किये हैं मैं सौपूँगा उसे अच्छी तरह समझा दूँगा कि मेरे मरने का निश्चय कर लेने के बाद ही वह इनको पढ़े और तब जैसा मुनासिब समझे वैसी कार्रवाई करे।

हरदीन०। मगर क्या आप समझते हैं कि दारोगा को इस बात का पता नहीं लगेगा? क्या आप सोचते हैं कि जिस आदमी के हाथ आप ये कागजात सौपेंगे उसका नाम दारोगा को मालूम न हो जायगा? क्या आप जानते हैं कि दारोगा की ताकत कहां तक बढ़ी हुई है और किस प्रकार घर घर में उसके भेदिये और दूत पहुँचे हुए हैं? और क्या आप इसी बात का मुझे विश्वास दिला सकते हैं कि खास आपके इसी घर में आपका कोई नौकर या सम्बन्धी दारोगा की तरफ मिला हुआ नहीं है और इस समय भी आपकी सब बातें सुन नहीं रहा है।

दामो०। मैं सब समझता हूँ, सब जानता हूँ सब बातों पर गौर कर चुका हूँ। जो कुछ तुम कहते हो वह सब ठीक है मगर क्या तुम ही इस बात का विश्वास मुझे दिला सकते हो कि इस गुप्त कमेटी का भेद ज्यादा दिनों तक छिपा हुआ रह सकता है? क्या तुम ही यह कह सकते हो कि इस सभा की कार्रवाइयें और करतूतें तथा अत्याचार ज्यादा दिनों तक इसे कायम रहने देंगे? क्या तुम ही यह बता सकते हो कि अब इस सभा की जिन्दगी कितने दिनों की है। कुछ नहीं, तुम इस बात का निश्चय रक्खो कि इस सभा का अन्त अब आ चुका है और यदि मैं इस काम को न भी करूं तो कोई दूसरा अवश्य कर डालेगा और इस सभा का भण्डा जरूर फूट जायगा। ऐसी अवस्था में सभा का मन्त्री हो कर

मैं ही क्यों न इस काम में अगुआ बनूं और दूसरे की जान आफत में न डाल मैं ही अपनी जान क्यों न होम करूँ ?

हरदीन चुप हो गया, दामोदरसिंह फिर बोले : —

दामो० । क्या तुम कह सकते हो कि वह विचित्र मनुष्य जो उस दिन ऐसी आश्चर्य्य रीति से हमारी सभा में पहुंचा और सब कार्रवाई देख सुन कर चला गया कौन था ? क्या तुमने उसकी शक्ति की तरफ खयाल किया ? क्या तुमने इस बात पर गौर किया कि उस विचित्र मनुष्य को जो केवल छू भर लेता वह बेहोश हो जाता था ! और क्या तुमने इसी बात पर कभी ध्यान दिया कि जिस प्रकार वह आदमी एक दफे आया उसी प्रकार सौ दफे आ और सब बातें जान सुन सकता है और हम लोग उसका कुछ भी नहीं कर सकते !

हर० । बेशक उस अद्‌भुत व्यक्ति में कुछ विचित्र ताकत थी ।

दामो० । ताकत ! ताकत की बात जाने दो पहिले इस बात को सोचो कि वह था कौन ? मुझे पूरा विश्वास है कि वह अवश्य भैयाराजा या उन्हीं का कोई साथी था तुम्हे मालूम है कि स्वयम् दारोगा अपनी जुबान से कह चुका है कि भैयाराजा को इस कुमेटी का हाल मालूम हो गया है । भला जब वे महाराज से बिगड़ कर चले गये उस समय के बाद केवल एक दफे महारानी की मृत्यु पर आने के सिवाय फिर कभी किसी को दिखाई दिये ? या दिखाई दिये भी तो सिर्फ दारोगा को ! जरूर इतने दिनों तक गुप्त रहकर उन्होने तपस्या या और किसी ढंग से अद्‌भुत शक्ति पाई है और अपना पुराना बदला लेने और सभा का भण्डाफोड़ करने आये हैं । हरदीन, तुम इस बात का विश्वास रक्खो कि वह आदमी जो उस दिन आ पहुँचा था कोशिश करने पर सभा का गुप्त से गुप्त भेद जान सकता है और सभा को तहस-नहस कर डालना तो उसके बाएँ हाथ का खेल है । यदि मेरा खयाल ठीक निकला और वे वास्तव में भैयाराजा या उन्हीं का कोई दूत हुआ तो क्या वे प्रगट होने

के बाद इस सभा को और इसके सदस्यों को जीता छोड़ेंगे ? नहीं, कभी नहीं ! वे बुरी तरह से अपना बदला लेंगे और उस समय उस दुष्ट के साथ ही साथ हम लोगों को भी मिट्टी में मिल जाना पड़ेगा। फिर क्यों न मैं ही सभा का जीवन शेष करूं ! क्यों दूसरों की निगाह में मैं व्यर्थ ही कमीना बेइमान और राजद्रोही बनूं और ऐसों के दण्ड से दण्डित किया जाऊँ ? नहीं हरदीन, मैं सब कुछ सोच चुका हूं और सोचने के बाद ही मैंने इस काम में हाथ डाला है। अब मैं अपना विचार बदल नहीं सकता और तुम भी मेरा निश्चय बदल नहीं सकते। तुमको मैं अपना हितू समझता हूं और तुम पर विश्वास करता हूँ इसी से ये सब कागजात मैं तुम्हें पढ़ने के लिये देता हूँ जिन्हें दिन भर की मेहनत के बाद अभी मैं समाप्त कर पाया हूं। इन कागजों में मैंने सभा का सब कच्चा चिट्ठा उतार दिया है, इसके सब सदस्यों सहायकों तथा कार्यकर्ताओं के नाम, जहाँ तक मुझे मिल सके, मैंने इसमें लिख दिये हैं, सभा के सब अधिवेशनों का हाल और उन आदमियों के नाम जिनको सभा की तरफ से प्राणदण्ड हुआ है, मय पूरे हाल के इसमें दे दिया है, जो जो लोग इस दुष्ट सभा के चक्र में पड़ कर कैद भोग रहे हैं उनका नाम इसमें लिखा है और जिन जिन पर इस सभा की क्रूर दृष्टि पड़ चुकी है और जो थोड़े ही दिनों में इसके फन्दे में पड़ा चाहते हैं उनका भी जिक्र मैंने कर दिया है। अपने जानते में तो मैंने कोई बात नहीं छोड़ी, अब तुम भी पढ़ कर देख लो जिसमें मुझे विश्वास हो जाय कि मैंने किसी बात में भूल नहीं की है। लो इन्हें पढ़ो और तब तक मैं एक दूसरे काम से छुट्टी पा कर आता हूं।

इतना कह अपने सामने के कई कागजात उठा कर दामोदरसिंह ने हरदीन के आगे बढ़ा दिये और तब उठ कर कमरे का दर्वाजा खोलते हुये बाहर चले गये। बाहर जाकर उन्होंने फिर दर्वाजा भिड़का दिया।

लगभग एक घड़ी में हरदीन ने उन कागजों का पढ़ना समाप्त किया और तब तक दामोदरसिंह भी वहां लौट आए।

कमरे का दर्वाजा फिर से बन्द कर वे हरदीन के सामने आकर बैठ गये और बोले, "सब बात दुरुस्त है, मेरी आज्ञानुसार इन्द्रदेव को बुलाने आदमी जा चुका है और उम्मीद है कि आज ही वे आ पहुँचेंगे। इन कागजों के रखने के लिये एक उपयुक्त पेटी भी मैं लेता आया हूँ।"

इतना कह दामोदरसिंह ने अपने कपड़ों में से सोने का बना हुआ छोटा सा कलमदान की शकल का एक डब्बा निकाला और हरदीन के आगे रख कर कहा, "बस इन कागजों के लिये यही डिब्बा उपयुक्त होगा मगर पहिले तुम यह बताओ कि इन में कोई बात बढ़ाने या घटाने लायक तो तुमको नहीं मालूम हुई है?"

हर०। नहीं सब ठीक है, कोई बात की कसर नहीं है, हाँ पर इन कागजों की हिफाजत का पूरा खयाल होना चाहिये क्योंकि यदि किसी तरह भी ये दारोगा के हाथ लग गए या उसे इनका पता लग गया तो फिर आप पर भविष्यत् में आने वाली आफत और भी नजदीक आ जायगी और आप अपने को इस दुष्ट के चंगुल से किसी प्रकार बचा न सकेंगे।

दामो०। अपने भरसक तो मैं इसे बहुत ही गुप्त रक्खूंगा और इस बात का प्रबन्ध कर जाऊंगा कि मेरी मौत के पहिले ये कागजात खोलें या पढ़े न जांय क्योंकि सब कुछ होने पर भी अपनी प्रतिज्ञा के निर्वाह का खयाल मुझे जरूर है पर तौ भी भावी के आगे मेरी सब चेष्टा व्यर्थ होगी। मैं नहीं कह सकता कि मेरी मौत कैसी होगी, स्वभाविक होगी अथवा खूनियों के हाथ से, इसका ठीक पता ईश्वर ही जानता है और अब मैं उसी की कृपा पर अपने को छोड़े देता हूं।

इतना कह दामोदरसिंह ने वह सोने का कलमदान खोला, सब कागजों को कायदे से सिलसिले वार उस में रक्खा और तब उसे बन्द

करने बाद उसकी ताली हाथ में लिए वे फिर कमरे के बाहर चले गये।

हरदीन ने उस कलमदान को उठा कर देखा, सोने का खूबसूरत डब्बा था जिसके ढँकने पर मीने की बहुत ही खूबसूरत तीन तस्वीरें बनी हुई थी। बीचोबीच में एक छोटी लड़की की तस्वीर थी जिसके नीचे "इन्दिरा" यह नाम लिखा हुआ था। दाहिनी तरफ भैयाराजा की तस्वीर थी और बाईं तरफ एक नाजुक और खूबसूरत औरत की तस्वीर थी जिसे हरदीन पहिचानता न था।

थोड़ी देर बाद दामोदरसिंह फिर वहां लौटे और हरदीन के पास आ कांपते स्वर में बोले, "हरदीन, एक प्रतिज्ञा तुमसे भी कराया चाहता हूँ। वह यह कि मेरे जीते जी अपनी जुबान से तुम इन कागजों और इस कलमदान का हाल किसी से भी न कहना और न यह बताना कि यह मैं किसे दे रहा हूँ।"

हरदीन ने दामोदरसिंह की इच्छानुसार प्रतिज्ञा की और तब उनकी मन्शा समझ वह उठकर सलाम करने बाद कमरे के बाहर चला गया। दामोदरसिंह ने वह कलमदान उठा लिया और उसे कपड़ों में छिपाये मकान के जनाने हिस्से की तरफ चले गये।

दूसरा बयान

रोहतासगढ़ से जमानिया की तरफ आने वाली सड़क पर हम दो सवारों को देख रहे हैं जो जमानिया की तरफ बढ़े जा रहे हैं।

दोनों सवारों के चेहरों पर नकाबें हैं मगर इस समय उन्होंने उसे पीछे की तरफ फेंका हुआ है और इस कारण हमें इतना मौका मिलता है कि इनकी सूरत शक्ल के विषय में कुछ कह सकें।

बाईं तरफ वाले सफेद घोड़े पर सवार आदमी की उम्र लगभग चालीस वर्ष के होगी। रंग यद्यपि कुछ साँवला है पर तौ भी चेहरा खूबसूरत है। बड़ी आँखें और सुडौल नाक उसकी सुन्दरता बढ़ाने के साथ

हा चेहरे पर रौनक और रुआब डाले हुए है और बड़ी बड़ी मूछों ने जिसमें कोई कोई बाल सफेद नजर आ रहा है उसके हुस्न को और भी बढ़ाया हुआ है और साथ ही चौड़ी छाती और मजबूत कलाइयाँ उसकी ताकत का परिचय दे रही हैं मगर साथ ही उसकी कमर से लटकता हुआ खंजर और बटुआ तथा खूबसूरती के साथ लपेटी हुई कमन्द इस बात की भी सूचना दे रही है कि उसे ऐयारी से कुछ शौक है या वह स्वयम् कोई ऐयार है।

उसका साथी उम्र में उससे बहुत छोटा मालूम होता है। मूँछ दाढ़ी से एक दम साफ चेहरा बिल्कुल लड़को का सा दिखता है पर तौ भी कद या ऊंचाई की तरफ ध्यान देने से उसका सिन बहुत कम नहीं जान पड़ता। रङ्ग साफ गोरा, चेहरा बहुत ही सुन्दर और आँखें बड़ी ही रसीली हैं जो अपने साथी की तरफ देख बार बार जमीन की तरफ झुक जाती हैं। दूसरे सवार की तरह इसकी कमर में ऐयारी का कोई सामान यहाँ तक कि खञ्जर भी दिखाई नहीं दे रहा है।

दोनों सवारों की पौशाकें एक ही रङ्ग ढङ्ग की हैं। सिर पर बड़ा मुंडासा जिसका सिरा कमर से भी कुछ नीचे तक लटका हुआ हैं, चुस्त अंगा और पायजामा तथा पैरों में कामदार जूते हैं जो यदि बेशकीमती नहीं तो कमकीमती भी नहीं हैं।

इस समय इन दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें हो रही हैं जो औरों के कानों तक तो कदाचित् पहुँच न सकें पर हमारे पाठक अवश्य सुन सकते हैं। अपने साथी अधेड़ उम्र के आदमी की किसी बात पर हंसकर नौजवान ने कहा, "आप खातिर जमा रखिये, मेरे पास कोई हर्बा हथियार न रहने पर भी मुझे किसी प्रकार का डर नहीं है। दूसरे मेरा आना जाना इस राह से बराबर हुआ ही करता है और मैं आस पास के जङ्गलों से बखूबी वाकिफ हूं और सब प्रकार के हमलों से अपने को बचा सकता हूँ।

अधेड़०। शायद आपका कहना ठीक हो। खैर आप मेरा हाल तो

पूछ चुके अब अपना बताइये कि इस तरह अकेले सफर करने का क्या कारण है ?

नौज० । हाँ हाँ मैं अपना हाल भी कहूँगा मगर आप पहिले अपना पूरा हाल तो बता लीजिये ।

अधेड़० । मेरे विषय में अब आप और क्या जानना चाहते हैं ? मैंने तो कह ही दिया कि राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार हूं और किसी खास काम से जमानिया जा रहा हूं ।

नौज० । और आपका नाम क्या है ?

अधेड़० । सुजनसिंह ।

नौज० । (जोर से हंसकर) हाँ आप वह नाम भी बता चुके हैं, मगर मेरा दिल आपकी बातें कबूल नहीं करता ।

अधेड़० । क्यों क्या मैं गलत कह रहा हूँ ?

नौज० । यह तो मैं नहीं कहता कि आप गलत कह रहे हैं । मैं तो सिर्फ यही कहता हूँ कि मेरा दिल आपकी बातें कबूल नहीं करता !!

अधेड़० । खैर तो आपका दिल क्या कहता है ?

नौज० । यही कि न तो आप राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार हैं और न आपका नाम सुजनसिंह है ।

अधेड़० । (चौंक कर) सो क्यों, सो क्यों ?

नौज० । (हंसकर) आप ऐयार होकर भी ऐसी भारी भूल करते हैं ! क्या आप समझते हैं कि आज इस दुनिया में कोई आदमी ऐसा भी है जो प्रतापी राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को नहीं जानता या जिसने उनका नाम भी नहीं सुना है ?

अधेड़० । तब ?

नौज० । तब यही कि राजा बीरेन्द्रसिंह के यहाँ सुजनसिंह नाम का कोई ऐयार ही नहीं है ।

अधेड़० । (कुछ रुकते हुए) बात यह है कि मैं खास राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार नहीं हूँ मगर उनके ऐयार देवीसिंहजी का शागिर्द जरूर

हूँ और इसी सबब से अपने को राजा बीरेन्द्रसिंह का ही ऐयार समझता हूँ।

नौज०। शायद।

अधेड़०। शायद के क्या मानी! क्या अब भी आप मुझ पर शक करते हैं?

नौज०। मैं कह चुका हूँ कि मेरी समझ में न तो आप बीरेंन्द्रसिंह के ऐयार हैं और न आपका नाम सुजनसिंह है।

अधेड़०। आखिर आप के इस विश्वास का कोई सबब भी तो मालूम हो कि आप क्यों मुझे झूठा समझते हैं! अच्छा अगर मैं सुजनसिंह नहीं हूँ और बीरेन्द्रसिंह का ऐयार भी नहीं हूँ तो आप ही बताइये कि कौन हूँ। जरा पता तो लगे कि आप मुझ पर कौन होने का शक करते हैं?

नौज०। (हँस कर) बता दूँ?

अधेड़०। हाँ हाँ बताइये, डर किस बात का है?

नौज०। बहुत अच्छा तो सुनिये, आप रोहतासगढ़ के महाराज दिग्विजयसिंह के ऐयार हैं और आपका नाम शेरसिंह है!

नौजवान की बात सुन वह सवार एक दम चौंक पड़ा और तब अपना घोड़ा नौजवान के पास ले जा गौर से उसकी सूरत देखने लगा।

पर इसी समय यकायक बाईं तरफ से आवाज आई, "और मैं भी पहिचान गया कि तू कौन है।" और इसके साथ ही भूतनाथ आकर उन दोनों सवारों के सामने खड़ा हो गया।

भूतनाथ की सूरत देखते ही न जाने क्यों वह नौजवान एक दम काँप गया और तुरत ही अपने घोड़े का मुंह घुमा तेजी के साथ बगल के जंगल में घुस देखते देखते नजरों से गायब हो गया। भूतनाथ कुछ सायत तक एक टक उसकी तरफ देखता रहा और तब धीरे से बोला, "यह यहाँ क्यों आई?"

अधेड़ उम्र आदमी भूतनाथ को देखते ही घोड़े पर से कूद पड़ा

और उसके गले से चिमट गया। भूतनाथ ने भी उसे लिपटा लिया और दोनों की आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगे।

थोड़ी देर बाद दोनों अलग हुए और शेरसिंह ने उस तरफ देखते हुए जिधर वह नौजवान चला गया था पूछा, "यह कौन था! मैंने इसे नहीं पहिचाना पर इसने मुझे पहिचान लिया!"

भूत०। आपने इसे नहीं पहिचाना! यह गौहर थी।

शेर०। गौहर, शेरअलीखाँ की लड़की*!

भूत०। हाँ, मैं तो एक ही नजर में उसे पहिचान गया।

शेरसिंह कुछ देर तक एक टक उस तरफ देखता रहा जिधर वह सवार गया था इसके बाद उसने भूतनाथ की तरफ देखा।

भूत०। इधर बहुत दिनो बाद आये?

शेर०। हाँ राजा साहब के एक काम से आना पड़ा और तुमसे भी बहुत दिनों से मुलाकात नहीं हुई थी इसलिये भी आ रहा हूं। इधर तुम्हारे बारे में कई ऐसी खबरें सुनीं कि जिनसे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।

भूत०। (लाचारी की मुद्रा से सिर झुका कर) हाँ, इधर मैं बड़ी मुसीबत में पड़ गया था, खैर अब आए हैं तो सब सुन ही लेंगे। चलिये डेरे पर चलिये।

शेर०। नहीं भाई पहले मैं वह काम कर लूं जिसके लिये आया हूं तब तुमसे बातें होगी क्योंकि वह बड़ा जरूरी है।

भूत०। मैं समझता हूँ दारोगा से कोई काम होगा।

शेर०। हाँ, पर तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

भूत०। (हंस कर) भला मुझे कौन बात नहीं मालूम! कहिये तो वह काम भी बता दूँ जिसके लिये आप आये हैं।

इतना कह भूतनाथ ने झुक कर शेरसिंह के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही वे चौंक पड़े और कुछ सायत तक चुप रहने के बाद बोले, "बेशक

* चन्द्रकान्ता सन्तति में ये नाम आ चुके हैं।

तुम्हारे विषय में मैंने जो कुछ सुना बहुत ठीक है, न जाने तुम्हें इन बातों का पता क्योंकर लग जाता है। खैर इस वक्त तो मैं ठहर नहीं सकता लेकिन फिर मिलूँगा तो जरूर अच्छी तरह बातें होगी। अच्छा तुम्हें कहाँ खोजूँ, किस जगह रहोगे ?"

यकायक भूतनाथ के कानों में एक सीटी की आवाज सुनाई पड़ी जो जंगल की तरफ से आई थी। वह चौंका और तब "मैं स्वयं आपको खोज लूंगा" कहते कहते शेरसिंह से जाने का इशारा कर फुर्ती के साथ उसी जंगल में घुस गया। शेरसिंह भी अपने घोड़े पर सवार हुए और तेजी के साथ जमनिया की तरफ रवाना हुए।

दिन पहर भर से कुछ कम ही बाकी रह गया होगा जब शेरसिंह जमनिया के दारोगा साहब के मकान पर पहुंचे। खासबाग वाले मकान पर नहीं बल्कि शहरवाले उस मकान में जिसके विषय में हमारे पाठक ऊपर बहुत कुछ पढ़ चुके हैं।

सूचना मिलते ही दारोगा साहब ने शेरसिंह को भीतर बुला लिया और अपने सामने बैठा कर कुशल मंगल के बाद आने का कारण पूछा कुछ देर बातचीत होती रही इसके बाद शेरसिंह ने एक चीठी जिस पर मुहर की हुई थी निकाल कर दारोगा के हाथ पर रख दी।

दारोगा ने वह चीठी खोल कर बड़े गौर के साथ पढ़ी और तब कहा "इस चीठी से मालूम होता है कि आपसे और भी कई ऐसी बातों का पता लगेगा जो इसमें नहीं लिखी गई हैं।"

शेर०। बेशक ऐसा ही है। उस चीठी के साथ ही आपको यह चीठी भी देखनी चाहिये जिसके पढ़ने से आपको राजा साहब की चीठी का मतलब पूरी तौर से मालूम हो जायगा।

इतना कह शेरसिंह ने एक दूसरा पत्र जेब से निकाल दारोगा साहब की तरफ बढ़ाते हुए कहा, "यह पत्र राजा शिवदत्त ने हमारे महाराज को भेजा था और आपको दिखाने के लिये महाराज की आज्ञा से मैं

लेता आया हूं।"

दारोगा ने इस पत्र को भी गौर से पढ़ा और तब दोनों चीठियें सामने रख कहा, "तो राजा शिवदत्त महाराज दिग्विजयसिंह से मदद चाहते हैं?"

शेर०। जी हाँ।

दारोगा०। इस बारे में कि वे राजा बीरेन्द्रसिंह इत्यादि से बदला लेने में उनकी सहायता करें?

शेर०। जी हां, महाराज शिवदत्त ने बीरेन्द्रसिंह इत्यादि से हार मान कर पहिले तो तपस्या करनी चाही पर तपस्या उन्हें रुची नहीं अस्तु अब वे अपने दुश्मनों से बदला लेने की फिक्र में लग गये हैं। उन्होंने शिवदत्तगढ़ नामक एक शहर भी बसाया है और उनके पास अब फौज और ऐयारों की भी कमी नहीं है पर तिस पर भी वे यह समझते है कि अकेले लड़ कर वे चाहे अपने और दुश्मनों पर फतह पा जायं पर राजा बीरेन्द्रसिंह को नहीं जीत सकेंगे इसीलिये वे अपने दोस्तों की मदद चाहते हैं। उन्होंने शायद आपसे मदद मांगी थी पर आपने इन्कार कर दिया।

दारोगा०। हां उसने मदद मांगी थी पर मैंने नामंजूर किया क्योंकि....(रुक कर) अच्छा आप पहिले अपनी बात समाप्त कर लें तो मैं यह बताऊंगा कि क्यों मैंने मदद नहीं दी।

शेर०। बहुत अच्छा। हमारे महाराज आपको गुरु की तरह मानते और इज्जत करते हैं और बिना आपकी आज्ञा लिये वे शिवदत्त को किसी तरह का जवाब नहीं दे सकते थे, अस्तु उन्होंने इसी लिये मुझे आपके पास भेजा है कि मैं आपको शिवदत्त की चीठी दिखाने के साथ ही आपकी राय भी जान लूं और यह भी मालूम कर लूं कि आपके मदद से इन्कार करने का क्या कारण है। शिवदत्त के जोर देने और उससे अपना फायदा होने की उम्मीद रहते हुए भी वे तब तक इस काममें हाथ न डालेंगे जब तक आपकी आज्ञा न पा लें।

दारोगा० । अच्छा तो मैं सोच कर कल आपको ठीक ठीक जवाब दूंगा । राजा शिवदत्त से और मुझसे दोस्ती थी और उसकी बहुत कुछ मदद की भी मगर उसकी मदद से मुझे कोई फायदा तो हुआ नहीं उल्टे मेरा बहुत कुछ नुकसान ही हुआ । कुछ ही दिन की बात है कि उन्होंने अपने कई कैदी हिफाजत के खयाल से मेरे पास भेज दिये और मैंने दोस्ती के लेहाज से उनको रख भी लिया था पर न जाने किस तरह वे सब कैदी-छूट कर निकल गये और अपने साथ मेरे निज के कई कैदियों को भी निकाल ले जाकर मुझे आफत और तरद्दुद में डाल गये । अभी तक उन कैदियो का पता नहीं लगा है और अगर वे नहीं मिलेंगे तो मुझे बहुत सख्त तरद्दुद उठाना पड़ेगा । यही कारण है कि मैं शिवदत्त की मदद करने से हिचकता हूँ और खासकर राजा बीरेन्द्रसिंह के मुकाबले में ।

शेर० । मगर आपने शायद उनकी उस चीठी पर गौर नहीं किया जो मैंने अभी आपको दिखाई । वे आपसे कोई बहुत ज्यादा मदद नहीं चाहते और राजा बीरेन्द्रसिंह के विषय में तो केवल हमारे महाराज से ही मदद चाहते हैं । आपसे वे केवल अपने उन्हीं दुश्मनों के विषय में सहायता चाहते हैं जो आपके कब्जे में हैं । तथा केवल उन्हीं शत्रुओं से बदला लेने में आपकी मदद चाहते हैं जिनको आप पकड़ सकते हैं या जो इस समय जमानिया राज्य में मौजूद हैं । उन्होंने ऐसे एक व्यक्ति का हमारे महाराज के पत्र में नाम भी लिखा है जो मुझे स्मरण नहीं आ रहा है .....

दारोगा० । प्रभाकरसिंह ?

शेर० । जी हाँ, जी हाँ, प्रभाकरसिंह ? प्रभाकरसिंह से और महाराज शिवदत्त से बहुत बड़ी दुश्मनी है और राजा बीरेन्द्रसिंह से चुनार में जो लड़ाई हुई थी उसमें प्रभाकरसिंह ने बीरेन्द्रसिंह की तरफ हो उन्हें बहुत नीचा दिखाया तथा सख्त जख्मी किया था । सुना गया है कि आजकल

वे प्रभाकरसिंह जमानिया में ही हैं अस्तु राजा शिवदत्त चाहते हैं कि आप प्रभाकरसिंह को गिरफ्तार कर उनके हवाले कर दें।

दारोगा०। हाँ हाँ, यह सब बातें तो राजा शिवदत्त की चीठी से जाहिर होती ही हैं, मगर मेरे कहने का मतलब यह कि वे इस काम को जैसा सहज समझे हैं वैसा सहज वह वास्तव में नहीं है और प्रभाकरसिंह को किसी ताकतवर आदमी की मदद मिल रही है जिसके आगे मुझे भी नीचा देखना पड़ा है।

शेर०। उन्होंने यह भी कहा है कि प्रभाकरसिंह के पकड़ने में किसी प्रकार का खर्च पड़े और ऐयारों सिपाहियों या दूसरे लोगों को किसी इनाम इत्यादि की जरूरत पड़े तो वे देने को तैयार हैं और जरूरत पड़ने पर वे अपने ऐयारों को भी भेज सकते हैं यहां तक कि वे प्रभाकरसिंह आदि की गिरफ्तारी के लिए दो चार लाख रुपया खर्च करने में आगा पीछा न करेंगे पर . . . .

दारोगा०। हां भाई, सो सब तो तुम्हारा कहना ठीक है मगर तुम्हीं सोचो कि मैं साधू आदमी, संसारत्यागी, विरक्त, मुझे इन झगड़ों में पड़ने से क्या फायदा! एक बार दोस्ती के खयाल से और बड़ा जोर देने पर मैंने शिवदत्तसिंह का काम कर दिया पर उसका यह मतलब तो नहीं है कि बराबर बुरे भले कामों में उसकी मदद करता रहूं और व्यर्थ की बदनामी का टोकरा अपने सिर पर लाद लोगों की निगाह में अपने को नीचा करता रहूँ! एक दफे जो मैंने उनकी मदद कर दी वही अभीतक मेरी बदनामी का सबब बनी हुई है, दुबारा मदद करने से न जाने क्या होगा। उसकी बात तो जाने दो, अपने इसी जमानिया राज्य में देखो, महाराज गिरधरसिंह कई बार मुझसे दीवानी या राज्य का और कोई ओहदा लेने पर जोर दे चुके हैं परन्तु मैं नहीं लेता क्योंकि ऐसा करने से मेरे संसार-त्याग और ईश्वरभजन में विघ्न पड़ेगा। मैं तो राज्य का जो काम करता हूँ उतना भी न करता और तपस्या करने के लिए किसी

जंगल में जाकर अपनी जिन्दगी के बाकी दिन काट देता अगर मुझे महाराज का प्रेम न होता या वे ही मुझसे इतना स्नेह न रखते। तब भी मैंने इस बात का प्रण कर लिया है कि केवल इन्हीं महाराज के समय तक इस शहर में रहूँगा. . . . . (यकायक अपने को रोक) खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं, इस समय पहिले . . . . . (कुछ सोच कर) यदि मैं कुछ विलम्ब करके महाराज दिग्विजयसिंह के पत्र का उत्तर दूं तो क्या कोई हर्ज है ?

शेर०। कोई हर्ज नहीं, आप जब उत्तम समझें तभी उत्तर दें, मैं अपना काम कर चुका अब उत्तर देना आपके हाथ है।

दारोगा०। हां ठीक है, अच्छा कल तो नहीं पर परसों किसी समय मैं आप को अपने उत्तर से सूचित करूंगा, इस दो दिन के बीच में मैं अच्छी तरह सोच विचार भी कर लूंगा और. . . . . (रुक कर) बहुत अच्छा तो परसों संध्या को आप मुझसे मिलें।

शेर०। बहुत खूब ! परसों मैं आपसे मिलूँगा। अब इस समय अगर इजाजत दें तो डेरे पर जाकर . . . .

दारोगा०। हां हां, अब मैं आपको ज्यादा देर तक रोक नहीं सकता। क्या कहूं आप मेरी मेहमानदारी कुबूल ही नहीं करते नहीं तो इसी कुटिया में आपके आराम का सब प्रकार का बन्दोबस्त हो जाता।

शेर०। सब आप ही का है और मैं भी आप ही का हूँ पर बात यह है कि इस शहर में मेरे कुछ सम्बन्धी ऐसे हैं जो मेरा दूसरे के यहां ठहरना मन्जूर ही नहीं करते और लाचार मुझे उनकी बात माननी पड़ती है।

दारोगा०। जी हां, यही बात तो आप कह चुके हैं और ऐसा कहना उचित भी है, रिस्तेदारों का जोर ऐसा होता ही है जिसके विरुद्ध मैं आपको कुछ नहीं कह सकता। बहुत अच्छा, अब फिर बातें होती रहेंगी, इस समय आपको रोकना व्यर्थ कष्ट देना है।

शेरसिंह उठ खड़े हुए और दारोगा बड़ी खातिरदारी के साथ उन्हें उस कमरे के दर्वाजे तक पहुँचा गया, जब मकान के बाहर चले गये तो वह कमरे के बाहर निकला और ऊपर की मंजिल में जा एक बन्द दर्वाजे के सामने पहुँचा जिसमें ताला लगा हुआ था। कमर से तालियों का एक झब्बा निकाल कर उसने ताला खोला और कोठड़ी के अन्दर जा दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया।

तीसरा बयान

कोठड़ी के भीतर घोर अन्धकार था मगर अन्दाज से टटोलता हुआ दारोगा एक आले के पास पहुँचा और उसमें से रोशनी का सामान निकाल रोशनी की।

लगभग आठ हाथ के चौड़ी और इतनी ही लम्बी यह कोठरी बिल-कुल संगीन बनी हुई थी इसमें आने के लिए केवल एक वही दर्वाजा था जिसकी राह दारोगा इस जगह आया था पर सामने की तरफ एक बहुत बड़ी आलमारी दीवार में जड़ी हुई दिखाई पड़ रही थी।

लालटेन हाथ में लिए दारोगा कुछ देर तक चुपचाप खड़ा कुछ सोचता रहा, इसके बाद आगे बढ़ा और उस आलमारी के पास जा उसका पल्ला खोला, तब कोई खटका ऐसा दबाया कि उसकी बगल वाली एक सिल्ली हट गई और उतरने के लिए सीढ़ियां दिखाई पड़ीं। दारोगा उस आलमारी के अन्दर घुसा और उन्हीं सीढ़ियों की राह नीचे उतरने लगा।

दस बारह सीढ़ियां उतरने बाद दारोगा ने अपने को एक लम्बे चौड़े दालान में पाया जिसके दोनों तरफ दो कोठड़ियां थीं। दारोगा बाईं तरफ वाली कोठरी के अन्दर घुस गया और एक दर्वाजे के पास पहुँचा जिसमें बड़ा सा ताला बन्द था।

दारोगा ने उसी गुच्छे में से एक ताली लगा ताला अलग किया

और तब पल्ला खोल अन्दर घुसा। एक छोटी कोठरी नजर आई जिसमें किसी तरह का सामान, यहाँ तक कि एक आला या आलमारी भी न थी।

हाथ में रोशनी लिए दारोगा इस कोठड़ी में घुसा और दाहिनी तरफ दीवार में पैर से ठोकर मारने लगा, तीन चार ठोकर खाते ही पत्थर की एक पटिया अलग हो गई और आदमी के जाने लायक रास्ता तथा ऊपर चढ़ने के लिए पतली सीढ़ियां दिखाई दीं जिनकी राह वह ऊपर चढ़ने लगा।

अब दारोगा जिस जगह पहुँचा वह एक बड़ा कमरा था जो बिलकुल काले पत्थरों का बना हुआ था। जमीन, दीवारें यहां तक कि छत भी काले ही पत्थरों की बनी हुई थी जिस कारण इस जगह एक डरावना अन्धकार छाया हुआ था जिसको दारोगा के हाथ की लालटेन दूर नहीं कर पाती थी।

इस कमरे के बीच में खड़े हो कर दारोगा ने अपने चारो तरफ निगाह दौड़ाई, पूरब उत्तर और पश्चिम की तरफ की दीवारों में लगभग चार चार हाथ के फासले पर लोहे के पल्ले जड़े हुए दिखाई पड़ते थे जो सरसरी निगाह से देखने से आलमारियां मालूम होती थीं पर वास्तव में वे उन कोठढ़ियों के दर्वाजे थे जिनमें दारोगा अपने बहुत ही गुप्त कैदियों को रखता था।

दारोगा पश्चिम तरफ की दीवार के सब से आखिरी दर्वाजे के पास पहुँचा और लालटेन हाथ से रख ताला खोल लोहे का दर्वाजा (जो एक ही पल्ले का था) हटाया, इसके बाद लालटेन वाला हाथ ऊँचा कर अन्दर की अवस्था देखने लगा।

एक लोहे का जंगला जिसमें चार चार अंगुल पर मोटे छड़ लगे हुए थे, पार कर दारोगा की निगाह उस छोटी कोठड़ी के अन्दर गई जिसमें कम्बल के उपर पड़ी हुई एक लाश दिखाई पड़ती थी, पर नहीं

वह लाश नहीं थी, बल्कि एक कैदी था और अभी तक उस कैदी में कुछ जान बाकी थी क्योंकि दारोगा के हाथ की रोशनी जब अन्दर गई तो उसने करवट बदली और एक लम्बी 'आह" लेकर अपने कपड़े दुरुस्त कर उठ बैठा ! उस समय मालूम हुआ कि वह आदमी नहीं कोई औरत है जिसका बदन सूख कर बिलकुल काँटा हो गया था और बड़ी बड़ी आंखे जो किसी समय बड़े बड़े कलेजे वालों को पानी कर देने की ताकत रखती होंगी इस समय बिलकुल गड्ढे में धंसी हुई थीं। वे गाल जो शायद किसी समय अपनी सुन्दरता से गुलाब को नीचा दिखाते होंगे इस समय मुर्झाये हुए थे और उनकी जगह दो ऊँची हड्डियों ने दखल कर रक्खी थी जो आंखों को भी अपनी मातहती में लिये हुई थीं तथा वह बदन जो अपनी कोमलता से किसी समय कमल को मात करता होगा इस समय झाँवरा हो गया था।

दारोगा की आंखें इस कैदी औरत की आंखों से मिलीं। इस अवस्था में पहुँच जाने पर भी उन आंखों में न जाने कौन सी ताकत थी जिसने दारोगा का सिर नीचा कर दिया, पर तुरत ही बेहयाई और बेमुरौवती का जामा पहिन कर उसने अपनी आंखें उठाई और उस औरत की तरफ देख कर कहा, "मालती ! क्या तू मुझे पहिचान सकती है ?"

न मालूम दारोगा के इस सवाल में कौन सा भेद छिपा हुआ था कि इसके सुनते ही वह औरत एक दम सिर से पैर तक काँप उठी और थोड़ी देर तक तो ऐसा मालूम हुआ मानों उसे फिर गश आ जायगा पर बहुत ही कोशिश करके उसने अपने को सम्हाला और दोनों हाथों से अपना मुंह ढाँक कर बोली, "दुष्ट ! पापी !! क्या तुझे जरा भी शर्म नहीं है ? क्या ईश्वर ने तेरा दिल ऐसा बनाथा है कि उस पर लज्जा और हया की आभा तक नहीं पड़ सकती ! क्या मरे हुए को मारते तेरे को दया नहीं आती ! कम्बख्त ! इतने दिनों तक तेरी कैद में रह कर भी मैं इस लिये ईश्वर को धन्यवाद देती थी कि वह मुझे तेरी काली सूरत नहीं

दिखाता था और मैं इसी में प्रसन्न रहती थी कि मुझे तेरी आवाज सुननी नहीं पड़ती पर इतने दिनों बाद मेरी वह प्रसन्नता भी तू दूर किया चाहता है ! कहां....."

दारोगा० । ठहरो ठहरो, इतना जोश में न आओ, मैं तुम्हें किसी तरह का कष्ट नहीं पहुंचाया चाहता... .. ...

औरत० । हाँ ठीक है, इस समय तूने मुझे बड़े सुख में रक्खा हुआ है, भला मुझे किसी तरह का कष्ट है !!

दारोगा० । (सिर झुका कर) तुम्हारा कहना ठीक है, जरूर तुम्हें इस जगह कैद रह कर तकलीफ उठानी पड़ती है मगर इतना तो तुम खुद सोच सकती हो कि तुम्हारे इन दुःखों का कारण मैं नहीं हूं बल्कि तुम्हारी जिद है जिसने तुम्हें इस अवस्था तक पहुंचा रक्खा है । यदि मैं तुम्हारा वह विचार जान कर भी तुम्हें कैद न कर लेता तो फिर क्या करता ! बड़ी मजबूरी में पड़ कर ही मुझे तुम्हारी यह गत करनी पड़ी । मगर तुम यह बात भी न भूलो कि तुम्हें यहां आते ही मैंने छुटकारे का एक उपाय बतलाया जिसे करते ही तुम कैद से छूट जातीं पर तुम्हें मेरी बात मंजूर न हुई । भला इस जिद्द का भी कोई ठिकाना है !

औरत० । वाह क्या कहना है, इस समय तू मुझे.....खैर तुमसे व्यर्थ की बकवाद मैं नहीं किया चाहती ।

दारोगा० । मैं व्यर्थ की बकवाद नहीं करता बल्कि तुम्हारे फायदे की बात कहता हूँ, यदि तुम्हें मेरी वह बात नहीं मन्जूर है तो मैं एक दूसरी बात कहता हूं, सुनो और व्यर्थ की मूर्खता मत करो !!

उस औरत ने इसका कुछ जवाब न दिया पर दारोगा ने झुक कर धीरे से न जाने क्या कहा कि सुनते ही वह बिल्कुल बदहवास हो गई, उसकी आँखें बन्द हो गईं और एक गश की सी हालत में वह जमीन पर गिर गई ।

दारोगा कुछ देर तक उस की तरफ देखता रहा, इसके बाद उसने

धीरे से कहा, "जान पड़ता है सचमुच बेहोश हो गई ! खैर फिर देखा जायगा ! मगर यह बड़ी कमजोर हो गई है ! कहीं.....!" कैदखाने का बाहरी लोहे वाला दर्वाजा उसने बन्द किया और इस बात का कुछ खयाल न कर कि कैदी की क्या दशा होगी वहाँ से हट एक दूसरे दर्वाजे के पास पहुँचा।

और दर्वाजों की तरह इस दर्वाजे में भी एक बड़ा ताला लगा हुआ था जिसके खोलने के इरादे से दारोगा ने अपने हाथ की लालटेन जमीन पर रक्खी और उस झब्बे की तालियों मे से जो किसी क्रम से लगी हुई थीं खोज कर एक ताली उस ताले में लगाई मगर ताला न खुला। कुछ देर तक जोर करने बाद दारोगा ने ताली निकाल ली और देख भाल तथा ठोंक पीट करने बाद पुनः लगाई पर इस बार भी वही नतीजा निकला। आश्चर्य करते हुए दारोगा ने एक दूसरी ताली लगाई और फिर तीसरी मगर कोई भी उस तालो में न लगी।

यह एक नई बात थी क्योंकि दारोगा को इस बात का विश्वास नहीं हो सकता था कि इस ताले में किसी तरह का ऐब आ गया है। उसको यह सन्देह हुआ कि जरूर उसके झब्बे की तालियों में किसी ने उलट फेर कर दिया है। एक एक करके उसने झब्बे की सब तालियों को गिना और इसके साथ ही चौंक कर बोल उठा, "हैं ! इसमें तो उन्नीस ही तालियें हैं ! तीन तालियें कहाँ गईं !!"

कुछ देर तक दारोगा सोचता रहा, इसके बाद मन ही मन यह कहता हुआ कि 'जैपाल से पूछना चाहिये, कदाचित् वह जानता हो, क्योंकि उसके सिवाय तो यह झब्बा मैं और किसी के हाथ में देता नहीं।' वह उन्हीं सीढ़ियों की राह नीचे वाली कोठड़ी में पहुंचा। तालियों की कमी ने उसे इतना घबरा दिया था कि वह उस ताले को बंद करने के लिये भी न ठहरा जो कैदियो के कमरे में जाने वाली अलमारी में लगता था और बाहर निकल गया।

इस कोठड़ी की दाहिनी और बाईं दावारों में भी एक एक आलमारी ठीक उसी तरह की थी जैसी कि बीच की दीवार में, वही जिस में से दारोगा अभी निकला था। दारोगा के जाने के कुछ ही क्षण बाद दाहिनी तरफ वाली आलमारी खुली और उसमें से कोई आदमी बाहर निकला जिसके हाथ में मद्धिम रोशनी की एक विचित्र लालटेन थी। इस रोशनी ने दिखा दिया कि उस आदमी का सारा बदन ही स्याह कपड़े से ढंका हुआ नहीं है बल्कि चेहरे पर भी नकाब पड़ी हुई है। तेजी के साथ एक निगाह अपने चारो तरफ डालने बाद इस आदमी ने बीच वाली आलमारी जिसके पल्ले दारोगा सिर्फ भिड़का कर छोड़ गया था खोली और उसके अन्दर चला गया।

चौथा बयान

सूनसान और भयानक जङ्गल के बढ़ते हुए सन्नाटे को तोड़ने की सामर्थ उन छोटी छोटी चिड़ियाओ में नहीं है जो दिन भर इधर उधर घूम फिर कर अब अपने अपने घोसलों की तरफ जा रही हैं।

अन्धकार यद्यपि बढ़ता जा रहा है तथापि इसका कारण यह नहीं कि सूरज डूब गया है। ऊंचे ऊंचे पेड़ों की चोटियों पर इस समय भी उसकी अन्तिम किरणें पड़ कर उन्हें सुनहरा कर रही हैं पर इस जगह का जङ्गल इतना घना है कि उस रोशनी को नीचे तक आने की इजाजत ही नहीं मिलती।

मन्द मन्द बहती हुई हवा जंगली चश्मे के किनारे जाती हुई उस औरत के कपड़ों को इधर उधर उड़ा रही हैं जो बार बार अपने चारो तरफ देखती और कुछ कुछ देर पर रुकती हुई दक्षिण की तरफ बढ़ी जा रही है।

इस औरत की सूरत शक्ल का ठीक ठीक अन्दाजा यद्यपि नहीं किया जा सकता पर उसकी पौशाक के खयाल से हम कह सकते हैं

कि वह किसी गरीब खानदान की नहीं है। मुसल्मानी ढंग की पौशाक पर जरी का काम उसके अमीर होने की सूचना दे रहा है और दो चार नाजुक गहने इस बात की और भी पुष्टि कर रहे हैं।

यकायक उस औरत के कानों में टापों की आवाज सुनाई पड़ी जिसने उसे चौंका दिया और वह इधर उधर देखने लगी। थोड़े ही गौर ने बता दिया कि यह सवार सामने की तरफ से आरहा है और बहुत दूर भी नहीं है। उत्कण्ठा ने इस औरत की चाल भी तेज कर दी और बात की बात में वह सवार के पास जा पहुँची।

इस औरत को देख सवार ने उतरने में फुर्ती की और घोड़े की लगाम पेड़ की डाल एक से अटकाने बाद औरत के पास पहुँच सलाम कर खड़ा हो गया। औरत ने सलाम का जवाब दिया और तब मीठी आवाज में पूछा, "कहो क्या कर आये ?"

सवार०। सब काम ठीक हो गया। उसने सब बातें स्वीकार कीं और चीठी देने का वादा भी किया है मगर एक शर्त वह बेढब लगाती है।

औरत०। सो क्या ?

सवार०। उन सब बातों के बारे में वह खास आपके हाथ का लिखा हुआ पत्र चाहती है जो कि आपने जबानी मेरे जरिये कहला भेजी है।

औरत०। मगर ऐसा होना तो मुश्किल है !

सवार०। बेशक मुश्किल है और बेमुनासिब भी, क्योंकि आपकी चीठी उसके पास हो जाने पर वह अगर किसी समय बर्खिलाफ होगई ...।

औरत०। बेशक यही बात है, उस वक्त उसके दुश्मन हो जाने का बड़ा ही बुरा नतीजा निकलेगा जब उसके पास सबूत में मेरा ही लिखा खत होगा। (कुछ रुक कर) अपने हाथ से लिखकर तो उसे मैं कुछ भी नहीं दिया चाहती !

सवार०। मगर वह और किसी तरह मानती भी तो नहीं ! मैंने उसे

बहुत कुछ ऊंच नीच समझाया और कहा सुना भी। मगर बातें आप की सब मन्जूर करने पर भी बस वह यही कहती है कि मुझे क्या सबूत कि तुम सच कह रहे हो और किसी तरह का धोखा देकर अपना कोई काम निकालने की तुम्हारी नीयत नहीं है।

औरत०। यह तो बड़े तरद्दुद की बात तुमने सुनाई। तुम ही सोचो कि मैं अपने हाथकी लिखी कोई चीठी उसे कैसे भेज सकती हूँ?

सवार०। किसी तरह नहीं, और बिना आपके लिखे वह मन्जूर नहीं करती (कुछ रुक कर) यदि आप स्वयम् एक बार उससे मिलें तो कैसा हो!!

औरत०। मेरी उसकी कभी की मुलाकात नहीं!

सवार०। तो इससे क्या, जब आपने यह ढंग पकड़ा है तो आखिर कभी न कभी मिलना भी तो पड़ेगा ही!

औरत०। ठीक है मगर तौ भी किसी ऐसे आदमी के घर जाना जिससे मुझे डर ही लगा रहता है मुनासिब नहीं मालूम होता। क्या जाने कब क्या खराबी पैदा हो जाय।

सवार०। कौन ताज्जुब है।

औरत०। तुम एक दफे और उससे मिलते और बातचीत करते, शायद मान जाय।

सवार०। जो हुक्म, मगर मुझे भरोसा नहीं है कि वह मानेगी। क्योंकि अपने भरसक मैं उसे बहुत कुछ कह सुन और समझा चुका और वह किसी तरह नहीं राजी हुई (कुछ रुक कर) हाँ एक बात हो सकती है।

औरत०। वह क्या?

सवार०। नन्हों उसे अच्छी तरह जानती है बल्कि दोनों में बड़ी मुहब्बत है।

औरत०। (चौंक कर) क्या यह तुम ठीक कह रहे हो?

सवार०। बेशक, मैं बहुत ठीक कह रहा हूं।

इस बात ने औरत को कुछ देर के लिये चुप कर दिया और वह सर नीचा कर कुछ सोचने लगी। कुछ देर के बाद उसने कहा, "अच्छा मैं नन्हों से मिलूंगी। अगर तुम्हारा कहना ठीक है और नन्हों उसे जानती है तो इसमें कोई शक नहीं कि मेरा काम बखूबी बन जायगा और मैं गदाधरसिंह को हमेशा के लिये अपने कब्जे में कर सकूंगी। अच्छा अब तुम जाओ और मैं भी लौटती हूँ, बहुत देर हो गई।"

सवार यह सुन सलाम कर पीछे घूमा मगर उसी समय औरत ने फिर कहा, "मगर एक बात का तो कोई फैसला हुआ ही नहीं।"

सवार०। सो क्या ?

औरत०। (एक पत्थर पर बैठ कर) यहाँ आओ बैठ जाओ तो बताऊं।

सवार औरत के पास आकर बैठ गया और दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं। जंगल में अन्धकार छा गया था जब उनकी बातें समाप्त हुईं और सवार घोड़े पर चढ़ उसी तरफ को चला गया जिधर से आया था। उस सवार के जाने बाद वह औरत भी उठी और धीरे धीरे जंगल के बाहर की तरफ रवाना हुई।

हम पहिले कह आये हैं कि इस घने और सूनसान जंगल में बाहर की बनिस्पत बहुत ही ज्यादा अन्धकार था अस्तु धीरे धीरे चलती हुई वह औरत जब घने जंगल से निकल आई तो उसे कुछ चाँदना मिलने लगा। सूर्य भगवान यद्यपि डूब चुके थे पर तौ भी पश्चिम तरफ आस्मान पर थोड़ी बहुत लालिमा मौजूद था जो इस जगह को जिसे न जंगल ही कह सकते थे और न मैदान ही, थोड़ी बहुत रोशनी पहुँचा रही थी। पेड़ अपनी फैली हुई डालियों के कारण इधर उधर कुछ भयानक से मालूम हो रहे थे जब एक ऐसे ही पेड़ के नीचे पहुँच उस औरत ने एक ऐसी चीज देखी जिसने उसे चौंका दिया।

एक कमसिन और गहने कपड़े से सजी हुई औरत की लाश इस

पेड़ के नीचे पड़ी हुई थी।

इस औरत ने एक दफे तो गौर से अपने चारो तरफ देखा और जब किसी पर निगाह न पड़ी तो धीरे धीरे चल कर उस लाश के पास आई और जमीन पर बैठ गौर से उसकी सूरत देखने लगी। बदन पर हाथ रक्खा, नब्ज देखी, और तब नाक के पास हाथ लगा कर बोली, "मरी नहीं जीती है, मगर गहरी बेहोशी में है।"

कुछ देर तक गौर के साथ उसका मुंह देखने बाद इस औरत ने अपनी कमर से एक डिबिया निकाली जिसमें किसी प्रकार की खुशबूदार चीज थी। उसने वह डिबिया बेहोश औरत की नाक से लगाई जिसके साथ ही उसे दो तीन छींकें आईं और वह होश में आकर उठ बैठी।

अपनी कामयाबी पर खुश होकर इस औरत ने उससे पूछा—"तुम कौन हो और इस जंगल में इस तरह बेहोश क्यों पड़ी थीं?"

औरत०। मेरा नाम रम्भा है। अपने रिश्तेदारो के साथ जमानिया की तरफ जा रही थी कि रास्ते में डाकुओं ने आकर हम लोगों को घेर लिया। डर के मारे मैं बेहोश हो गई, फिर कुछ खबर नहीं कि क्या हुआ और मैं यहाँ क्योंकर आई।

औरत०। तुम्हारा मकान कहाँ है?

रम्भा०। विजयगढ़। मैं वहाँ से अपने बाप के घर जमानिया आ रही थी जब रास्ते मे यह आफत आई। (रो कर) न मालूम मेरे रिश्तेदारों का क्या हाल हुआ! डाकुओं ने उन्हें छोड़ा या मार डाला। हाय, अब मैं क्या करूं, कहाँ जाऊं किधर खोजूं!

इतना कह कर औरत रोने लगी यहां तक की उसे फिर गश आ गया।

अब बिल्कुल अन्धकार हो गया था इस कारण उस बेहोश का हाल जानने की इच्छा रहने पर भी यह औरत ठहर नहीं सकती थी क्योंकि जानती थी कि इस जंगल में वह खतरों से खाली नहीं है। उसने अपनी

पौशाक दुरुस्त की और बेहोश की तरफ से ध्यान हटा उस तरफ चली जिधर जा रही थी।

अभी वह मुश्किल से पचास कदम गई होगी कि उसके कानों में सीटी की आवाज सुनाई दी और इसके बाद ही कुछ दूर पेड़ों में एक रोशनी दिखाई पड़ी जो किसी लालटेन की मालूम होती थी। यह औरत रुक गई और गौर से उस तरफ देखने लगी।

थोड़ी देर बाद पेड़ों के झुरमुट मे से एक आदमी हाथ में लालटेन लिये हुए निकला और इसी तरफ आता दिखाई पड़ा। उसे अपनी तरफ आते देख यह हट गई और एक बड़े पेड़ की आड़ मे हो गई। लालटेन की रोशनी में चारो तरफ गौर से देखता और आहट लेता हुआ जब वह आदमी उस जगह पहुँचा जहाँ थोड़ी देर पहिले यह औरत खड़ी थी तो रुका और इस प्रकार इधर उधर देखने लगा मानो किसी को ढूंढ़ रहा है। उसी समय वह औरत भी जिसे बेहोशी की हालत में पाठक देख चुके हैं इसी तरफ आती हुई दिखाई पड़ी।

पास आकर उस औरत ने लालटेन हाथ में लिये हुए आदमी से कुछ बातें कीं और तब उस तरफ इशारा किया जहाँ पेड़ की आड़ में यह पहिली औरत छिपी हुई थी। इसके बाद वह तो कहीं चली गई और वह आदमी उस तरफ बढ़ा जिधर वह पहिली औरत छिपी हुई थी।

इस औरत ने उसे अपनी तरफ आते देख भागने की चेष्टा की मगर भाग न सकी क्योंकि उसी समय किसी ने उसे पकड़ लिया और जबर्दस्ती बेहोशी की दवा सुँघा बेहोश कर दिया।

यह आदमी जिसने इस औरत को बेहोश किया था भूतनाथ था और यह औरत वही थी जिसे दूसरे बयान में पाठक शेरसिंह के साथ मर्दानी सूरत मे देख चुके हैं अथवा गौहर के नाम से भूतनाथ ने जिसका परिचय शेरसिंह को दिया था। शेरसिंह से अलग होने के बाद से भूतनाथ बराबर गौहर के पीछे घूम रहा था और उसकी सब कार्रवाई

देख सुन कर उसे गिरफ्तार करने का मौका ढूंढ रहा था।

गौहर को बेहोश करने बाद भूतनाथ वहाँ जरा भी न ठहरा क्योंकि लालटेन हाथ में लिये वह दूसरा आदमी भी उसे खोजता हुआ बराबर उसी तरफ बढ़ा आ रहा था। भूतनाथ ने अपने कमर में से एक चादर खोली और उसी में गौहर की गठड़ी बाँध तेजी के साथ जंगल के बाहर की तरफ रवाना हुआ मगर थोड़ी ही देर में उसे मालूम हो गया कि वह अकेला नहीं है बल्कि कोई आदमी बराबर उसका पीछा कर रहा है। यह जान उसने अपनी चाल और भी तेज की और थोड़ी देर बाद जगल के बाहर सड़क पर पहुंच जमानिया की तरफ रवाना हो गया।

पाँचवाँ बयान

दारोगा के चले जाने के बाद दीवार की आलमारी में से एक आदमी निकला और उसी रास्ते में घुस गया जिधर कैदियों की कोठड़ी में जाने की सीढ़ियाँ थी।

जल्दी जल्दी सीढ़ियाँ चढ़ वह उपर की कोठड़ी में पहुँच गया। यहाँ पर आकर उसने हाथ की लालटेन कुछ ऊँची की और उसका कोई ऐसा खटका दबाया जिसके साथ ही लालटेन की रोशनी पहिले से बहुत ज्यादे तेज हो गई और उस जगह की सब चीजें साफ साफ नजर पड़ने लगीं फुर्ती के साथ कमर से ताली निकाल उसने वह ताला खोला जिसे दारोगा न खोल सका था और पल्ला हटा लालटेन की रोशनी में अन्दर की तरफ देखने लगा। हथकड़ी बेड़ी से मजबूर प्रभाकरसिंह एक चटाई पर अधलेटे पड़े दिखाई दिये जिन पर निगाह पड़ते ही उस आदमी ने दूसरी ताली लगा कर जंगलेदार दर्वाजा भी खोला और प्रभाकरसिंह को उठने का इशारा किया।

प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए। इस आदमी ने उनको हथकड़ी बेड़ी से छुटकारा दिया और तब मुंह पर उंगली रख चुप रहने का इशारा कर

सीढ़ियों की तरफ बढ़ा मगर प्रभाकरसिंह ने रोक कर कहा, "यहाँ एक कैदी और है क्या उसे भी आप छुड़ा सकते हैं ?"

उस आदमी ने सिर हिलाया पर प्रभाकरसिंह दृढ़ता के साथ बोले, "लेकिन मैं बिना उसको छुड़ाए यहाँ से जाने वाला नहीं !!"

यह सुन उस आदमी ने जिसकी सूरत नकाब से ढकी रहने के कारण प्रभाकरसिंह नहीं देख सकते थे धीरे से कहा, "दारोगा अब आता ही होगा, हमें इतना समय नहीं है कि और किसी को छुड़ाने की कोशिश करें । देर होने से मैं खुद गिरफ्तार हो जाऊँगा ।"

प्रभा० । तब लाचारी है, आप जांय और मुझे यहीं छोड़ दें ।

आदमी० । (कुछ देर चुप रह कर) वह कौन है ?

प्रभा० । मैं ठीक ठीक तो नहीं पहिचान सका पर कुछ शक होता है ।

इतना कह झुक कर प्रभाकरसिंह ने उस नकाबपोश के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही वह चौंका और बोला, "हैं, वह है ! तब तो उस बेचारी को अवश्य छुड़ाना ही चाहिये । मगर दारोगा आ पहुँचा तो बड़ी मुश्किल होगी खैर तुम उस सीढ़ी के पास जाकर खड़े हो, किसी के आने की आहट पाओ तो मुझे बताना, मैं उस औरत को छुड़ाने का उद्योग करता हूँ ।"

प्रभाकरसिंह ने "बहुत अच्छा" कह उस औरत वाली कोठड़ी की तरफ इशारा किया और तब सीढ़ी के पास जा खड़े हुए और वह नकाब पोश उस तरफ बढ़ा । पहिले तो उसने मजबूत जजीर और भारी ताले को गौर से देखा और तब अपने कमर से एक छोटी शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का अर्क था । उसमें से कई बूंद जंजीर पर टपकाने बाद नकाबपोश ने शीशी बन्द कर ठिकाने रक्खी और इस बात की राह देखने लगा कि जजीर कट जाय तो दर्वाजा खोलें ।

कुछ ही देर के बाद एक हलकी सी आवाज के साथ वह जंजीर दो टुकड़े हो गई मगर उसी समय प्रभाकरसिंह का इशारा पा नकाबपोश

उनके पास गया पास पहुँचते ही प्रभाकरसिंह ने कहा, "दर्वाजा खुलने की आवाज आई है, मालूम होता है दारोगा आ रहा है। अब क्या होगा !!"

"तो लाचारी है, पहिले हमें अपने बचाव का उपाय करना चाहिये, अगर हम खुद ही फंस जायंगे तो फिर कुछ भी न हो सकेगा।" कह कर नकाबपोश ने प्रभाकरसिंह को नीचे चलने का इशारा किया। प्रभाकरसिंह ने कुछ उज्र किया मगर उसने कुछ भी न सुना और हाथ पकड़े हुए जबर्दस्ती प्रभाकरसिंह को नीचे ले आया।

अपनी लालटेन उस आदमी ने बुझा दी थी अस्तु अन्दाज से टटोलता हुआ वह प्रभाकरसिंह को उसी आलमारी के पास ले गया जिसमें कुछ देर पहले वह स्वयम् छिपा हुआ था। उन्हें अन्दर करने और स्वयम् भी जाने के बाद मुश्किल ही से उसने आलमारी का पल्ला बन्द किया होगा कि रोशनी हाथ में लिये जैपाल के साथ दारोगा ने कोठड़ी के अन्दर पैर रक्खा।

बिना और किसी तरफ ध्यान दिये वे दोनों आदमी ऊपर चढ़ गये और उनके जाते ही नकाबपोश प्रभाकरसिंह को साथ लिये आलमारी के बाहर निकला। दर्वाजा खुला हुआ था जिसकी राह दोनों आदमी बाहर वाली उस कोठड़ी में पहुंचे जहाँ से यहाँ आने का रास्ता था। नकाबपोश का ख़याल था कि दारोगा इस कोठड़ी का दर्वाजा अन्दरसे बन्द करता गया होगा पर ऐसा न था अस्तु ये दोनों खुशी खुशी बाहर निकल आये तब वह नकाबपोश जो दारोगा के इस मकान के सब दर्वाजों और रास्तों से बखूबी वाकिफ मालूम होता था बगल की एक सीढ़ी की राह ऊपर छत पर जा पहुँचा। यहां दीवार के साथ अभी तक एक कमन्द लटक रही थी जिसके सहारे पहिले नकाबपोश और उसके बाद प्रभाकर सिंह नीचे उतर गये, नकाबपोश ने कमन्द खैंच ली और दोनों आदमी शहर के बाहर की तरफ रवाना हुए।

शहर के बाहर मैदान में पहुँच वह नकाबपोश रुका और प्रभाकर सिंह भी खड़े हो गये। चन्द्रदेव के उदय होने में विलम्ब होने के कारण यद्यपि चारो तरफ अन्धकार था पर नकाबपोश के हाथ की वह लालटेन दूर दूर तक रोशनी पहुंचा रही थी। उसी की रोशनी में चारो तरफ देख नकाबपोश एक साफ जगह पर बैठ गया और प्रभाकरसिंह को भी बैठने को कहा।

प्रभाकरसिंह के बैठ जाने पर नकाबपोश ने अपनी लालटेन बुझा दी और तब पूछा, "अच्छा प्रभाकरसिंह अब तुम बताओ कि क्योंकर इस दुष्ट दारोगा के फन्दे में पड़ गये? तुम्हें तो गदाधरसिंह ने गिरफ्तार किया था न?"

प्रभाकर०। मैं सब हाल बताने को तैयार हूँ मगर पहिले आपका परिचय चाहता हूँ।

"हाँ हाँ, अब इसमें कोई हर्ज नहीं है।" कह कर नकाबपोश ने कोई खटका दबा कर पुनः अपनी लालटेन बाली और चेहरे से नकाब दूर की। लालटेन की रोशनी में इन्द्रदेव को पहिचानते ही प्रभाकरसिंह उनके पैरों पर गिर पड़े। इन्द्रदेव ने उन्हें उठा कर गले से लगाया और तब लालटेन फिर बुझा दी।

प्रभा०। मुझे छुड़ाने के लिये आपको स्वयम् कष्ट करना पड़ा!!

इन्द्रदेव०। नहीं, एक दूसरे काम के लिये मुझे जमानिया आना पड़ा मगर तुम्हें एक बुरी खबर सुनने के लिये तैयार हो जाना चाहिये।

प्रभा०। सो क्या! मेघराजजी तो अच्छी तरह से हैं? इन्दु और जमना सरस्वती का तो कोई अनिष्ट नहीं हुआ?

इन्द्रदेव०। इन्दुमति और तुम्हारे पिता कुशल से हैं पर मेघराज भूतनाथ के कब्जे में पड़ गये और.....

प्रभा०। हाँ हाँ कहिये कहिये, जमना सरस्वती का क्या हाल है?

इन्द्रदेव०। (रुकते गले से) उन दोनों को गदाधरसिंह ने मार डाला।

प्रभा० । हैं, मार डाला ! सो कैसे ? वे भूतनाथ के हाथ कैसे पड़ गईं !

इन्द्र । तुमको फंसाने बाद तुम्हारी सूरत बन गदाधरसिंह तुम लोगों की घाटी में जा पहुंचा और वहीं रात के समय मौका पाकर उसने यह कार्रवाई कर डाली । सुबह जमना सरस्वती की लाशें पाई गईं । थोड़ी देर हुई मेरा एक शागिर्द यह खबर लाया दी है ।

जमना और सरस्वती की मौत का हाल सुन प्रभाकरसिंह को बड़ा ही दुःख हुआ क्योंकि वे अपनी नेकचलन सालियों को बहुत ही ज्यादा चाहते और मानते थे । इन्द्रदेव को भी इस बात का बहुत ही दुःख था पर वे बुद्धिमान आदमी थे इस कारण तथा और भी किसी सबब से उन्होंने इस समय रञ्ज जाहिर करना उचित न समझा और कुछ देर तक प्रभाकरसिंह को समझाने बुझाने के बाद बोले, "मेरे एक शागिर्द ने तुम्हारे दारोगा की कैद में होने का हाल मुझे बताया और साथ ही तुम्हारे कैदखाने की तालियें भी जिन्हें वह न जाने किस तरह दारोगा के कब्जे से निकाल लाया था मुझे दी और मैंने भी तुम्हारा छुड़ाना जरूरी समझ सबके पहिले तुम्हें ही छुड़ाया । अब तुम अपने को शान्त करो और गौर से मेरी बातें सुनो क्योंकि मैं एक बहुत ही भारी काम तुम्हारे सुपुर्द किया चाहता हूँ ।"

प्रभाकर० । जो आज्ञा, कहिये मैं करने को तैयार हूं ।

इन्द्रदेव देर तक प्रभाकरसिंह को कई बातें समझाते रहे और प्रभाकरसिंह भी बड़े ध्यान से उनकी बातें सुनते रहे ।

रात आधी से कुछ ज्यादे ही जा चुकी थी जब इन्द्रदेव की बातें समाप्त हुईं और उन्होंने कहा, "बस अब मैं अपने ठिकाने जाता हूं, देखूं उधर क्या मामला है पर तुम इसी समय चले जाओ और जो कुछ मैं ने कहा है सो करो । मगर देखो होशियार रहना, कहीं ऐसा न हो कि फिर गदाधरसिंह के फेर में पड़ जाओ !"

"मैं सब तरह से होशियार रहूँगा, आप कोई तरद्दुद न कीजिये!" कहते हुए प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए। इन्द्रदेव भी खड़े हो गये और प्रभाकरसिंह को जाने के लिये कह किसी सोच में सिर झुकाये तेजी के साथ शहर की तरफ चले। थोड़ी ही दूर जाने बाद एक नियत स्थान पर उनका एक शागिर्द घोड़ा लिये खड़ा मिला जिससे दो बातें कर इन्द्रदेव ने उसे भी छुट्टी दी और तब घोड़े पर चढ़ अकेले ही जमानिया की तरफ रवाना हो गये।

छठवां बयान

जैपाल को साथ लिये दारोगा कैदियों के कमरे में गया और वहाँ पहुंचते ही उसकी निगाह उस कोठड़ी के खुले हुए दर्वाजे पर गई जिसमें प्रभाकरसिंह कैद थे वह झपट कर वहाँ पहुंचा मगर प्रभाकरसिंह अब वहां कहां?

दारोगा जैपाल की तरफ घूमा जो उस दर्वाजे को देख रहा था जिसके अन्दर वह औरत कैद थी। उसकी टूटी हुई जंजीर की तरफ दारोगा का भी खयाल गया और वह उस तरफ बढ़ा मगर जैपाल ने रोक कर कहा, "ठहरिये, मालूम होता है कि जिस आदमी ने प्रभाकरसिंह को छुड़ाया है वह मालती को भी छुड़ाया चाहता था पर मौका न मिलने या शायद हम लोगों की आहट पा जाने के कारण अपना काम पूरा नहीं कर सका है। ताज्जुब नहीं कि नीचे कहीं छिपा हुआ मिल जाय, पहिले एक बार उसे ढूंढ़ने की कोशिश करनी चाहिये।"

दारोगा ने जैपाल की बात मान ली और पिछले पांव लौट कर सीढ़ियां उतर नीचे की कोठड़ी में आया। जैपाल भी नीचे उतर आया और उस कोठरी का ताला बन्द कर प्रभाकरसिंह और उनके छुड़ाने वाले की खोज में लगा।

बड़ी बड़ी आलमारियों कोठरियों और दालानों में घूमते और

ढूंढ़ते हुए दारोगा ने बहुत सा कीमती समय व्यर्थ नष्ट कर दिया और इस बीच प्रभाकरसिंह और उनके छुड़ाने वाले को इतना मौका मिल गया कि वे उस मकान के बाहर हो सकें। आखिर जब पूरी तरह खोज ढूंढ़ करने बाद दारोगा को विश्वास हो गया कि अब वहाँ कोई नहीं है तो सुस्त और उदास होकर वह अपने कमरे में जाकर गद्दी पर पड़ गया। जैपाल भी पास ही जा बैठा।

बड़ी देर के बाद दारोगा ने सिर उठाया और जैपाल की तरफ देख कर कहा, "आज तक मेरे इस कैदखाने से कोई कैदी भाग न सका था। यह पहिला मौका है कि ऐसा हुआ है।"

जैपाल०। अभी तक आपने इस कैदखाने से काम भी तो नहीं लिया था! मगर तौ भी यह बड़ी विचित्र बात है कि आपके झब्बे में से कैदखाने की ताली निकल जाय और सो भी खास उस ही कोठड़ी की चाभी जिसमें प्रभाकरसिंह कैद थे!

दारोगा०। और मैं उस झब्बे को सिवाय तुम्हारे और किसी के हाथ मे कभी देता भी नहीं! मैं तो समझता हूँ कि कल जब तुम कैदियों को खाना देने के लिये यह झब्बा मुझसे ले गये थे उसी समय या उसके बाद किसी ने धोखा देकर यह कार्रवाई की है और ऐसा होना कुछ मुश्किल भी नहीं है क्योंकि मुझे अच्छी तरह याद है कि कल तुम पानी लेने के लिये एक दफे लौटे थे।

जैपाल०। हां, पानी के लिये मुझे लौटना तो जरूर पड़ा था और तालियों का झब्बा भी उस समय मैं जरूर वहीं छोड़ आया था पर जब मैं लौट कर गया उस समय तक तो तालियों में कोई कमी नहीं हुई थी, बराबर सब ताले बन्द करता हुआ मैं वापस आया था।

दारोगा०। पर उस समय यदि कोई वहां छिपा होगा तो उसने कम से कम तालियों को पहिचान लिया होगा और मौका पाते ही उन्हीं तालियों को उसने गायब कर दिया! खैर जो हुआ सो हुआ, अब यह

सोचना चाहिये कि गदाधरसिंह को क्या जवाब देना उचित है जो अब आता ही होगा ?

जैपाल० । क्या आपने उससे वादा कर दिया था कि प्रभाकरसिंह को लौटा देंगे ?

दारोगा० । नहीं वादा तो नहीं किया था मगर बात यह थी कि प्रभाकरसिंह को मुझे सौंपते समय उसने मुझसे इतना जरूर कह दिया था कि बिना उससे पूछे मैं उन्हें शिवदत्त के कब्जे में न दूँगा, मुमकिन है उसे किसी तरह पता लग गया हो कि शिवदत्त प्रभाकरसिंह के बारे में मुझे लिखेगा ।

जैपाल० । ऐसा होना कोई ताज्जुब नहीं है ! वह बड़ा धूर्त है और ऐसी ऐसी बातों की खास कर उसे बहुत ही खबर रहती है ।

दारोगा० । और इस समय यदि मैं उससे कहूँगा कि प्रभाकर को कोई छुड़ा ले गया तो वह कभी मेरी बात पर विश्वास न करेगा और यही समझेगा कि यह झूठ कह रहा हूं ।

जैपाल० । बेशक वह ऐसा खयाल कर सकता है !

दारोगा० । केवल उसी के खयाल से नहीं बल्कि शिवदत्त के खयाल से भी इस समय प्रभाकरसिंह का कब्जे में रहना बड़ा जरूरी था क्योंकि शिवदत्त फिर उनसे पुराना बदला लिया चाहता है ।

जैपाल० । मगर आपने तो उसकी कुछभी मदद करने से इन्कार कर दिया था !

दारोगा० । पहिले तो जरूर इन्कार कर दिया था मगर अब जो मैं सोचता हूँ तो यही मालूम होता है कि उससे बिगाड़ करने की बनिस्पत दोस्ती बनाये रखना ही ज्यादा लाभदायक होगा । दूसरे उसने दिग्विजयसिंह से भी मदद मांगी है और उन्होंने अपना खास आदमी भेज कर मुझसे दरियाफ्त कराया है कि इस मामले में क्या करना उचित होगा ।

जैपाल० । यह तो मुझे जरूर मालूम हुआ था कि महाराज दिग्विजय सिंह के ऐयार शेरसिंह आये थे मगर क्या बातें उनकी और आपकी हुईं यह न पता लगा ।

जैपाल की बात सुन दारोगा साहब ने वे चीठियें जो शेरसिंह की मार्फत पाई थीं उसके सामने फेंक दीं । जैपाल उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ गया और तब बोला, "तो आपने शेरसिंह को क्या जवाब दिया ?"

दारोगा० । अभी तक तो कोई उत्तर नहीं दिया है पर शीघ्रही जवाब देने का वादा किया है । इसी बीच में हमें ठीक ठीक निश्चय कर लेना है कि अब क्या करना मुनासिब होगा । कहो तुम्हारी क्या राय है ?

जैपाल० । (कुछ देर सोच कर) मेरी समझ में तो शिवदत्त से बनाए रखने में ही हम लोगों का फायदा है । एक तो आजकल उसने अपनी ताकत खूब बढ़ा ली है, दूसरे.....

जैपाल की बात समाप्त नहीं हुई थी कि बाहर से कुछ आहट मालूम हुई और एक नौकर ने पहुँच कर कहा, "गदाधरसिंह आये हैं और बाहर खड़े हैं "

दारोगा ने भूतनाथ को ले आने का हुक्म दिया और थोड़ी ही देर में वह आ मौजूद हुआ । दारोगा ने उठ कर बड़ी खातिरदारी के साथ उसे लाकर खास अपनी गद्दी पर बैठाया और नाहीं नूकर करते हुए उसके बैठ जाने पर आप भी बैठा । बैठते ही भूतनाथ ने कहा, "प्रभाकरसिंह के निकल जाने का तो आपको इस समय बड़ा अफसोस हुआ होगा !"

दारोगा० । (आश्चर्य से) आपको उसके छूट जाने का हाल कैसे मालूम हुआ ?

भूत० । मुझे किस बात का पता नहीं रहता ! क्या शिवदत्त के विषय में मैंने जो खबर दी थी वह गलत निकली ! या दिग्विजयसिंह के बारे में आपसे जो कुछ कहा उस पर अविश्वास करने का आपको मौका मिला !

दारोगा० । नहीं नहीं आपकी दोनों खबरें बहुत ठीक निकलीं, वास्तव में आपके शागिर्द लोग बड़े ही तेज और अपने काम के पक्के हैं। उनकी लाई हुई कोई खबर झूठ नहीं हो सकती। आज ही दिग्विजय सिंह का आदमी मुझसे मिला था।

भूत० । मुझे मालूम है।

दारोगा० । क्या शेरसिंह आपसे मिले थे ?

भूत० । यहाँ तो अभी मेरी उनकी मुलाकात नहीं हुई है मगर हो ही जायगी लेकिन तब ? आपने उनको क्या जवाब दिया ?

दारोगा० । मेरा जवाब तो बस आप ही के ऊपर निर्भर करता है, आप जैसा कहें मैं वैसा ही करूं !

भूत० । क्यों मुझसे क्या मतलब ! मुझसे न दिग्विजयसिंह से कोई वास्ता और न शिवदत्त से। मैं इन दोनों के विषय में आपको क्या राय दे सकता हूं ? आप जो मुनासिब समझें करें !!

दारोगा० । वाह वाह, यह भी आपने खूब कही ! आप ही से तो बड़ा भारी मतलब है बल्कि आप ही के ऊपर इस मामले का भार है।

भूत० । इसके क्या माने ?

दारोगा० । इसके यह माने कि अगर आप मेरी सहायता करें तब तो मैं शिवदत्त की मदद करना मंजूर करूं और अगर इन्कार करें तो मैं भी उससे इन्कार कर दूं।

भूत० । मैं तो अपने भरसक बराबर ही आपकी मदद करता रहा हूं। आपको इस विषय में शिकायत करने का मौका तो न मिलना चाहिये।

दारोगा० । मैं शिकायत तो नहीं करता पर इतना जरूर कहूँगा कि इधर कुछ दिनों से आपने मेरी तरफ से कुछ बेरुखी अख्तियार कर ली है।

भूत० । सो कैसी ?

दारोगा० । क्या आप नहीं जानते कि मेरे ऊपर इधर कैसी कैसी मुसीबतें आई हैं और कैसे कैसे तरद्दुदों ने मुझे घेर रखा है ?

भूतनाथ० । इतना मुझे अवश्य मालूम है कि आपके कई कैदी निकल गये लेकिन इससे ज्यादा और कुछ अगर हुआ हो तो मैं नहीं जानता ।

दारोगा० । क्या कैदियों का निकल जाना कुछ कम मुसीबत की बात है ! क्या वे छूट कर मेरा अनिष्ट नहीं करेंगे ?

भूत० । यह तो भला मैं कैसे कह सकता हूँ कि आपको उनके सबब से तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी.....

दारोगा० । और अगर आप बुरा न मानें तो मैं कहूँगा कि यह मुसीबत मेरे ऊपर आप ही के सबब से आई है ।

भूत० । (बनावटी हंसी हंस कर) क्या मैं ही आपके कैदी छुड़ा ले गया हूं !!

दारोगा० । नहीं नहीं, यह तो मैं कहता ही नहीं हूं । आपका मुझसे नाराज हो जाना ही इस घटना का मुख्य कारण है इसका मुझे पक्का विश्वास है, खैर अब इन पचड़ों को जाने दीजिये और यह बताइये कि आज से आप मेरी मदद सच्चे दिल से करने को तैयार हैं या नहीं ?

भूत० । (हंस कर) मैंने आपकी मदद करने से इन्कार ही कब किया है !

दारोगा० । खैर तो फिर आगे के लिये बताइये कि आपका क्या इरादा है । इस बात को आप अच्छी तरह समझ लीजिये कि मेरी मदद करने से आपका सिवाय फायदे के नुकसान नहीं है । मेरे साथी बने रहने से अभी तक आपका फायदा ही हुआ है और होगा, और मेरे विपक्ष में रहने से आपका कोई फायदा नहीं है बल्कि कुछ नुकसान ही है क्योंकि चाहे आप ऐसे धुरन्धर ऐयार का मैं या मेरा कोई साथी कुछ बिगाड़ नहीं सकते मगर साथ ही इसके आप यह भी समझ रखिये कि

चाहे कोई आदमी कैसा ही ताकतवर क्यों न हो मगर उसके दुश्मनों की गिनती का बढ़ते जाना उसके हक में कदापि ठीक नहीं है। मैं अच्छी तरह जानता और समझता हूँ कि इधर के कई काम आपके हाथ से ऐसे हुए हैं जिन्होंने आपके दुश्मन बढ़ा दिये हैं। मैं यह ताने के तौर पर नहीं कहता बल्कि अपना दिली खयाल आपसे कहता हूँ कि आपके काम यदि आपके दुश्मनों की संख्या बढ़ा रहे हैं तो आपको अपने दोस्तों की गिनती भी बढ़ाने की बराबर कोशिश करते रहना चाहिये। आपको भले ही इस समय मेरी मदद की जरूरत न हो पर कभी न कभी आपको अपने कामों में मेरी सहायता की जरूरत पड़ सकती है और इस बात का आपको अनुभव भी है। साथ ही इसमें भी कोई शक नहीं कि आपकी मदद से मेरा भी बहुत कुछ फायदा हो चुका है और आगे होने की उम्मीद है। सच तो यह है कि अगर हम और आप साथी बने रहेंगे तो ऐसे काम कर गुजरेंगे जिसका खयाल भी करना मुश्किल है। आप ही कहिये क्या मेरा कहना गलत है ?

भूत०। नहीं नहीं, आप बहुत ठीक कह रहे हैं। मैं इस बात को मानता हूँ कि मेरे दुश्मन बढ़ गये हैं और इस बात को भी जानता हूँ कि आपके दुश्मन भी घटे नहीं हैं तथा इस बात को भी मान लेने में कोई हर्ज नहीं है कि एक दूसरे की मदद करने से हमारा आपका दोनों का फायदा होगा, मगर.....

दारोगा०। मगर क्या ?

भूत०। खैर इस समय इस बातको रहने दीजिये और पहिले यह बताइये .....

दारोगा०। नहीं नहीं, पहिले आप अपनी यही बात समाप्त कीजिये तब मैं कुछ बताऊंगा क्योंकि 'मगर' एक ऐसा शब्द है जिसके मतलब का कोई अन्त नहीं हैं।

भूत०। (हंसकर) मगर कई बातें ऐसी आ गई हैं जिनके सबब

से कई खास खास मामलों में मैं आपकी मदद न कर सकूंगा।

दारोगा०। वे कौन से मामले हैं?

भूत०। एक तो इन्द्रदेव के विरुद्ध किसी प्रकार की और कोई भी कार्रवाई मैं नहीं करूंगा और न आपको करने दूँगा।

दारोगा०। ठीक है, यह तो मैं पहिले ही से जानता था, और फिर भला इन्द्रदेव से मेरी कौन सी दुश्मनी है जो मैं उनके विरुद्ध कुछ करूंगा! इस आशङ्का को तो आप अपने दिल से एकदम ही हटा दीजिये। अच्छा और कुछ!

भूत०। दूसरे इन्द्रदेव के दोस्तों और साथियों के विरुद्ध तब तक मैं किसी काम मे आपकी सहायता न करूंगा जब तक वे मेरे साथ दुश्मनी का बर्ताव न करेंगे।

दारोगा०। हाँ, यह भी ठीक है, इसे भी मैं मन्जूर करता हूँ। और कुछ हो तो उसे भी बता दीजिये।

भूत०। (कुछ रुक कर) तीसरी बात यह है कि.....खैर इस समय उस बात को उठाने की कोई जरूरत नहीं मौका पड़ने पर देखा जायगा। मेरी इन दो बातों का ही यदि आप खयाल रक्खेंगे तो फिर मुझे आपकी मदद करने मे कोई उज्र न होगा।

दारोगा०। मैं इस बात का वादा करता हूं कि इन्द्रदेव के बर्खिलाफ कभी कोई कार्रवाई न करूंगा और न तुमसे ऐसे किसी काम के लिये कहूँगा जिससे इन्द्रदेव उसके दोस्त या उसके साथियों का कुछ भी अनिष्ट होता हो।

भूत०। और मैं इस बात का वादा करता हूँ कि तब तक सच्चे दिल से आपकी मदद करूंगा जब तक आप कोई भेद की बात मुझसे न छिपावेंगे।

इस बात पर दोनों ने कसम खाई और तब दारोगा ने उठ कर भूतनाथ को गले लगाया। इसके बाद दोनों फिर बैठे और पुनः बात-

चीत शुरू हुई।

दारोगा०। अच्छा अब आप बताइये कि शिवदत्तसिंह और दिग्विजयसिंह को मैं क्या जवाब दूँ ?

भूत०। जरा उन चीठियों को मुझे दिखाइये।

दारोगाने वे चीठियाँ भूतनाथ के आगे रख दीं। भूतनाथ सरसरी निगाह से उन्हें पढ़ गया और तब बोला, "जहाँ तक मालूम होता है शिवदत्त आपसे केवल प्रभाकरसिंह के मामले मे मदद लिया चाहता है।

दारोगा०। हाँ और इसी सबब से प्रभाकरसिंह का कब्जे में आकर निकल जाना मुझे बड़ा ही अखरा ! हाँ यह तो बताइये, आपको इस बात का कैसे पता लगा कि प्रभाकरसिंह को कोई छुड़ा ले गया ?

भूत०। (मुस्कुरा कर) किसी तरह से मुझे मालूम हो गया ! और सच तो यह है कि मुझे शुरु ही से यह सन्देह था कि वे आपके कब्जे में ज्यादा दिन तक रहने नहीं पावेंगे।

दारोगा०। जब आपको यह सन्देह था कि वे छुड़ा लिये जायँगे तो आपने यह बात मुझे क्यों नहीं बता दी जिसमें मैं उनको और भी होशियारी से रखता ?

भूत०। बेशक मेरी गलती थी जो मैंने इस बात से आपको होशियार नहीं किया पर जिस समय मैं बेहोश प्रभाकरसिंह को लिये आपके पास आया था उस समय इतना घबड़ाया हुआ था कि मेरा होशहवास दुरुस्त नहीं था।

दारोगा०। आपको इतनी घबड़ाहट ! आश्चर्य की बात है। मुझे विश्वास नहीं होता !!

भूत०। चाहे न हो पर मैं वास्तव में ठीक कह रहा हूं, खैर अब इस जिक्र के उठाने की कोई जरूरत नहीं, अब मैं इजाजत चाहता हूं।

दारोगा०। क्यों इतनी जल्दी क्यों ?

भूत०। मुझे शेरसिंह से मुलाकात करनी है जिनसे मिलने का वादा

कर चुका हूँ। वे कहाँ होंगे इसका मुझे पता नहीं इससे उन्हें खोजना भी होगा।

दारोगा०। यदि यह बात है तो मैं आपको नहीं रोक सकता (उठते हुए) तो अब कब मुलाकात होगी?

भूत०। जरूरत होने पर आप मुझे अपने पास ही पाइयेगा।

इतना कह भूतनाथ उठ खड़ा हुआ, खातिरदारी और खुशामद की बातें करता हुआ दारोगा उसे दर्वाजे तक पहुँचा आया और उसके चले जाने पर नौकरों को दर्वाजा बन्द करने का हुक्म दे अन्दर लौट गया।

सातवाँ बयान

इन्द्रदेव से बिदा होकर प्रभाकरसिंह अपने स्थान की तरफ रवाना हुए। यद्यपि जमना और सरस्वती के मारे जाने का हाल सुन वे बड़े ही दुःखी हो रहे थे फिर भी आँखों से निकल पड़ने वाले आँसुओं को बड़ी ही कठिनता से रोकते हुए वे तेजी के साथ बढ़े जा रहे थे।

भूतनाथ के सबब से उन्हें जो जो कष्ट उठाना पड़ा था वह सब एक एक करके इस समय प्रभाकरसिंह को याद आ रहा था। जिस समय पहिले पहिले अपनी स्त्री को लेकर भागते हुए नौगढ़ के पास के जगल में गदाधरसिंह से उनकी मुलाकात हुई थी उस समय से लेकर अब तक की सब घटनाएँ इस समय उनकी आँखों के सामने आ रही थीं। अपने माता पिता को जब उन्होंने पा लिया था और दयाराम का भी पता लग गया था उस समय उन्होंने समझा था कि उनके दुःख की घड़ी बीत गई है और अब उन्हें दुःखद घटनाओं के उस भयानक जंगल में पुनः जाने की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी जिसमें शिवदत्त दारोगा और गदाधरसिंह रूपी खूंखार जानवर भरे हुए थे मगर अब उन्हें मालूम हुआ

कि अब भी उस जंगल का कोई ऐसा टुकड़ा बाकी है जिसमें वे अभी तक पैर नहीं रख पाये हैं और जो बाकी हिस्सों से कहीं भयानक और खतरनाक है। भैयाराजा और उनकी स्त्री का गायब होना इसकी पूर्व सूचना थी और अब यह जमना सरस्वती की मौत और दयाराम का पता न लगना साफ बता रहा था कि उनके ऊपर कोई भारी मुसीबत आना ही चाहती है और अगर वे सम्हल कर न चलेंगे तो ताज्जुब नहीं कि उनका कोई बड़ा अनिष्ट होने के साथ ही साथ उनकी जान पर भी आ बने।

तरह तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह चले जा रहे थे। जंगल जंगल जाने की बनिस्बत उन्होंने सड़क से जाना ही मुनासिब समझा था और इसी करण वे सड़क पर से ही जा रहे थे।

शीघ्र ही अस्त हो जाने वाले चन्द्रमा की रोशनी प्रभाकरसिंह को चलने में पूरी मदद पहुँचा रही थी जब उनके कान में घोड़े के टापों की आवाज बढ़ी और वे चौकन्ने होकर इधर उधर देखने लगे। थोड़ी ही देर में उन्हें मालूम हो गया कि यह आवाज सामने अर्थात् उसी तरफ से आ रही है जिधर वे जा रहे थे और थोड़ी ही देर बाद एक सवार को अपनी तरफ आते देख प्रभाकरसिंह का शक जाता रहा।

न मालूम यह सवार उनका दोस्त है या दुश्मन, यह सोच प्रभाकरसिंह सड़क से हट कर एक किनारे हो गये। पेड़ों की आड़ में उन्होंने अपने को छिपा लिया मगर उस जगह के पास आकर जहाँ से प्रभाकरसिंह ने सड़क छोड़ी थी वह सवार भी घोड़े पर से उतर पड़ा और जेब से एक सीटी निकाल कर किसी खास ढङ्ग से उसे बजाया। इसके बाद घोड़े की लगाम एक डाल से अटका वह इधर उधर गौर के साथ निगाहें दौड़ाने लगा।

उसके सीटी बजाने के साथ ही एक दूसरी सीटी की आवाज सुनाई दी और दो सवार तेजी के साथ आते हुए दिखाई दिये जो पीछे वाली

जमानिया की तरफ से आ रहे थे। उनको आते देख इस आदमी ने पुनः सीटी बजाई और तब पेड़ों की झुरमुट में घुसा।

प्रभाकरसिंह इन सवारों की कार्रवाई गौर से देख रहे थे। उन्हें विश्वास हो गया कि ये सवार उनका भला करने की नीयत से नहीं आये हैं और इनसे दूर ही रहने में मंगल है। इस समय सिवा एक साधारण खंजर के जो चलते समय इन्द्रदेव ने उन्हें दिया था उनके पास और कोई भी हथियार न था, अस्तु वे सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

उन दोनों सवारों में से एक सवार तो कुछ दूर पर ही रुक गया और दूसरा पास आकर उस पहिले आदमी से कुछ बातें करने लगा। इस समय मौका समझ धीरे धीरे प्रभाकरसिंह अपने स्थान से हटने लगे और अन्त में इस बात का खयाल रखते हुए कि किसी प्रकार का शब्द न हो, वे एक घने पेड़ पर चढ़ गये।

थोड़ी ही देर बाद प्रभाकरसिंह को मालूम हुआ कि उस पेड़ पर जिस पर वे चढ़े हुए हैं केवल वे ही नहीं हैं बल्कि कोई और आदमी भी मौजूद है और यह जान उनका तरद्दुद और भी बढ़ गया कि हिलती हुई डालियां और पत्ते इस बात की सूचना दे रहे थे कि वह दूसरा आदमी धीरे धीरे उन्हीं की तरफ बढ़ रहा है।

प्रभाकरसिंह ने खंजर निकाल कर हाथ में ले लिया और गौर के साथ चौकन्ने होकर चारो तरफ देखने लगे, क्योंकि वे इस बात को बिल्कुल नहीं समझ सकते थे कि यह आदमी उनका दोस्त है या दुश्मन और अगर दुश्मन है तो उसका हमला किस तरफ से होगा।

थोड़ी देर बाद आहट से प्रभाकरसिंह को मालूम हो गया कि अब वह आदमी उनसे ज्यादा दूर नहीं है और ये भी चैतन्यता के साथ खजर पकड़े इधर उधर देखते हुए इस बात को जानने की कोशिश करने लगे कि वह किस तरफ है और किस नीयत से इस तरह धीरे धीरे

उनकी तरफ बढ़ा आ रहा है। घना पेड़ होने के कारण इतना अन्धेरा था कि हाथ को हाथ दिखाई देना मुश्किल हो रहा था और प्रभाकरसिंह बड़े तरद्दुद में पड़े हुए थे कि अब क्या करना चाहिये कि यकायक उनके कान में आवाज पड़ी—"प्रभाकरसिंह जी !!"

आवाज कमजोर और जनानी मालूम होती थी जिससे प्रगट होता था कि यह बोलने वाला मर्द नहीं बल्कि कोई औरत है मगर इस बात को जान कर प्रभाकरसिंह का आश्चर्य और भी बढ़ गया। ऐसे स्थान पर उनके जान पहिचान की अथवा उनका नाम जानने वाली कोई औरत कहाँ से आ गई और उसने उन्हें कैसे पहिचाना ? प्रभाकरसिंह यही सोच रहे थे कि पुनः उसी औरत की आवाज आई "प्रभाकरसिंह जी !"

इस बार भी प्रभाकरसिंह ने कुछ जवाब न दिया। थोड़ी देर बाद पुनः आवाज आई, "आप डरिये मत, मैं आपकी दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त हूं और अगर दोस्त न भी होऊं तो एक खाली हाथ औरत से डरने की आपको कोई वजह नहीं !"

इसी समय प्रभाकरसिंह की निगाह नीचे सड़क की तरफ गई और यह देख उन्हें ढाढ़स हुई कि अब वे तीनों आदमी जिन्हें वे पहिले देख चुके थे या जिनके सबब से इस पेड़ पर चढ़े थे दिखाई नहीं देते अस्तु उन्होंने जवाब दिया, "तुम कौन हो ?"

जवाब मिला, "मुझे आप नहीं पहिचानते।"

प्रभाकरसिंह बोले, "तो तुम मुझे क्योंकर पहिचानती हो ? या कैसे जानती हो कि मैं प्रभाकरसिंह हूँ ?"

औरत०। पहिले तो मुझे कुछ सन्देह था पर अब आपकी आवाज ने मुझे बता दिया कि आप निश्चय प्रभाकरसिंह जी ही हैं।

प्रभाकर०। मगर ताज्जुब की बात है कि जिस तरह मेरी आवाज

आवाज मुझे कुछ भी नहीं बताती कि तुम कौन हो ?

औरत० । इसका सबब यह है कि आप मुझे बिल्कुल नहीं जानते । (कुछ रुक कर) खैर इस पेड़ पर बैठ कर बातें करने की बनिस्बत मुनासिब है कि नीचे उतर चला जाय क्योंकि अब आपके दुश्मन कहीं दिखाई नहीं पड़ते । अच्छा पहिले मैं नीचे उतर कर देखती हूँ कि क्या हाल हैं और वे सब वास्तव में चले गये हैं या यहीं कहीं छिपे हुए हैं ।

प्रभा० । नहीं नहीं, पहिले मुझे उतर जाने दो, मैं शीघ्र ही इस बात का पता लगा लूंगा कि यहाँ कोई मेरा दुश्मन है या नहीं ।

इसके जवाब में खिलखिला कर हंसने बाद उस औरत ने कहा, "मालूम होता है कि आपको मुझ पर विश्वास नहीं हुआ और आप समझते हैं कि नीचे पहुँच कर मैं आपके साथ दगा करूंगी, खैर कोई हर्ज नहीं पहिले आप ही उतर जाइये, लीजिये मैं कुछ और हट जाती हूँ !"

आहट से प्रभाकरसिंह को मालूम हुआ कि वह औरत कुछ दूर हट गई है अस्तु वे सावधानी के साथ पेड़ के नीचे उतरने लगे क्योंकि उन्हें अभी तक यह संदेह बना ही हुआ था कि कहीं वह औरत धोखे में उन पर हमला न करे मगर ऐसा न हुआ और वे सकुशल नीचे पहुंच गये ।

इधर उधर नजर दौड़ाने पर भी प्रभाकरसिंह को कहीं कोई दिखाई न पड़ा, सिवाय इसके इस जगह अन्धेरा इतना था कि अगर कोई आस पास में छिपा हुआ होता भी तो वे उसे देख न सकते थे । उसी समय पेड़ परसे उस औरत के उतरने की आहट आई और थोड़ी ही देर में वह नीचे आकर इनके पास में खड़ी हो गई ।

प्रभाकरसिंह ने पूछा, "अच्छा अब तुम अपना परिचय दो कि तुम कौन हो और मुझसे क्या चाहती हो ?"

औरत० । अपना परिचय देना व्यर्थ है क्योंकि आप मुझे बिल्कुल नहीं पहिचानते, इसके साथ ही मैं यह भी चाहती हूँ कि आप इस जगह

न ठहरें क्योंकि आपके दुश्मन चारो तरफ मौजूद हैं।

प्रभाकर०। मेरे दुश्मन कौन?

औरत०। क्या आप नहीं जानते कि वे लोग जिन्हें आपने थोड़ी देर हुई देखा था किसके आदमी हैं?

प्रभाकर०। नहीं।

औरत०। ठीक है, आप क्यों कर जान सकते हैं, अभी तो गदाधरसिंह ने आपको दारोगा की कैद से छुड़ाया है।

प्रभाकर०। (आश्चर्य से) क्या कहती हो? किसने मुझे छुड़ाया?

औरत०। जिसे आप इन्द्रदेव समझे हुए हैं वह वास्तव में गदाधरसिंह था।

प्रभा०। नहीं ऐसा नहीं हो सकता।

औरत०। अवश्य ऐसा ही है और इन्द्रदेवसे मिलते ही आपको मेरी बात का विश्वास हो जायगा, पर मुझे तो इसी में सन्देह है कि आप इन्द्रदेव से अब मिल भी सकेंगे या नहीं।

प्रभाकर०। सो क्यों?

औरत०। आपके पुराने मालिक शिवदत्तसिंह के ऐयार यहां आये हुए हैं और उन्होंने अपनी ऐयारियों का जाल इस तरह फैलाया हुआ है कि आपका निकल भागना असम्भव मालूम होता है क्योंकि वे आपको और आपके सांथियों को अच्छी तरह जानते हैं और आप उनको बिल्कुल नहीं पहिंचानते। मुझे इस बात का भी डर है कि कहीं उनका कोई वार इन्दुमति के ऊपर भी न हो क्योंकि इस समय उस बेचारी की रक्षा करने वाला कोई भी नहीं है।

इस औरत की बातें सुन प्रभाकरसिंह के ताज्जुब का हद न रहा क्योंकि आवाज इत्यादि से वे उसे कुछ भी पहिचान नहीं सकते थे और इसके विपरीत वह इनके सब हाल से परिचित मालूम होती थी। इसके

साथ ही वे इस बात का भी निश्चय नहीं कर सकते थे कि यह वास्तव में उनकी दोस्त है या दुश्मन अथवा इस पर कहाँ तक विश्वास करना चाहिये। आखिर उन्होंने कहा, "मैं उस समय तक तुमसे सवाल जवाब नहीं कर सकता जब तक तुम्हारा पूरा परिचय न पाऊं या मुझे इस बात का विश्वास न हो जाय कि तुम दोस्त हो दुश्मन नहीं।"

इस बात का कुछ जवाब न दे वह औरत सड़क की तरफ बढ़ी। कुछ सोच कर प्रभाकरसिंह भी उसके साथ चलने लगे। सड़क पर पेड़ों की आड़ न होने के कारण चन्द्रमा की अन्तिम किरणें अभी तक पड़ रही थीं और उसकी रोशनी में प्रभाकरसिंह को यह देख आश्चर्य हुआ कि वह औरत अपने चेहरे को नकाब से ढाँके हुए है तथा खूबसूरती के साथ लपेटी हुई कमन्द और एक बटुआ भी उसके पास मौजूद है।

प्रभाकरसिंह की तरह उस औरत ने भी इनको अच्छी तरह देखा बल्कि कुछ देर तक देखती रही। प्रभाकरसिंह यह देख बोले, "तुम्हारे पास कमन्द और बटुआ है इससे मालूम होता है कि तुम कोई ऐयारा हो?"

औरत०। ऐयारा कहलाने लायक न होने पर भी मैं थोड़ी बहुत ऐयारी जरूर जानती हूं।

प्रभाकर०। क्या तुम अपनी सूरत मुझे न दिखाओगी?

औरत०। आवश्यकता पड़ने पर आप अवश्य मेरी सूरत देख सकेंगे बल्कि परिचय भी पा सकेंगे पर इस समय नहीं। आपको कई दफे मेरी जरूरत पड़ेगी और चाहे इस समय आप मुझ पर अविश्वास करते हों पर धीरे धीरे आपको मालूम हो जायगा कि मैं आपकी दोस्त हूँ दुश्मन नहीं।

इस औरत की बातें सुन प्रभाकरसिंह कुछ देर के लिये चुप हो गये। उन्हें ज्यादा तरद्दुद तो इस बात का था कि इसे वे क्या समझें दोस्त या दुश्मन! यद्यपि उनका दिल इसे दुश्मन समझना नहीं चाहता था

पर उसकी विचार और विवेक शक्ति उसे दोस्त मानने को भी तैय्यार नहीं थी। वे इसी सोच में पड़े हुए थे कि उसे क्या जवाब दें कि उस औरत ने पुनः कहा, "मालूम होता है आपको मुझ पर विश्वास नहीं हो रहा है, और यह ताज्जुब की बात भी नहीं है, जितनी मुसीबतें और आफतें अब तक आप पर आ चुकी हैं, तथा जितना धोखा आप उठा चुके हैं उससे आदमी पत्ते पत्ते पर शक करता फिरे तो भी ताज्जुब की बात नहीं, अच्छा अब आपका और समय नष्ट न कर मै जाती हूं, पुनः किसी मौके पर मिलूँगी पर एक बार फिर आपको समझाये जाती हूं कि अब यदि आप किसी इन्द्रदेव को देखियेगा तो उस पर जरा समझ बूझ कर विश्वास कीजियेगा तथा शिवदत्त के ऐयारों से भी अपने को बचाने की कोशिश कीजियेगा।

प्रभाकर०। तो क्या तुम्हारा यह कहना सच है कि जिस इन्द्रदेव से मेरी मुलाकात हुई थी वे असली न थे?

औरत०। बेशक!

प्रभाकर०। और वह गदाधरसिंह था?

औरत०। अवश्य!

प्रभाकर०। यदि वह गदाधरसिंह ही था तो उसने मुझे दारोगा की कैद से क्यों छुड़ाया? उसी ने तो मुझे गिरफ्तार करके दारोगा के पास पहुँचाया था, फिर मुझे छुड़ाने की क्या जरूरत उसे पड़ी?

औरत०। इस बारे में मैं कुछ भी नहीं कह सकती और न अब ज्यादे देर ठहर ही सकती हूँ।

इतना कह बिना प्रभाकरसिंह की और कोई भी बात सुने वह औरत सड़क से हट पेड़ों की आड़ में हो गई और कुछ दूर जा कर नजरों से गायब हो गई।

कुछ देर तक प्रभाकरसिंह वहाँ खड़े तरह तरह की बातें सोचते

रहे इसके बाद तेजी के साथ पुनः उसी तरफ रवाना हुए जिधर पहिले जा रहे थे।

आठवाँ बयान

सन्ध्या के समय अपने तिलिस्मी मकान के अन्दर वाले बाग में एक पेड़ के नीचे कुर्सी पर उदास बैठे हुए इन्द्रदेव तरह तरह की बातें सोच रहे हैं।

बेचारी जमना और सरस्वती की मौत ने तो जिसकी खबर ले उनका ऐयार जमानिया पहुंचा था उन्हें सता ही रक्खा था ऊपर से यह देख उनके रञ्ज का कोई ठिकानां न रहा था कि उसी समय से दयाराम और प्रभाकरसिंह का भी कहीं पता न था और बहुत खोज ढूँढ़ करने पर भी उनके ऐयार कुछ जान नहीं पाते थे कि वे कहाँ गायब हो गये। क्या जाने जिस कम्बख्त ने जमना और सरस्वती की जान ली उसी ने उन दोनों का भी कुछ अनिष्ट किया अथवा वे दोनों स्वयं ही कुछ पता पा कर खूनी के पीछे चले गये। दोनों में से किसी बात का भी पता नहीं लगता था और बेचारे इन्द्रदेव की जान एक अजीब खुटके में पड़ी हुई थी। वे कुछ भी निश्चय नहीं कर पाते थे कि जमना सरस्वती की मौत का बदला लें अथवा दयाराम और प्रभाकरसिंह का गम करें जिन्हें अपने खास लड़कों की तरह वह चाहते थे। तरह तरह के दुःखदाई खयाल उनके दिल को मसोस रहे थे और रह रह कर उनका हृदय किसी ऐसे आदमी से बदला लेने पर उतारू हो जाता था जिसे लाख बुराई करने पर भी शायद दोस्ती का हक निबाहने की नियत से वे अभी तक छोड़ते चले आ रहे थे।

बेचारी इन्दुमति और प्रभाकरसिंह के माता पिता पर भी इस घटना का बहुत बुरा असर पड़ा। वृद्ध होने और जमाने का बहुत कुछ ऊँच नीच देख चुकने के कारण यद्यपि दिवाकरसिंह और नन्दरानी प्रगट में

बहुत शोक न प्रकाश कर केवल इन्द्रदेव के उपर ही अपने प्यारे लड़के का पता लगाने का भार सौंप कर प्रगट में यह सन्तोष किये बैठे हुए थे कि यदि हमारे भाग्य में पुत्रशोक बदाही है तो वह किसी तरह टल नहीं सकता, पर बेचारी इन्दुमति की बुरी हालत हो रही थी। अद्यपि अपनी इस कच्ची उम्र में ही वह बड़े बड़े कष्ट उठा चुकी थी और दुनिया की अवस्था का बहुत कुछ अनुभव भी कर चुकी थी पर इस समय इन्द्रदेव और उसके सास ससुर का समुझाना बुझाना उसका कोई भी सम्बोधन कर न रहा था। वह कई बार इन्द्रदेव से इस बात की इजाजत माँग चुकी थी कि वे उसे भेष बदल कर इस स्थान के बाहर जाने और अपने पति का पता लगाने की आज्ञा दें क्योंकि जमना सरस्वती के संग से उसे भी कुछ कुछ ऐयारी आ गई थी, पर बेचारे इन्द्रदेव क्योंकर उसे ऐसा करने की इजाजत दे सकते थे। बराबर उसे दिलासा देते और समझाते थे कि ठहर जा बेटी जल्दी न कर, आजकल में मेरा कोई न कोई ऐयार प्रभाकरसिंह की खबर लेकर आता ही होगा।

यह भी नहीं था कि शागिर्दों ही पर सब भार छोड़ इन्द्रदेव स्वयम् चुप बैठे हों। मौका मिलने पर वे खुद भी भेष बदल कर बाहर निकलते और दयाराम तथा प्रभाकरसिंह का पता लगाते थे मगर अभी तक उनकी मेहनत का कोई अच्छा तनीजा नहीं निकला था। केवल इस बात का पता वे लगा पाये थे कि प्रभाकरसिंह दारोगा के यहाँ कैद थे मगर कई रोज हुए वहाँ से कोई उनको छुड़ा ले गया। दारोगा की कैद से छूटने बाद वे फिर क्या हुए या कहां गये इसका कुछ भी पता लगता न था।

इन तरद्दुदों के साथ ही साथ एक तरद्दुद इन्द्रदेव को अपने ससुर के बारे में भी लगा हुआ था। जिस ढंग से आखिरी दफे उनके बुलाने पर अपनी स्त्री और लड़की को लेने जाने पर इन्द्रदेव से दामो-

दरसिंह की बातें हुई थीं* उससे तथा खुद भी कुछ पता लगाने से यह बात इन्द्रदेव को मालूम हो चुकी थी कि शीघ्र ही दामोदरसिंह पर कोई आफत आने वाली है, मगर वह कैसी या किस प्रकार की होगी इसका ठीक ठीक पता नहीं लगा था और इस बात को जानने की फिक्र इन्द्रदेव को लगी हुई थी क्योंकि अपने ससुर की रक्षा करना भी इन्द्रदेव अपना अवश्यक कर्तव्य समझते थे।

जमना सरस्वती की मौत दयाराम तथा प्रभाकरसिंह को गायब हुए आज करीब करीब एक पखवाड़ा हो चुका है और जमानिया से अपनी स्त्री इत्यादि को लेकर इन्द्रदेव को लौटे भी करीब इतना ही समय गुजर चुका है।

बहुत देर तक सोच में डूबे रहने बाद इन्द्रदेव ने सिर उठाया और ताली बजाई जिसके साथ ही एक नौकर जो अदब के साथ उनसे थोड़े ही फासले पर खड़ा था पास आ पहुँचा। इन्द्रदेव ने उसे अपना घोड़ा तैयार कर लाने का हुक्म दिया और आप उठ कर जनाने मकान में सर्यू से कुछ बातें करने के लिये चले गए।

थोड़ी देर बाद एक लबादा ओढ़े और अपनी सूरत में मामूली सा फर्क डाले हुए इन्द्रदेव जनाने मकान के बाहर आये। तिलिस्मी मकान का पेचीला रास्ता तय करके बाहर आने पर पहाड़ी के नीचे उन्हें घोड़ा तैयार मिला और वे उस पर सवार हो तेजी के साथ एक तरफ रवाना हुए।

लगभग आध घण्टे तक इन्द्रदेव लगातार घोड़ा फेकते हुए चले गये। सूर्य्यदेव अस्ताचलगामी हो चुके थे और उनकी किरणें केवल ऊंचे ऊंचे पेड़ों की चोटियों पर ही कहीं कहीं दिखाई पड़ रही थीं जब

* चन्द्रकान्ता सन्तति चौदहवाँ हिस्सा ग्यारहवाँ बयान–इन्दिरा का किस्सा।

इन्द्रदेव सड़क के किनारे एक ऐसी जगह पहुँच कर रुके जहां सड़क के दोनों तरफ दूर तक केवल बड़के ही पेड़ लगे हुए थे और वे भी इतने पुराने तथा विशाल की उनके सबब से दूर दूर तक सड़क पर तथा आस पास बिल्कुल अन्धकार हो रहा था। दोनों तरफ के पेड़ों की डालें आपस में गुथ गई थीं और बड़ की लटकती हुई शाखायें सड़क से आने जाने वालों के रास्ते में रुकावट डालती थीं। उसी जगह सड़क के किनारे पुराने जमाने का एक आलिशान कूंआ भी था मगर वह अब टूट फूट चला था और पेड़ों की पत्तियें गिर गिर कर उसका पानी भी पीने लायक नहीं रह गया था।

इन्द्रदेव यहां पहुँच कर कुछ देर रुके और इसके बाद पुनः रवाना हुए पर इस बार उन्होंने सड़क छोड़ एक पतली पगडण्डी का रास्ता पकड़ा जो उन्हीं पेड़ों के बीच में से घूमती फिरती पश्चिम तरफ को निकल गई थी। अन्धेरा होते होते वे एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां घोर जंगल के बीच एक ऊंचा टीला था जिस पर एक बड़ा और खूब सूरत बंगला बना हुआ दिखाई पड़ रहा था। यहां पहुँच इन्द्रदेव घोड़े पर से उतर पड़े और उसे रास्ते से दूर एक पेड़ के साथ लगाम अंटका छोड़ने बाद पैदल ही उस पगडण्डी पर चलने लगे जो चक्कर खाती हुई उस टीले के ऊपर गई थी।

कुछ ही दूर गये होंगे कि यकायक इन्द्रदेव को अपने पीछे कुछ आहट मालूम हुई और उन्होंने घूम कर देखा तो एक नकाबपोश को आते पाया। वे रुक गये और वह नकाबपोश उनके सामने आकर खड़ा हो गया। कुछ देर तक दोनों एक टक एक दूसरे को देखते रहे और इसके बाद नकाबपोश ने धीरे से कहा, "शशधर" जवाब में इन्द्रदेव से "राजन" सुनते ही उसने नकाब दूर कर दी और अब मालूम हुआ कि वे इन्द्रदेव के दिली दोस्त दलीपशाह हैं।

दलीपशाह ने इन्द्रदेव को गले लगाया और तब पूछा, "आप यहां

कैसे आ पहुँचे !"

इन्द्र० । आज यकायक मेरे मन में आया कि यहां आकर भी कुछ देखभाल करूं मगर आपको इस जगह देख मुझे ताज्जुब होता है ।

दलीप० । मैं और मेरे शागिर्द कई दिनों से इस मकान वालों का हाल जानने की फिक्र में लगे हुए हैं क्योंकि इस बात का संदेह होता है कि प्रभाकरसिंह कदाचित् इसी के अन्दर हैं ।

इन्द्रदेव० । (चौंक कर) क्या सचमुच आप लोगों ने प्रभाकरसिंह को यहाँ देखा है ?

दलीप० । हाँ (कान लगाकर) मगर देखिये किसी के आने की आहट सुनाई देती है, मालूम होता है कोई आदमी इधर आ रहा है । हम लोगों को आड़ में हो जाना चाहिये ।

इन्द्रदेव और दलीपशाह पगडंडी से हट कर एक पेड़ की आड़ में हो गये और उसी समय उनकी निगाह एक औरत पर पड़ी जो तेजी के साथ इसी तरफ आ रही थी । यद्यपि अन्धकार के कारण उस औरत की सूरत शक्ल का अन्दाजा करना कठिन था तथापि इन्द्रदेव और दलीपशाह का ध्यान उसके हाथ के बड़े छुरे और उन बातों पर अवश्य गया जिन्हें वह बड़बड़ाती हुई कहती जाती थी, "यह बड़ा ही बुरा हुआ जो वह दुष्ट मेरे हाथ से बच कर निकल गया, अब वे लोग इस जगह का पता जरूर पा जायगे और तब प्रभाकरसिंह के लिये.....!" यह कहती हुई वह औरत तेजी के साथ उसी टीले पर चढ़ गई ।

उसके निकल जाने बाद इन्द्रदेव ने कहा, "इसकी बात से तो मालूम होता है कि प्रभाकरसिंह यहीं हैं !"

दलीप० । जरूर और मेरी समझ में तो इसी वक्त इसका पीछा करना चाहिये ।

इन्द्र० । (कुछ सोच कर) अच्छा चलो !

दोनों आदमी धीरे धीरे जहाँ तक सम्भव था पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाते हुए उस टीले पर चढ़ने लगे और थोड़ी ही देर में ऊपर जा पहुँचे। टीले का ऊपरी हिस्सा इतना प्रशस्त था कि उस पर बनी इमारत के इलावे भी वहाँ चारों तरफ थोड़ा मैदान और तब कुछ पेड़ थे। इन्द्रदेव और दलीपशाह एक मोटे पेड़े की आड़ में खड़े होकर चारो तरफ निगाह दौड़ाने लगे।

चन्द्र भगवान को अपनी पूरी किरणों के साथ उदय हुए आधी घड़ी के लगभग हो गई थी और इस कारण उस सुफेद रंग से रंगे हुए मकान का बाहरी हिस्सा बिल्कुल साफ साफ दिखाई पड़ रहा था जिसमें किसी तरह की विशेषता नहीं थी और सिवाय उस सदर फाटक के जो इन दोनों के ठीक सामने ही पड़ता था और कोई खिड़की या दरवाजा भी नजर नहीं आता था।

दलीपशाह और इन्द्रदेव ने पेड़ की आड़ ही आड़ उस मकान का पूरा चक्कर लगाया पर कहीं कोई आदमी नजर न आया। चारो तरफ घूम आने पर इन दोनों को विश्वास हो गया कि इस मकान में अगर आदमी हैं तो अवश्य इसके अन्दर हीं कहीं हैं और बिना अन्दर गये उनका पता लगाना कठिन है।

दलीपशाह ने इन्द्रदेव से पूछा, "कहिये तो कमन्द लगा कर मकान के अन्दर जाने की कोशिश की जाय क्योंकि फाटक बन्द है।" मगर इन्द्रदेव ने सिर हिला कर कहा, "नहीं, इस मकान में कमन्द नहीं लग सकेगी! यह ऐसी कारीगरी के साथ बना है कि इसकी दीवारों पर कहीं कमन्द अटकने की जगह ही नहीं है।"

दलीप०। फिर क्या करना चाहिये, मकान के अन्दर गए बिना कुछ पता लगाना मुश्किल जान पड़ता है!

इन्द्रदेव०। जरा सब्र करो, कुछ देर तक राह देखो, अगर कोई

आदमी नजर नहीं आवेगा तो इसी दर्वाजे की राह अन्दर जाने की कोशिश करेंगे। मगर देखो तो सही वह कौन आदमी है। हैं! वह तो प्रभाकरसिंह ही जान पड़ते हैं !!

मकान के पिछली तरफ से इधर को आते हुए एक आदमी पर इन्द्रदेव की निगाह पड़ी। दलीपशाह ने भी उसे देखा और कहा, "बेशक मालूम तो प्रभाकरसिंह ही होते हैं, मगर ताज्जुब की बात है कि जब ये इस तरह पर खुले और स्वतंत्र हैं तो आपके पास न जाकर या आपको अपनी खबर न देकर यहाँ क्यों रुके हुए है? रङ्ग ढंग से तो यह नहीं मालूम होता कि ये पराधीन हैं या किसी ने उन्हें कैद कर रक्खा है !!"

इन्द्र०। बेशक! कम से कम कैदी तो वे नहीं ही मालूम होते!

दलीप०। तब मेरी एक राय है! अभी इनसे मुलाकात न कीजिये, आखिर इनका पता तो लग ही गया है, अब कहीं जा तो सकते नहीं और न कोई जल्दी ही है, पहिले देखिये ये करते क्या हैं।

इन्द्र०। आपकी राय ठीक है, ऐसा ही कीजिये !!

दोनों आदमी चुपचाप खड़े प्रभाकरसिंह की तरफ देखने लगे। जिस जगह ये छिपे थे उसके आगे गजों तक जमीन पेड़ पत्तों से बिल्कुल साफ थी। प्रभाकरसिंह कुछ देर तक धीरे धीरे इसी मैदान में टहलते रहे, इसके बाद दर्वाजे के पास पहुँचे और उससे लगे हुए कुण्डे को खटखटाया। दर्वाजा खुल गया और वे अन्दर चले गये।

लगभग घड़ी भर के बाद वे पुनः बाहर आये मगर इस बार अकेले नहीं थे बल्कि अपने चेहरे को नकाब से छिपाये एक औरत भी उनके साथ थी।

कुछ देर तक प्रभाकरसिंह उस औरत के साथ इधर उधर टहलते और कुछ बातें करते रहे, इसके बाद दोनों एक साफ पत्थर पर आकर बैठ गये जो उस जगह से जहाँ इन्द्रदेव और दलीपशाह छिपे खड़े थे दस बारह

कदम से ज्यादा दूरी पर न थी। प्रभाकरसिंह और उस औरत में बातचीत होने लगी जिसे इन्द्रदेव और दलीपशाह गौर से सुनने लगे। बिल्कुल स्पष्ट सुनाई न पड़ने पर भी बातें कुछ कुछ समझ में आ सकती थी।

प्रभा०। तो अब मुझे कब तक इस तरह छिपे बैठा रहना पड़ेगा? अकेले रहते रहते तो तबीयत घबड़ा गई!

औरत०। बस अब ज्यादा देर नहीं है। क्या कहूँ काम तो आज ही होजाता मगर वह कम्बख्त होशियार हो गया और निकल भागा। खैर कोई हर्ज नहीं, कब तक, आखिर कभी न कभी तो मेरे पञ्जे में पड़े ही गा।

प्रभा०। तो क्या बिना उसको गिरफ्तार किये काम नहीं चल सकता?

औरत०। नहीं, सिवाय उसके और कौन बता सकता है कि उन सभों के साथ क्या सलूक किया गया?

प्रभा०। तो तुम्हें अभी तक उनकी मौत का विश्वास नहीं होता?

औरत०। कदापि नहीं, मुझे पूरा विश्वास है कि जमना और सरस्वती मरी नहीं बल्कि तिलिस्म में कैद हो गई हैं।

प्रभा०। मगर उन्हें तिलिस्म में कैद ही किसने किया? गदाधरसिंह तो तिलिस्म का हाल कुछ भी नहीं जानता!!

औरत०। पर दारोगा तो जानता है!

प्रभा०। बेशक दारोगा जरूर जानता है और वह ऐसा कर भी सकता है! (कुछ रुक कर) अच्छा तुमने एक बार कहा था कि मैं तिलिस्म में जा सकती हूँ। तो क्या तुम वहाँ जाकर उनका पता नहीं लगा सकतीं?

औरत०। सब जगह तो नहीं मगर कुछ जगहें मैं जरूर जानती हूँ और वहाँ जा भी सकती हूँ।

प्रभा०। तो चल कर वहीं देखो शायद मिल जाँय, न भी पता लगे तो कम से कम चित्त को कुछ सन्तोष तो हो जायगा।

औरत०। (कुछ सोच कर) अच्छा जैसी मर्जी आपकी, मैं चलने को तैयार हूँ।

प्रभा०। तो फिर चलो, मैं भी तैयार हूँ।

इन्द्रदेव बड़े गौर से इन दोनों की बातें सुन रहे थे, जब प्रभाकरसिंह की आखिरी बात सुन वह औरत उठ खड़ी हुई और प्रभाकरसिंह भी चलने को तैयार हो गये तो इन्द्रदेव ने बहुत धीरे से दलीपशाह से कहा, "इन लोगों की बातें सुनी ? मालूम होता है अब ये तिलिस्म में जायंगे।"

दलीप०। आश्चर्य की बात है, मगर मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि यह औरत कौन है और प्रभाकरसिंह से इसका परिचय क्योंकर हुआ। (देख कर) मगर देखिये वे दोनों तो उस तरफ जा रहे हैं। मकान के अन्दर न जा कर टीले के नीचे जाया चाहते हैं ! चलिये हम लोग भी उधर ही चलें।

मन ही मन कई तरह की बातें सोचते हुए इन्द्रदेव भी दलीपशाह के साथ उसी तरफ रवाना हुए जिधर वह औरत और प्रभाकरसिंह जा रहे थे।

मकान के पश्चिम तरफ टीले के कुछ नीचे उतर कर पगडण्डी रास्ते के बगल ही में चूने या पत्थर की लगभग तीन हाथ ऊँची एक गोल पिण्डी एक बड़े से चबूतरे के ऊपर बनी हुई थी। इस पिण्डी का घेरा छः हाथ से कम न था और सिंदूर से रंगी रहने के कारण यह एक दम लाल हो रही थी। इन्द्रदेव ने जो दलीपशाह के साथ उस औरत के पीछे पीछे जा रहे थे देखा कि वह औरत उस जगह पहुँच कर रुकी और तब प्रभाकरसिंह के साथ पिण्डी के पीछे की तरफ चली गई।

थोड़ी ही देर बाद इन्द्रदेव और दलीपशाह भी उस जगह पहुँचे मगर वहाँ कोई न था। न तो वह औरत ही दिखाई पड़ी और न प्रभाकरसिंह नजर आए।

नौवां बयान

जमना की जली कटी बातें सुन भूतनाथ अपना क्रोध रोक न सका। उसने जमना को खिड़की के बाहर खींच लिया तथा खञ्जर निकाल उसकी छाती पर सवार हो गया।❀

डर के कारण जमना बेहोश हो गई और करीब ही था कि भूतनाथ अपनी सब प्रतिज्ञाओं को भूल उसका सिर काट डाले कि यकायक कुछ सोच कर उसने अपना हाथ रोक लिया।

भूतनाथ के मन में खयाल उठा कि यदि वह इस समय जमना को मार डालेगा तो उसको बड़ी भारी मुसीबत में पड़ना पड़ेगा क्योंकि एक तो यह स्थान इन्द्रदेव का है जहाँ वह मनमानी कार्रवाई करके बच नहीं सकता, दूसरे इस जगह से बाहर निकल जाने का रास्ता उसे मालूम नहीं हुआ था क्योंकि वह मेघराज के साथ आया था और वे मामूली ढङ्ग पर गुप्त दर्वाजों को खोलते और बन्द करते हुए तेजी के साथ बढ़े चले आये थे जिनका भेद डर के मारे भूतनाथ उनसे दरियाफ्त कर नहीं सका था। इसके सिवाय भूतनाथ ने यह भी सोचा कि यदि वह इस समय जमना को मार डाले तो उसका वह काम जिसके लिये वह यहाँ आया था अर्थात् मेघराज का असली भेद जानना—रह ही जायगा और उसे एक नई मुसीबत में पड़ जाना पड़ेगा। इसके इलावे जमना को मार डालने पर भी कला अर्थात् सरस्वती बची ही रह जायगी और इन्द्रदेव प्रभाकरसिंह आदि उसकी मदद दिल तोड़ कर करेंगे जिससे जान बचना मुश्किल का जायगा।

इन्हीं बातों को भूतनाथ तेजी के साथ सोच गया क्योंकि उसे इस बात

❀ देखिये भूतनाथ द्वितीय खण्ड का अन्त।

का भी डर लगा हुआ था कि जमना की चिल्लाहट से होशियार होकर कोई लौंडी इधर आ न जाय। अस्तु सब कुछ सोच विचार कर उसने इस समय क्रोध को पी जाना ही मुनासिब समझा और जमना की छाती पर से अलग हो गया। उसके पास इस समय भी ऐयारी का बटुआ मौजूद था जिसे उसने होशियारी के साथ अपने कपड़ों में छिपाया हुआ था। उसने बटुए में से बेहोशी की दवा निकाली और जमना को सुँघा कर और भी अच्छी तरह बेहोश कर दिया। इसके बाद उसे उठा कर पास की एक झाड़ी में छिपा आया और तब एक जगह खड़ा हो कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये।

कुछ देर बाद भूतनाथ वहाँ से हटा और अपने को छिपाए हुए उस मकान के पीछे की तरफ चला। इधर भूतनाथ ने देखा कि मकान का सदर दर्वाजा खुला हुआ है और उसमें से कोई औरत बाहर आ रही है। चन्द्रमा की रोशनी में वह पहिचान गया कि यह सरस्वती है। भूतनाथ ने इसे भी अपने कब्जे में करने का इरादा किया।

दर्वाजे के बाहर निकल सरस्वती इधर उधर देखती हुई धीरे-धीरे उसी तरफ रवाना हुई जिधर से भूतनाथ अभी अभी आया था और भूतनाथ भी अपने बटुए में कोई चीज तलाश करता हुआ उसके पीछे पीछे चल पड़ा।

जब सरस्वती उस खिड़की के पास पहुंची जिसके अन्दर से जमना ने भूतनाथ से बातचीत की थी तो खिड़की खुली हुई पा यकायक रुक गई और बोल उठी, "हैं यह क्या मामला है?"

इसी समय सरस्वती की निगाह भूतनाथ पर पड़ी जो नकाब से अपना मुँह छिपाए उसी तरफ चला आ रहा था। उसे देख वह आश्चर्य के साथ कुछ कहना ही चाहती थी कि भूतनाथ ने उसे चुप रहने का इशारा किया और तब एक लिफाफा जमीन पर रखने बाद एक पेड़ की आड़ में जा खड़ा हुआ।

न जाने क्या समझ कर सरस्वती चुप रह गई और पास जाकर उसने वह लिफाफा उठा लिया जो भूतनाथ ने जमीन पर रख दिया था। लिफाफे के अन्दर एक चीठी थी जिसमें कुछ लिखा हुआ था। यद्यपि चन्द्रमा की पूरी रोशनी पड़ रही थी फिर भी उस चीठी का पढ़ना कठिन था। वह बहुत देर तक उस पत्र के पढ़ने की चेष्टा करती रही मगर कृतकार्य हो सकी और आखिर उसने उस तरफ देखा जिधर पेड़ की आड़ में भूतनाथ अभी तक खड़ा था।

अब भूतनाथ आड़ के बाहर निकल आया और नकाब हटा कर एक बार अपनी सूरत सरस्वती को दिखाने बाद पुनःनकाब डाल ली। सरस्वती प्रभाकरसिंह की सूरत देख चौंकी और बोल उठी, "क्या आप बाहर गये थे ?"

सरस्वती के इस सवाल का मतलब भूतनाथ समझ न सका और कुछ सोचता हुआ क्षण भर ही रुका था कि कला झपट कर उसके पास आई और एक खंजर जो उसकी कमर में छिपा हुआ था। निकालती हुई बोली—"सच बता तू कौन है और प्रभाकरसिंहजी का रूप तैंने क्यों लिया है !" मगर इसके आगे वह कुछ कर न सकी क्योंकि जो चीठी भूतनाथ ने उसके सामने रक्खी थी और जो अभी तक भी उसके हाथ में मौजूद थी उसमें से एक प्रकार की विचित्र गन्ध निकल रही थी जिसकी तेज बेहोशी का असर इस समय तक सरस्वती पर पूरे तौर से हो गया था। वह बेहोश होकर गिरने लगी मगर भूतनाथ ने उसे सम्हाला और चीठी अपने कब्जे में कर ने बाद सरस्वती को उठाये हुए उसी झाड़ी में चला गया जिसमें जमना को रक्खा था। बेहोश सरस्वती भी जमना के बगल में रख दी गई और भूतनाथ झाड़ी के बाहर निकल कर पुनः उस मकान के सदर दर्वाजे की तरफ रवना हुआ।

दर्वाजा अभी तक खुला हुआ था और मकान अन्दर से किसी के

चलने फिरने की आहट नहीं आती थी अस्तु होशियारी के साथ अपने चारो तरफ देखता हुआ भूतनाथ उसके अन्दर घुस गया।

भूतनाथ ने अपने को एक कमरे में पाया जो लगभग बीस हाथ के लम्बा और इससे कम चौड़ा होगा। कमरे में चारो तरफ चार दर्वाजे थे जिनमें से तीन तो बन्द थे और चौथा वही था जिसकी राह वह अभी अभी अन्दर आया था। कमरे में किसी तरह का कोई सामान यहाँ तक कि जमीन पर कोई फर्श तक भी नहीं था और अगर एक कोने में बलते हुए मद्धिम चिराग को चन्द्रमा की उस रोशनी की मदद न मिलती जो खुले हुए दर्वाजे की राह टेढ़ी होकर आ रही थी तो कदाचित् भूतनाथ बाकी के उन तीनों दर्वाजो को देख भी न सकता।

आखिर कुछ देर बाद हिम्मत करके भूतनाथ आगे बढ़ा और दाहिनी तरफ वाले दर्वाजे के पास जा उसे धीरे से एक धक्का दिया। दर्वाजा तुरत खुल गया और भूतनाथ ने देखा कि यह भी एक छोटा कमरा है जो बहुत खूबसूरती के साथ सजा हुआ है तथा यहाँ दीवारों पर लगी हुई कई दीवारगीरों में रोशनी भी हो रही है। पहिले कमरे की तरह इस कमरे में भी यद्यपि कोई आदमी तो दिखाई नहीं देता था तथापि यहाँ सामने की तरफ एक दूसरा दर्वाजा जरूर नजर आ रहा था जो खुला हुआ था और जिसके अन्दर से कुछ आवाज आ रही थी।

कुछ देर तक तो भूतनाथ दर्वाजे के पास खड़ा रहा मगर कोई शक की बात न पा कर वह इस कमरे के अन्दर चला गया बल्कि इसे पार कर उस दर्वाजे के पास पहुँचा जिसके अन्दर से आवाज आ रही थी। एक ही नजर में भूतनाथ को मालूम हो गया कि यह वही कमरा है जिसके अन्दर खड़ी जमना से उसकी बातें हुई थीं क्योंकि पुतली आदि वह सब सामान इसमें दिखाई पड़ रहा था और उसी तरह की रोशनी भी हो रही थी। पुतली के पीछे वाला वह खुला हुआ दर्वाजा भी जिसकी राह जमना

उस कोठड़ी में आई थी दिखाई दे रहा था और उसके अन्दर से एक प्रकार की विचित्र आवाज और कुछ गर्म गर्म हवा आ रही थी।

कुछ आश्चर्य और कुछ डर के साथ जो जमना की बातों से उसके दिल में पैदा हो गया था भूतनाथ उस पुतली की तरफ देखने लगा। यकायक पिछले कमरे में से जिसमें से होकर वह अभी अभी यहाँ आया था किसी की आहट आई और घूम कर देखने से भूतनाथ को ऐसा मालूम हुआ मानो कोई आदमी दर्वाजे के एक बगल से दूसरी तरफ चला गया हो। "यदि वह सचमुच कोई आदमी है और मुझे धोखा नहीं हुआ है तो उसने जरूर मुझे देख लिया होगा!" यह खयाल भूतनाथ के दिल में दौड़ गया तथा वह और भी डर गया क्योंकि एक तो स्वयम् चोरों की तरह दूसरे के घर में घुसा हुआ था दूसरे एक ऐसी जगह में था जिसका कुछ भी हाल वह नहीं जानता था, फिर भी न जाने क्या सोच कर भूतनाथ आगे बढ़ा और उस कमरे के अन्दर हो रहा।

इस पुतली वाले कमरे में घुसते ही यकायक वह दर्वाजा जिसकी राह भूतनाथ इस कमरे में घुसा था आप से आप बन्द हो गया, वह खिड़की भी जो खुली हुई थीं और जिसमें से भूतनाथ ने जमना को बाहर खींच लिया था बन्द हो गई और अब सिर्फ पुतली के पीछे वाला एक वही दर्वाजा खुला रह गया जिसकी राह जमना वहाँ पहुँची थी।

भूतनाथ के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा और खास कर यह देख तो वह और भी घबड़ाया कि दर्वाजा और खिड़की बन्द होने के साथ ही उस कोठरी की जमीन गर्म होने लगी और शीघ्र ही यहाँ तक गर्म हो गई कि उस पर खड़ा रहना तकलीफदेह मालूम होने लगा।

भूतनाथ कोठरी में चारो तरफ इस खयाल से घूमने लगा कि शायद कहीं कोई जगह गर्म न हुई हो पर कोठरी भर का वही हाल था यहाँ तक कि अब धीरे धीरे दीवारें गर्म होने लगीं थी और कुछ देर बाद हवा भी गर्म मालूम पड़ने लगी। भूतनाथ बड़ा घबड़ाया और सोचने लगा कि

यह तो बड़ी दुर्दशा में आन पड़ा और इस गर्म कोठरी में फंस व्यर्थ जान जाया चाहती है।

यह सोचकर कि शायद वह दर्वाजा जिस राह जमना यहाँ आई थी किसी ठण्ढी जगह में पहुँचने का रास्ता हो भूतनाथ कई दफे उसके पास गया पर जब वह उसके पास जाता दर्वाजा आप से आप बन्द हो जाता और जब वह दूर हट जाता तो पुनः खुल जाता। भूतनाथ घबड़ा गया और उसे निश्चय हो गया कि अब उसकी जान कभी न बचेगी क्योंकि कोठरी की गर्मी पल पल बढ़ती ही जाती थी।

बड़ी बेचैनी और घबराहट की हालत में भूतनाथ इधर से उधर घूम बल्कि दौड़ रहा था कि यकायक उस खुले हुए दर्वाजे में उसे किसी की सूरत दिखाई पड़ी। वह रुककर उधर ही देखने लगा और साथ ही उसकी निगाह मेघराज पर पड़ी जो मुस्कुराते हुए आकर उस खुले हुए दर्वाजे के पास खड़े हो गये थे

मेघराज कुछ सायत तक भूतनाथ की तरफ देखकर बोले, "कहिये प्रभाकरसिंह! आज आप इस कोठरी में क्योंकर फँस गये और अब तक इस गर्म जगह में खड़े क्या कर रहे हैं! इधर मेरे पास क्यों नहीं आते?"

भूतनाथ यह सुन बिना कोई जवाब दिये मेघराज की तरफ बढ़ा मगर दो ही चार कदम गया होगा कि दर्वाजा पहिले की तरह फिर बन्द हो गया लाचार वह पुनः पीछे हटा, दर्वाजा खुल गया और मेघराज फिर दिखाई पड़ने लगे जो भूतनाथ की तरफ देख खिलखिला कर हँस पड़े और बोले, "वाह गदाधरसिंह! तुम तो बड़े भारी ऐयार और चालाक कहलाते हो, फिर भी एक खुले हुए दर्वाजे के बाहर नहीं हो सकते!"

भूतनाथ०। मेरी ऐयारी और चालाकी का तो आप तब इमतिहान ले सकते थे जब खुले मैदान हम और आप हों, इस तरह एक तिलिस्मी कोठरी में किसी को बन्द कर और उसे कष्ट में डाल ताना मारना मर्दानगी नहीं है!!

मेघ० । मैंने तुम्हें यहाँ बन्द नहीं किया, तुम स्वयम् आये और चोरों की तरह कोने कोने की तलाशी लेते हुए यहाँ फँस गये तो इसमें मेरा क्या दोष ?

भूत० । मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यहाँ किसी बुरी नीयत से नहीं आया था । आप इस कम्बत गर्मी को दूर कीजिये जो इस कोठड़ी में पैदा हो रही है तो मैं आपसे बात करने लायक बनूँ ।

मेघ० । हाँ हाँ शीघ्र ही मैं ऐसा कर दूंगा पर पहिले तुम्हें मेरे दो चार सवालों का जवाब देना होगा ।

भूत० । आप पूछें मैं वादा करता हूं कि ठीक ठीक उत्तर दूंगा ।

मेघ० । पहिली बात तो यह कि तुम यहाँ क्यों आये ? हमारे तुम्हारे बीच अब तो कोई दुश्मनी बाकी नहीं रह गई थी बल्कि आखिरी दफे तुम्हारी ही मदद से प्रभाकरसिंह जी ने अपने माता पिता को और भैया-राजा ने अपनी स्त्री को पाया था और उस समय तुम दोस्ती जाहिर करते हुए ही हमारे उन साथियों से विदा हुए थे, फिर क्या सबब है कि इतनी जल्दी अपनी प्रतीज्ञा भूल गये और हम लोगों का पुनः पीछा करने लगे ? जहाँ तक मेरा खयाल है तुम नागर के मकान के पास से मेरा पीछा शुरू करके इस समय तक प्रभाकरसिंह की सूरत में मौजूद हो और मुझे इस बात का भी सन्देह होता है कि हो न हो प्रभाकरसिंह तुम्हारे कब्जे में आ गये हैं । खैर यह सब बात तो पीछे होगी पहिले तुम बताओ कि इस घर में किस नियत से आये ?

भूत० । मैं आपसे सच सच कहता हूं कि यहाँ मेरा आना किसी बुरी नीयत से नहीं हुआ, नागर के मकान से आपको निकलता देख मेरी इच्छा हुई कि किसी ढंग से आपका परिचय लूँ क्योंकि इतने समय तक साथ रहने पर भी मैं आपको बिल्कुल पहिचान नहीं सका । बस उसी इच्छा से मैं आपके साथ लगा और लाचारी से अब तक यहाँ हूं ! आप विश्वास

रक्खें कि केवल आपका परिचय जानना ही मेरा अभीष्ट है और था, किसी तरह का बुरा खयाल मेरे दिल में जरा भी नहीं है।

मेघ०। और प्रभाकरसिंह अब कहाँ हैं?

भूत०। उन्हें मेरे शागिर्दों ने गिरफ्तार कर लिया था, मैं नहीं कह सकता कि अब वे कहाँ हैं पर इस बात का वादा करता हूँ कि यहाँ से जाते ही उन्हें छोड़ दूँगा और यदि किसी दूसरे के कब्जे में पड़ गये होंगे तो छुड़ा दूँगा।

मेघ०। खैर उसकी तो कोई चिन्ता नहीं है, अगर तुम उन्हें छोड़ दो तो अच्छा ही है नहीं हम लोग स्वयम् छुड़ा लेंगे।

भूत०। नहीं नहीं आपको कष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी, मगर अब आप इस कम्बख्त कोठरी से मुझे छुटकारा दें क्योंकि भट्ठी की तरह गर्म इस जगह में खड़ा रहना मुश्किल हो रहा है।

मेघ०। सिर्फ एक बात का जवाब और दे लो, इसी मकान में जमना और सरस्वती भी रहती थीं जो मेरी रक्षा में थीं, वे दोनों कहीं दिखाई नहीं पड़तीं, तुम जानते हो कहाँ गईं?

भूत०। हाँ मैंने ही उन्हें बेहोश करके (हाथ से बता कर) उस खिड़की के बाहर वाली झाड़ी में डाल दिया है और जरूर वे अभी तक वहाँ ही होंगी।

मेघ०। उन्हें बेहोश करने की तुम्हें क्या जरूरत पड़ी? क्या मेरा परिचय जानने के लिये उन्हें भी गिरफ्तार करना आवश्यक हो पड़ा था?

भूत०। जी नहीं, बात यह हुई कि इसी खिड़की में से मेरी और जमना की कुछ बातें हुईं और उन्होंने मुझे ऐसी जली कटी सुनाई कि क्रोध में आकर मैंने उन्हें खिड़की के बाहर खींच लिया और तब बेहोश करके झाड़ी में डाल दिया। मगर ओफ! अब तो मैं कुछ भी नहीं कर सकता!! गर्मी के मारे मेरी बुरी हालत होती जा रही है!!

मेघ०। भूतनाथ! जिस गर्मी से तुम इतना घबरा रहे हो उससे

कहीं ज्यादा गर्मी पहुंचाने वाली आँच जमना और सरस्वती के कलेजे में दिन रात सुलगा करती है जिनके पति दयाराम को तुमने अपने हाथ से कत्ल किया है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा कथन है कि तुमने दयाराम को उस समय नहीं पहिचाना और मुमकिन है कि तुम्हारा कहना ठीक भी हो पर क्या उस दयाराम की स्त्रियों पर वार करना तुम्हें मुनासिब था जो जान से ज्यादा तुम्हें मानता और भाई से ज्यादा तुम्हारी इज्जत करता था? अगर एक बार मान भी लिया जाय कि जमना सरस्वती तुम्हें दुःख देने पर मुस्तैद हो गई थीं तो भी इसका जवाब यह नहीं था कि तुम उनका अनिष्ट करने की कोशिश करते। उन्हें कष्ट पहुंचाने की बनिस्बत उनके हाथों से मारा जाना तुम्हारे हक में ज्यादा बेहतर होता। खैर यह पुराने पचड़े इस समय उठाना मैं पसन्द नहीं करता। मैं इस कोठड़ी की गर्मी दूर करता हूँ पर अभी मुझे दो चार सवाल और भी करने हैं उनका जवाब देकर तब तुम कोठरी के बाहर जाना।

इतना कह मेघराज वहाँ से हट गये। थोड़ी ही देर बाद एक खटके की आवाज आई और उसके साथ ही एक प्रकार की आवाज जो उस जगह गूँज रही थी बन्द हो गई मानों किसी कल पुर्जे का घूमना रोक दिया गया हो, इसके बाद ही वह खिड़की भी खुल गई जो बाहर की तरफ पड़ती थी और ठण्ढी हवा के झोंकों ने आकर भूतनाथ को चैतन्य किया। धीरे धीरे कोठरी की गर्मी कम होने लगी और भूतनाथ कुछ स्वस्थता के साथ मेघराज के लौटने का इन्तजार करने लगा।

घड़ी भर के ऊपर बीत गया मगर मेघराज न लौटे। भूतनाथ खड़ा खड़ा घबड़ा गया और आखिर अपनी जगह से चल कर उस दर्वाजे के पास पहुँचा जिसके अन्दर से मेघराज ने उससे बातें की थीं। ताज्जुब की बात थी कि इस बार भूतनाथ के पास जाने पर भी वह दर्वाजा बन्द न हुआ और हिचकते तथा कुछ डरते हुए भूतनाथ ने उस दर्वाजे के अन्दर पैर रक्खा।

यह कोठडी भी पहिली कोठड़ी की भांति किसी तरह के सामान से एक दम खाली थी मगर चारो कोनों पर चार सिंहासन चाँदी के बने हुए रखे थे जो इतने बड़े थे कि हर एक पर तीन या चार आदमी आराम के साथ बैठ सकते थे। इसके सिवाय इस कोठड़ी की दीवारों पर भी तरह तरह की तस्वीरें मौके मौके पर टँगी थीं जो बहुत सफाई और कारीगरी के साथ बनी हुई थीं। इस कोठरी की छत में भी वैसा ही शीशे का गोला था जैसा पहिली कोठरी में था और उसमें से बेहिसाब रोशनी निकल रही थी। भूतनाथ ने देखा कि इस कोठरी में सिवाय एक उस दर्वाजे के जिसकी राह वह यहाँ आया है और कोई दर्वाजा न था और उसे इस बात का ताज्जुब हो रहा था कि इस सब तरफ से बन्द कोठरी में से मेघराज कहाँ चले गये !

भूतनाथ ने मेघराज की कुछ देर राह देखने का निश्चय किया और समय काटने के लिहाज से वह दीवार पर टंगी हुई उन तस्वीरों को देखने लगा।

सब तरफ की तस्वीरें देख भूतनाथ पश्चिम तरफ की दीवार के पास पहुँचा जहाँ दीवार के बीचोबीच में एक बड़ी तस्वीर लगी हुई थी जिस पर लाल रंग का रेशमी पर्दा पड़ा हुआ था। पर्दा पड़ी हुई तस्वीर को देखना मुनासिब न समझ पहिले तो भूतनाथ का इरादा हुआ कि इस तस्वीर पर का पर्दा न हटावे पर उसके चंचल स्वभाव ने न माना और आखिर उसने पास जा कर उस तस्वीर का पर्दा हटा ही दिया।

काले चौखटे में जड़ी हुई उस बड़ी तस्वीर को भूतनाथ ने गौर से देखा और साथ ही उसके रोंगटे खड़े हो गये क्योंकि यह तस्वीर जिस स्थान और मौके की थी उसे भूतनाथ अच्छी तरह जानता था बल्कि यों कहना चाहिये कि भूतनाथ की जीवनी की एक मुख्य घटना को यह तस्वीर प्रगट कर रही थी।

यह तस्वीर भूतनाथ द्वारा दयाराम के मारे जाने का दृश्य दिखा रही

थी। एक मकान की ऊपरी छत पर कई आदमी दिखाये गए थे जिसमें से दलीपशाह शम्भू भूतनाथ राजसिंह और दयाराम साफ पहिचाने जाते थे राजसिंह भूत के हाथ की चोट खा एक तरफ गिरे हुए थे, दलीपशाह और उसके साथी दूसरी तरफ जख्मी होकर गिरे हुए थे, और खाली हाथ दयाराम भूतनाथ के आगे खड़े थे, भूतनाथ के हाथ का खंजर दयाराम के कलेजे के पार हुआ ही चाहता था*।

भूतनाथ अपने को सम्हाल न सका। तस्वीर का पर्दा उसके हाथ से छूट गया और वह पीछे की तरफ हटता हुआ जाकर एक सिंहासन पर बैठ गया अथवा यों कहना चाहिये कि गिर पड़ा। ताज्जुब कि बात थी कि भूतनाथ के बैठते ही वह सिंहासन हिला और तब इस तेजी से जमीन के अन्दर घुसगया कि भूतनाथ को उसपर से उतरने की जरा भी मुहलत न मिली और साथ ही वह किसी असर से बेहोश भी हो गया।

जब भूतनाथ होश में आया उसने अपने को एक खोह में पाया जो सुरंग की तरह मालूम हो रही थी। सामने की तरफ रोशनी दिखाई पड़ती थी और पेड़ों पर पड़ी हुई धूप बता रही थी कि सूर्य भगवान को उदय हुए काफी देर बीत चुकी है। धीरे धीर चलता हुआ वह गुफा के बाहर निकला और तब उसे मालूम हुआ कि यह वही गुफा है जिसकी राह मेघ-राज के साथ वह उनके गुप्त स्थान में गया था अर्थात् यही गुफा उस विचित्र घाटी में जाने की राह थी। अभी तक भूतनाथ के होश दुरुस्त नहीं हुए थे अस्तु वह बाहर आकर एक घने पेड़ के नीचे बैठ गया जिसके पास ही से एक छोटा पहाड़ी चश्मा बह रहा था। थोड़ी देर बाद उसने उठकर चश्मे के पानी से मुँह हाथ धोया और तब जमानिया की तरफ रवाना हो गया।

---

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति—बाईसवाँ हिस्सा, तीसरा बयान।

दसवां बयान

पाठक सोचते होंगे कि जब भूतनाथ इस तरह पर घाटी के बाहर निकल गया और जमना सरस्वती पर सिवाय उन्हें बेहोश कर देने के अन्य किसी तरह का वार उसने न किया तो फिर क्योंकर उनका मारा जाना मशहूर हुआ अथवा भूतनाथ ही पर उनके मारने का इलजाम किस तरह लगा, अस्तु यह हाल भी बता देना मुनासिब है मगर इसको सुनने के पहिले पाठकों को एक दूसरी बात जान लेना जरूरी है।

जब इन्द्रदेव ने जैपाल बनकर जमना सरस्वती को छुड़ाया और दयाराम वगैरह को इस घाटी में जगह दी उस समय उन्होंने इस बात को सोचा कि चाहे इस समय भूतनाथ भले ही हम लोगों का साथी बना हुआ है पर मुमकिन है कि कुछ दिन बाद वह फिर रंग बदलकर हम लोगों का दुश्मन बन जाय और दयाराम या जमना सरस्वती पर वार करने का इरादा करे। वे इस बात को समझते थे कि दयाराम और प्रभाकरसिंह का भूतनाथ जल्दी कुछ बिगाड़ न सकेगा क्योंकि ये लोग ऐयारी के फन में होशियार हो गये हैं पर ज्यादा डर जमना सरस्वती और इन्दुमति के विषय में था। इन्द्रदेव को विश्वास था कि भूतनाथ उस घाटी में जिसमें उन्होंने इन सभों को रक्खा था कदापि पहुंच न सकेगा फिर भी ज्यादा हिफाजत के खयाल से उन्होंने जमना सरस्वती और इन्दु की सूरतें ऐसे ढंग पर बदल दीं कि बिना एक खास तर्कीब किये असली सूरत निकल ही न सके और मजेदारी तो यह कि उन तीनों की सुन्दरता और सुघरता में भी किसी तरह का फर्क न पड़े। इसके सिवाय उन्होंने इन तीनों का नाम भी बदल दिया। जमना सरस्वती का नाम बीरो और भानो रक्खा गया तथा इन्दुमति राधा के नाम से पुकारी जाने लगी, और इन्द्रदेव ने इस बात की

सख्त ताकीद कर दी कि सिवाय इन नामों के असली नामों से वे तीनों कभी बुलाई ही न जाँय।

इन्द्रदेव ने इतने ही पर बस न करके तीन लौंडियों को जो जमना सरस्वती के पास बहुत जमाने से थीं और जिन्हें इनके गुप्त भेदों की खबर थी जमना सरस्वती और इन्दुमति की सूरत बना कर मुकर्रर कर दिया और यह बात भी इतनी गुप्त रक्खी गई कि सिवाय खास खास आदमियों के मामूली ऐयारों और नौकरों को इस बात का कुछ भी पता न लगा कि जमना सरस्वती और इन्दुमति के विषय में कहाँ तक उलट फेर हो गया है, अस्तु अब हमारे पाठक समझ गये होंगे कि भूतनाथ ने जिस जमना सरस्वती से बातें की थीं अथवा जिन्हें बेहोश करके झाड़ी में डाल दिया था वे असली न थीं बल्कि नकली थीं।

अब हम लिखते हैं कि जमना सरस्वती का मरना क्योंकर मशहूर हुआ और दयाराम कहाँ गायब हो गये।

जिस समय दयाराम नकली प्रभाकरसिंह (भूतनाथ) के साथ जमानिया की गुप्त कुमेटी से निकल अपने स्थान की तरफ लौटे तो उनका विश्वास था कि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा है क्योंकि सभापति ने जिन आदमियों को उनका पीछा करने के लिये भेजा था उन्हें वे धोखा देकर पीछे छोड़ आये थे परन्तु वास्तव में उनका पिण्ड छूटा न था और दारोगा के दोस्त स्वयम् जैपालसिंह उनका पीछा करते हुए बराबर चले आ रहे थे।

उस खोह तक तो जैपाल बराबर पीछे पीछे चला आया जो घाटी में जाने का बाहरी दर्वाजा था पर इसके आगे वह जा न सका क्योंकि खोह के अन्दर घुसते ही दस बीस कदम जाने बाद एक गुप्त दर्वाजा पड़ता था जिसका खोलना जैपाल की सामर्थ के बाहर था अस्तु वह गुफा के मुहाने पर रुक कर कुछ देर तक तो इस आसरे में रहा कि शायद उन दोनों में से कोई लौटे पर जब कोई न लौटा तो वह समझ गया कि यही इन लोगों

का घर है अस्तु वह लौटा और दारोगा से आकर उसने सब हाल तथा उस खोह का पता निशान बताया जिसमें दयाराम और प्रभाकरसिंह चले गये थे।

दुष्ट दारोगा को उस घाटी का हाल बखूबी मालूम था क्योंकि उस स्थान का जमानिया तिलिस्म से बहुत कुछ संबन्ध था। इन्द्रदेव ने भूतनाथ का तो बन्दोबस्त कर लिया मगर दारोगा की तरफ से बेफिक्र रहे और इस भूल के कारण उन्हें बहुत कुछ कष्ट उठाना पड़ा जैसा कि आगे चलने पर मालूम होगा।

जैपाल की जुबानी सब हाल सुनते ही दारोगा ने दो तेज घोड़े तैयार कराने का हुक्म दिया और जैपाल को साथ ले उसी समय मेघराज के स्थान की तरफ रवाना हुआ। आधी रात जाने के पहिले ही ये दोनों उस गुफा के मुहाने के पास जा पहुँचे जो घाटी में जाने का रास्ता था। दोनों घोड़े मुनासिब जगह पर लंबी बागडोर के सहारे बाँध दिये गये और चेहरों पर नकाब डाले दारोगा और जैपाल आइट लेते हुए उस गुफा के अन्दर घुसे।

गुफा के अन्दर घोर अन्धकार था मगर अन्दाज से टटोलता हुआ दारोगा लगभग बीस कदम जाकर रुका जहाँ पर घाटी का पहिला दर्वाजा था। अन्धेरे में इस बात का पता जैपाल को न लगा कि दर्वाजा किस तरह खोला गया मगर कुछ देर बाद एक खटके की आवाज आई और वह दर्वाजा जो लोहे का और एक ही पल्ले का था चूहेदानी के पल्ले की तरह सरसराता हुआ गुफा की छत में गायब हो गया। जैपाल का हाथ पकड़े हुए दारोगा आगे बढ़ गया और फिर रुक कर कुछ ऐसी तर्कीब की जिससे वह दर्वाजा पुनः पूर्ववत् बन्द हो गया।

अब दारोगा ने अपने पास से रोशनी का सामान निकाला और एक छोटी लालटेन बाली जो वह अपने साथ लाया था। उसकी रोशनी में जैपाल ने देखा कि वह एक ऐसी जगह में है जिसकी लंबाई चौड़ाई दस

हाथ से ज्यादा न होगी और जो ऊँचाई में लगभग चार हाथ के होगी। इस स्थान में चारो तरफ पत्थर ही दिखाई पड़ते थे जिससे गुमान होता था कि पहाड़ काट कर बनाया गया है। चारो तरफ की दीवार में चार लोहे के दर्वाजे दिखाई पड़ रहे थे जिनकी तरफ देख कर जैपाल ने दारोगा से पूछा, "ये चारो रास्ते क्या एक ही जगह पहुँचते हैं?" जवाब में दारोगा ने कहा, "तुम्हारे पीछे जो दर्वाजा है यह तो वही है जिसकी राह तुम आये हो और यह सामने तथा बाँई तरफ वाला दर्वाजा उसी घाटी में जाने का रास्ता है जहाँ हम इस वक्त जाया चाहते हैं तथा यह दाहिनी तरफ वाला दर्वाजा किसी और जगह का रास्ता है जिसे मैं नहीं जानता।"

जैपाल०। तो अब आप किस तरफ से जायँगे?

दारोगा०। अब मैं इस सामने वाले रास्ते से चलूँगा। सीधा और बेखतर तो यह बाँई तरफ वाला रास्ता है पर उधर से जाने से मुमकिन है कि इस घाटी में से लौटते हुए किसी आदमी से मुलाकात हो जाय। सामने वाले रास्ते में यह डर कम होगा क्योंकि यह बहुत खतरनाक होने के कारण घाटी के रहने वाले इस रास्ते से कदापि आते न होंगे।

इतना कह दारोगा ने लालटेन बुझा दी और दर्वाजा खोलने की कुछ तर्कीब करने लगा। लालटेन बुझा देना जैपाल को अच्छा न लगा क्योंकि वह समझ गया कि दारोगा ने अन्धकार इसलिए कर दिया है जिसमें दर्वाजा खोलने का भेद छिपा रहे पर वह चुप रह गया। इसी समय एक आवाज आने से मालूम हुआ कि दर्वाजा खुल गया अस्तु दारोगा जयपाल के साथ अन्दर चला गया और उसके जाते ही दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया।

अब दारोगा ने पुनः अपनी लालटेन बाली। रोशनी होनेपर जैपाल ने देखा कि वह एक ऐसी सुरङ्ग में हैं जिसकी चौड़ाई दो हाथ और ऊँचाई चार हाथ से कुछ ज्यादे हो शायद ही लम्बाई का पता कुछ नहीं लगता

था मगर सामने से कुछ ऐसी आवाज आ रही थी जिससे मालूम होता था कि मानों पास ही में कहीं तेजी के साथ पानी बह रहा है।

दारोगा यहाँ जरा भी न ठहरा और जैपाल को पीछे पीछे आने को कह आगे की तरफ बढ़ा। लगभग सौ कदम के जाने बाद सुरङ्ग दाहिनी तरफ घूमी और साथ ही साथ आगे की तरफ ढालुई भी होने लगी। ज्यों ज्यों ये दोनों आगे बढ़ते जाते थे पानी की आवाज स्पष्ट होती जाती थी और आखिरकार घड़ी भर से ऊपर जाने बाद जैपाल ने देखा कि सामने ही पानी का एक नाला बह रहा है जो चौड़ाई में बीस हाथ से कदापि कम न होगा। पानी बाईं तरफ से आता और तेजी के साथ बहता हुआ दाहिनी तरफ जा रहा था पर यह पानी किस राह से आता या जाता था इसका पता रोशनी काफी न होने के कारण ठीक ठीक नहीं लगता था। गुफा की छत भी इस जगह मामूली से ज्यादा ऊँची थी और चौड़ाई भी आठ दस हाथ से कम न होगी।

दारोगा जैपाल को साथ आने का इशारा कर सामने की तरफ बढ़ा और पानी में से होकर चलने लगा। पानी की गहराई ज्यादा नहीं थी मगर बहाव बहुत तेज था और तह में काई लगी रहने के कारण चलना मुश्किल हो रहा था।

किसी तरह ये दोनों नाले के पार हुए और अब यह सुरङ्ग ऊँची होने लगी साथ ही उसकी चौड़ाई और ऊँचाई भी कम होकर पहिले की तरह हो गई। दारोगा ने जैपाल से कहा, "प्रायः बरसात के समय इस नाले का पानी बढ़ जाया करता है, उस समय इस राह से आना जाना बहुत ही खतरनाक हो जाता है और जिनको मजबूरन आना ही पड़ता है वे इस जञ्जीर को पकड़ कर नाला पार करते हैं।"

एक मोटा लोहे का सिक्कड़ दीवार के साथ साथ लगा हुआ उस पार तक चला गया था जिसकी तरफ जैपाल ने ध्यान नहीं दिया था। दारोगा

की बात सुन उसने कहा, "पानी ज्यादा बढ़ने पर तो यह सिकड़ पानी में डूब जाता होगा ?"

दारोगा० । नहीं इतना ज्यादा पानी कभी नहीं बढ़ता । अच्छा देखो अब एक दर्वाजा आ पहुँचा, इसे खोलना होगा ।

इस जगह पहुँच कर सुरङ्ग यकायक बन्द हो गई थी और सरसरी निगाह देखने से यही मालूम होता था कि इसके बनाने वालों ने यहीं तक बनाकर सुरङ्ग का काम खतम कर दिया है पर वास्तव में ऐसा न था और सामने की दीवार में लोहे का एक मजबूत दर्वाजा था जिसका रङ्ग बिल्कुल पत्थर के रङ्ग में मिल गया था ।

दारोगा ने हाथ की लालटेन जमीन पर रख दी और दोनों हाथ से एक तरफ की दीवार में एक खास जगह पर जोर से दबाया। एक बालिश्त के करीब का एक टुकड़ा पीछे की तरफ हट गया और उसके अन्दर हाथ डाल कर दारोगा ने कुछ खटका दबाने या घुमाने बाद हाथ निकाल लिया । इसके बाद दर्वाजे को जोर से धक्का दिया और वह खुल गया । जैपाल को लिये हुए दारोगा अन्दर चला गया और अन्दर पहुँच कर हाथ से दबा कर वह दर्वाजा बन्द कर दिया । एक खटके की आवाज के साथ दर्वाजा मजबूती के साथ बन्द हो गया साथ ही बाहर वाली वह जगह भी जिसमें हाथ डाल कर दर्वाजा खोला गया था पहिले की तरह दुरुस्त हो गई ।

अब जिस सुरङ्ग में जैपाल ने अपने को पाया वह पहिले की बनिस्बत ज्यादा चौड़ी और ऊँची थी और उसकी जमीन पर काले और सफेद संगमर्मर का फर्श लगा हुआ था । दीवारें भी सफेद संगमर्मर की बनी हुई थी जिनके बीच में जगह जगह पर हाथ भर के चौखूटे ताँबे के टुकड़े लगे हुए थे जो इस प्रकार चमकते थे मानों अभी कोई उन्हें साफ करके गया हो, गुफा की छत से जगह जगह पर लोहे के भारी गोले लटक रहे

थे जिनके कद से मालूम होता था कि हर एक दस दस सेर से कम कदापि न होगा।

जैपाल इन सब चीजों की तरफ आश्चर्य से देख रहा था कि दारोगा ने कहा, "देखो अब इस जगह होशियारी के साथ चलना पड़ेगा। ये जो काले संगमर्मर के टुकड़े लगे हुए हैं इन पर चलने वाले का पैर कदापि न पड़ना चाहिये क्योंकि इन पर पैर पड़ते ही छत में लटकता हुआ लोहे का गोला नीचे गिर कर उसका काम तमाम कर देगा, देखो हर एक काले टुकड़े के ऊपर एक गोला लटक रहा है, और साथ ही इस दीवार से भी बचे रहना। ये जो तांबे के टुकड़े लगे हुए हैं इनसे छू जाना जान से हाथ धोना है। अच्छा अब चलना चाहिये।"

इतना कह दारोगा ने आगे का रास्ता लिया और सफेद टुकड़ों पर पैर रखता हुआ बड़ी होशियारी के साथ चलने लगा। जैपाल भी खूब गौर के साथ जमीन की तरफ देखता हुआ उसके पीछे पीछे जाने लगा।

करीब आधी घड़ी तक इन दोनों को इस सुरंग में चलना पड़ा और इसके बाद पुनः एक दर्वाजा मिला जिसे दारोगा ने किसी तर्कीब से खोला और दर्वाजे के दूसरी तरफ चला ही था कि उसका ध्यान एक विचित्र तरह की आवाज पर गया जो दर्वाजे के दूसरी तरफ से आ रही थी। वह ठिठक कर खड़ा हो गया और गौर से सुनने लगा। वह आवाज किसी तरह के कल पुर्जों की थी और जब दारोगा को विश्वास हो गया कि यह आदमियों की आवाज नहीं है तो वह दर्वाजे के दूसरी तरफ गया। जैपाल भी उसके साथ हुआ।

अब ये लोग एक कमरे में थे जो तरह तरह के विचित्र सामानों और ऐसे ऐसे कल पुरजों से भरा हुआ था जिनका हाल लिखना इस जगह व्यर्थ है। दारोगा को इनमें से कई कल पुरजे चलते हुए भी दिखाई दिये और इसके साथ ही उस गर्मी की तरफ भी उसका ध्यान गया जो वहाँ बाहर वाले सुरंग की बनिस्बत बहुत ज्यादे थी यहाँ तक कि कुछ ही

कायत बाद दारोगा को पसीना आने लगा और मामूली कपड़े भी जो वह पहिने हुए था गर्म मालूम होने लगे। यह हाल देख दारोगा ने धीरे से जैपाल से कहा, "हमलोग अपने ठिकाने आ गये हैं। इस जगह के ऊपर ही वह मकान है जिसमें मैं समझता हूँ कि वे लोग रहते होंगे जिनका पीछा करते हुए हम यहाँ आये हैं, मगर यह गर्मी जो यहाँ पैदा हो रही है स्वाभाविक नहीं है बल्कि किसी तकीब से पैदा की गई है। मालूम होता है कि इस मकान में रहने वाले इस समय बेफिक्र या सोए हुए नहीं हैं। अस्तु हमें होशियारी से काम लेना चाहिये, अगर कोई देख लेगा अथवा हमारा यहाँ आना जान जायगा तो लौटना मुश्किल हो जायगा।"

इतना कह दारोगा ने लालटेन बुझा दी और उस जगह घोर अन्धकार छा गया। जैपाल का हाथ पकड़े हुए वह उस कमरे के एक कोने की तरफ गया जहाँ एक दर्वाजा था। किसी तर्कीब से वह दर्वाजा खोल जैपाल के साथ दारोगा अन्दर चला गया और पुनः दर्वाजा बन्द कर दिया।

इस जगह भी घोर अन्धकार था मगर जैपाल का हाथ पकड़े दारोगा आगे बढ़ा, दस बारह कदम चलने बाद सीढ़ियाँ मिलीं जिन पर वह बेखौफ चढ़ गया। सीढ़ियाँ गिनती में सोलह थीं और उनके दूसरे सिरे पर भी एक दर्वाजा था। यह दर्वाजा बन्द नहीं था बल्कि जरा सा खुला हुआ था और अन्दर से रोशनी की एक लकीर आ कर सामने की दीवार पर पड़ती हुई उस स्थान को कुछ कुछ उजाला दे रही थी। दारोगा इस अधखुले दर्वाजे की राह से अन्दर वाले कमरे का हाल देखने लगा।

यह वही कमरा था जिसका हाल पाठक ऊपर वाले बयान में पढ़ चुके हैं, जहाँ भूतनाथ ने वह भयानक तस्वीर देखी थी या जहाँ से एक सिंहासन पर गिर वह इस स्थान से बाहर हो गया था। इस समय मेघराज इस कमरे में मौजूद थे और दर्वाजे के पास खड़े होकर भूतनाथ से बातें

कर रहे थे जो प्रभाकरसिंह के सूरत में था मगर जिस जगह दारोगा खड़ा था उस जगह से भूतनाथ पर नजर पड़ नहीं सकती थी।

दारोगा के देखते ही देखते अपनी बातें समाप्त कर मेघराज दर्वाजे के पास से हटे और कमरे के एक कोने की तरफ चले गये जहाँ दारोगा की निगाह नहीं पड़ती थी। कुछ ही देर में खटके की आवाज आई और उन कल पूर्जों का घूमना बन्द हो गया जिन्हें दारोगा नीचे के कमरे में देख आया था। इसके बाद ही मेघराज पुनः दिखाई पड़े जो अब उस तरफ आ रहे थे जिधर दारोगा खड़ा था।

मेघराज को अपनी तरफ आते देख फुर्ती के साथ दारोगा ने अपनी कमर से एक चादर खोली जिसमें तेज बेहोशी का अर्क लगा हुआ था। एक तरफ से जैपाल को यह चादर पकड़ा कर दूसरी तरफ से दारोगा ने स्वयम् पकड़ ली और जैसे ही मेघराज दर्वाजा खोलकर इधर आए उनके मुंह पर डाल कस दिया। बेहोशी ने इस फुर्ती से अपना काम किया कि मेघराज के मुँह से एक आवाज तक न निकल सकी और वे बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। दारोगा ने खुशी भरी आवाज में धीरे से जैपाल से कहा, "लो एक दुश्मन तो हमारे कब्जे में आ गया!"

जैपाल०। बेशक, मगर इस समय इसके बदन पर विचित्र कवच कदाचित् नहीं है जिसकी तासीर से उस समय यह बचकर निकल आया था नहीं तो आप इसे इतनी आसानी से न पकड़ पाते।

दारोगा०। बेशक ऐसा ही है।

इतना कह दारोगा जमीन पर बैठ गया और बेहोश मेघराज की सूरत गौर से देखने लगा क्योंकि इस स्थान पर जहां ये लोग खड़े थे कोई रोशनी न थी केवल उस कमरे की रोशनी खुले दर्वाजे की राह कुछ-कुछ आ रही थी जिसमें से मेघराज आये थे।

जैपाल०। (दारोगा) अब आप क्या देख रहे हैं, इस जगह ज्यादा

देर करना मुनासिब है, क्या ताज्जुब कि इसका कोई साथी यहाँ आ जाय !!

दारोगा०। मैं इसे पहिचानने की कोशिश कर रहा हूँ क्योंकि ऐसा मालूम होता है मानों इसे मैंने पहिले कभी देखा हो, उस रोज सभा में भी मुझे इस बात का सन्देह हुआ था।

जैपाल०। खैर, चाहे यह कोई हो पर इसमें सन्देह नहीं कि यह आपका दुश्मन अथवा आपके दुश्मनों का दोस्त अवश्य है अस्तु अब इसे छोड़ना नहीं चाहिये और न इस जगह व्यर्थ की देर लगाना ही मुनासिब है।

दारोगा०। हाँ तुम्हारा कहना ठीक है, देर करना खतरनाक है। अब इसे.....

कहते कहते दारोगा रुक गया क्योंकि उसके कानों में दो औरतों के बोलने की आवाज आई जो बहुत धीमी थी। ऐसा मालूम होता था कि मानो दीवार के दूसरी तरफ दो औरतें आपुस में कुछ बातें कर रही हों। दारोगा और जैपाल ने दीवार के साथ कान लगा दिया, आवाज कुछ स्पष्टता से सुनाई देने लगी।

एक०। गदाधरसिंह भी सोचता होगा कि बुरी मुसीबत में आ पड़े, ऐसी दुर्दशा उसकी कभी न हुई होगी!

दूसरी०। एक तो यह मकान ही विचित्र, दूसरे तिलिस्म से इसका गहरा सम्बन्ध, फिर ऐसी जगह में किसी को फँसाकर तंग करना क्या कठिन है!

एक०। गर्मी से घबड़ाकर गदाधरसिंह अवश्य सब बातें बता देगा।

दूसरी०। मालूम होता है कि उन्होंने भूतनाथ से बातें कर लीं क्यों अब कल पुरजों के चलने फिरने की आवाज नहीं आ रही है, चलकर देखना चाहिए कि गजाधरसह की अब क्या हालत है?

बातें बन्द हो गईं और कुछ ही देर बाद उस कमरे से जिसके

अन्दर से मेघराज बाहर निकले थे कुछ ऐसी आहट आई मानों कोई छोटा दर्वाजा वा आलमारी का पल्ला खोला गया हो। दारोगा को विश्वास हो गया कि वे दोनों औरतें (या जो कोई हो) सामने वाले कमरे में आ गई है। उसने इशारे से जैपाल को होशियार किया और कुछ चिन्ता के साथ इस बात का इन्तजार करने लगा कि देखें अब क्या होता है।

कुछ देर बाद खुले दर्वाजे के पास एक औरत दिखाई पड़ी जो इसी तरफ यानी जिधर दारोगा और जैपाल थे देख रही थी। दारोगा या जैपाल पर उसकी निगाह न पड़ी क्योंकि ये लोग आड़ में हो गये थे मगर बेहोश मेघराज पर उसकी निगाह अवश्य पड़ गई क्योंकि वे सामने ही पड़े हुए थे और दर्वाजे की राह आती हुई कुछ कुछ रोशनी उन पर पड़ रही थी। "है, ये बेहोश क्योंकर हो गये!" कहकर उस औरत ने बाहर पैर रक्खा ही था कि जैपाल और दारोगा उस पर झपट पड़े और उसी चादर की मदद से उसे भी बेहोश कर दिया जिससे मेघराज बेहोश किये गये थे।

यह बात इस फुर्ती से हो गई कि उस औरत के मुंह से एक चीख भी न निकल सकी। दारोगा इस इन्तजार में खड़ा रहा कि शायद वह दूसरी औरत भी जिसके बातचीत की आवाज आई थी वहाँ आवे मगर फिर वहाँ कोई भी न आया और न किसी प्रकार की आहट मालूम हुई। दारोगा ने उस बेहोश औरत की सूरत भी गौर से देखी मगर पहिचान बिलकुल न सका।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा, इसके बाद जैपाल ने कहा, "अब क्या इरादा है, इन दोनों को लेकर लौटना है या अभी और रुकना है?" दारोगा इसका जवाब दिया ही चाहता था कि वह दर्वाजा जिसकी राह मेघराज या वह औरत यहाँ आई थी आप से आप बन्द हो गया और उस जगह घोर अन्धकार छा गया। दारोगा और जैपाल चिहुँक पड़े और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा और इस बीच में दारोगा ने अब क्या करना उत्तम होगा यह भी निश्चय कर लिया। दोनों बेहोश एक ही चादर में कसकर बाँधे गये और एक तरफ से दारोगा तथा दूसरी तरफ से जैपाल उन्हें उठाये हुए सीढ़ियाँ उतर नीचे वाले उस कमरे में पहुँचे जिसमें कि बहुत से कल पुरजे देखे गये थे अथवा जिसमें से होकर ये दोनों ऊपर गये थे।

ऐसा मालूम होता था कि मानो दारोगा कई बार इस जगह आ चुका अथवा यहाँ का हाल बखूबी जानता हो क्योंकि अन्धकार में भी अपने को तथा जैपाल को कल पुरजों से बचाता हुआ वह बेधड़क उस बड़े कमरे के एक कोने में जा पहुंचा और वहाँ किसी ढंग से एक रास्ता पैदाकर जैपाल के साथ उसके अन्दर घुस गया। यद्यपि यहाँ भी घोर अन्धकार था मगर अन्दाज से जैपाल को मालूम हो गया कि यह वह जगह नहीं है जिधर से दारोगा आया था।

यहाँ भी दारोगा न रुका और दर्वाजा बन्द करने के बाद आगे बढ़ा। कई ड्योढ़ियों के लाघने की नौबत आई और आखिर एक जगह पहुँच दारोगा ने हाथ का बोझ जमीन पर रख दिया, उसके बाद रोशनी की और अब जैपाल को मालूम हुआ कि वह एक ऐसी कोठड़ी में है जिसकी दरोदीवार और छत यहाँ तक कि जमीन पर भी किसी धातु की चादर चढ़ी हुई है जो पुरानी हो जाने के कारण काली हो रही थी। इस स्थान में इस बात का कुछ भी पता नहीं लगता था कि यहाँ आने जाने का रास्ता कौन या किस तरफ है क्योंकि दर्वाजा या दर्वाजे का निशान कहीं भी दिखाई नहीं पड़ता था, हाँ एक तरफ की दीवार में कई खुंटियें लगी हुई जरूर दिखाई पड़ रही थीं जो गिनती में बाहर थीं। ये खूंटियें भी किसी धातु की ही थीं और इनमें से हर एक के नीचे एक से बारह तक के अंक बने हुए थे। दारोगा ने दीवार के पास एक नंबर की खूंटी को उमेठना शुरू किया, कई बार घूम कर जब वह रुक गई तब उसने तीन

नंबर की खूंटी को घुमाया और उसके बाद सात नम्बर की खूंटी उमेठा ही था कि एक हलकी सी आवाज आई और खूटियों के नीचे की दीवार का एक हिस्सा पीछे की तरफ खसकता हुआ हटकर गायब हो गया। वहाँ एक इतना बड़ा रास्ता दिखाई देने लगा जिसमें आदमी बखूबी घुस जाय। दारोगा ने मेघराज को और जैपाल ने उस औरत को उठा लिया और दोनों उसी राह के अन्दर चले गये। उनके भीतर जाते ही वह दर्वाजा ज्यों का त्यों दुरुस्त हो गया।

ग्यारहवां बयान

पाठक, जिन औरतों की बातचीत दारोगा और जैपाल ने सुनी थी वे दोनों असली जमना और सरस्वती थीं। जिस जगह दारोगा खड़ा था उसके पीछे ही एक दूसरी छोटी कोठड़ी पड़ती थी जिसमें अपनी स्त्रियों को बैठाकर मेघराज भूतनाथ से बातें करने गये थे जिसकी कार्रवाईयों का पता उन्हें पूरी तरह से लग गया था और वे जान गये थे कि वह नकली जमना और सरस्वती को बेहोश करके कहीं डाल आया है।

जब मेघराज को दारोगा ने गिरफ्तार कर लिया तो जमना और सरस्वती एक राह से उस कमरे में पहुंची जिसमें मेघराज थे। उस कमरे में मेघराज को न देख जमना दर्वाजे की तरफ बढ़ी जिधर दारोगा और जैपाल थे और वहाँ जाकर उनके कब्जे में पड़ गई। सरस्वती ने थोड़ी देर तक तो जमना के लौटने की राह देखी पर जब वह न लौटी तो वह होशियार औरत तुरत समझ गई कि कुछ न कुछ दाल में काला अवश्य है। सरस्वती ने दर्वाजे के अन्दर जाना मुनासिब न समझा और

उसने कोई ऐसा खटका दबाया जिससे दीवार में एक छोटा छेद इस लायक दिखाई देने लगा जिसमें आँख लगाकर दूसरी तरफ का हाल देखा जा सकता था दर्वाजे की राह जानेवाली रोशनी की मदद से सरस्वती ने यह देखा कि उस तरफ दो गैर आदमी मौजूद हैं और सामने ही जमीन पर जमना तथा मेघराज बेहोश पड़े हुए हैं।

सरस्वती को तुरन्त यह फिक्रपैदा हुई कि किसी तरह उन दोनों आदमियों को गिरफ्तार करना तथा अपनी बहिन और पतिको उसके पञ्जे से छुड़ाना चाहिये, मगर इसके साथ ही भूतनाथ के विषय में भी कुछ प्रबन्ध करना जरूरी था जिसका यहाँ से जाना ही वह इस समय मुनासिब समझती थी।

कुछ सोच विचार कर सरस्वती ने किसी ढंग से उस कमरे का दर्वाजा बन्द कर दिया जिसके अन्दर दारोगा इत्यादि थे। बन्द होने पर वह दर्वाजा अगल बगल की दीवार के साथ ऐसा मिल जाता था कि बहुत गौर करने पर भी उसका निशान तक दिखाई नहीं पड़ता था और अनजान आदमी को तो इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि यहाँ कोई रास्ता है।

यह दर्वाजा बन्द कर सरस्वती थोड़ी देर के लिए वहाँ से कहीं चली गई। उसके जाने के थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ इस जगह आया और अद्भुत तस्वीर को देख बदहवासी की हालत में एक सिंहासन पर बैठ गया, सिंहासन पर बैठते ही जिस प्रकार वह जमीन में धंस गया और बेहोश हो गया, यह हम ऊपर लिख आये हैं पर यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि यह कार्रवाई सरस्वती की थी जो कहीं छिप कर भूतनाथ की इस बदहवासी को अच्छी तरह देख रही थी।

भूतनाथ को कहीं ठिकाने पहुचा कर वह सिंहासन पुनः ज्यों का त्यों अपनी जगह पर आकर बैठ गया और इसी समय सरस्वती भी उस कमरे में आ मौजूद हुई। इस समय वह एक मजबूत और खूबसूरत सुनहरी

जालों वाला कवच पहिने हुई थी जो वास्तव में वही था जो इन्द्रदेव ने मेघराज को दिया था और जिसके अद्भुत गुण से दारोगा इतना डरता था। इस कवच के अलावे सरस्वती ने एक नकाब भी चेहरे पर डाली हुई थी और हाथ में उसके तिलिस्मी खंजर मौजूद था।

अब सरस्वती को किसी से डरने की आवश्यकता न थी अस्तु उसने चेखटके वह दर्वाजा खोला जिसके दूसरी तरफ दारोगा और जैपाल आदि थे मगर वे पहिले ही गायब हो चुके थे। सरस्वती इस बात के लिए तैयार थी और समझती थी कि वे दोनों दुष्ट अवश्य भागने की चेष्टा करेंगे अस्तु वह फुर्ती के साथ तिलिस्मी खंजर की रोशनी करती हुई सीढ़ियाँ उतर कर नीचे वाले उस कमरे में पहुँची जहाँ बहुत से कल पुर्जे लगे हुए थे। इस समय तिलिस्मी खंजर की रोशनी के कारण उस बड़े कमरे का कोना कोना साफ साफ दिखाई दे रहा था। कमरे के बीच में तो बहुत से कल पुर्जे थे पर चारो तरफ की दीवारों में हर तरफ तीन तीन दर्वाजे दिखाई पड़ रहे थे जो सब के सब बन्द थे। सरस्वती एक एक करके इन दर्वाजों को गौर से देखने लगी।

ये बारहों दर्वाजे एक ही किस्म के और लम्बाई चौड़ाई में भी बराबर के। हर एक दर्वाजे के ऊपर की तरफ ताक (आला) था जिसमें सुफेद पत्थर का छोटा हाथी रक्खा हुआ था। ऊँचाई में ये हाथी हाथ भर से भी कम थे पर इतनी कारीगरी और सफाई के साथ बने हुए थे कि देखने में बड़े ही सुन्दर मालूम होते थे। हर एक हाथी की सूँड़ नीचे जमीन की तरफ झुकी हुई थी पर जब सब दर्वाजों को देखती हुई सरस्वती उस दर्वाजे के पास पहुँची जिसमें दारोगा और जैपाल गये थे तो उसके ऊपर वाले हाथी की सूँड़ मामूल के खिलाफ ऊपर की तरफ उठी हुई देखी। यह देखते ही वह उसी जगह रुक गई और धीरे से बोली, "बेशक ये लोग इसी दर्वाजे की राह गये हैं। मगर यह तो तिलिस्म में जाने का रास्ता है! तो क्या वे सब तिलिस्म के अन्दर गये?"

इसी समय सरस्वती को अपने पीछे कुछ आहट मालूम पड़ी और घूम कर देखने पर उसकी निगाह दोनों लौंडियों पर पड़ी जो जमना और सरस्वती बनी हुई थीं और जिन्हें बेहोश करके भूतनाथ झाड़ी में छोड़ आया था। हम ऊपर लिख आये हैं कि इन्द्रदेव ने इन्दुमति तथा जमना और सरस्वती की सूरत बदल कर उनका नाम राधा बीरो और भानो रख दिया था तथा तीन विश्वास पात्र लौंडियों को उनकी सूरत बना दिया था अस्तु इस जगह से जिसमें भ्रम न हो इस ख्याल से हम सरस्वती को उसके बनावटी नाम भानो से ही पुकारेंगे और उन दोनों लौंडियों को जमना और सरस्वती कहेंगे।

जमना और सरस्वती को देख भानो उनके पास पहुँची और इधर जो कुछ हुआ था उसे मुख्तसर में बयान किया। जमना और सरस्वती ने भी अपना हाल अर्थात् भूतनाथ ने किस तरह की बातें करने बाद कैसे उन्हें बेहोश किया था कह सुनाया और सब तीनों में सलाह होने लगी कि क्या करना चाहिये। ज्यादा तरद्दुद की बात तो यह थी कि अब इन बेचारियों की मदद करने और सलाह देने वाला कोई मर्द भी वहाँ मौजूद न था। इन्द्रदेव जमानिया जा चुके थे, प्रभाकरसिंह भूतनाथ के कब्जे में पड़े हुए थे, और मेघराज को दारोगा पकड़ ले गया था।

जमना सरस्वती का हाल सुन भानो ने कहा, "मैंने उन आदमियों को भागने से रोकने के लिए उन दोनों रास्तों को भी बन्द कर दिया था जिनकी राह हमलोग इस घाटी के बाहर जाते हैं क्योंकि मेरा खयाल था कि उनके बन्द हो जाने पर फिर इस कमरे के आगे जा न सकेंगे मगर वह खयाल भी गलत निकला। हमारा दुश्मन (चाहे वह कोई हो) यहाँ का हाल बखूबी जानता है क्योंकि वह सुरंग की राह बाहर जाने की कोशिश न कर तिलिस्म के अन्दर चला गया है। जहाँ उसे खोजना या पकड़ना बड़ा ही कठिन है, फिर भी मेरी इच्छा है कि एक बार उसका पीछा अवश्य करूँ फिर जो होगा देखा जायगा।"

देर तक इस विषय पर बहस होती रही और अन्त में भानों की बात जमना सरस्वती को माननी पड़ी हाँ इतना अवश्य हुआ कि भानों ने जमना सरस्वती को अपने साथ रखना मन्जूर किया।

किसी गुप्तरीति से भानों ने वह दर्वाजा खोला। अन्दर जाकर लगभग दस बारह कदम के लम्बी एक सुरङ्ग और तब एक दूसरा दर्वाजा मिला। इसे भी भानों ने खोला और उस कोठड़ी में पहुँची जिसमें की दीवारों और जमीन पर धातु के पत्र चढ़े हुए थे अथवा जहाँ से दर्वाजा पैदा कर दारोगा और जैपाल मेघराज तथा असली जमना को ले गये थे।

जिस तरह खूँटियाँ उमेठ दारोगा ने दर्वाजा निकाला था उसी तरह भानों (असली सरस्वती) ने भी खोला और तीनों औरतें उसके अन्दर चली गईं। उनके जाते ही वह दर्वाजा बन्द हो गया और तीनों ने अपने को एक दालान में पाया जिसके सामने की तरफ एक छोटा सा बाग था।

यह बाग नाम ही मात्र को बाग था, फलों के पेड़ इसमें कोई भी दिखाई न देते थे और न फूलों के पौधे ही बहुत थे, हाँ जगह जगह जंगली और झाड़ियाँ बहुत थीं जिनके कारण यह एक मोटा छोटा जङ्गल सा मालूम पड़ता था, पर यहाँ उस चश्मे के कारण तरावट जरूर बहुत थी जो पूरब की तरफ से बहता हुआ आकर पश्चिम को कहीं निकल जाता था। भानो इसी चश्मे के किनारे किनारे पूरब तरफ जाने लगी और (नकली) जमना सरस्वती भी उसके साथ हुईं। पौ फटा ही चाहती थी और पूरब तरफ आकाश पर लालिमा दिखाई दे रही थी।

भानो कुछ ही दूर आगे गई होगी कि उसकी निगाह दारोगा और जैपाल पर पड़ी जो मेघराज और जमना को कहीं रखकर अब इधर ही को आरहे थे। यद्यपि उन दोनों के चेहरे नकाब से ढँके थे जिससे वह उन्हें पहिचान न सकी पर इतना अवश्य समझ गई कि ये वे ही हैं जो उसके पति और बहिन को गिरफ्तार कर लाए हैं। हाथ में तिलिस्मी खञ्जर

लिए वह उनकी तरफ लपकी और साथ ही खञ्जर का कब्जा इस नीयत से दबाया कि उसकी तेज रोशनी से उन दोनो की आँखें बन्द हो जायँ।

दारोगा और जैपाल जिस जगह खड़े थे उसके पास ही एक छोटा चबूतरा था। खञ्जर की तेज रोशनी से घबड़ा कर उन दोनों ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और उस चबूतरे पर चढ़ गये। उनके पीछे ही लपकती हुई भानो भी पहुंची और चबूतरे पर चढ़ फुर्ती के साथ खञ्जर बदन से लगा उन्हें बेहोश कर दिया मगर अभी मुश्किल से उसने इस काम से छुट्टी पाई थी कि वह चबूतरा जिस पर वह थी एक बार कांपा और तब इस तेजी से जमीन के अन्दर धँस गया कि भानो को चबूतरे से कूदने का भी समय न मिला और न उसकी दोनों साथियों को ही उसकी मदद करने का कोई मौका मिला जो यद्यपि चबूतरे के पास पहुंच चुकी थीं पर अभी उसके नीचे ही थीं। थोड़ी देर बाद वह चबूतरा पुनः अपनी जगह पर आ गया पर इस समय उस पर कोई भी न था, न तो दारोगा या जैपाल ही दिखाई देते थे और न भानो (असली सरस्वती)

जमना ने सरस्वती की तरफ देखा और तब धीरे से गरदन हिला कर कहा, "ऐसा तो होना ही था, भला तिलिस्मी कामों में भी किसी का जोर चल सकता है !!"

सरस्वती०। अब लौटना चाहिये, यहाँ रहने से ताज्जुब नहीं कि हम लोग भी किसी मुसीबत में पड़ जाँय, यदि इन्द्रदेव जी हों तो चल कर उन्हें खबर दी जाय।

जमना०। इन्द्रदेव जी यहाँ तो होंगे नहीं हाँ जमनिया जाने से जरूर मिल जायँगे।

सर०। तो कोई आदमी वहाँ भेजना चाहिये।

जमना०। आदमी की क्या जरूरत, क्यों न हम लोग चले चलें? रास्ते में यदि गदाधरसिंह कहीं मिल जाएगा तो उससे भी कुछ छेड़खानी

करते चलेंगे, मुमकिन है कि अभी तक उसकी बेहोशी दूर न हुई हो और वह उस सुरङ्ग ही में पड़ा हो।

सर०। अच्छी बात है चलो, मगर यह बैठे बैठाये की मुसीबत बुरी आ पड़ी, न जाने वे दोनों कम्बख्त कौन थे जो इतनी आफत कर गए! यह तो प्रगट ही है कि उन्हें यहाँ के सब भेद बखूबी मालूम हैं नहीं तो वे ऐसी जगह आकर इस तरह की कार्रवाई कर नहीं सकते थे।

जमना०। खैर वे सब चाहे कोई भी हों मगर इसमें कोई शक नहीं कि हम लोगों की मुसीबत की घड़ी अभी बीती नहीं है। अच्छा चलो लौटो, देर करना व्यर्थ है।

जिस राह से गई थीं उसी राह से लौटती हुई थे दोनों औरतें पुनः अपने ठिकाने आईं और कुछ सामान लेने और बन्दोबस्त करने बाद उसी समय घाटी के बाहर निकल गईं

बारहवां बयान

भूतनाथ ने खोह के बाहर निकल चश्मे के पानी से हाथ मुँह धोया और तब जमनिया की तरफ रवाना हुआ।

पिछली रात की बातें एक एक कर उसकी आँखों के सामने आ रही थीं और जब कभी उसे उस तस्वीर का ध्यान आ जाता था जो उसने वहाँ देखी थी तब तो वह काँप उठता था क्योंकि वह इस बात को बखूबी समझ रहा था कि यह उसके गुप्त भेद प्रगट करने का बड़ा भारी जरिया होगी और उसकी बदनामी का जिसको दूर करने के खयाल से वह इतने दुष्कर्म कर चुका और कर रहा था, और भी प्रगट करने के लिए एक झण्डा बन जायगी।

तरह तरह की बातें सोचता हुआ वह धीरे धीरे चला जा रहा कि यकायक उसके कानों में घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई दी। उसने फिरकर देखा और दो औरतों को घोड़ों पर सवार अपनी तरफ आते देख सड़क से नीचे उतर एक पेड़ की आड़ में हो गया। इसी बीच में वे औरतें भी जो तेजी के साथ घोड़ा दौड़ाती चली आ रही थी पास आ पहुँच गईं और भूतनाथ ने देखते ही पहिचान लिया कि ये दोनों जमना और सरस्वती हैं।

हम नहीं कह सकते कि जिस तरह भूतनाथ ने इन दोनों को देखा और पहिचाना उसी तरह इन दोनों ने भी भूतनाथ को देखा और पहिचाना या नहीं पर यहाँ पहुँच कर इन दोनों ने अपने घोड़ों की चाल कम अवश्य कर दी और आपुस में कुछ बातें करती हुई जाने लगीं।

आधे घण्टे तक इसी तरह जाने के बाद जमना और सरस्वती एक ऐसी जगह पहुंची जहाँ एक नाला सड़क को काटता हुआ बह रहा था। नाले के ऊपर एक छोटा पुराने जमाने का पुल बँधा हुआ था जिसके चारो कोनों पर चार नीम के पेड़ इतने बड़े लगे थे कि उनकी डालियें आपुस में बिल्कुल गुथ गई थीं और पुल उनके साये में हो गया था। उन पेड़ों के कारण पुलपर कुछ अन्धकार भी हो गया था मगर इतना नहीं कि आदमी को दस पाँच हाथ की दूरी से पहिचानने में कठिनता हो।

जमना और सरस्वती जब पुल के पास पहुंचीं तो उनकी निगाह एक आदमी पर पड़ी जो उस पुल पर सड़क के बीचोबीच में पड़ा हुआ न जाने किस तकलीफ से करवटें बदल रहा था। उन दोनों ने पास पहुंच अपने घोड़े रोके, जमना घोड़े से उतर उस आदमी के पास गई जो इस समय बेहोश हो गया था पर बीच बीच में उसके मुँह से कुछ टूटे फूटे शब्द जरूर निकल रहे थे जिनकी तरफ जमना का ध्यान गया। वे शब्द ये थे, "हाय...प्रभाकरसिंह . इन्द्रदेव के ..प्यारी...जान .."इसके बाद और भी कुछ कहा मगर इतने धीरे से कि कुछ समझ में नहीं आया। जमना

ने पहिचानने की नीयत से गौर से उसकी सूरत देखी मगर आज से पहिले उसने इस आदमी को कभी देखा न था।

जमना ने सरस्वती को अपने पास बुलाया और उसके आने पर उस आदमी के मुंह से सुने हुए शब्द उससे कहकर बोला, मालूम होता है यह यह बेहोश हो गया। इसे होश में लाया जाय तो शायद अपने मतलब की कोई बात मालूम हो। इसे उठा कर पुल के नीचे ले चलो और होश में लाने की कोशिश करो।"

जमना और सरस्वती ने मिल कर उस आदमी को उठाया। उसके कपड़े इतने मैले और बदबूदार थे कि उठाते ही बदबू से उन दोनों का दिमाग खराब हो गया मगर किसी तरह वे दोनों उसे पुल के नीचे ले आईं और जमीन पर डाल दिया। जमना उसके पास बैठ कर होश में लाने की कोशिश करने लगी मगर सरस्वती उसके कपड़ों और बदन से निकलती हुई बदबू से घबड़ा कर कुछ दूर हट कर खड़ी हो गई।

जमना की तर्कीबों से कुछ देर के बाद उस आदमी को जरा जरा होश आने लगा। यह देख सरस्वती भी पास आ गई और जमना की मदद करने लगी। कुछ ही देर बाद वह आदमी पूरी तरह से होश में आकर उठ बैठा और अपने चारों तरफ देखकर ताज्जुब हो बोला, "मैं कहाँ हूं और तुम दोनों कौन हो?"

जमना०। तुम ऊपर पुल पर बेहोश पड़े हुए थे, हम दोनों तुम्हें यहाँ उठा लाईं और तुम्हारा हाल सुना चाहती हैं।

आदमी०। तुम दोनों का नाम क्या है?

जमना०। मेरा नाम धनदेई है और (सरस्वती की तरफ बता कर) इनका नाम जयदेई।

आदमी०। शायद ऐसा ही हो!!

जमना०। इसका क्या मतलब?

आदमी० । मेरी समझ में तो तुम लोगों का यह नाम असली नहीं बल्कि बनावटी जान पड़ता है ।

जमना० । (कुछ रुकावट के साथ) खैर हम लोगों का नाम चाहे कुछ भी हो तुम अपना नाम बताओ ।

आदमी० । (खड़ा हो कर) मेरा नाम गदाधर सिंह है ।

इतना कह उस आदमी ने नकली बाल जो वह लगाये हुये था दूर कर दिये और गदाधरसिंह की सूरत झलकने लगी । गदाधरसिंह को देखते ही जमना सरस्वती चौंक कर पीछे को हटी मगर भूतनाथ ने हँस कर कहा, भला गदाधरसिंह के सामने से भी कोई आदमी बच सकता है ? तुम दोनों ऐसा इरादा न करो और इस बात को अच्छी तरह समझ रक्खो कि तुम्हें कुछ ही देर तक इस दुनिया में रहना है क्योंकि बेहोशी की दवा का असर जो मेरे कपड़ों में लगी हुई थी तुम दोनों पर पूरी तरह से हो चुका है और मैं तुम दोनों को बिना मारे न छोड़ूंगा ।"

अब जमना को मालूम हुआ कि उसने बहुत बुरा धोखा खाया और भूतनाथ के कपड़े की वह बू बेहोशी की किसी दवा के कारण थी जिस पर उसने ध्यान नहीं दिया था । वह अच्छी तरह समझ गई कि अब गदाधरसिंह के फन्दे से छूट नहीं सकती पर तौ भी हिम्मत बाँध कर बोली, "भला हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम हमारी जान लेने पर तुल गये हो ?"

भूत० । तुमने मेरा बड़ा नुकसान किया है बल्कि यों कहना चाहिए कि मेरी बदनामी का सबसे बड़ा कारण तुम्हीं दोनों हो । तुम्हारे ही सबब से इन्द्रदेव मुझसे विरुद्ध हो गये, तुम्हारे ही सबब से प्रभाकर सिंह मेरे दुश्मन बने, और तुम्हारे ही सबब से भैयाराजा ने मुझसे शत्रुता की । तुम लोगों के कारण सुख को नींद सोना मेरे लिए हराम हो गया है । अस्तु अब मैं यही चाहता हूं कि तुम दोनों को मार एकदम ही बखेड़ा तय करूँ, हाँ एक तरह पर तुम्हारी जान कदाचित् बच सकती है ।

जमना० । सो कैसे ?

भूत० । तुम्हारे मकान में मैंने लाल पर्दे से ढँकी हुई एक तस्वीर देखी थी ।

जमना० । बेशक देखी होगी अगर तुमने उसका पर्दा हटाया होगा तो तुम यह भी जान गये होगे कि उस तस्वीर में क्या था ?

भूत० । खैर इससे कोई मतलब नहीं, लेकिन अगर तुम वह तस्वीर मुझे दिला दो तो मैं तुम्हें छोड़ दूं ।

जमना० । तुम्हारी बात का भला क्या विश्वास ?

भूत० । सो क्यों ? क्या मैं अपना वादा पूरा नहीं करूँगा ?

जमना० । बेशक मुझे यही डर है और फिर बिना अपने घर गये मैं उसे ला ही क्योंकर सकती हूँ !

भूत० । मगर मैं तुमको घर जाने की इजाजत कैसे दे सकता हूँ, कौन ताज्जुब तुम वहाँ जाकर बैठ रहो ! फिर मैं क्या करूँगा ?

जमना० । तो फिर मैं यहाँ से क्या कर सकती हूँ ?

भूत० । अच्छा तुम यही बता दो कि उस तस्वीर का बनाने वाला कौन है ?

जमना० । यह मैं नहीं बता सकती ।

भूत० । तुम्हें बताना पड़ेगा ।

जमना० । नहीं कदापि नहीं, क्या मैं इस बात को नहीं जानती कि मेरी तरह तू उसका भी दुश्मन बन बैठेगा और उसे जान से मारने पर तुल जायगा !

भूत० । नहीं नहीं ऐसा नहीं होगा, मैं वादा करता हूं कि उसका नाम बता देने पर तुम दोनों को छोड़ दूँगा ।

जमना० । मैं तेरी बात पर विश्वास नहीं करती और तेरे वादे पर थूकती हूं । अपने किसी मेहरबान को तेरे कब्जे में देने की बनिस्बत खुद जान से हाथ धोना मैं ज्यादा पसन्द करूँगी ।

भूतनाथ ने उसे बहुत कुछ समझाया डराया और धमकाया मगर जमना ने एक न सुनी और बराबर उसे जली कटी सुनाती ही गई। आखिर भूतनाथ झल्ला उठा और आगे बढ़ कर उसने एक लात ऐसी मारी कि वह जमीन पर गिर पड़ी। बेहोशी का असर तो हो ही चुका था, गिरते ही बेहोश भी हो गई।

अब भूतनाथ सरस्वती की तरफ घूमा जो बेहोशी के नशे में झूम रही थी। उससे भी कुछ पूछना चाहा मगर मौका न मिला क्योंकि वह भी बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। भूतनाथ अब उसी जगह जमीन पर बैठ गया और सिर पर हाथ रख कर कुछ सोचने लगा।

आखिर बहुत देर के बाद भूतनाथ यह कहता हुआ उठा, "खैर अब चाहे जो कुछ भी हो मगर इन दोनों को तो मैं बिना जान से मारे छोड़ता नहीं! इन्द्रदेव को भला क्या पता लग सकता है कि जमना सरस्वती को किसने मार डाला। इनको समाप्त कर फिर मैं उस आदमी की खोज करूँगा जिसने वह तस्वीर बनाई है।"

बड़ी ही बेदर्दी के साथ भूतनाथ ने बेहोश जमना और सरस्वती का सिर काट डाला और तब उनकी लाशों को एक गड्ढे में डाल ऊपर से पत्तियाँ और मिट्टी डाल कर छिपाने बाद यह कहता हुआ वहाँ से चला— "इन दोनों ने भी बड़ा ही अन्धेर मचा रक्खा था, इनके मारे सुख की नींद सोना मेरे लिए हराम हो गया था। चलो इधर से तो फुरसत मिली!!"

गदाधरसिंह कुछ ही दूर गया होगा कि पीछे से किसी ने कहा, "भला भला गदाधरसिंह? कोई हर्ज नहीं! अगर मैं जीता रहा तो बिना इसका बदला लिये कभी न छोड़ूँगा।"

भूतनाथ यह आवाज सुनते ही पीछे घूमा और चारो तरफ गौर से देखने लगा मगर कहीं भी कोई आदमी न दिखाई पड़ा। आखिर सुस्त और उदास उसने जमानिया का रास्ता लिया।

तेरहवां बयान

प्रभाकरसिंह और उस औरत के पीछे पीछे चल कर इन्द्रदेव और दलीपशाह भी उस पिण्डी के पास पहुँचे मगर वहाँ कोई भी दिखाई न पड़ा। दोनों आदमियों ने इधर उधर घूम फिर बहुत खोजा मगर जब कुछ पता न लगा तो इन्द्रदेव बोले, "बेशक वे दोनों तिलिस्म में चले गये!"

दलीपशाह०। तो अब क्या करना चाहिये? आप तो तिलिस्म के भीतर जाकर भी उनका पीछा कर सकते हैं?

इन्द्रदेव०। हाँ कर सकता हूँ मगर ऐसा करना इस समय ठीक नहीं जान पड़ता इसमें बहुत समय लग जायगा और आजकल मौका ऐसा है कि मैं अपने घर से ज्यादा देर तक अलग नहीं रह सकता।

दलीप०। बेशक इस समय आप पर बड़ा भारी तरद्दुद आ पड़ा है और खास कर जमना सरस्वती का मारा जाना..

इन्द्र०। खैर उस बात की तो मुझे इतनी चिन्ता नहीं है पर.....

दलीप०। चिन्ता नहीं है क्या जमना सरस्वती के मारे जाने का आपको गम नहीं है?

इन्द्र०। नहीं क्योंकि वे मारी नहीं गईं मगर गायब जरूर हो गई हैं।

दलीप०। (खुश होकर) तो क्या वे दोनों कोई दूसरी ही थीं जिनके मारे जाने का हाल हम लोगों ने सुना था?

इन्द्रदेव०। वे दोनों दो लौंडियाँ थीं जिन्हें मैंने जमना सरस्वती की सूरत में बना रक्खा था।

इतना कह इन्द्रदेव ने जमना इत्यादि के विषय में जो कुछ चालाकी की थी वह दलीपशाह से कह सुनाया पर दयाराम का जिक्र न किया। सब हाल सुन दलीपशाह बोले, "खैर उन दोनों के मारे जाने का गम तो

जाता रहा पर यह तरद्दुद बना ही रहा कि उस घाटी में से वे कहाँ गायब हो गईं !!"

इन्द्रदेव०। बस यही तरद्दुद असली है, कुछ मालूम नहीं होता कि वे कहाँ चली गईं।

दलीप०। क्या इस बात का पता लगा कि उन नकली जमना सरस्वती को किसने मारा?

इन्द्र०। वह काम तो गदाधरसिंह का था। मेरे एक शागिर्द ने अपनी आँखों उसे ऐसा करते देखा था।

दलीप०। यह दुष्ट किसी तरह भी राह पर आता दिखाई नहीं पड़ता। ज्यों ज्यों आप तरह देते जाते हैं त्यों त्यों यह और सिर चढ़ता जाता है। मैं आपकी यह चाल बिल्कुल पसन्द नहीं करता। मुझे विश्वास है कि यदि आप ऐसा ही करते जायँगे तो किसी न किसी दिन वह आप पर भी अवश्य वार करेगा क्योंकि इस बात को तो वह अच्छी तरह जान ही गया है कि आप जमना सरस्वती की मदद पर हैं।

इन्द्र०। मुझ पर तो वार वह कदाचित न करे, पर कुछ ठीक भी नहीं, उसका स्वभाव बड़ा ही विचित्र है, जो न कर जाय सो थोड़ा, अच्छा चलो अब यहाँ ठहरना वृथा है।

दलीप०। हाँ चलिये, मगर इस जगह पर ध्यान अवश्य रक्खें बल्कि अगर मौका मिले तो कभी तिलिस्म के अन्दर जाकर भी इन दोनों को खोजें। मैं भी अपने शागिर्दों को यहाँ तैनात करूँगा।

दोनों आदमी धीरे धीरे बातें करते हुए उधर ही को लौटे जिधर से आये थे। इस समय रात आधी के करीब जा चुकी थी पर शुक्ल पक्ष होने के कारण इन दोनों को उस बेढंग रास्ते पर चलने में ज्यादा कठिनाई नहीं हो सकती थी।

टीले पर से उतरने बाद ये दोनों बहुत दूर नहीं गये होंगे कि पगडण्डी के बगल ही से एक विचित्र ढङ्ग की सीटी बजने की हल्की आवाज आई।

जिसके सुनते ही दलीपशाह ने भी वैसी ही सीटी बजा कर जवाब दिया। पुनः आवाज आई और तब एक आदमी इन दोनों के सामने आ सलाम कर खड़ा हो गया। इन्द्रदेव ने इसे पहिचाना, यह दलीपशाह का प्यारा शागिर्द गिरजाकुमार था।

दलीप०। (गिरजाकुमार से) क्या हाल है ? कुछ पता लगा ?

गिरजा०। जी हाँ बहुत कुछ, आपका खयाल ठीक..., वह गौहर ही थी।

दलीप०। किस नीयत से यहाँ आई ?

गिरजा०। पूरा पूरा पता तो नहीं लगा मगर शायद उसका इरादा भूतनाथ के विषय में कुछ जानने का था, लेकिन भूतनाथ ने उसे कैद कर लिया।

दलीप०। कैद कर लिया ! सो कब ?

गिरजा०। बस उसी दिन जिस दिन उसे आपने देखा था। गदाधर सिंह ने भी किसी तरह उसे देख लिया और पीछा कर पकड़ लिया। पर गदाधरसिंह ने उसे लामाघाटी में ही कैद किया है और वहाँ ही आजकल उसकी रामदेई भी है.....

दलीप०। लामाघाटी में रक्खा है ! तब तो....., खैर और कुछ मालूम हुआ ?

गिरजा०। हाँ और भी कई बातें मालूम हुई हैं मगर वे सब निश्चिन्ती में सुनने लायक हैं। आप ऊपर टीले पर गये थे, क्या कुछ पता लगा ?

दलीप०। प्रभाकरसिंह दिखाई पड़े मगर तुरत ही कहीं गायब हो गये, उस स्थान का भी तिलिस्म से कुछ सम्बन्ध है और ऐसा खयाल होता है कि वे शायद तिलिस्म में ही चले गये हैं, उनके साथ एक औरत भी थी।

गिरजा०। वही होगी जिसे कई दफे हमलोग देख चुके हैं।

दलीप०। हाँ वही है।

गिरजा०। तो प्रभाकरसिंह से इसका साथ क्यों और कैसे हुआ ?

दलीप०। इसका पता लगाने का काम मैं तुम्हारे सुपुर्द किया चाहता हूँ, तुम यहाँ मौजूद रह कर इस टोह में लगो कि वह कौन है तथा यदि प्रभाकरसिंह दिखाई पड़ें या तो उन्हें कब्जे में करो और नहीं तो फिर मुझे या (इन्द्रदेव की तरफ बता कर) इन्हें जिसको मुनासिब समझो खबर दो।

गिरजा०। बहुत अच्छा।

इन्द्र०। तुम्हारे और भी तो साथी यहाँ होंगे?

गिरजा०। जी हाँ कई हैं, कोई नई बात होने से आपको तुरत खबर दी जायगी।

इन्द्रदेव०। बस ठीक है। (दलीप से) तो चलिये इन्हें यहीं छोड़ दीजिये। बहुत रात गुजर गई।

दलीप०। (गिरजा कुमार से) मेरा घोड़ा कहाँ है?

गिरजा०। पास ही में है अभी लाया।

इतना कह गिरजाकुमार चला गया और थोड़ी ही देर में दलीपशाह का घोड़ा लिये हुए आ पहुँचा, इस बीच में इन्द्रदेव ने भी अपना घोड़ा खोल लिया जो पास ही में बँधा हुआ था और दोनों आदमी घोड़ों पर सवार हो जंगल के बाहर की तरफ चले।

इन्द्र०। यह गौहर कौन, जिसके बारे में तुम बातें कर रहे थे?

दलीप०। पटने वाले शेरअली खाँ की लड़की।

इन्द्र०। शेरअली तो बड़ा जबर्दस्त आदमी है। उसकी लड़की इस तरह खुले आम घूमती फिरती है?

दलीप०। मैं नहीं कह सकता कि क्या बात है! तब फिर यह जरूर है कि शिवदत्त और शेरअली में आजकल बड़ी दोस्ती हो रही है और शिवदत्त ही के सबब से आपके दारोगा साहब भी शेरअली के मित्र बन गए हैं।

इन्द्र०। ठीक है मुझे उड़ती हुई यह खबर लगी थी।

दलीप० । मगर एक बात का पता आपको न लगा होगा ।

इन्द्र० । सो क्या ?

दलीप० । शिवदत्त ने अब हाथ पाँव फैलाना शुरू किया है । प्रभाकर इन्दुमति और दिवाकरसिंह इत्यादि को पकड़ने के लिये उसने कई ऐयार भेजे हैं तथा दारोगा से भी इस विषय में मदद माँगी है । आजकल उसके ऐयार यहाँ चारो तरफ फैले हुए हैं ।

इन्द्र० । क्या वास्तव में !!

दलीप० । बेशक ।

इन्द्र० । तो क्या ताज्जुब कि यह सब कार्रवाई उन्हीं लोगों की हो और वह औरत भी जो प्रभाकर के साथ थी शिवदत्त की ही कोई ऐयार हो । तुम्हें इस बात का पता क्योंकर लगा ।

दलीप० । मैंने स्वयं उन ऐयारों को देखा और उनकी बातें सुनीं । मगर अभी उनका हाल मुझे मालूम नहीं हुआ है । मैं इनकी टोह में लगा हुआ हूं और पूरापूरा पता लगा जैसे ही आप से कहूँगा ।

इन्द्र० । जरूर ।

अब ये दोनों आम सड़क पर आ पहुँचे जहाँ से अलग अलग हो इन्द्रदेव अपने मकान की तरफ रवाना हुए और दलीपशाह ने जमानियाँ का रास्ता पकड़ा । हम इस समय दलीपशाह के साथ चलते और देखते हैं कि ये क्या करते हैं ।

बाकी रात और करीब दो घण्टे दिन तक दलीपशाह बराबर चले गये, इसके बाद एक पहाड़ी चश्मे के किनारे पहुंच उन्होंने घोड़ा रोका और उतर पड़े । घोड़े को बागडोर से एक डाल के साथ बाँध दिया और उसका साज वगैरह उतार अपने भी कपड़े उतारे और चश्मे के पानी से हाथ मुँह धोने बाद जरूरी कामों से छुट्टी पाने की फिक्र में लगे ।

घण्टे भर के भीतर ही दलीपशाह ने स्नान सन्ध्या आदि से छुट्टी पा ली और अपने ऐयारी के बटुए में से कुछ मीठा निकाल कुछ जलपान किया ।

इसके बाद एक शीशा सामने रख बटुए में से सामान निकाल उन्होंने सूरत बदलना शुरू किया।

दलीपशाह ने अपनी सूरत एक देहाती किसान की बनाई और बटुए को होशियारी के साथ कमर में बाँधने बाद कपड़े तथा अन्य सामान को भी छिपा दिया, तब इधर उधर देखते हुए पश्चिम की तरफ चल पड़े जिधर कई छोटी पहाड़ियाँ या ऊँचे टीले नजर आ रहे थे।

काफी दूर निकल जाने बाद दूर ही से दलीपशाह को निगाह दो पहाड़ियों के बीच के एक दर्रे में बैठे और कुछ करते हुए कई आदमियों पर पड़ी जिनमें दो एक औरतें भी मालूम होती थीं। एक तरफ आग सुलग रही थी। जिस पर कुछ भोजन का सामान तैयार हो रहा था तथा दूसरी तरफ एक कम्बल बिछा हुआ था जिस पर कोई बैठा न था। ऐसा मालूम होता था कि वहाँ इन आदमियों का डेरा कई दिन से पड़ा हुआ हैं, क्योंकि उस जगह आस पास में कई छोटी बड़ी गुफाएँ थीं उनमें से जरूरत की चीजों को वे लोग निकाल लाया करते थे। दलीपशाह एक पेड़ की आड़ में खड़े हो गए और उनकी तरफ बहुत गौर से देखने लगे।

थोड़ी देर बाद एक गुफा में से सादी पौशाक पहिरे हुए बड़ी बड़ी दाढ़ी मूछों वाला एक आदमी निकला जिसे देखते ही बाहर के सब आदमी उठ खड़े हुए। एक आदमी ने उस कम्बल पर जो वहाँ पड़ा हुआ था एक सफेद कपड़ा डाल दिया और दूसरे ने एक गुफा के भीतर से दो तीन तकिये लाकर रख दिये जिसके सहारे वह उठँग कर बैठ गया। कुछ आदमी अपने काम में लगे रहे और बाकी के उस नए आने वाले के इर्दगिर्द आकर बैठ गये इन लोगों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं जो दूर रहने के कारण दलीपशाह बिल्कुल नही सुन सकते थे।

कुछ देर तक सोच विचार करने बाद दलीपशाह पेड़ की आड़ से निकले और घबड़ानी सी सूरत बनाये हुए उन लोगों की तरफ बढ़े।

इनको आते देख उन लोगों ने अपनी बातें बंद कर दीं और इनकी तरफ देखने लगे।

पास पहुँच कर किसान (दलीपशाह) ने सभों को बड़े ही अदब से सलाम किया और हाथ जोड़ कर देहाती भाषा में कहा, "सरकार मेरी औरत को साँप ने काट लिया है और वह (हाथ से बताकर) उस तरफ बेहोश पड़ी हुई है। आप लोगों को देख मैं यहाँ आ गया, अगर आप में से कोई साँप काटने का इलाज जानता हो तो दया कर मेरे साथ चले, उसे एक जान बचाने का पुण्य होगा!"

इस बात को देहाती ने इतनी गिड़गिड़ाहट के साथ कहा कि सभों को उस पर विश्वास हो गया और सरदार ने उससे पूछा, "तुम्हारी औरत यहाँ से कितनी दूर है!"

किसान०। बस यही थोड़ी दूर पर है। आपलोगों में से कोई चला चलता तो बड़ी दया होती!

सर०। साँप का इलाज तो मै जानता हूं, अगर अपनी स्त्री को तुम यहाँ ला सको तो कोशिश करूँ शायद चंगी हो जाय।

किसान०। तो सरकार अकेले मुझसे तो वह उठाई नहीं जायगी, अगर कोई आदमी साथ हो जाय तो उठा लाऊँ।

सरदार ने यह सुन अपने एक साथी की तरफ देख कर कहा, "अनिरुद्धसिंह! इसके साथ जाओ और उसे उठा लाओ।"

अनिरुद्धसिंह "बहुत अच्छा" कह कर उठ खड़ा हुआ और किसान से बोला, चलो किधर चलें?"

किसान ने अनिरुद्धसिंह को साथ ले दक्खिन का रास्ता लिया। कई टीले और ऊँची नीची जमीन पार करते हुए जब दोनों दूर निकल गये और कहीं उस किसान की औरत का पता न लगा तो अनिरुद्ध ने पूछा, "तुम्हारी स्त्री आखिर कहाँ है? इतनी दूर तो निकल आये कहीं दिखाई नहीं पड़ती।"

किसान ने कुछ जवाब न दे सामने की तरफ बताया और फिर आगे का रास्ता लिया। कुछ दूर तक अनिरुद्ध साथ चला, लेकिन आखिर एक जगह फिर रुक कर उसने पूछा, "तुम बोलते क्यों नहीं! आखिर तुम्हारी औरत है कहाँ? मैं कितनी दूर तक इस तरह तुम्हारे साथ चलूँगा?"

देहाती किसान ने चारो तरफ देख कर कहा, "यहीं तो रही, कहीं चली गई होगी!"

अनि०। जब उसे साँप ने काट लिया तो फिर चली कहाँ गई होगी? तुम्हीं ने न कहा था कि थोड़ी दूर पर बेहोश पड़ी है!!

किसान०। हाँ यह बात भी ठीक है! वह रही तो थोड़ी ही दूर पर!

अनि०। अबे तो अभी तक तेरा थोड़ी दूर पूरा नहीं हुआ! कोस भर चला आया सो क्यों?

किसान०। मैं सो सब क्या जानूँ? मैं तो तुम्हारे साथ चला आ रहा हूँ!

अनि०। अबे मैं तेरे साथ आ रहा हूँ या तू मेरे साथ आ रहा है! बता जल्दी कि वह औरत कहाँ है नहीं अभी मैं लौट जाता हूँ!!

किसान०। अबे तबे करेगा तो जबान खींच लेंगे, बड़ा आया है अबे तबे कहने वाला! कहते तो हैं कि यही कहीं होगी, खोजते हैं, मिलती है तो देते हैं, मगर जल्दी मचाये जाता है, बदमाश कहीं का!!

अनिरुद्ध को यह सुन गुस्सा आ गया और वह अकड़ कर, खबर्दार, जबान सम्हाल कर बातें कर! गाली गलौज करेगा तो धुन कर रख देंगे!!"

किसान०। वाह! क्या तीसमार खाँ आए हैं!!"

किसान की यह बात सुनते ही अनिरुद्धसिंह क्रोध में आ झपट पड़ा और उससे लिपट उसको जमीन पर गिरा देने की कोशिश करने लगा मगर इस बात को जैसा सहज उसने माना हुआ था वैसा न पाया।

उसने इस नकली किसान को अपने से बहुत जबर्दस्त पाया जिसने देखते देखते उसे उठाकर पटक नहीं दिया बल्कि जबर्दस्ती अपने बटुए में से बेहोशी की दवा निकाल और सुंघा बेहोश भी कर दिया ।

अनिरुद्ध को बेहोश कर दलीपशाह ने फुर्ती से अपने कपड़े उतार उस के कपड़े पहिन लिये । उसकी कमर में बँधा हुआ दलीपशाह को एक ऐयारी का बटुआ तथा एक खंजर भी मिला । अपने बटुए में से सब चीजें निकाल उन्होंने अनिरुद्धवाले बटुए में डाल दी और उसके बटुए की चीजें अपने बटुए में डाल बटुआ उसकी कमर में बाँध दिया । इसके बाद शीशा सामने रख अपनी सूरत अनिरुद्ध की सी बनाने लगे । जब ठीक वैसी हो गई तो उसकी सूरत अपनी ऐसी बनाई और अपनी चादर उसको उढ़ा उठ खड़े हुए, पर कुछ सोचकर फिर बैठे और अपने बटुए में से एक डिबिया निकाली जिसमें किसी प्रकार की मरहम थी । इसे थोड़ा सा बेहोश अनिरुद्ध की जुबान पर लगाया और तब डिबिया बन्द कर ठिकाने रखने बाद सिर हिला कर यह कहते हुए उठ खड़े हुए, अब कोई हर्ज नहीं !"

थोड़ी दूर गये होंगे कि सामने से एक आदमी आता हुआ दिखायी दिया जिसे देखते ही ये पहिचान गये कि यह उन्हीं आदमियों में से है जिनके पास से वे अभी अभी आए थे । दलीपशाह को देखते ही उस आदमी ने पुकार कर कहा, "वाह अनिरुद्धसिंह, तुमने तो घण्टों लगा दिये ! सरदार बिगड़ रहे हैं कि कुछ और काम की भी फिक्र है या नहीं ? वह तुम्हारे साथ वाला वह देहाती कहाँ गया ?'

दलीपशाह ने जिनको अब हम अनिरुद्धसिंह के नाम से ही पुकारेंगे आगे बढ़कर कहा, "यार क्या बतावें, वह कम्बख्त देहाती तो बड़ा दगाबाज निकला ! यहाँ तक तो यह कहता चला आया कि थोड़ा और आगे है, कुछ दूर और है, और जब यहाँ पहुंचा तो मुझसे ही बिगड़ खड़ा हुआ और लड़ने लगा । लड़ने के पहिले उसने कई बार सीटी भी बजाई

चुका है और वह हमारी फिक्र से इसी तरफ ही आया हुआ भी है। तुम दोनों ने उसे कहीं देखा तो नहीं ?"

चौदहवाँ बयान

भूतनाथ के विचित्र स्थान लामाघाटी से हमारे पाठक अपरिचित नहीं होंगे, क्योंकि चन्द्रकान्ता सन्तति में कई जगह इस जगह का नाम आ चुका है। भूतनाथ इस स्थान को बहुत ही गुप्त समझ कर अक्सर उसी में अपने कैदियों को रखता था बल्कि कैदियों के सिवाय अपनी उन चीजों को भी जिनको वह बेशकीमती समझता था या जिनका दुश्मनों के हाथ लग जाना वह अपने हक में बुरा समझता था वह इसी जगह कहीं रखता था, खास करके जब से कला और विमला के कारण तंग होकर भूतनाथ ने उस तिलिस्मी घाटी को छोड़ दिया था जिसमें पहले रहता था तब से तो यह लामाघाटी ही उसका प्रधान अड्डा बन गई थी।

इसी लामाघाटी के एक में जिधर की इमारतों का काफी भाग टूटा होने पर भी बाकी का अंश अभी तक मजबूत और रहने लायक बना हुआ है हम एक कोठरी में उस गौहर को सुस्त और उदास बैठे हुए देखते हैं जिसका जिक्र इस हिस्से के दूसरे बयान में आ चुका है। यद्यपि इस कमसिन और खूबसूरत लड़की के हाथ पैर बँधे हुए नहीं हैं और न इस कोठरी में हम कोई जंगला या दर्वाजा ही लगा हुआ देखते हैं जिसमें वह बैठी हुई है तथापि हम खूब जानते हैं कि यह यहां कैद है। इस कोठरी के बाहर निकलने की गौहर को कोई इजाजत नहीं है और न इस घाटी में रहने वाले आदमियों में से ही कोई उससे बात कर सकता है। सुबह दोपहर और शाम को एक आदमी आकर इसकी जरूरियत को पूरा कर जाता है और इसके सिवाय कभी इसे किसी आदमी की सूरत नहीं दिखाई देती और न इस घाटी के बाहर निकलने की ही कोई तर्कीब दिखाई पड़ती है, तथापि यह लड़की अभी तक हताश नहीं हुई है और इसके होठों और

आँखों से कभी कभी किसी खयाल के साथ प्रगट हो जाने वाली मुस्कुराहट साफ कहे देती है कि इसे आज ही कल में इस स्थान से निकल जाने की पूरी आशा बँधी हुई है।

समय सन्ध्या का है और इस कारण घाटी में सन्नाटा छाया हुआ है क्योंकि यहाँ के आदमियों में से दो एक को छोड़ बाकी के सभी बालादवी के लिये बाहर गये हुए हैं जो यहाँ रहने वालों के लिये एक जरूरी काम है क्योंकि ये सभी आदमी भूतनाथ के शागिर्द और ऐयार हैं, और उसके हुक्म के अलावे अपनी इच्छा से भी बराबर भेष बदल कर इधर उधर घूमते हुए उसका काम करते और गुप्त भेदों का पता लगाते रहते हैं, यही सबब है कि यहाँ इस समय कोई आदमी खास तौर पर गौहर की निगहबानी के लिये मुस्तैद नहीं दिखाई दे रहा है जिसके सबब से उस औरत को यहाँ आने में तरद्दुद हो जो एक मोटी चादर ओढ़े पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाती हुई सामने की तरफ से इधर ही को चली आ रही है।

थोड़ी देर में वह औरत पास आ गई और तब बहुत सावधानी से इधर उधर देखने बाद उसी कोठड़ी में घुसी जिसमें गौहर बैठी हुई थी। उसे देखते ही गौहर प्रसन्नता के साथ उठ खड़ी हुई और मुस्कुराती हुई दो कदम आगे बढ़ कर बोली, "आओ सखी, बारे किसी तरह आई तो सही, मैं तो समझी थी कि तुम अपना वादा पूरा न करोगी, शायद भूल ही गई हो।"

औरत०। नहीं नहीं, भला अपना वादा मैं कभी भूलती हूं! मेरे आने में देर होने का सबब यही हुआ कि उनके शागिर्द लोगों के जाने की मैं राह देख रही थी। जब सिर्फ दो आदमियों को छोड़ बाकी सब घूमने फिरने चले गये तो मैं इधर आई सो भी अपने को उन दोनों की निगाह से बचाती हुई क्योंकि मुझे यद्यपि मालिक ने तुमसे मिलने से मना नहीं किया है तो भी तुमसे मिल कर किसी तरह का व्यर्थ का शक उनके दिल में पैदा करना मैं मुनासिब नहीं समझती।

गौहर० । मैं उम्मीद करती हूँ कि इस वादे की तरह अपना दूसरा वादा भी तुम नहीं भूलोगी ! (हाथ पकड़ कर) अच्छा सखी बैठो तो सही।

वह औरत और गौहर दोनों एक कम्बल पर जो वहाँ बिछा हुआ था बैठ गईं और तब उस औरत ने अपनी चादर जो वह ओढ़े हुए थी उतार दी। इस समय उसकी खूबसूरती या नखसिख का वर्णन कर हम व्यर्थ पाठकों का समय खराब नहीं किया चाहते पर इतना बता देना जरूरी है कि यह औरत भूतनाथ की दूसरी स्त्री रामदेई है।

रामदेई० । (बैठने बाद) नहीं नहीं, मैं अपना दूसरा वादा भी न भूलूँगी, और तुम्हें जरूर इस जगह के बाहर निकाल दूंगी तथा मुमकिन है कि वह दिन भी आज ही हो जब तुम स्वतन्त्रता की हवा खाती दिखाई दो, पर एक दो सवाल मैं तुमसे अवश्य पूछा चाहती हूँ।

गौहर० । हाँ हाँ खुशी से पूछो, जो कुछ मैं जानती हूं जरूर कहूंगी।

रामदेई० । पहिली बात तो यह कि तुम क्यों इस तरह पर घूम फिर रही थी जब उन्होंने (भूतनाथ ने) तुम्हें गिरफ्तार किया और दूसरी बात यह कि तुम्हारी तरफ से जो आदमी दो एक बार मुझसे काशीजी में मिलकर बातें कर चुका है वह क्या वास्तव में तुम्हारा ही नौकर है ?

गौहर० । हाँ वह मेरा ही ऐयार था।

राम० । मगर उसकी मारफत जिस किस्म की बातें .....

गौहर० । देखो मैं दोनों बातों का जवाब तुम्हें देती हूँ। मेरी माँ के मरने का हाल तो तुमने सुना ही होगा ?

राम० । हाँ मैं सुन चुकी हूँ।

गौहर० । मैं अपनी माँ को बहुत चाहती थी और उसके मर जाने पर एक तरह पर मैं पागल सी हो गई। हकीमों ने बहुत तरह का इलाज किया पर मेरी हालत सुधरती न देख उनकी सलाह से मेरे बाप ने मुझे यह इजाजत दे दी कि मैं थोड़े से आदमियों को लेकर जहाँ चाहे घूमूँ फिरूँ और अपना दिल बहलाऊँ। इसी तरह एक दफे मैं चुनार भी गई थी। वहाँ के राजा बीरेन्द्रसिंह के दो लड़के हैं जिन्हें शायद तुम जानती हो।

राम० । हाँ हाँ मैं उन्हें अच्छी तरह जानती हूँ । इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह उनका नाम है और दोनों बड़े ही खूबसूरत और बहादुर भी हैं !

गौहर० । इन्द्रजीतसिंह तो ऐसे कुछ नहीं हैं पर आनन्दसिंह बड़े ही खूब सूरत और मनचले हैं । उनको जब मैंने देखा (गरदन नीची करके) तो.....

राम० । हाँ हाँ ठीक है, मैं समझ गई अच्छा तब ?

गौहर० । मैंने बहुत कोशिश की कि किसी तरह आनन्दसिंह से मिलूँ पर उन्होंने मेरी तरफ कुछ ध्यान नहीं दिया, तब मुझे बड़ा क्रोध आया पर मैं कर क्या सकती थी, लाचार मन मार वहाँ से चल दी ! कुछ दिन बाद जब एक दिन घूमते फिरते शिवदत्तगढ़ पहुँची जिसे चुनार के पिछले राजा शिवदत्तसिंह ने बसाया है तो वहाँ मालूम हुआ कि राजा शिवदत्त उन दोनों कुमारों को गिरफ्तार कर अपना पुराना बैर जो बीरेन्द्रसिंह से है चुकाया चाहते हैं अस्तु मैं भी अच्छा मौका देख कर शिवदत्तसिंह के साथ हो गई । वह मेरे बाप को अच्छी तरह जानते हैं इससे ज्यादा तरद्दुद न हुआ । (रुक कर) अब इस समय उन्हीं के एक काम से मैं यहाँ आई हुई थी जब तुम्हारे पति ने मुझे गिरफ्तार कर लिया । मैं नहीं कह सकती कि उन्हें मुझ पर किस तरह का सन्देह हुआ जो वे मुझसे रंज हो बैठे । क्या तुम इस बारे में कुछ कह सकती हो कि उन्होंने मुझे क्यो गिरफ्तार किया ?

रामदेई० । भला सो मैं क्या कह सकती हूँ, वे जानें और उनका काम जाने, मैं उनकी बातों में दखल नहीं देती । और सच तो यह है कि मुझे उनके भेदों का हाल कुछ भी मालूम नहीं रहता !

गौहर० । मैंने उनके विषय में तुमसे जो बातें पुछवाई थीं शायद उनका पता उन्हें लग गया हो और वे यह समझ बैठे हों कि मैं उनसे दुश्मनी रखती हूँ ।

रामदेई० । नहीं इन बातों का पता तो उन्हें नहीं लगा है, क्योंकि अगर ऐसा होता तो मुझे कुछ न कुछ खबर जरूर लगती, जरूर कुछ और ही बात है ।

गौहर० । तो कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि तुम इधर मुझे कैद से रिहाई दो तो उधर आप ही तरद्दुद में पड़ जाओ और तुम पर लोग शक करने लगें कि इसी ने गौहर को भगा दिया है ?

रामदेई० । नहीं ऐसा भी न होगा । एक तो इन आदमियों की जो इस समय यहाँ हैं इतनी हिम्मत नहीं होगी कि मुझ पर ऐसा शक करें दूसरे मैं आज ही यहाँ से चली जाने वाली भी हूँ ।

गौहर० । क्या तुम जाओगी ? तो फिर मेरी क्या दशा होगी ? क्या मैं यहीं पड़ी सड़ा करूँगी ? तुम्हारे सिवाय तो और कोई यहाँ ऐसा दोस्त भी दिखाई नहीं देता जिसके पास बैठ और कुछ बातचीत कर मैं तबीयत तो बहला सकूँ ।

रामदेई० । नहीं नहीं, मैं जाऊँगी तो क्या तुम्हारा कुछ बन्दोबस्त किये बिना ही चली जाऊँगी ? ऐसा तुम स्वप्न में भी खयाल न करना ! मैं तुम्हारा कुछ रास्ता निकाले बिना यहाँ से नहीं जाने की ।

गौहर० । हाँ यही तो मेरा भी विश्वास है ।

रामदेई० । (कुछ देर चुप रह कर) अच्छा तुम यहाँ से छूट कर कहाँ जाओगी ?

गौहर० । यह तो मैं अभी ठीक ठीक नहीं कह सकती । एक बार जमानिया तो अवश्य जाऊँगी फिर वहाँ से चाहे जहाँ जाऊँ । आज कल जमानिया में शिवदत्तसिंह के कई ऐयार भी आये हुए हैं ।

रामदेई० । (आश्चर्य से) सो क्यों ?

गौहर० । मैं ठीक ठीक नहीं कह सकती । शायद प्रभाकरसिंह वगैरह को गिरफ्तार करने की फिक्र में हों ।

रामदेई० । कौन प्रभाकरसिंह ?

गौहर० । वही शिवदत्त के सेनापति जिनकी स्त्री इन्दुमति को शिवदत्त अपने महल में डाला चाहता था । क्या तुम उसे नहीं जानती ?

रामदेई० । नहीं नहीं मैं उन्हें बखूबी जानती हूं मगर वह तो मर गए न ?

गौहर० वाह, यह तुमसे किसने कहा कि प्रभाकरसिंह मर गये ?

रामदेई० । क्या वह नहीं मरे ?

गौहर०। नहीं कदापि नहीं, इधर दस पाँच दिन का हाल तो मैं नहीं कह सकती पर इसके पहिले तक तो ऐसा नहीं हुआ था।

रामदेई०। (कुछ सोचती हुई) अच्छा ? प्रभाकरसिंह नहीं मरे ! तब मुझे यह झूठी.....(चुप रह कर) अच्छा तो इस प्रभाकरसिंह को शिवदत्त पुनः पकड़ा चाहता है ?

गौहर०। महाराज शिवदत्त के पास ताकत हो गई और अब वह चुन चुन कर अपने दुश्मनो से बदला ले रहे हैं।

रामदेई०। (धीरे से) मगर शिवदत्त के दुश्मनों में तो वे (भूतनाथ) भी हैं।

गौहर०। (मुस्कुराती हुई) हाँ हैं तो सही !

रामदेई ने यह सुन धीरे से गौहर के कान में कुछ कहा जिसके जवाब में उसने भी रामदेई के कान में मुँह लगा कर कुछ कहा और इसके बाद इन औरतों में इतने धीरे धीरे बातें होने लगीं कि हम भी सुन न सके।

इन दोनों की बातचीत घड़ी रात गये तक होती रही और तब रामदेई ने उठते हुए कहा, "अच्छी बात है, तो मैं यहाँ से काशी जाना दो एक दिन के लिए रोक देती हूं। उनके आने की खबर है और ताज्जुब नहीं कि आज ही कल में वे यहाँ आ जाय। आने पर जोर देकर पूछूँगी कि असल बात क्या है। यह तुमने बड़े ताज्जुब की बात कही है और जब तक असल बात का मुझे पता नहीं लगेगा मेरे पेट में पानी नहीं पचेगा।"

गौहर०। (खड़ी होकर) मैंने जो कुछ कहा है इसमें तुम रत्ती भर का फर्क न पाओगी। अच्छा तो आज आधी रात को मैं तुम्हारी राह देखूं।

राम०। हाँ अवश्य आऊँगी।

इतना कह रामदेई ने चादर से पुनः अपने को अच्छी तरह ढक लिया और तब उसी तरफ लौट गई जिधर से आई थी। गौहर कुछ देर तक उधर देखती रही और तब यह कहती हुई बैठ गई, "चलो अब इनमें लड़ाई तो हो ही जायगी ! ऐसा होने से मेरा काम जरूर बन जायगा और मैं गदाधरसिंह के भेदों का पता लगा कर शिवदत्तसिंह की निगाहों में ऊँची होऊँगी।"

आधी से कुछ ऊपर जा चुकी है। लामाघाटी में चारो तरफ
ाया हुआ है कोई कहीं हिलता डुलता दिखाई नहीं देता क्योंकि
गुलाबी सर्दी किसी को चादर के बाहर मुँह निकालने की
नहीं देती। यद्यपि दिन के समय यह घाटी उजाड़ और जगली
। और खंडहरों के कारण कुछ भयानक भी मालूम होती है पर
स समय चन्द्रदेव की शीतल किरणों ने यहाँ की भयङ्करता को दूर कर
एक प्रकार की रमणीयता पैदा कर दी है जिस पर गौहर आश्चर्य की
निगाह डालती हुई सोच रही है कि यही स्थान जो इस समय इतना
रमणीक मालूम हो रहा है दिन के समय कैसा विकट मालूम पड़ता था।
कदाचित् गौहर की निगाह के इस परिवर्तन का कारण यह हो कि दिन
के समय वह कैदी थी और इस समय यहाँ से निकल भागने की पूरी
उम्मीद में है। अपने सामने के दृश्य से होती हुई उसकी निगाहें कभी
कभी उस तरफ भी जा पड़ती हैं जिधर भूतनाथ के दूसरे शागिर्दों और
रामदेई का डेरा है और कभी कभी सोए हुए उस आदमी के खुर्राटों की
तरफ भी उसका ध्यान चला जाता है जो उसकी निगहबानी के लिये
रात को वहाँ ही एक तरफ दालान में सोता है पर इस समय नींद के
कारण बेहोश होकर यह नहीं देख रहा है कि वह औरत जिसकी हिफाजत
के लिये वह यहाँ मुकर्रर किया गया था भागा चाहती है।

यकायक गौहर की निगाह काली चादर ओढ़े हुए किसी आदमी पर
पड़ी जो घने पेड़ों की छाया में अपने को छिपाता हुआ उधर ही को आ
रहा था। उसे देखते ही गौहर के मुँह पर प्रसन्नता छा गई और वह यह
कहती पीछे हटी, "आ पहुँची! अब मुझे भी तैयार हो जाना चाहिये!!"

गौहर उस कोठड़ी में गई जिसमें कैद रहती थी और अपने कपड़े
पहिने, सामान दुरुस्त किया, दो एक चीजें जिनकी कोई जरूरत न समझी
वहीं छोड़ी और तब एक निगाह गौर से चारो तरफ डाल वह पुनः
बाहर निकल आई वह आदमी जिसे काली चादर ओढ़े उसने अपनी
तरफ आते देखा था एक पेड़ की आड़ में खड़ा था। गौहर उसके पास
चली गई और बड़ी प्रसन्नता के साथ बोली, "कहो सखी, सब ठीक
है न!!"

इसके जवाब में उस व्यक्ति ने जो वास्तव में रामदेई थी जवाब
दिया, "हाँ सखी सब ठीक है, बस अब निकल ही चलना चाहिये।
(कंधे पर से एक और काली चादर उतार कर) लो इसे तुम ओढ़ लो
मैं इसे तुम्हारे ही लिये लेती आई हूँ।"

गौहर ने वह चादर ओढ़ ली, दोनों कुछ देर तक चुप आहट लेती रही तब धीरे धीरे घाटी के बाहर की तरफ रवाना ह

लामाघाटी के बाहर आने अथवा वहाँ जाने के रास्ते का ह की इस जगह कोई आवश्यकता नहीं मालूम होती क्योंकि चन्द्रकान्ता में इसका हाल खुलासा तौर पर लिखा जा चुका है अस्तु इस कुछ न कह कर हम केवल इतना ही कहते हैं कि गौहर को साथ लिये हुए रामदेई बेखटके उस पेचेली घाटी के बाहर निकल आई और वहाँ के किसी आदमी को इस बात का पता न लगा। लगभग आधे घण्टे के भीतर ही रामदेई और गौहर उस छोटी पहाड़ी पर दिखाई देने लगीं जो लामाघाटी के भीतर जाने के पहिले दर्वाजे की तरह पर थी और अपने चारो तरफ निगाह दौड़ाने लगीं। दूर दूर तक जहाँ निगाह जाती थी जंगल मैदान ही नजर आता था और चन्द्रमा की रोशनी किसी आद की सूरत न दिखलाती थी।

दोनों औरतें कुछ देर तक चुपचाप इधर उधर निगाहें दौड़ाती र इसके बाद दो चार गुप्त बातें कर रामदेई ने गौहर को बिदा किया अ जब वह सकुशल उस छोटी पहाड़ी के नीचे उतर गई तो पुनः अ डेरे की तरफ लौटी।

अभी रामदेई बहुत दूर न गई होगी कि यकायक किसी प्रकार की आहट पा उसने पीछे घूम कर देखा और एक आदमी को पहाड़ी पर चढ़ते देख उसका कलेजा उछलने लगा। पहिले तो उसने सोचा कि इधर उधर कहीं छिप जाऊँ पर जब उसे विश्वास हो गया कि मेरी तरह उस आदमी ने भी मुझे देख लिया है तो लाचारी समझ वह उसी जगह रुक गई मगर कपड़े के भीतर ही उसने एक खंजर जरूर निकाल लिया जिसे कमर में खोसे हुए अपने साथ लाई थी। इस बीच में वह आदमी भी पास आ पहुंचा और यह देख रामदेई की हालत खराब हो गई कि वह और कोई नहीं स्वयम् भूतनाथ है।

देखते देखते भूतनाथ उसके पास आ पहुँचा और अपनी सात परदे के भीतर रहने वाली स्त्री को इस प्रकार आधी रात के समय यहाँ खड़ी देख आश्चर्य करने लगा।

॥ नौवा हिस्सा समाप्त ॥

१९५३ ई०— ग्यारहवां संस्करण—२००० प्रति

मुद्रक—काशी मुद्रणालय, बिशेश्वर गंज, मृत्युञ्जय रोड, बनारस।